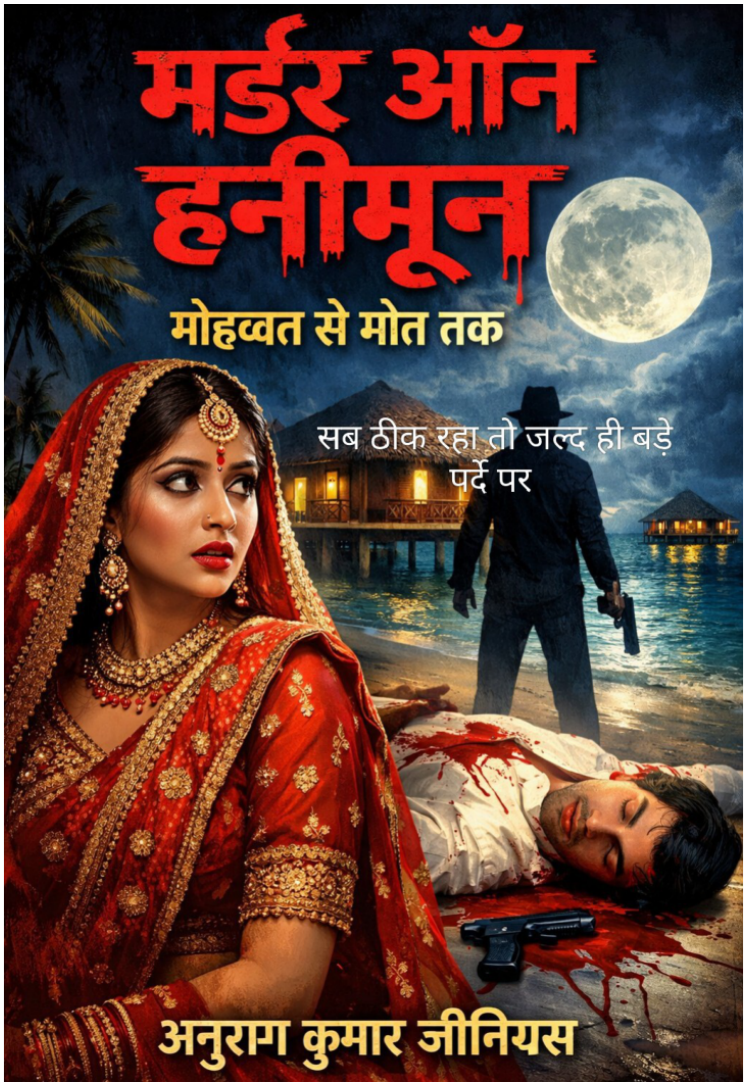
मर्डर ऑन हनीमून
मोहब्बत से मोत तक
सब ठीक रहा तो जल्द ही बड़े पर्दे पर
अनुराग कुमार जीनियस

लेखकीय

सभी पाठक मित्रों को प्रेम भरा नमस्कार।

मेरे अंतिम उपन्यासों विनर और शादी वाली रात को आए हुए काफी वक्त हो गया । सभी पाठक मित्र नए उपन्यास की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे यह बात उनके मैसेज जो ईमेल्स , फेसबुक और व्हाट्सएप पर आए सब बताते हैं और हकीकत तो यह है कि मैं भी नए उपन्यास के जरिए अपने सभी पाठक मित्रों से शीघ्र अति शीघ्र रूबरू होना चाहता था पर कहते हैं ना कि कई बार आप जो चाहते हैं वह होता नहीं शायद मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ कुछ फिजिकल प्रॉब्लम्स ऐसी हुई की उनके चलते ही मैं अपना लेखन समय पर नहीं कर पाया फिर भी जब भी मुझे थोड़ी राहत मिली तो मैंने लिखने की कोशिश की और जो उपन्यास दो महीने में कंप्लीट हो जाना चाहिए उसमें दो महीने से ज्यादा वक्त लग गया तकरीबन 5 । फिर एक महीना एडिटिंग में। हालांकि मुझे उम्मीद है कि उपन्यास में वक्त लगा है पर माल भी अच्छा तैयार हुआ है कहते हैं ना कि देर आए दुरुस्त आए ऐसी ही कुछ मिसाल नए उपन्यास मर्डर ऑन हनीमून पर भी ठीक बैठी है । बाकी उपन्यास कैसा है यह तो आप सबको ही पढ़ कर बताना है । मैं अपने मुंह से जितनी भी तारीफ करूं उसके कोई मायने नहीं वह तारीफ जब आपकी तरफ से होती है तब उसके मायने बढ़ जाते हैं । फिलहाल अपनी तकलीफ की वजह से ही मेरे लेखन की जो स्पीड है वह काफी कम हो चुकी है उम्मीद करता हूं कि इस साल जल्द ही जल्द पूरी तरह से ठीक हो जाऊंगा और कम से कम तीन या चार उपन्यास तो अपने पाठक मित्रों को भेंट कर पाऊं। आप सब की दुआ है मेरे साथ है आप सब का प्यार मेरे साथ है तो मुझे लगता है कि मेरी इच्छा जरुर पूरी होगी।

मेरे अंतिम दोनों उपन्यास विनर और शादी वाली रात दोनों ही पाठक मित्रों के द्वारा खूब-खूब पसंद किए गए। शादी वाली रात बड़ा गेम सीरीज का ही विक्रम पंडित सीरीज का है और यह सीरीज मेरी सबसे ज्यादा पॉपुलर सबसे ज्यादा प्यार पाने वाली और सबसे ज्यादा मुझे रॉयल्टी दिलाने वाली सीरीज है। इसी सीरीज को आगे बढ़ाते हुए मर्डर ऑन हनीमून के बाद मेरा अगला उपन्यास शादी वाली रात 2 होगा।

विशेष सूचना: अगर सब कुछ ठीक रहा तो बड़ा गेम सीरीज पूरी सीरीज आपको पॉकेट एफएम पर ऑडियो बुक के रूप में सुनने को भी मिलेगी जो शायद इसी महीने पॉकेट एफएम पर रिलीज होगी ऑडियोबुक के रूप में। इसके अलावा मैं प्रतिलिपि पर भी काफी सक्रिय हूं 2 सालों से जो पाठक मित्र प्रतिलिपि पर मुझे मेरी रचनाओं को पढ़ना चाहते हैं वह प्रतिलिपि पर मुझे फॉलो करें और मेरी रचनाओं को पढ़ें।

मेरे अजीज मित्र और लेखक अनिल गर्ग जी ने भी अपना एक प्लेटफार्म कहानी जंक्शन के नाम से शुरू किया है जिसमें आप कहानियों को पढ़ सकते हैं ऑडियो बुक के रूप में सुन सकते हैं और उन्होंने लेखकों के लिए एक विशेष अवसर प्रदान किया है जिसके चलते निशुल्क किताब प्रकाशन की व्यवस्था भी है वहां से मेरी एक किताब मौत का विश्व कप प्रकाशित भी हो चुकी है और संभव है आगे मेरी कुछ किताबों का प्रकाशन वहीं से होगा उसमें नई और पुरानी दोनों शामिल होंगी आप लोग भी कहानी जंक्शन को सपोर्ट कीजिए।

खैर आप सब पाठक मित्र मेरा नया उपन्यास मर्डर ऑन हनीमून जो एक सत्य घटना से प्रेरित है को पढ़ें और पढ़कर अपनी कीमती फीडबैक मुझे जरूर सेंड करें । वह जैसी भी होगी अच्छी

बुरी मुझे दिल से कबूल होगी। अगली मुलाकात बहुत जल्द होने की उम्मीद है शादी वाली रात 2 में। तब तक के लिए अलविदा।

आपका अपना लेखक

अनुराग कुमार जीनियस

नोट: सभी अधिकार सुरक्षित हैं।

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा लेखक लिखित पूर्वानुमति के बगैर फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी अन्य मेकैनिकल या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के ज़रिये पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता।

कहानी में वर्णित किसी भी व्यक्ति स्थान आदि का नाम काल्पनिक है किसी से भी समानता होना एक संयोग मात्र माना जाएगा।

मर्डर ऑन हनीमून

रात के आठ बज रहे थे। हालांकि 8 कोई ज्यादा वक्त नहीं होता है पर पहाड़ों पर रात की 8:00 बजे भी ऐसा लगता है जैसे आधी रात हो चुकी हो घने जंगलों की वजह से अंधेरा और घना जान पड़ता है शायद इसीलिए रात के उस वक्त घने जंगल का वह पूरा इलाका अंधेरे में डूबा हुआ जान पड़ता था। चारों ओर मरघट जैसा सन्नाटा पसरा हुआ था। इस सन्नाटे में कभी-कभी चमगादड़ों की तीखी आवाज सुनाई दे जाती थी या चारों तरफ झींगरों और मेंढकों की आवाज कभी कभी गूंजने लगती थी और कुछ पल सब शांत हो जाते थे। बीच-बीच में दूर जंगल में कहीं सियारो के रोने की आवाज भी सुनाई दे जाती थी जो उस डर के माहौल को और बढ़ा देती थीं। इस समय पूरा जंगल अंधेरे में डूबा हुआ दिखाई दे रहा था बड़े गौर करने से ही कुछ कुछ स्पष्ट नजर आ रहा था बड़े-बड़े लंबे पेड़ जमीन पर पड़े हुए सूखे पत्ते कहीं-कहीं कुछ उखड़े हुए पड़े बड़े पेड़ जो बड़े भयानक लग रहे थे रात के उस वक्त।

इस घने जंगल में कभी एक बड़ी नदी बहती थी पर कई साल हो गए उसे सूखे हुए हालांकि उसका रास्ता आज भी बना था लेकिन अब उसे रास्ते को एक गहरी खाई कह सकते थे और उसे नदी पर बना हुआ पुल भी अभी जिंदा था लेकिन वह भी किसी हॉरर फिल्मों की तरह बुरी अवस्था में दिखाई देता था । वह गहरी खाई देख कर साफ पता चलता था कि जब वहां पर वह नदी जिंदा रही होगी तो काफी विशाल नदी होगी चौड़ी और गहरी पर समय के साथ-साथ वह नदी विलुप्त हो चुकी थी और उसकी शक्ल एक गहरी खाई ने ले ली थी।

महीना था बारिश का और अभी कुछ देर पहले ही तगड़ी बारिश होकर हटी थी पर हल्की बारिश अभी भी जारी थी। सूख चुकी नदी के ऊपर बने पुल पर जो सड़क बनी थी बारिश की

वजह से पूरी तरह काली हो चुकी थी और किसी नागिन काली नागिन की तरह दिखाई दे रही थी। पुल के ऊपर बनी हुई सड़क एक सकरी सड़क थी जिस पर से केवल एक बार में एक ही वहां गुजर सकता था। वह पुल अंग्रेजों के जमाने का था उस पर लकड़ी की रेलिंग बनी हुई थी।

चारों ओर सन्नाटा भाय भाय कर रहा था।

ऐसे में उस काली सड़क पर दूर एक कार की हेडलाइट चमकी। लाइट के नजदीक आने से पता चल रहा था कार शीघ्र ही पुल पर पहुंचने वाली है।

उस घड़ी कार में दो लोग बैठे हुए थे एक पुरुष और एक महिला। महिला कर ड्राइव कर रही थी पुरुष उसकी बगल वाली सीट पर बैठा था और सिगरेट फूंक रहा था। लड़की जो देखने में ही लग रहा था कि शादीशुदा है, बड़ी तन्मयता से कार चला रही थी।

यह सच था वह शादीशुदा थी और उसकी बगल में जो शख्स बैठा था वह उसका नया नवेला पति था।

युवती के चेहरे पर भारी प्रसन्नता जान पड़ती थी। यही हाल युवक का भी था वह भी काफी खुश नजर आ रहा था। उन दोनों के चेहरे की खुशी साफ-साफ बयां बता रही थी की दोनों हैप्पी कपल है अपनी जिंदगी से खुश हैं।

अचानक युवक ने सिगरेट बाहर फेंक दी खिड़की से और लड़की के गले में अपनी मजबूत बांहे डालकर उसके गोरे गाल को किस करने की कोशिश करने लगा पर लड़की ने तुरंत उसके हाथ को अपने गर्दन से दूर कर दिया और उसे किस नहीं करने दिया।

जहां लड़की उसकी ओर देखकर शरारत से मुस्कुराई वहीं युवक के चेहरे पर कुछ पल के लिए गुस्सा सा दिखा। शायद इसलिए क्योंकि लड़की ने युवक को उसके मन की इच्छा पूरी नहीं करने दी थी।

"हमारी शादी को चार दिन हो गए हैं पर तुमने मुझे अभी तक किस भी नहीं करने दिया सुहागरात भी हमारी केवल बातें करते ही बीती!"युवक के स्वर में थोड़ी नाराजगी दिखाई दी। युवक कुछ देर तो शांत बना रहा शायद अपने गुस्से को शांत कर रहा था पर फिर भी उसके मुंह से इतना तो निकल ही गया हालांकि यह बात उसने बेहद संतुलित स्वर में कही थी ऐसे की उसकी पत्नी को बुरा ना लगे।

"मैंने तुमसे क्या कहा था ?"लड़की उसकी इस बात पर जरा भी गुस्सा नहीं हुई बल्कि धीरे से मुस्कुराते हुए बोली,"कि जब हम माता मंडलेश्वरी के दर्शन कर लेंगे तभी सुहागरात मनाएंगे ऐसी मेरी मनोकामना थी मैंने ने मंगलेश्वर देवी से वरदान मांगा था कि मुझे तुम जैसा एक अच्छा पति मिले तो मैं शादी के बाद सबसे पहले उसके दर्शन करने आऊंगी और तभी अपने पति से शारीरिक संबंध बनाऊंगी..। मैंने तुम्हें बताया तो था क्या तुम भूल गए?"लड़की ने उसे

याद दिलाने की कोशिश की।

"हां मुझे याद है तुमने यह बात कही थी। मुझे तुमने बताया था और मैंने तुम्हारी बात सुनकर ही तुम्हें अब तक हाथ नहीं लगाया और इसीलिए हम शादी के चार दिन बाद ही यहां शिलांग महामंडलेश्वर देवी के दर्शन करने आए और अब तो हम दर्शन कर भी चुके हैं वहीं से तो लौट रहे हैं तो अब क्या प्रॉब्लम है?"युवक ने याद करते हुए कहा पर उसके स्वर में अभी भी हल्की सी नाराजगी थी ।

वह इसलिए क्योंकि उसने वैसा ही किया अपनी शादी के चार दिन बाद ही अपनी नई नवेली पत्नी को लेकर शिलांग चला आया था शिलांग की प्रसिद्ध देवी के दर्शन करने और वे दोनों अभी दर्शन करके ही लौट रहे थे।

"कुछ नहीं। अब तो कोई प्रॉब्लम नहीं है पर अब तो हम शीघ्र ही अपने लॉज में अपने रूम पर पहुंचने वाले हैं जो भी करेंगे वहीं पर करेंगे और दिल खोलकर करेंगे इतना करेंगे ऐसे करेंगे कि तुम भी क्या याद रखोगे।"नई नवेली दुल्हन बिल्कुल भी शर्मा नहीं रही थी उसने यह बात उसे आंख मार कर बड़े ही चंचल शरारती अंदाज में कहीं तो नाराज बैठा उसका पति भी धीरे से मुस्कुरा पड़ा।

"अच्छा पर कमरे में सारी कसर निकाल लूंगा यह याद रखना!"अब युवक मुस्कुराया पर साथ ही साथ उसने हंसते हुए चेतावनी भी जारी की जिसे सुनकर लड़की केवल मुस्कुराई और बोली,"मैं धमकियों से कभी नहीं डरती तुम्हें जो करना है कमरे पर करना मैं भी देखूंगी तुम क्या और कैसे करते हो कहीं ऐसा ना हो तुम फुस्स पटाखा निकल जाओ। और मैं सारी रात पलंग पर करवटें ही बदलती रहूं अगर ऐसा हुआ तो याद रखना मुझे बुरा कोई नहीं होगा।"

"देखना मैं फुस्स पटाखा हूं या तेज रॉकेट!"इस बार युवक ने आंख मार कर कहा।

दोनों खिलखिला कर हंसने लगे। हंसते हुए दोनों बहुत सुंदर लग रहे थे ऐसा लगता था जैसे उनकी जोड़ी स्वर्ग से बनकर आई है सोनी महिवाल, हीर रांझा, लैला मजनू ,सीरी फरियाद की तरह उनकी जोड़ी लग रही थी।

उन्हें देखकर लगता था जैसे दोनों एक दूसरे के लिए ही बने हो।

अब कार उस नदी के पुल पर पहुंचने वाली थी।

दोनों कार के अंदर हल्की-फुल्की बातें करते हुए बड़े आराम से जा रहे थे कार की स्पीड थोड़ी बढ़ गई थी क्योंकि पुल थोड़ा ऊंचाई पर था। और फिर कार काफी स्पीड में उस पुल के ऊपर चढ़ी।

लड़की ने कार के एक्सीलेटर पर पैर का दबाव काफी बढ़ा रखा था जिसकी वजह से उसकी स्पीड काफी तेज हो गई थी और जब कार पुल पर पहुंची अचानक पता नहीं क्या हुआ कैसे हुआ लड़की का कार पर से नियंत्रण हट गया ऐसा जान पड़ा कार पुल पर बुरी तरह लहराई।

" अरे संभल कर!"युवक घबराकर जल्दी से बोला लड़की भी घबराई हुई थी कार को संभालने

की कोशिश कर रही थी पर कार इतनी बेकाबू हो गई थी कि संभाले नहीं संभल रही थी।

पूरे रोड पर किसी शराबी की तरह इधर उधर लहरा रही थी।

और अचानक!

कार पुल की मजबूत रेलिंग से जा टकराई।

भड़ाक!

*****

पुलिस थाना परिसर में बड़ी शांति पसरी थी। सुबह के वक्त। इक्का दुक्का पुलिस वाले ही इधर उधर आते जाते दिख रहे थे। फरियादी कोई नहीं दिख रहा था।

कह सकते हैं वहां पर पूर्ण रूप से सन्नाटा बिखरा पड़ा था बारिश होने की वजह से मिट्टी से एक भीनी भीनी खुशबू आ रही थी जो बड़ी ही खूबसूरत लग रही थी पर बता रही थी की कई दिनों बाद तगड़ी बारिश हुई है जिसने मिट्टी को काफी गहराई तक भिगोकर रख दिया है।

कुछ देर पहले ही बारिश हो कर हटी थी। बादल अभी भी छाए थे जिसकी वजह से ठीक ठाक ठंडक थी माहौल में।

बड़ा ही सुहावना मनभावन मौसम था कई दिनों बाद आज बारिश हुई थी शायद इसलिए कि पहाड़ों पर बारिश अक्सर होती रहती है कब बादल आएं और बारिश होने लगे इसका कोई भी किसी को भी पता नहीं रहता पर जब आती है तब अच्छी खासी बारिश आती है।

थाने के अंदर बरामदे में कई पुलिस वाले फाइबर की लाल रंग की कुर्सियों पर बैठे बातचीत में मशगूल थे।

इस समय कोई छोटा बड़ा नहीं था। क्या सिपाही क्या थानेदार सब बराबर थे। उन पुलिस वालों में इंस्पेक्टर , सब इंस्पेक्टर सिपाही सभी लोग थे।

" इस बार की बारिश लगता है तगड़ी पड़ेगी।" एक सिपाही ने अपने दोनों हाथों को आपस में रगड़ते हुए कहा। ऐसा लगा जैसे उसे ठंडे माहौल में सर्दी लग रही हो हालांकि यह बात सही भी थी बारिश ने माहौल को काफी ठंडा कर दिया था।

" जब अभी से इतनी बारिश है तो आगे तो और ज्यादा तो पड़ेगी ही।" दूसरा सिपाही बोला।

" वैसे बारिश में सर्दी का अहसास है। बारिश जितनी तगड़ी पड़ेगी उतना ही मजा है!" एक मजाकिया स्वभाव के लिए फेमस राजपाल यादव का डुप्लीकेट 50 वर्षीय सिपाही मजाकिया लहजे में बोला।

"हां सही कहा रामलाल जी लेकिन आपको तो फिर भी मजा नहीं आएगा बल्कि सर्दी में तो आप परेशान हो जाएंगे। वैसे अगर आप भी सर्दी का मजा लेना चाहते हैं तो शादी कर ही लीजिए।"

रामलाल की उम्र 50 साल थी सर पर बाल भी बेहद कम थे देखने में 50 साल से भी ज्यादा उम्र का लगता था पर अभी तक अविवाहित था पर शादी करना चाहता था ।

उसकी शादी करने की बड़ी इच्छा थी पर पता नहीं क्यों उसकी शादी नहीं हो रही थी। अक्सर उसके सहयोगी उसका ऐसी बात पर मजाक बनाते रहते थे उसे लगता था कि वह लोग उसके हमदर्दी जाता रहे हैं ,बड़ा बुद्धू किस्म का था।

"अब इस उम्र में शादी कौन करेगा मुझसे?"हालांकि उसे भी इस बात का एहसास था शायद इसीलिए बड़े ही मायूस होकर दुखी स्वर में उसने कहा ऐसा लगा जैसे उसका दिल टूट चुका हो और उसके मन में अब उम्मीद की कोई किरण बची हो।

जब भी मौसम इस तरह का होता था कि थाना परिसर में कोई फरियादी नहीं दिखाई देता था तो वह सब अक्सर इसी तरह आसपास बैठकर एक दूसरे से मजाक किया करते थे।

"अभी आपकी उम्र ही क्या है ! केवल 50 साल हुई है बॉलीवुड में देखो 50-55 ,60 साल के कई एक्टर है जो कितने हैंडसम लगते हैं और अभी भी शादी कर रहे हैं तो आप क्यों नहीं कर सकते बिल्कुल कर सकते हैं!"एक सिपाही ने तुरंत उसका मनोबल बढ़ाने के लिए लेकिन व्यंग्यात्मक लहजे में कहा पर वह बुद्धू समझ नहीं पाया।

"अरे वो बॉलीवुड एक्टर है और कहां मै एक मामूली सा सिपाही!"रामलाल के चेहरे पर मायूसी छाती दिखाई दी। ,"ना तो मैं बॉलीवुड एक्टर हूं और ना ही मैं हैंडसम हूं इतना तो मुझे पता है!"

"आप क्या किसी बॉलीवुड एक्टर से कम है.. क्यों वीजे सर? मैंने ठीक कहा ना ,रामलाल जी किसी एक्टर से क्या कम लगते हैं!"सिपाही ने बीच में बैठे अपने थानेदार से यानी इंस्पेक्टर से कहा और वह समझ गया कि सिपाही मजे ले रहा था ।

अक्सर सभी लोग रामलाल के यूं ही मजे लेते रहते थे और उसे एहसास भी नहीं हो पाता था।

"हां बिल्कुल अपने रामलाल जी किसी बॉलीवुड एक्टर से क्या कम है। मैं तो कहता हूं उनसे भी ज्यादा हैंडसम है!"उस थाने का थानेदार विजय था। उसकी उम्र अभी 35 वर्ष थी देखने में बहुत ही हैंडसम लगता था उसका कसरती बदन सुंदर मुखड़ा काले बाल और तकरीबन 6 फुट की लंबाई उसे बहुत ही बेहतरीन लुक प्रदान करते थे। उसके गोरे चेहरे पर हल्की कजी आंखे बड़ी ही खूबसूरत लगती थी । उसे और हैंडसम बनाती थीं।

पर वह रामलाल की तरह अभी भी अविवाहित था ना जाने क्यों उसने अभी तक शादी नहीं की थी।

वह अपने विजय नाम को हमेशा वीजे लिखता था। उसे यही नाम बड़ा आकर्षक लगता था हालांकि विजय नाम भी बढ़िया था पर पता नहीं क्यों वह अपने नाम को हमेशा वीजे लिखता था । उसकी फेसबुक इंस्टाग्राम व्हाट्सएप लगभग सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उसका नाम वीजे ही था।

और लगभग सब इस बात से परिचित थे।

" आप लोग मुझसे इस बारे में कई बार कह चुके हैं अब तो मुझे भी लगता है कि सोचना ही पड़ेगा!"जब सिपाहियों के साथ उसके थानेदार ने भी उसकी बड़ाई की तो बुद्धू सोचने पर मजबूर हो गया और सच में गंभीर स्वर में बोला।

"हां बिल्कुल रामलाल जी सोचिए सोचिए और जल्दी सोचिए ताकि आगे आने वाली सर्दी खाली न जाए! वैसे भी शादीशुदा लाइफ का मजा दो सर्दी में भी आता है बल्कि और बढ़ जाता है दूसरे आपके पास टाइम भी काम है इसलिए जितनी जल्दी सोचेंगे उतना ही बढ़िया रहेगा।"

"पर मैं सोचता हूं कि मुझसे कौन करेगा शादी?"रामलाल ने बड़े ही मायूस स्वर में कहा।

"फिर वही बात । आपमें कमी ही क्या है अच्छा खासा कमाते हैं देखने में भी बढ़िया लगते हैं झटपट कर डालिए शादी अब ज्यादा सोचिए मत।"

रामलाल सच में गंभीर होकर सोचने लगा बाकी सिपाही एक दूसरे की तरफ देखकर मुस्कुराई उनका थानेदार इंस्पेक्टर विजय भी मुस्कुरा रहा था।

तभी वहां एक 13 साल का लड़का आया। उसने उसे समय साधारण सा पेंट और फुल शर्ट पहन रखी थी देखने में बहुत ही दुबला पतला पर और गरीब जान पड़ता था । उसने सबको कुल्हड़ में चाय सर्व की और चला गया जिसका आर्डर उन्होंने अभी कुछ देर पहले ही दिया था।

थाने के बाहर ही वह छोटी सी चाय की दुकान थी वहीं से थाने में अक्सर चाय का आर्डर पूरा किया जाता था मौसम खुशनुमा था इसलिए इंस्पेक्टर विजय के कहने पर एक सिपाही कुछ देर पहले ही चाय का ऑर्डर देकर आया था।

अब सब धीरे-धीरे चाय की चुस्की भी लेने लगे थे और साथ-साथ रामलाल से मजाक भी चल रहा था पर वह इतना बेवकूफ था कि समझ नहीं पा रहा था।

अभी चाय खत्म ही हुई थी कि तभी परिसर में एक महंगी लंबी कार आकर रुकी। सबका ध्यान उस कार की तरफ गया।

वह महंगी ब्लैक कलर की तकरीबन 36 लाख की सफारी कार थी। कार को ही देखकर लगता था कि उसमें कोई अमीर शख्स सवार है शायद इसीलिए अब पुलिस वालों में खामोशी पसर गई थी सबका ध्यान इस कार की तरफ लगा हुआ था।

सफारी कार परिसर में आकर एक जगह रुकी और उसमें से पहले ड्राइवर उतरा और फिर उसने जल्दी से साइड वाली खिड़की खोली ।

तभी दूसरी साइड की भी खिड़की खुली। और फिर कार से एक एक बड़ा ही रईस और संभ्रांत ,अमीर टाइप का बुजुर्ग आदमी और महिला उतरे। आदमी की उम्र 65 साल के करीब थी पर काफी स्वस्थ दुरुस्त था हट्टा कट्टा था ,सर के बाल जरूर सफेद होने लगे थे काफी हद तक पर शरीर अभी काफी जवान था इतना कि वह बुजुर्ग नहीं लगता था। दूसरी ओर महिला जिसकी उम्र 50 55 साल थी देखने में बूढ़ी नजर आती थी ।

चलते वक्त वह बड़े आराम से चलती थी लगता था जैसे उसके घुटनों में दर्द रहता हो क्योंकि वह बड़ी ही संभाल संभाल कर चलती थी पर उन दोनों के ही महंगे कपड़े थे।

जहां एक और उस स्त्री के तन पर भी महंगी साड़ी थी जिसमें वह गोरी चिट्ठी संभ्रांत महिला लग रही थी। वही उसके साथ आते बुजुर्ग के तन पर भी महंगा सूट था और वह भी देखने में ही रईस जान पड़ता था। उनकी अमीरी की झलक महंगी कार से आए थे तो स्पष्ट था अमीर है, रईस है।

वे कार से उतरकर सीधे उस जगह पर धीरे धीरे जहां पर सभी पुलिस वाले बैठे थे, आ गए।

पुलिस वाले भी बस उनकी ओर ही देखे जा रहे थे और जब वे नजदीक पहुंचे तो रईस व्यक्ति ने बड़े ही रोब दार आवाज में कहा,"मुझे इंस्पेक्टर से मिलना है!"

सिपाहियों ने अपने इंस्पेक्टर विजय की ओर देखा। विजय तुरंत उन्हें लेकर अपने केबिन में आ गया। वह अपनी कुर्सी पर बैठा दो खाली पड़ी विजिटिंग चेयर पर बैठने का इशारा किया ।

"आप लोग पहले बैठिए प्लीज।,"उसने बड़े ही शालीनता से कहा इस सलीनता के पीछे एक वजह यह भी थी कि वह जान चुका था कि उसके सामने जो दो व्यक्ति खड़े हैं वह रईस है कोई साधारण व्यक्ति होता तो शायद वह उसे इस टोन में बैठने के लिए नहीं कहता। पुलिस वाले तो वैसे भी इस बात के लिए बदनाम है कि वह चेहरा देखकर बात करते हैं जिस चेहरे पर सोने की परत होती है उसके आगे पुलिस वाले दब जाते हैं और जिस चेहरे पर गरीबी झलक रही होती है उस पर पेशाब कर देते हैं, थूक देते हैं।

इसीलिए जहां अमीर उसकी छाती पर चढ़कर बैठकर बात करता है गरीब दुम दबा कर सिमट कर डर डर कर एक तरफ खड़ा हो जाता है। ऐसे निजाम को क्या कहें पर यह हकीकत है।

बुजुर्ग दंपति कुर्सियों पर विराजमान हो गए। कुछ पल वहां शांति में गुजरे दोनों ही पक्ष एक दूसरे की ओर देखते रहे शायद इंतजार कर रहे थे की कौन पहले बोलेगा।

" मैं ही यहां का इंस्पेक्टर हूं आप जान भी गए होंगे। अब बताइए आपको मुझसे क्या बात करनी है!"आखिरकार इंस्पेक्टर को ही बोलना पड़ा पूछना पड़ा।

"पहले मैं अपने बारे में बता देता हूं।" रईस आदमी कुर्सी पर एकदम तन कर बैठा था सीधा। इंस्पेक्टर विजय की बात सुनकर उसने उसकी बात को इग्नोर करते हुए अपनी बात बड़ी दमदार ढंग से कही। उसके कहने का अंदाज ऐसा था जैसे पूरी दुनिया का मालिक हो।

"ठीक है बताइए!"विजय ने उसकी और ध्यान से देखा फिर पता नहीं क्या सोच कर आराम से बोला। वह समझ गया उसके सामने जो बैठा है उसमें अपनी अमीरी की दौलत की बहुत अकड़ है और जैसे वह छुपाना भी नहीं चाहता था।

अक्सर ऐसे रईस जादो से उसका सामना होता रहता था इसलिए उनकी हरकतों से अच्छी तरह परिचित था और हर बार की तरह उनकी बातें आराम से सुनता था अमीरों से बैर लेकर किसका भला हुआ है किसी का नहीं वह इसी सिद्धांत पर काम करता था शायद।

"मेरा नाम शिव शंकर है । आपने शिव शंकर ट्रांसपोर्ट कंपनी का नाम तो सुना ही होगा.. राजनगर शहर में बच्चा-बच्चा जानता है!"शिव शंकर नामक व्यक्ति के स्वर में बड़ी अकड़ थी शायद उसे अपने अमीर होने पर बहुत घमंड था। यह बात उसके कहने के अंदर से ही झलक रही थी और वह ऐसे कह रहा था जैसे पूरे राजनगर का सबसे बड़ा ट्रांसपोर्टर हो। हो भी सकता है पर शिलांग वाले को क्या पता राजनगर का सबसे बड़ा ट्रांसपोर्टर कौन है विजय

उसकी बात सुनकर मन ही मन मुस्कुराया पर उसने अपनी मुस्कुराहट को वहां जाहिर नहीं होने दिया और गंभीर स्वर ने ही कहा।

" यह तो शिलांग है। यहां पर कैसे पता होगा आपके शिव शंकर टांसपोर्ट के बारे हैं। हां यह जरूर हो सकता है कि राजनगर में इस बारे में बच्चे बच्चे को पता हो पर सैकड़ो किलोमीटर दूर यहां शिलांग में बच्चा तो क्या मुझे लगता है यहां की किसी बूढ़े को भी नहीं पता होगा।"

"मैंने राज नगर शहर कहा वैसे शिलांग में भी हमारा ट्रांसपोर्ट काम करता है तो यहां भी काफी लोगों को मालूम होगा!

शिव शंकर ट्रांसपोर्ट को लगभग सभी जानते हैं। बहुत बड़ी ट्रांसपोर्ट कंपनी है! सैकड़ों ट्रक है।"

" हूं। ठीक है।" विजय ने बात आगे बढ़ाने की वजह से उसकी बात को एक्सेप्ट किया।

वह जानता था जब तक सामने बैठे रईस जादे की बात को स्वीकार नहीं करेगा तब तक वो ऐसे ही अपनी शेखी बघारता रहेगा पर विजय को जानना था कि आखिरकार वह पुलिस के पास क्यों आया है उसका इंटरेस्ट मुद्दे की बात पर था इसीलिए उसने ज्यादा बहस ना करते हुए उसकी बात को एक्सेप्ट कर लिया तब जाकर शिव शंकर के चेहरे पर संतुष्टि के भाव आए उसने साफ देखा था।

"मैं उसका मालिक हूं!" इस बार शिव शंकर की अकड़ और बढ़ गई यह उसके बैठने और बोलने से ही लग रहा था शुरू से ही।

" ओह अच्छा।"विजय ने कहा पर ऐसा नहीं लगा कि जैसे उसकी अमीरी का उस पर कोई प्रभाव पड़ा हो । वैसे भी विजय अलग किस्म का इंसान और इंस्पेक्टर था। वह स्वाभिमान से जीने वाला बंदा था। ईमानदार था ,जांबाज था, देश भक्त था और सबसे बड़ी बात किसी भी गलत के सामने कभी नहीं झुकता था । वह चाहे कितनी बड़ी ही तोप क्यों ना हो।

यह बात शायद शिव शंकर नहीं जानता था। इसीलिए उसने अपनी अमीरी झाड़ने की कोशिश की पर विजय का उसपर कोई असर नहीं होता जान पड़ा।

" मेरी ट्रांसपोर्ट कंपनी राजनगर की सबसे बड़ी ट्रांसपोर्ट कंपनी है जिसमें सैकड़ों ट्रक है। रोज का लाखों करोड़ों का माल टर्नओवर होता है । इससे आप समझ सकते हैं की कितनी अच्छी खासी कमाई होती होगी। एक तरह से कह सकते हैं कि हम करोड़पति व्यक्ति है।"

शिव शंकर एक ऐसा व्यक्ति जान पड़ता था जिसे अपनी रहीसी की अमीरी की बातें जब जाहिर करना बहुत ही पसंद था भले ही मामला कितना भी गंभीर क्यों ना हो जब तक वह अपनी रईसी के बारे में सबको बता नहीं देता था उसे चैन नहीं मिलता था पर हकीकत यह थी कि राजनगर में उसका एक ठीक-ठाक ट्रांसपोर्ट का काम था जिसमें 30, 40 ट्रक थे और इसमें कोई शक नहीं कि वह करोड़पति आदमी था पर जितना वह फेंकता था उसे सिर्फ उसकी डींगे मारना ही कह सकते हैं।

जहां उसकी बातों से इंस्पेक्टर विजय को इरीटेशन होने लगी ,वहीं उसके साथ बैठी उसकी बुजुर्ग पत्नी को भी शायद अपने पति की बातों से इरिटेशन हो रही थी उसके चेहरे पर गुस्सा था पर वह कह नहीं पा रही थी अपने माथे को बीच-बीच में उंगलियों से रगड़ रही थी ।

विजय ने एक बार उसकी ओर देखा और उसकी हालत का आकलन कर लिया।

महिला बेचैनी से पहलू बदल रही थी।

चेहरे पर दुख और गुस्से के मिले जुले भाव थे। वह अपने पति की ओर रह रह कर देख रही थी और उसी से नाराज जान पड़ती थी। विजय ने एक नजर उसकी और देखा । वह समझ गया कि पति के बड़बोलेपन से न सिर्फ पूरे उसे परेशानी हो रही है बल्कि उसकी बीवी भी परेशान है पता नहीं क्या सोचकर वह मन ही मन मुस्कुराया और फिर धीरे से बोल।

" जी बिल्कुल। इसमें कोई शक नहीं है । वैसे क्या आप यही सब यहां बताने के लिए आए हैं!"अब शायद उसका भी धैर्य जवाब देने लगा था फिर भी उसने अपने गुस्से को जाहिर नहीं होने दिया बल्कि बड़े ही आराम से अपनी बात रखी।

शिव शंकर पहली बार हड़बड़ाया।

वह सोचता था कि शायद उसके अमीरी का काफी प्रभाव विजय पर पड़ेगा और वह उसकी हां हजूरी करने लगेगा पर विजय ने ऐसा कुछ नहीं किया बल्कि सपाट लहजे में मुद्दे की बात पूछी।

कुछ पल के लिए लगा वो शिव शंकर के चेहरे पर नाराजगी के भाव है और वह गुस्से में कुछ कहने वाला है पर तभी।

" इंस्पेक्टर सही कह रहा है।"शिव शंकर कुछ कहता इससे पहले ही उसकी पत्नी ने भी विजय का समर्थन किया और लगभग नाराज होते हुए बोली,"जिस काम के लिए हम यहां आए हैं वह बोलिए। हमारा ट्रांसपोर्ट राजनगर का सबसे बड़ा ट्रांसपोर्ट है हमारे पास बहुत दौलत है इस बात से क्या लेना देना मुद्दे की बात करो।"शिव शंकर जब से आया था तब से अपनी रईसी ही झाड़ रहा था ।

यह उसकी आदत थी खुद को जाहिर करने की पर उसकी बीवी कुछ देर तो खामोश बैठी उसकी बातें सुनती रही पर अंदर ही अंदर ऐसा लग रहा था जैसे अपने पति से खुद ही नाराज है बल्कि गुस्से में उबल रही है पर कंट्रोल किए हुए थे पर आखिर कब तक आखिर कब तक कंट्रोल करती ज्वालामुखी कभी ना कभी तो फटना ही होता है पर फिर भी उसने खुद पर काफी कंट्रोल रखा जो दिखाता था कि वह शिव शंकर की दबाव में रहती है। और काफी सहनशील है।

उसे बहुत बुरा लगा शायद पर न जाने क्या सोचकर गुस्से का कड़वा घूंट पी कर रह गया और बेचैनी में पहलू बदलकर गंभीर स्वर में बोला," मेरा बेटा करन और उसकी पत्नी नीलम का कुछ पता नहीं चल रहा।"आखिरकार उसने मुद्दे की बात की जिसके लिए वह थाने आया था।

" अरे क्या हुआ.. कब से पता नहीं चल रहा।" विजय की अब आंखे सिकुड़ी। वह सम्भल कर बैठा। हालांकि उसे शुरू से ही लग रहा था कि मामला कुछ गंभीर है पर इतना गंभीर होगा उसने सोचा नहीं था।

" 4 दिन हो गए।"

" 4 दिन हो गए उन्हें गायब हुए और आप अब हमारे पास आ रहे हैं!"विजय को घोर आश्चर्य हुआ बेटा और बहू 4 दिन से गायब हैं और पिता अब पुलिस को इन्फॉर्म कर रहा है ऊपर से

थाने में आकर इस बारे में बात करने से पहले अपनी अमीरी झाड़ना जरूरी समझता था कैसा बाप है?????

विजय को बड़ी हैरत हुई अपने सामने बैठे रईस की बात सुनकर। उसके चेहरे पर हल्की नाराजगी के भाव भी दिख रहे थे।

लेकिन अचानक उसे कुछ याद आया तो उसने जल्दी से पूछा,"आपने अभी कहा था कि आप राजनगर के एक बड़े ट्रांसपोर्टर हैं पर आप अपनी बेटी और बहू के गायब होने की खबर यहां शिलांग में क्यों दर्ज कर रहे हैं?"

"बात दरअसल इंस्पेक्टर यह है कि मेरे लड़के की शादी अभी एक हफ्ते पहले हुई थी नीलम से और शादी के दो दिन बाद ही वे दोनों हनीमून मनाने शिलांग हिल स्टेशन चले आए थे। हमारी उनसे फोन पर रोज ही बात होती थी पर कल दोपहर से उनसे कोई बात नहीं हो पा रही है उन दोनों के फोन स्विच ऑफ आ रहे हैं।"शुरू में अपनी अमीरी झाड़ने वाले शिव शंकर के चेहरे पर अब सच में परेशानी और उलझन के भाव दिखाई दे रहे थे अब वह सच में दुखी पिता दिखाई पड़ता था लगता था उसे अपने बेटे और बहू की सच में चिंता है।

" हूं। यानि उन दोनों का कल दोपहर से पता नहीं । उन दोनों का फोन नहीं लग रहा है स्विच ऑफ आ रहा है पर आपने पहले क्यों कहा कि 4 दिन से गायब।"

"वह मुझे ध्यान नहीं रहा शायद उन दोनों के गायब होने की वजह से मेरा दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा है इसलिए!"

विजय सिचुएशन को समझता था जानता था कि बेटे और बहू के गायब होने से किसी भी मां-बाप के दिमाग का तार ढीला हो सकता है और गलती हो सकती है इसीलिए उसने उस बात को इग्नोर कर दिया।

हालांकि ऐसी गलती होनी नहीं चाहिए।

"आपका बेटा आपकी बात से लगता है कि यही शिलांग में आया था?"विजय ने कुछ सोच कर पूछा। वे दोनों राजनगर के निवासी थे और इस समय शिलांग के पुलिस स्टेशन में बैठे थे इसी सी विजय ने अंदाजा लगाया।

" हां।"

" कल दोपहर के अलावा उससे फोन पर बात होती थी आपकी?" विजय ने पूछा।

वह हिचकिचाया।

फिर झिझकते हुए बोला," मेरी तो एक दो बार ही बात हुई थी क्योंकि मैं बिज़नेस में दिन भर उलझा रहता हूं। मेरी पत्नी की बात रोज होती थी बिना नागा किया। यही मुझे उन दोनों की खबर देती रहती थी। कल शाम को ही मेरी पत्नी ने ही बताया कि उन दोनों के नंबर नहीं लग रहे। दोनों के ही फोन स्विच ऑफ आ रहे हैं। पहले हमें लगा कि शायद कुछ प्रॉब्लम होगी नेटवर्क वगैरह में पर आज सुबह भी फोन बंद आ रहा है तो हमें थोड़ी घबराहट होने लगी हमने राजनगर की पुलिस से संपर्क किया तो उन्होंने शिलांग पुलिस से संपर्क करने को बोला था इसीलिए हम प्लेन से शीघ्र ही यहां आ गए। वजह क्या हो सकती है हम दोनों ही नहीं समझ

पा रहे थे कि क्या बात है। मेरी बीबी का तो रो रो कर बुरा हाल है सुबह से । अब आप ही कुछ कीजिए। कैसे भी पता लगाए कि मेरे बेटे और बहू किस हाल में है। कहां है?"

"हां इंस्पेक्टर! यह सही कह रहे है । मेरी मेरे बेटे और बहू दोनों से रोज बात होती थी । दिन में चार चार बार बात होती थी पर कल दोपहर के बाद रात में मैने बात करने की कोशिश की तो बात नहीं हो पाई। मैने भी ध्यान नहीं दिया। पर आज मैंने सुबह जब बात करने की कोशिश की तो दोनों के ही फोन स्विच ऑफ आ रहे थे । मैंने दिन में कई बार ट्राई किया पर बात नहीं हो पाई आप कुछ कीजिए इंस्पेक्टर। मेरा दिल तो पता नहीं क्या सोच कर शायद किसी अनिष्ट की आशंका की वजह से डरा हुआ है। किसी काम में मन नहीं लग रहा। ," उर्मिला शिव शंकर की पत्नी रोने को आतुर जान पड़ी,"कहीं मेरे बेटे और बहू के साथ सोनम राजा रघुवंशी वाला केस न हो गया हो!"

"अरे ऐसा मत सोचिए। ,"विजय ने तुरंत उनकी बात काटी शायद इसलिए कहीं वे भी ज्यादा परेशान ना हो इंसान की सोच पर ही उसका दुख और सुख निर्भर करता है वह चाहता था कि अभी सब कुछ पॉजिटिव सोचा जाए सामने बैठे दोनों बुजुर्ग दंपत्ति काफी दुखी लग रहे थे पहले से ही पर वह भी उनकी बात का समर्थन करने लगता तो क्या होता है उनका दुख और बढ़ जाता है जो वह भी नहीं चाहता था या हर भला, समझदार इंसान नहीं चाहता होगा।

फिर एक केस घटा है लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं की हर बार बेटे और बहू के गायब होने पर सोनम राजा रघुवंशी वाला केस ही हो मामला कुछ भी हो सकता है इसी बात को ध्यान में रखते हुए शायद उसने बुजुर्ग दंपत्ति का साहस बनाने के लिए आराम से कहा ,"हो सकता है नेट की प्रॉब्लम के अतिरिक्त उनके फोन डिस्चार्ज हो इसलिए बात नहीं हो पा रही हो। वैसे भी हिल स्टेशन पर ऐसा होना कोई बड़ी बात नहीं है। कभी नेटवर्क की समस्या कभी मौसम खराब। और कभी बैटरी डिस्चार्ज।

मेरे ख्याल से तो आपको थोड़ा वेट करना चाहिए। अभी से यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि आपके बेटे और बहू के साथ कुछ अनिष्ट हुआ हो उनके साथ सोनम राजा रघुवंशी वाला कैसे हुआ है क्योंकि अगर पहले से ही हम लोग नेगेटिव सोचेंगे तो इस दिशा में बढ़ते चले जाएंगे और हकीकत क्या है पता नहीं चलेगी जब तक सच्चाई पता ना चल जाए हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए हमें पॉजिटिव रहना चाहिए सर।"

" वो तो ठीक है लेकिन दोनों के फोन एक साथ स्विच ऑफ हो गए? दोनों के फोन की बैटरी एक साथ डिस्चार्ज हो गई?"

विजय पहले तो हिचकिचाया फिर धीरे से बोला,"हो तो सकता है ऐसा फिर ऐसा कोई नियम भी नहीं है कि दो लोगों के फोन एक साथ स्विच ऑफ नहीं हो सकते! उनकी बैटरी एक साथ डिस्चार्ज नहीं हो सकती यह कोई आश्चर्यजनक याद रखने वाली बहुत बड़ी घटना तो नहीं है जो इस बात के लिए चिंतित हुआ जाए मेरी बात मानिए अभी कुछ भी गलत मत सोचिए प्लीज।"

"वह जो भी हो आप प्लीज दोनों का पता लगाइए जब बात क्लियर हो जाएगी तभी मुझे तसल्ली मिलेगी। "विजय उन दोनों को साहस बनाने की भरपूर कोशिश कर रहा था पर उन्हें तसल्ली नहीं हो रही थी कैसे होती वे दोनों मां-बाप थे उनका इकलौता बेटा और बहू उनकी नजर में संदिग्ध परिस्थितियों में थे 24 घंटे से ऊपर हो गए थे जिनके बारे में अभी तक कुछ

भी पता नहीं चल रहा था।

विजय कुछ देर गंभीरता से सोचने लगा उन दोनों की नजरे उस पर ही लगी थी अचानक।

"इसके लिए आप चाहे तो हम अलग से भी आपको पैसे दे सकतेहैं!" बीच में शिव शंकर ने फिर से अमीरी दिखाने की कोशिश की। विजय ने शिव शंकर की ओर देखा पर इस बार उसकी नजरों में सच में घुसा था और उसे गुस्से को देखकर एक बार तो शिव शंकर में घबरा सा गया।

"आप अमीर आदमी हैं पैसे देने अफोर्ड कर सकते हैं पर शायद आप मेरे बारे में नहीं जानते कि मैं पैसे लेना.. हराम का पैसा लेना अफोर्ड नहीं कर सकता और फिर हम पुलिस वालों की तो ड्यूटी है सबकी मदद करना तो आपकी भी मदद करेंगे उसमें पैसे की कोई बात नहीं।," फिर भी उसने अपने गुस्से पर भरपूर कंट्रोल करते हुए बड़े आराम से उनसे कहा,"वैसे आपने आते ही अपने ट्रांसपोर्ट कंपनी और पैसे के बारे में बताना शुरू किया था उसका क्या मकसद था.. क्या यह मकसद था कि आपकी अमीरी देखकर मैं प्रभाव में आ जाऊंगा और आपकी हर बात चाहे वह गलत है या सही मानने पर मजबूर हो जाऊंगा!"

शिव शंकर ने बड़े ही अजीब नजरों से उसे देखा। शायद उसे ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी उसे लगता था कि हर पुलिस वाला रिश्वतखोर होता है उसके पैसों की बात सुनकर सच में वह उसके सामने एकदम बिछने लगेगा पर विजय अन्य पुलिस वालों से अलग है यह उसके एक्शन से भी लग रहा था।

" इस थाने में मेरे रहते हुए कोई किसी से कोई रिश्वत नहीं लेता। किसी अमीर गरीब में कोई फर्क नहीं करता। हमें यह वर्दी सब की सेवा के लिए दी गई है सो बिना भेदभाव के हम उसके काम के लिए हमेशा तत्पर रहते.. तो आगे से ध्यान रहे आप काम जो भी हो वह बताएं अपनी अमीरी का प्रभाव न डाले।" विजय ने बेहद सख्त लहजे में कहा । इतनी बात करते-करते वह सच में उत्तेजित होने लगा था उसे स्थिति का भान हुआ वहां बैठे लोगों के बेटे और बहू गायब हैं तो वह फिर से ठंडा पड़ गया।

"मेरे कहने का मतलब सिर्फ यह है कि मैं एक रिश्वतखोर पुलिस वाला नहीं हूं मैंने जब यह वर्दी पहनी थी तब कसम खाई थी की अपना काम पूरी ईमानदारी से करूंगा कभी किसी में फर्क नहीं करूंगा कि कौन गरीब है कौन अमीर है मुझे किसका काम करना चाहिए और किसका नहीं मेरी जिम्मेदारी सब की सेवा करना है आपके बेटे और बहू गायब है मुझे इस बात का भारी दुख है, तकलीफ है। इस बात की अपनी तरफ से खोजबीन में पूरी दम लगाकर करूंगा उसके लिए मुझे अलग से पैसे देने की कोई जरूरत नहीं है इस बात के लिए मुझे सरकार पैसे देती है! और यह मेरी ड्यूटी है।"

वह विजय को कुछ देर देखता रहा फिर बड़े ही प्रशंसनीय स्वर में, जबकि वह उसे समय भारी दुख और तकलीफ में था फिर भी उससे बोला,"जैसा आप कह रहे हैं अगर वैसा है तो सच में मुझे हैरत है कि पुलिस में आप जैसे लोग भी होते हैं! हकीकत यह है कि मेरा वास्ता आज तक ऐसे पुलिस वालों से नहीं पड़ा है शायद इसीलिए मेरी मनोदशा, मेरी सोच ऐसी बन गई है

कि मुझे हर पुलिस वाला करप्ट बेईमान रिश्वतखोर ही नजर आता है।

लेकिन आज तुमसे मिलकर तुम्हें देखकर तुम्हारे विचार सुनकर मुझे लगता है मैं गलत हूं अगर तुम्हारे मन को ठेस पहुंची है तो मैं माफी चाहता हूं। "फिर उसने अपनी पत्नी उर्मिला की तरह देखा जो उसे ही देख रही थी।

"होते हैं जी ,बिल्कुल होते हैं पर शायद आपका हम जैसों से वास्ता नहीं पड़ा। पर आपको माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि आपकी बात भी इतनी ही सच्ची है जितना कि मेरा ईमानदार होना । पुलिस में कुछ ऐसे करप्ट लोग हैं जिन्होंने पूरे पुलिस डिपार्टमेंट को बदनाम करके रखा है अगर आपने मुझे वैसा ही समझा था उसमें आपकी कोई गलती नहीं। खैर ,आप अपने बेटे और बहू की डीटेल्स नाम ,तस्वीर वगैरह अगर उपलब्ध हो तो सब कुछ हमें दीजिए । हम आगे की कार्रवाई आगे बढ़ाते हैं।"

" ठीक है।" शिव शंकर बोला।

उन्होंने विजय को जानकारी उपलब्ध कराई। और बेटे बहू की मिसिंग रिपोर्ट दर्ज कराई। तत्पश्चात वहां से रुखसत होने के लिए उठ गए ।

“आप राजनगर से आए हैं यहां किसी होटल में ठहरे होंगे उसका भी एड्रेस दे दीजिए बाई चांस मिलने की जरूरत हुई तो आसानी से आपसे मिल लूंगा। हालांकि आपने अपना फोन नंबर तो आपने दे ही दिया है पर फिर भी फेस टू फेस मिलना हुआ तो..।”जब भी दोनों जाने लगे तो विजय को अचानक याद आया और उसने खड़े हो कर पूछा।

शिव शंकर ने बिना किसी सोच विचार कि उसे होटल का पता बता दिया जिसमें वह अपनी पत्नी के साथ ठहरा हुआ था। अभी शिलांग में कुछ दिनों रहना था क्योंकि जिस प्रकार का मामला उपजा था उसमें पता नहीं कितने दिन अभी लगता इसी बात को ध्यान में रखते हुए शिव शंकर ने शिलांग में आते ही सबसे पहले होटल बुक कर लिया था।

उनके जाने के बाद फिर से पुलिस वालों का जमावड़ा लग गया।

" शिव शंकर काफी दौलत वाला इंसान है सर! कहीं इनके बेटे बहु को किसी ने पैसे की खातिर तो नहीं किडनैप कर लिया।" एक सिपाही ने शंका व्यक्त की। विजय ने वहां बैठकर एक सिपाही के पूछने पर की आखिर वह लोग किस लिए आए थे सारा मामला सबके सामने रखा तो इस सिपाही ने यह बात कही थी।

" ऐसा होता तो पैसे की डिमांड अब तक आ जानी चाहिए थी। पर नहीं आई।" दूसरे सिपाही ने उसकी बात को बीच में काटकर अपना ज्ञान दिया।

" अभी वक्त ही कितना हुआ हैं। किडनैपर सही वक्त का वेट करते होंगे।"उसे सिपाही ने भी हार मानने को तैयार नहीं था अपना फिर से तर्क पेशकिया।

" अगर कल से फोन बंद आ रहे हैं तो लगता है कल ही उनका किडनैप हो गया। उस लिहाज से तो किडनैपर की तरफ से फोन आ आ जाना चाहिए था।"

" क्या पता फोन में बैटरी न हो?"

" दोनों के फोन की बैटरी एक साथ खत्म!"पहले वाले सिपाही ने व्यंग्य के लहजे में उसकी तरफ देखकर कहा पता नहीं उसकी मुस्कान में ऐसा क्या था कि दूसरा वाला सिपाही बुरी तरह चिढ़ गया।

" तो इसमें कौनसी बड़ी बात है। ऐसा हो सकता है फिर सर ने भी तो अभी बताया था कि पहाड़ी क्षेत्र में फोन का खराब हो जाना, नेटवर्क प्रॉब्लम होना आम बात है। और यह बात हम लोगों से ज्यादा अच्छी तरह कौन जानता होगा हम लोग तो इस पहाड़ी क्षेत्र में इस प्रॉब्लम से न जाने कब से प्रॉब्लम में है।"

" ठीक है पर सुबह तो यह प्रॉब्लम दूर हो जानी चाहिए थी। क्योंकि वे दोनों अमीर हैं तो अच्छे होटल में ठहरे होगे वहां तो फोन चार्ज करने की सुविधा भी होगी। फिर अगले दिन भी फोन क्यों न लगा?"

" मुझे ऐसा लगता है कि," इस बार रामलाल ने ज्ञान बिखेरा," बेटे और बहू किसी गांव में ठहरे होगे। वे शहर की भागा दौड़ी वाली लाइफ से ऊब गए होगे इसलिए हिल स्टेशन के किसी गांव में जाकर रुके होगे तभी फोन स्विच ऑफ आ रहे हैं क्योंकि वहां गांव में अच्छी सुविधाएं नहीं होती भले ही वहां प्राकृतिक सुंदरता कितनी ही हो।"

रामलाल ने पहली बार शायद जीवन में पहली बार सटीक बात की थी सब उसकी तरफ देखने लगे।

" मुझे भी रामलाल जी की बात सही लगती है," एक अन्य सिपाही ने समर्थन करते हुए कहा," कुछ साल पहले विराट कोहली ने भी अनुष्का के साथ अपनी शादी इटली के किसी गांव में यानी शांति भरे माहौल में की थी जाकर। तो हो सकता है कि बेटे और बहू शहर के शोर गुल से उभकर शिलांग में कहीं किसी छोटे से गांव में ठहरे हो।"

विजय शांत था। विचार मग्न बैठा था। जबकि बाकी के सब पुलिस वाले अपने अपने अनुमान लगाते जा रहे थे। और अनुमानों का क्या है वह जितना लगा उतना ही बढ़ते हैं फिलहाल विजय ने उन सबके बातचीत में खुद को इंवॉल्व नहीं किया था।

*****

दो दिन बीत गए।

इन दो दिनों में लोकल पुलिस ने शिव शंकर के द्वारा उपलब्ध जानकारी के हिसाब से खोजबीन जारी रखी पर हाथ कुछ भी नहीं लगा।

जैसे-जैसे समय बीत रहा था बूढ़े मां-बाप की चिंताएं बढ़ती जा रही थी हालांकि पुलिस अपनी तरफ से पूरा प्रयास कर रही थी पर उसके हाथ कुछ भी नहीं लग रहा था।

उन दोनों को लगा कि पुलिस शायद ढिलाई बरत रही है तब उन्होंने राजनगर पुलिस कमिश्नर

वी के सिंह जो शिव शंकर का अच्छा दोस्त भी था से बात की और मदद की गुहार लगाई। मामला चूंकि सीरियस था और कमिश्नर शिव शंकर का अच्छा दोस्त था उसने शिलांग के आला अधिकारियों से बात की अपने बेटे और बहू को खोजने का आग्रह किया और तब जाकर पुलिस और ज्यादा हरकत में आई।

शिलांग वैसे तो अपनी बारिश और घने जंगलों प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता था पर फिलहाल नव जोड़े की गुमशुदगी की वजह से मीडिया में जाना जा रहा था।

पुलिस पर आप काफी प्रेशर पड़ रहा था। पुलिस नव दंपति को हर एंगल से सोच विचार कर खोजबीन कर रही थी एक एंगल यह बनता था की लास्ट टाइम जिस इलाके में वे लोग थे और उसके बाद उनके फोन स्विच ऑफ हो गए थे उस इलाके में काफी लोकल गैंगस्टर सक्रिय थे जो अक्सर ऐसी वारदात करते थे किडनैपिंग की लोगों को पैसा हासिल कर सके इसके अलावा कई बार हत्याएं भी कर देते थे वह भाड़े के किराए के टट्टू थे।

कुछ ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के लोग भी उसे इलाके में काफी सक्रिय रहते थे इसीलिए पुलिस ने उस एरिया के जितने भी गुंडे मवाली थे सबको राउंड अप किया पूछताछ की पर किसी को कुछ भी पता नहीं था। कोई भी गायब हुए मियां और बीवी के बारे में कुछ भी नहीं बता रहा था पता नहीं उन्हें पता नहीं था या फिर वह कुछ ज्यादा ही मजबूत थे।

दूसरा तरीका था वह पहाड़ी इलाका था गहरी गहरी खाई छोटे-छोटे सकरी रोड थे एक आशा यह भी जताई जा सकती थी कि नवदंपति का एक्सीडेंट भी हो सकता है और वह किसी गहरी खाई में गिर सकते हैं इसलिए एनडीआरएफ की टीम भी खोजबीन में लगी हुई थी।

तीसरा पॉइंट था किसी ने उनका किडनैप किया हो सकता है फिरौती की देर सबेर कॉल आए पर फिलहाल उसकी कॉल तो अभी आई नहीं थी। इसलिए यह यह पॉइंट सबसे कमजोर माना जा रहा था पर इसे भी इग्नोर करना पूरी तरह से मुश्किल था।

पुलिस को खोजबीन करते हुए एक हफ्ता गुजर चुका था पर नव दंपति का अभी भी कुछ भी पता नहीं चल रहा था। मीडिया में लोगों में तरह-तरह की बातें उठ रही थी जितने मुंह उतनी बातें किसका-किसका मुंह पकड़ा जाता पर ज्यादातर लोग पुलिस को नकारा नाकाम बता रहे थे सबसे ज्यादा छिछालेदर तो पुलिस की ही हो रही थी क्योंकि वह एक हफ्ते से गायब नव दंपति के बारे में कुछ भी पता नहीं कर पा रही थी पुलिस खुद सोच रही थी कि आखिर उन दोनों को जमीन निगल गई या फिर आसमान ने अपने अंदर समाहित कर लिया।

इतने दिनों से बुजुर्ग दंपत्ति शिलांग में ही एक थ्री स्टार होटल में ठहरे हुए थे। और दो तीन दिन में थाने के चक्कर लगाते रहते थे इस उम्मीद से की शायद उनके बेटे और बहू का कुछ पता चले।

हालांकि अब उनके बेटे और बहू के गायब होने की खबर बर्निंग फायर इन द फॉरेस्ट बन चुकी थी। न्यूज चैनल, सोशल मीडिया के तमाम प्लेट फॉर्म पर खूब चर्चित हो रही थी। सब लोग तरह तरह के कयास लगाते जा रहे थे। पुलिस प्रशासन पर भी भारी दबाव था। पर शिलांग का पहाड़ी क्षेत्र था जहां गहरी गहरी खाई और हरियाली से भर पूर जंगल, ऊपर से बारिश का

मौसम पुलिस की खोजबीन में सबसे बड़ी बाधा बनी हुई थी।

मामला चूंकि एक बड़े उद्योगपति के बेटे और बहू के गायब होने की वजह से बर्निंग फायर इन द फॉरेस्ट बना हुआ था और ऊपर से सोशल मीडिया का, जनता का दबाव बढ़ता जा रहा था इसलिए राज्य के सीएम की भी नजर पूरे मामले पर थी। शायद इसलिए पुलिस ने खोजबीन का काम वार फुटेज पर और तेज शुरू किया था।

इस काम में पुलिस विभाग ने एस आई टी(विशेष जांच दल) का गठन किया। ड्रोन, डॉग स्क्वॉड और अन्य संसाधनों के जरिए खोजबीन में मदद ले रही थी।

SDRF (स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स),NDRF(नेशनल डिजास्टर रिस्पांस फोर्स) भी खोजबीन में जुटी हुई थी।

इसके अलावा पर्वतरोहियो की टीम , जिसे पर्वतों का अच्छा ज्ञान था और लोकल के लोग जो उसे पूरे इलाके को अच्छी तरह जानते थे उन सबकी मदद ली जा रही थी। मामला अब बहुत बढ़ चुका था पूरे देश की नजर इस मामले पर थी और वह शायद इसलिए क्योंकि कुछ दिनों पहले ऐसा ही एक केस और हो चुका था सोनम राजा रघुवंशी वाला। शायद इसीलिए पुलिस पर और अतिरिक्त दबाव था इसीलिए पुलिस अपनी तरफ से पूरा जोर लगाए हुए थे।

एक हफ्ता गुजर जाने के बाद भी सफलता का नतीजा वही था कि ढाक के तीन पात। सभी लोगों की बेचैनी बढ़ती जा रही थी किसी के समझ नहीं आ रहा था कि आखिर दोनों के साथ हुआ क्या।

****

आज नौवा दिन था सुबह के 11:00 रहे थे। इंस्पेक्टर विजय उस होटल में अभी अभी पहुंचा था जहां बुजुर्ग दंपत्ति ठहरे हुए थे। होटल का नाम था स्टार होटल। वह पहाड़ी एरिया का एकमात्र बेहतरीन और महंगा होटलथा । उसने रिस्पेशन पर जाकर उनके बारे में जानकारी प्राप्त की। और फिर उनके रूम के दरवाजे पर पहुंच गया। होटल के रूम के दरवाजे पर पहुंचकर वह कुछ देर खड़ा रहा फिर उसने बेल बजाई कुछ इंतजार किया पर दूसरी बार बेल बजाने ही वाला था कि तभी रूम का दरवाजा शिवशंकर ने खोला। बाहर पुलिस इंस्पेक्टर विजय को देखकर वह सोच में पड़ गया पर विजय तुरंत बोला,"मुझे आपसे थोड़ी बात करनी है!"

"ठीक है अंदर आओ कुछ सोच कर शिव शंकर ने कहा और उसे अंदर आने के लिए रास्ता देने के लिए एक तरफ खड़ा हो गया विजय अंदर हुआ तो उसने दरवाजा फिर से बंद कर लिया।

अब बुजुर्ग दंपत्ति पलंग पर बैठे थे और वह पलंग के बाजू में रखे एक सोफे पर बैठा था।

दोनों बुजुर्ग दंपति के चेहरे उतरे हुए थे होता भी क्यों नहीं जिनकी बेटे और बहू शादी के कुछ दिनों बाद ही इस तरह अचानक गायब हो गए थे और उनका पता नहीं चल रहा था उनका दुखी होना लाजिमी भी था पर इंस्पेक्टर को देखकर उनके चेहरे पर कुछ पल के लिए आशा की किरण दिखाई दी शायद उन्होंने सोचा कि वह उनके लिए खुशखबरी लाया हो।

इस समय वह भूल गए थे कि अगर ऐसी कोई खुशखबरी होती तो सोशल मीडिया के जरिए उन तक पहुंच चुकी होती अब तक पर शायद उन्होंने इस बारे में ध्यान नहीं दिया।

दोनों ही विजय की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे थे।

“मेरे बेटे और बहू के बारे में कुछ पता चला क्या?”दोनों ने लगभग एक साथ उससे पूछा उनका सवाल सुनकर वह कुछ पल खामोश बना रहा शायद सोच रहा था कि क्या जवाब दे पर जवाब तो देना ही था और इसीलिए हिचकिचाते हुए बोला,”अभी तो फिलहाल कुछ भी पता नहीं चला पर हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं आपने न्यूज़ के और सोशल मीडिया जरिए आपको पता ही होगा। आप बेफिक्र रहे हम उन्हें जल्द ही खोज लेंगे आप मुझ पर भरोसा रखें।"

दोनों के चेहरे उतर गए। इंस्पेक्टर विजय की आश्वासन के बावजूद भी उनके चेहरे पर कोई खुशी की झलक

कुछ देर वहां खामोशी छाई रही तीनों लोग ही खड़े थे।

वह वहां पड़े एक सोफे पर बैठ गया। दोनों बुजुर्ग दंपत्ति उसके सामने पड़े पलंग पर विराजमान हो गए थे।

“ मेरे बेटे और बहू की मिसिंग रिपोर्ट दर्ज कराए काफी दिन हो गए पर अभी तक उनके बारे में कुछ भी पता नहीं चला क्या कर रहे हैं आप लोग?”शिव शंकर ने विजय की ओर थोड़े गुस्से में देखते हुए कहा।

उसके बेटे और बहू को गायब हुए 9 दिन हो गए थे ऐसे में उसका गुस्सा बिल्कुल जायज था बल्कि वह ज्यादा गुस्सा भी करता वह भी जायज था यह बात विजय भी समझता था उसकी जगह अगर उसका अपना खुद का कोई इस तरह गायब होता तो वह भी शायद इसी तरह तीखे स्वर में बात करता।

“आपको पता तो है हमारी तरफ से तो पूरी कोशिश की जा रही है पर एक तो बारिश का टाइम ऊपर से पहाड़ी जंगली इलाका लेकिन आप परेशान मत हो मुझे उम्मीद है कि शीघ्र ही हम आपके बेटे और बहू को खोज लेंगे!” विजय जानता था उसकी बात का असर उतना नहीं होगा जितना कि वह चाहता था पर फिर भी उसने उन्हें तसल्ली देने के लिए कहा फिलहाल वह इसके अलावा कर भी क्या सकता था पुलिस वाले अपनी तरफ से तो एटी चोटी का जोर लगाए हुए थे पर सफलता हाथ नहीं लग रही थी पता नहीं उसके बेटे और बहू के साथ क्या हुआ था। भगवान जाने।

“वैसे इतने दिन गायब होने के पीछे क्या वजह हो सकती है?”अचानक शिव शंकर ने शंका जाहिर करते हुए धड़कते हुए दिल से उससे पूछा।

विजय भी उनका इशारा समझ गया था पर स्पष्ट कैसे कह देता की कुछ भी होने की आशंका भी हो सकती है उस पहाड़ी हिल स्टेशन पर वह भी बारिश के समय हादसे होना कोई बड़ी बात नहीं फिर लोकल के कुछ गैंग भी शामिल हो सकते थे जो टूरिस्ट को लूट लेते हैं अगर उनकी लूट का विरोध करें कोई तो उनकी हत्या भी कर सकते हैं! फिर कोई अमीर घर से हो तो उसकी किडनैपिंग भी हो जाती है ऊपर से ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग तमाम ऑप्शन थे पर विजय इन सब के बारे में बता कर उन्हें और ज्यादा परेशान नहीं करना चाहता था क्योंकि वह तो पहले से ही परेशान थे। उन दोनों बुजुर्ग दंपति के चेहरे पर दुख की वेदना देखकर उसे बड़ा खराब लग रहा था वह बूढ़े मां-बाप इतने दिनों से कैसे खुद को संभाले हैं वह नहीं जानता था

पर इतना जानता था कि अगर पुलिस ने और देर की तो उनका दुख गुस्से में बदल जाएगा और फिर गुस्सा ज्वालामुखी में बदल जाएगा ।

उनका ही क्यों इस समय तो पूरा देश उबाल पर था हर कोई यही मांग कर रहा था कि नीलम और करण के बारे में जल्द से जल्द पुलिस पता लगाए आखिर उनके साथ हुआ क्या है । पुलिस भी हाथ पैर हाथ धरे नहीं बैठी थी लेकिन पब्लिक को कौन समझाए। भीड़ जब उन्मादी हो जाए तो संभालना मुश्किल हो जाता है।

पर वह यह भी जानता था की बुजुर्ग दंपत्ति को कब तक बहलाया जा सकता है कब तक समझाया जा सकता है हकीकत से अवगत कराना भी जरूरी था पर अभी भी आशावान होकर, अभी भी उम्मीद कायम रखते हुए उनसे कहा था कि आप लोग परेशान ना हो इन्वेस्टिगेशन जारी है जो कि सच में युद्ध स्तर पर जारी थी।

पर उसने उन सारे ऑप्शन के बारे में भी बता दिया था जिन पर पुलिस काम कर रही थी उसकी बात सुनकर वे दोनों और दुखी हो गए क्योंकि ऑप्शन बड़े खतरनाक थे उनमें उनके बेटे और बहू को कुछ भी हो सकता था।

“मैंने तभी भी मना किया था की शादी के इतनी जल्दी बाद कहीं घूमने ना जाओ पर मेरी बात किसी ने नहीं मानी मुझे तो लगता है यह सब उसी का परिणाम है!”अचानक पलंग पर बैठी महिला उदास होकर कहने लगी । उसकी आंखों से बस आंसू निकलने ही बाकी थे विजय ने उसकी ओर देखा तो उसके दिल में हूक सी उठने लगी एक मां का दुख दुनिया में सबसे बड़ा दुख होता है उसने शर्मिंदगी से अपना सर झुका लिया।

फिर अचानक उसे कुछ याद आया तो उसकी ओर देखा और पूछा,”आप ऐसा क्यों कह रही हैं?”

“अरे तो और क्या कहूं मुझे तो लगता है ऐसा ही हुआ है पंडित जी ने भी दोनों को बाहर जाने से मना किया था कहा था कुछ अनिष्ट हो सकता है पर वे दोनों ठहरे नए ख्यालों के उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी । आजकल बूढ़े बुजुर्गों की कौन बात सुनता है सब अपने आप में मग्न रहते हैं ।

नए लोगों को लगता है कि बूढ़े लोग एकदम बेकार हैं वह जो कुछ कहते हैं उसमें उनकी बुराई है बूढ़े लोगों को नए लोग अपने पांव की जंजीर समझते हैं जरा भी भाव नहीं देते जबकि हम लोग बूढ़े पुराने लोग तो अपने बच्चों का भला ही चाहते हैं इसीलिए उन्हें कदम कदम पर आगाह करते रहते हैं कि ऐसा ना करो वैसा ना करो पर उन्हें लगता है कि हम पागल हैं बेवजह उनकी जिंदगी में दखल दे रहे हैं उनकी खुशियों को उनसे छीन रहे हैं इन नए ख्यालों के लोगों को कौन समझाए कि हम लोग तो दिन रात तुम लोगों की भलाई के बारे में ही सोचते हैं।

काश मेरी बात सुनी होती तो ऐसी नौबत ही नहीं आती!” बुजुर्ग महिला एक ही सांस में सब कुछ बक गई।

“क्या बात है जरा खुलकर बताइए मेरी समझ में नहीं आ रहाहै!” शिव शंकर की पत्नी ने काफी कुछ कहा था पर शायद विजय की समझ में नहीं आया कि उसने अपने बेटे और बहू को किस बात के लिए शिलांग जाने से मना किया था क्योंकि शादी के बाद अक्सर लोग हनीमून के लिए बाहर जाते हैं इसमें बुरा क्या है।

“बात दरअसल यह है इंस्पेक्टर कि मेरा बेटा मंगली है और मेरी बहू भी है इतना तो तुम जानते ही होंगे की मांगलिक लड़के और लड़की की ही शादी होती है अगर उनमें से एक मांगलिक नहीं है तो शादी नहीं हो सकती । मेरे बेटे की शादी और पहले हो जानी चाहिए थी पर इसी दोष के कारण नहीं हो पाई। और उसी का दोष काटने के लिए पंडित जी ने शादी वक्त के ही मना किया था कि दोनों को अभी बाहर घूमने के लिए नहीं जाना है उन्हें पता था अक्सर लोग शादी के बाद हनीमून मनाने इधर-उधर की यात्रा करते हैं मैंने भी खूब समझाया था पर मेरा बेटा और बहू नए ख्याल के है वह इन चीजों को नहीं मानते! उनकी नजर में यह सब बातें हैं बेकार की बातें हैं वही याद बातें हैं।"

अब विजय के समझ में आया कि आखिर वह लोग ऐसा क्यों कह रहे थे उसने भी इस बारे में सुन रखा था की लड़का और लड़की अगर मांगलिक हो तभी उनमें शादी हो सकती है । उन में से अगर एक भी मंगली नहीं है तो शादी नहीं हो सकती यह सब उसने सुना था पर यह नहीं सुना था कि मांगलिक लड़के लड़की को कुछ दिनों के लिए बाहर नहीं जाना चाहिए पंडित ने ऐसा करने के पीछे किसी अनिष्ट होने का कारण बताया था।

तो क्या इस वजह से उनके साथ कोई हादसा पेश आया। विजय सोचने लगा। हालांकि अभी तक उनका पता नहीं था कि उनके साथ क्या हुआ है।

पर विजय इन बातों को नहीं मानता था क्योंकि पंडित का कहना कि उन्हें शादी के तुरंत बाद बाहर कहीं घूमने नहीं जाना चाहिए उनके साथ कुछ बुरा हो सकता है और शिलांग में फिलहाल उनके साथ जो हुआ वह सब एक महल इत्तेफाक हो सकता है । और वह इन सब बातों को बिल्कुल नहीं मानता पर जो मानता है वह उसके लिए बहस करने के लिए भी तैयार हो सकता है। पर फिलहाल वह बहस के मूड में नहीं था।

दूसरे इस बात से बहस करने से कोई फायदा भी नहीं था क्या फायदा होता है यह बहस करने से की पंडित की बात सही नहीं है जिंदगी एक सफर है और सफर में हादसे तो होते रहते हैं। इस प्रकार की बहस तो व्यर्थ की बहस होती।

“तो आपको लगता है कि इसी वजह से वे दोनों में मिसिंग है?” फिर भी आखिरकार उसने महिला का इरादा जानने की सोची क्या बुजुर्ग महिला अपने बहू और बेटे के गायब होने के पीछे उन दोनों के मंगली होने के कारण पंडित के द्वारा उन्हें बाहर न जाने देने की सलाह और उनके द्वारा उस सलाह के न मानने की वजह से हुआ है।

“और क्या कारण हो सकता है ?"बुजुर्ग महिला शायद इसी बात को सत्य मान रही थी तभी तो एकदम प्योर कॉन्फिडेंस के साथ बोली ,"वे दोनों इतनी दूर शिलांग घूमने आए थे यहां हमारा कौन सा दुश्मन है जो हमारे साथ ऐसा करेगा ग्रह नक्षत्र कुंडली ईश्वर किस्मत इनका भी कोई मुख्य होता है बेटा, हमें समझना चाहिए पर नई पीढ़ी इनके बारे में बिल्कुल भी नहीं समझती! ना तो उसे इन सब बातों के बारे में जानकारी है और ना ही वह जानना चाहती है।

नई पीढ़ी खुद को बहुत होशियार पढ़ा लिखा समझती है और इसीलिए बेवकूफ है!"

विजय कुछ देर तक उसके चेहरे पर आए गुस्से को देखता रहा वह जानता था उसने इस बारे में अगर कुछ बात की तो बुजुर्ग महिला को बहुत बुरा लगेगा क्योंकि वह तो पहले ही मान चुकी है की नई पीढ़ी बेवकूफ होती है पर बुजुर्ग महिला पहले से ही दुखी थी उसे यह बात कह कर

और दुखी नहीं करना चाहता था कि वह खुद इन बातों में बिलीव नहीं करता।

“ हूं।” शायद यही सोच कर उसने सिर्फ गंभीरता से हुंकार भरी।

अभी वह कुछ कहने के मूड में कुछ सोच ही रहा था तभी उसका फोन बजने लगा। उसका ध्यान उचट गया। उसने जेब से फोन निकाल कर देखा ।

फोन थाने से था । थाने से फोन मतलब कोई जरूर गंभीर बात थी इसीलिए उसने फोन तुरंत रिसीव किया।

उधर से कुछ ऐसा कहा गया जिसे सुनकर वह तुरंत खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर फोन पर बात करते हुए चौंकने के भाव थे।

उसके चेहरे के भाव ही बता रहे थे कि कोई बहुत जरूरी खबर उसे दी गई है। लगभग 1 मिनट तक वह खड़े होकर फोन पर उधर की बात सुनता रहा इस तरफ से उसने एक शब्द भी नहीं कहा था।

फिर उसने फोन बंद किया जेब के हवाले किया । अब वह काफी उत्तेजित परेशान नजर आ रहा था।

“क्या हुआ तुम कुछ परेशान लग रहे हो ?”शिव शंकर ने उसके चेहरे पर जो हलचल देखी थी उससे कुछ अनुमान लगाया की फोन पर बात होते ही उसकी हालत में परिवर्तन हुआ है जरूर उसे तरफ से कोई गंभीर बात की गई है और सच्चाई जानने के लिए उसने पूछा। हकीकत यह थी कि उसे लगा था शायद उसके बेटे और बहू के बारे में थाने से कोई सूचना प्राप्त हुई हो यही सोच कर वह खुद उत्तेजित हुआ था और धड़कते हुए दिल से उसने पूछा था।

विजय ने एक गहरी सांस भर कर छोरी और बोला,”जंगल में महामंडलेश्वर की तरफ जाने वाली रोड पर एक कार मिली है .. और एक लाश..जाकर देखना पड़ेगा।”

“ क्या?”दोनों बुजुर्ग संपत्ति उछल पड़े।

उसने जो बात बताई थी वह बहुत विस्फोटक थी इतनी ज्यादा की पलंग पर बैठे बुजुर्ग दंपत्ति उछल पड़े थे यहां तक कि उनके दिलों की धड़कन है काफी बढ़ गई थी।

“अभी पता नहीं है लाश किसकी है इसलिए प्लीज परेशान मत हो वह किसी और की भी हो सकती है यहां सैकड़ों हादसे होते रहते क्योंकि घूमने के लिए हजारों पर्यटक आते जाते रहते हैं फिलहाल मैं जाकर देख ता हूं!” विजय उन दोनों को परेशान नहीं करना चाहता था क्योंकि वह दोनों तो पहले से ही काफी परेशान थे और सच्चा यह थी कि उसे भी अभी क्लियर कुछ भी नहीं पता था की कर किसकी है लाश किसकी है ऐसे में कैसे कुछ पक्का वह बता देता ना तो बताना चाहिए था और ना ही ऐसा संभव था फिलहाल।

इतना कहकर विजय कमरे से बाहर निकल गया उन दोनों को उलझन में पड़ा हुआ छोड़कर।

कमरे में दोनों बुजुर्ग मियां बीवी उसके जाने के बाद कुछ देर शांत बैठे रहे। विजय उन्हें तसल्ली

दे कर गया था पर उनके चेहरे पर फैले भाव साफ बता रहे थे कि वे आश्वस्त नहीं थे।

"आपको क्या लगता है?"दोनों काफी देर तक खामोश बैठे थे अचानक शिव शंकर की पत्नी और उर्मिला देवी ने उससे पूछा।

शिव शंकर जानता था उसकी बीवी को दिल का रोग है एक बार उसे हार्ट अटैक आ भी चुका था इसलिए मन में उसके इस बारे में शंका पनप रही थी की कर कि वह लाश कारण की हो सकती है या उसकी बहू की पर इस बारे में उसने उससे बात करना ठीक नहीं समझा और इसीलिए उसने कहा,"इंस्पेक्टर की बात ही सही है जब तक सच्चाई पता ना हो तब तक उल्टा सीधा अनुमान नहीं लगना चाहिए और फिर इंस्पेक्टर गया तो है वह खुद ही बताएगा कि सच्चाई क्या है!"

उर्मिला देवी एक गहरी सांस भरकर छोड़ी और फिर दरवाजे की ओर देखने लगी।

*****

विजय शीघ्र ही उस जगह पर पहुंचा जहां थाने से उसे फोन करके बुलाया गया था वहां पहुंचने में मुझे ज्यादा वक्त नहीं लगा था। वह जगह घने जंगल में स्थिति थी। अंग्रेजों के जमाने में बने नदी के पुल पर रेलिंग से टकरा कर बुरी तरह क्षति ग्रस्त एक कार पड़ी हुई थी। उसी पुल के नीचे बहने वाली नदी कई सालों पहले सूख चुकी थी और अब वहां एक गहरी खाई जो दूर तक लंबी नजर आती थी बन चुकी थी।

चूंकि वह जगह खतरनाक वन्य जीवों की वजह से प्रतिबंधित थी इस लिए ऐसी आशा कम ही थी कि कोई इधर से निकलेगा या आएगा।

उसे एरिया को प्रतिबंधित करने का दूसरा कारण भी था । उस पुल पर पहले हादसे भी अक्सर होते रहते थे तो लोगों में यह धारणा भी बन गई थी कि पुल पर किसी अदृश्य शक्ति, या भूत प्रेत का साया है। इस बात से डर कर भी उधर ट्राफिक कम हो गया था। बाद में बस पूरी एरिए को ही प्रतिबंधित कर दिया गया था सबके आने जाने पर रोक लगी हुई थी।

इसलिए भी कोई उधर नहीं आता जाता था।

पर उस कार को वहां देख कर सबने यही अनुमान लगाया कि कार में सवार लोग अनजाने में उधर आ गए होगे और दर्दनाक हादसे का शिकार हो गए।

विजय के पहुंचने से पहले वहां कुछ सिपाहियों के साथ सब इंस्पेक्टर आदित्या वहां मौजूद था।

विजय अपनी बाइक से वहां पहुंचा था और पुल पर ही अपनी बाइक खड़ी कर, कार से कुछ दूरी पर तो आदित्या लपकते हुए उसके नजदीक पहुंचा।

आदित्य विजय से 2 साल उम्र में छोटा था कद काठी उसकी भी विजय के बराबर ही थी पर रंग उसका सावला था सर के बाल भी वह छोटे-छोटे रखता था उसे पहले आर्मी में जाना था इसका उद्देश्य ही फौज में जाना था पर किसी कारण बस वह आर्मी में नहीं जा पाया था और अपने पिता की जिद की वजह से वह पुलिस में भर्ती हो गया था। उसके पिता पिता खुद पुलिस में थे और अब एक रिटायर्ड थे और घर पर रहते थे उनकी दिल्ली इच्छा थी कि उनका लड़का भी पुलिस में जाए और शायद अपने पिता की इच्छा का सम्मान रखते हुए उसने अपने

सपनों का गला घोट दिया था। हालांकि शुरू शुरू में उसे बड़ी तकलीफ हुई थी तरफ पुलिस में नौकरी करते हुए उसे 3 साल गुजर गए थे और अब उसे किसी बात का कोई मलाल नहीं था वह अपनी ड्यूटी पूरे मन से करता था।

उसे सेल्यूट किया।

फिर दोनों कार की तरफ साथ-साथ बढ़ने लगे।

विजय ने कार का मुआयना बड़ी बारीकी से किया हालाकी कार के अंदर तो कोई नहीं था कार एकदम खाली थी और बुरी तरह रेलिंग से टकराने की वजह से डैमेज थी।

“तुमने फोन पर बताया था एक लाश भी मिली है?” कार का मुआयना करने के बाद विजय ने आदित्य से कहा।

“हां और काफी डैमेज हो चुकी है इतनी की पहचानना भी मुश्किल है कि वह लाश किसकी है!” आदित्य ने फौरन इसकी बात का जवाब दिया।

“ कहां है?”

“ क्या?”

विजय ने उसे घूर कर देखा। वह तुरंत हड़बड़ा गया और शायद उसकी समझ में भी आ गया।

“ लाश नीचे गहरी खाई में है।”

विजय ने सड़क के दूसरी तरफ नीचे खाई की ओर देखा। सड़क से नीचे लगभग ढलान दार बीस तीस फुट नीचे खाई में एक जगह पर कुछ सिपाही खड़े उसे दिखाई दी । फिर वह आदित्य के साथ नीचे खाई में जा पहुंचा। खाई ढलान दार थी उसे उतरने में काफी सावधानी बरतनी पड़ी। पुलिस वाले सब एक तरफ हो गए जब वह लाश के नजदीक पहुंचा। लाश काफी डैमेज स्थिति में पड़ी थी इतनी ज्यादा की उससे बदबू आ रही थी शायद सड़ने लगी थी। लाश को कई जगह से नोच गया था मैं ऐसा लगता था जंगली जानवरों ने अपनी भूख मिटाई हो। दोनों ने नाक में रुमाल लगाकर लाश का मुआयना किया।

“ चेहरे से तो पता ही नहीं चल रहा है लाश किसकी है? काफी हद तक सड़ चुकी है लाश!” उस सड़ी हुई और नोची हुई लाश को देखकर विजय ने आदित्य से कहा।

“कहीं यह लाश शिव शंकर के बेटे करण की तो नहीं है क्योंकि उसे भी गायब हुए हफ्ता भर से ऊपर हो चुका है पर लाश की कंडीशन बता रही है कि इसको मरे हुए भी इतना ही समय हो चुका है!”

विजय की बात सुनकर आदित्य ने कुछ पल सोचा फिर बोला,”हो सकता है सर पर लाश की सही जानकारी तो फॉरेंसिक वाले ही बता पाएंगे। वो फिलहाल आते ही होंगे लेकिन अगर लाश करण की है तो उसके साथ उसकी बीवी भी थी क्या नाम था उसका नीलम और उसकी

लाश तो कहीं नहीं है.. जबकि उसकी लाश भी यही कहीं होनी चाहिए थी!”

“हो सकता है उसकी लाश दूसरी तरफ खाई में गिर गई हो हमें सर्च ऑपरेशन चलाना पड़ेगा !”

“ हूं।” आदित्य भी विजय की तरह गंभीर दिखाई देने लगा।

“वैसे नीलम और करण दोनों शिलांग घूमने आए थे फ्लाइट से फिर उनके पास कार कहां से आई जरूर उन्होंने किराए पर ली होगी इस कार के बारे में पता करो!” विजय लाश के पास से उठकर खड़ा हुआ और इधर-उधर देखते हुए आदित्य से बोला,"इससे हमें उनके बारे में बहुत कुछ पता चल सकता है मतलब वह कहां पर ठहरे हुए थे। कहां-कहां घूमने गए थे इत्यादि।"

“ जी सर।”

फिर जब वे खाई से निकल कर वापस सड़क पर आए।

“ यहां के बारे में किसने सूचना दी?” अचानक उसे याद आया तो उसने चारों तरफ एक सरसरी नजर डाली और आदित्य से पूछा।

“यही लोकल का बंदा है जो जंगलों में शायद लकड़ियां बीनने के लिए आया था!” आदित्य ने चलते-चलते उसकी बात का उत्तर दिया।

“यह जगह तो प्रतिबंधित है फिर वह यहां क्या कर रहा था?”

“ वो लोकल का बंदा है सर मैने बताया तो लकड़ियां बीनने के लिए आया था ऐसे ही भटकते हुए आ गया होगा इधर?” आदित्य पहले तो उसकी बात पर हड़बड़ा गया या शायद घबरा गया था फिर अचानक उसने खुद पर कंट्रोल किया और तुरंत जवाब दिया।

“ कहां है?” विजय ने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाल कर एक सिगरेट सुलगाई उसका एक लंबा कश लेकर इधर-उधर देखते हुए आदित्य से बोला।

आदित्य ने दूर सिपाहियों के पास खड़े एक दुबले पतले गरीब से दिखने वाले शख्स की ओर इशारा किया।

"बुलाओ उसे।"

आदित्य ने उसे इशारे से पास में बुलाया।

विजय ने उसे सिर से लेकर पांव तक देखा।

“तुमने ही फोन पर पुलिस को सूचना दी इस कार के बारे में?” विजय सिगरेट का धुआं उडाता हुआ उससे मुखातिब होकर उससे सवाल-जवाब करने लगा।

“हां, हां साब!” पुलिस विजय का कड़कपन देखकर शायद वह गरीब आदमी है घबरा रहा था इसीलिए उसने डरते हुए जवाब दिया।

“तुम यहां क्या कर रहे थे? यह जगह तो प्रतिबंधित है यहां पर कोई भी आ जा नहीं सकता फिर तुम कैसे आए ?”विजय ने सिगरेट का एक लंबा कश खींचकर धुएं को फिर से हवा में उड़ते हुए उसकी तरफ गुस्से में देखते हुए बोला।

वह गरीब आदमी तो पहले से ही घबराया हुआ था जब उसने यह सवाल किया तो वो और डर गया । इतना ज्यादा डर गया कि कुछ पल तो वह बोल ही नहीं पाया पर जब विजय ने उसकी और फिर से देखा तो वह जल्दी से बोला,”वह साहब मैं लकड़िया बीनने को आया था ध्यान ही नहीं रहा कि कब इस जगह पर आ गया!” विजय ने उसकी और गौर से देखा शायद वह जांच करना चाहता था कि वह सही बोल रहा है या झूठ पर वह गरीब आदमी तो डर की वजह से कांप रहा था।

"ऐसे ही इस स्थान पर आ गया था या फिर कोई चक्कर है?"

"कैसा चक्कर साहब मैं आपकी बात नहीं समझा?"उसके सामने खड़ा दुबला पतला गरीब व्यक्ति असमंजस में पड़ गया था।

"कहीं इस हादसे में तुम्हारा ही तो हाथ नहीं है?"विजय उसके साथ खड़क पुलिस वाले की तरह पेश आ रहा था।

"नहीं नहीं साहब इस केस से मेरा कोई लेना देना नहीं मैंने तो यहां पर आकर जब इस कार को यहां पर पड़े हुए देखा तो मुझे लगा कि कार के अंदर शायद कोई फंसा हो मैंने कार का मुआयना किया के अंदर कोई नहीं था फिर अचानक मेरी नजर नीचे खाई की तरह गई वहां पर मुझे वह व्यक्ति पड़ा दिखाई दिया मैं घबरा गया साहब मुझे लगा कार का एक्सीडेंट हुआ है और वह व्यक्ति उछलकर कार से निकलकर नीचे खाई में जाकर गिरा होगा मैंने नीचे खाई में जाकर उतर कर देखा था तो जान गया साहब कि वह लाश कई दिनों से वहां पड़ी हुई थी। उस लाश से बदबू आ रही थी । वह सड़ गई थी। फिर मैंने पुलिस को फोन किया यह सोचकर की पुलिस कई बार कह चुकी है ऐसे किसी भी हादसे की खबर पुलिस को दें किसी की मदद करें और एक समझदार मददगार नागरिक बनकर दिखाएं बस मैंने वही किया साहब सच में।"

विजय भी जानता था वह लोकल का बंदा है और ऐसी मिस्टेक हो जाती हैं इसीलिए उसने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। उसकी बात को फिलहाल उसने सच मान लिया।

“ ठीक है। तुम जाओ..,"विजय का देश पाते ही वह सर पर पैर रखकर अपने घर के लिए जाने लगा पर विजय ने अचानक उसे फिर से बुलाया और कहा," सुनो अपना नाम पता एड्रेस फोन नंबर सब कुछ नोट करा कर जाना बाई चांस तुमसे फिर से बात करने का मन हुआ तो..!”

“ जी साब!” उसने फौरन किसी आज्ञाकारी बालक की भांति सर हिला कर कहा।

"क्या साहब! जो मैंने बोला वह आदित्य को नोट कराओ।"विजय ने उसे हड़क दिया।

विजय के कहने पर आदित्य ने उसका नाम पता एड्रेस फोन नंबर सब कुछ नोट कर लिया।

फिर वह वहां से रुखसत हो गया।

तभी वहां एक और गाड़ी आकर रुकी और उसमें से फोरेंसिक विभाग के लोग उतरे जिन्होंने उतरते ही अपना काम शुरू कर दिया।

****

फिर इस खबर के बारे में सबको पता लगते देर ना लगी। सभी न्यूज़ चैनल पर सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्म पर जंगल में मिली एक्सीडेंटल कार और खाई में मिली एक लाश के बारे में तरह-तरह की खबरें प्रचारित होने लगी थी क्योंकि जैसा कि सबको पता है पुलिस वालों के लाख गुप्त रखने के बावजूद भी मीडिया कर्मी उस जगह पर पहुंच चुके थे और चिल्ला चिल्ला कर गला फाड़ फाड़ कर उस घटना के बारे में बता रहे थे हालांकि अभी कुछ क्लियर नहीं था पर कई न्यूज़ चैनल वाले खाई में मिली लाश करण की लाश का अनुमान लगा रहे थे और उसकी बीवी को गायब बता रहे थे उसके बारे में अपने तरह-तरह के ख्याल परोस रहे थे इस केस की तुलना भी कुछ महीना पहले घटे शिलांग में सोनम राजा रघुवंशी वाले केस से कर रहे थे और कह रहे थे कहीं यह केस भी उस केस की तरह तो नहीं है यहां भी बीवी ने ही अपने पति की हत्या करवाई हो और खुद गायब है कहीं ऐसा तो नहीं उस केस की तरह इस केस में भी कुछ दिनों बाद ही बीबी खुद ही वापस लौट आए और एक मनगढ़ंत कहानी सुनाएं कुछ न्यूज़ चैनल वाले यह भी कह रहे थे कि अगर यह केस उस केस की तरह नहीं है पति की हत्या में बीवी का हाथ नहीं है तो आखिर बीबी कहां है। किस हालत में है।

विजय ने अपने आला अधिकारियों से इस बारे में बात की तो वे भी शीघ्र मौके पर पहुंचे थे। एनडीआरएफ आदि की टीम भी पहुंची और सभी ने अनुमान यह लगाया कि वह लाश करण की हो सकती है पर उसकी बीवी गायब थी यह बड़ी हैरानी वाली बात थी अगर कार का एक्सीडेंट हुआ है और करण की लाश खाई में पाई गई तो उसकी बीवी की लाश भी उसके आसपास ही होनी चाहिए थी या अगर वह जीवित होती है तो बहुत पहले उसका सामने आ जाना चाहिए था। या वह लाश करण की नहीं थी किसी और शख्स की थी और उस कार मैं वह अकेला शख्स था या फिर उसकी बीवी की लाश को क्या जंगली जानवर का खा गए होते तो हड्डियां वगैरह कुछ तो बचती हो सकता है लाश को जानवर जंगल में खींच कर ले गए हो इसी बात को ध्यान में रखते हुए पुलिस वालों ने जंगल का काफी सारा इलाके में खोजबीन की पर कहीं कुछ पता नहीं चला ।

अब पुलिस के पास दो अनुमान थे एक वह लाश करण की नहीं थी किसी अन्य व्यक्ति की थी जिसका एक हफ्ते पहले कार एक्सीडेंट हुआ था और उसी में उसकी मौत हुई जानवरों के नोचे जाने से उसकी बॉडी खराब हो गई पर करण और उसकी बीवी भी इतने दिनों से ही गायब थे इसलिए अंदेशा था लाश करण की होने का भी लगाया जा रहा था फिलहाल कुछ भी निश्चित नहीं था । डेड बॉडी की शिनाख्त होती इसके बाद ही कुछ क्लियर हो पाता मीडिया वाले क्या चिल्ला रहे हैं इससे पुलिस को क्या मतलब जो भी क्लियर होगा वो तो जांच से ही होना था।

इस केस को लीड करने की जिम्मेदारी या आला अधिकारियों ने अपने सबसे काबिल

इंस्पेक्टर विजय को सौंप कर वहां से रवाना हो गए थे और इंस्पेक्टर विजय ने तुरंत दो काम किए एक आदित्य को उस कार के बारे में पता करने का काम सोपा और खुद लाश के आइडेंटिफिकेशन के लिए उस होटल की तरफ वापस चल दिया जहां पर शिव शंकर और उसकी पत्नी ठहरे हुए थे।

****

सब इंस्पेक्टर आदित्य कार के बारे में खोजबीन करने निकला। यह इतना काम मुश्किल भी नहीं था कर का नंबर आरटीओ ऑफिस में पता करके उसने कार के ओनर के बारे में पता कर लिया और उसके मालिक तक जा पहुंचा । वह मालिक एक लॉज चलाता था जिसमें कमरा किराए पर देता था और साथ ही साथ अगर वहां ठहरने वाले घूमने के लिए कार बाइक स्कूटर कुछ भी किराए पर लेना चाहे तो वह भी वह उपलब्ध कराता था। और उसके अनुसार उसने करण और नीलम को वह कार किराए पर दी थी ।

उस लॉज का नाम था ब्यूटीफुल लॉज । हालांकि वह कुछ खास ब्यूटीफुल लॉज नहीं था ऐसा कुछ था नहीं उसमें पर उस इलाके के जो और सारे लॉज वहां पर थे उनमें से वह बेहतर था। ठीक-ठाक फैसिलिटी देता था और एकदम पहाड़ पर बना हुआ था जहां से उसके सामने की लोकेशन बड़ी ही खूबसूरत थी दूर जंगल पहाड़ झरने सब दिखाई देते थे। कार के मालिक के बारे में पता चलते ही आदित्य सीधा उस लॉज पर आ गया था उस समय उसका मालिक जिसकी उम्र तकरीबन 55,60 साल होगी देखने में मोटा ताजा था सर के बाल उड़े हुए थे गोरा चिट्टा था पर चेहरे पर हमेशा गंभीरता बनी रहती थी ऐसा लगता था जैसे कई सालों से वह मुस्कराया ना हो पता नहीं क्या उसके जीवन में चल रहा था जिसकी वजह से वह इतना गंभीर था। लॉज के छोटे से रिसेप्शन पर बैठा था हालांकि रिसेप्शन पर कोई और बैठता था पर आज शायद उसकी तबीयत खराब थी इसीलिए वह नहीं आया था पर मलिक को मजबूरन रिसेप्शन पर बैठना पड़ा था।

उस समय रिसेप्शन पर बैठा हुआ व्यक्ति किन्हीं विचारों में उलझा हुआ था कह सकते हैं खोया हुआ था लेकिन जब उसके लॉस के सामने आदित्य की बाइक रुकी और बाए खड़ी करके वह सीधा उसकी तरफ ही आने लगा तो उसका ध्यान भंग हुआ ऐसा शायद आदत की वर्दी की वजह से हुआ था वैसे भी पुलिस वालों को देखकर लोग सच में पड़ जाते हैं कि आखिर वह हमारे घर पर क्यों आया है ऐसा ही कुछ भाव उसके चेहरे पर भी था।

आदित्य जब उसकी ओर बाइक खड़ी करके आया तो पुलिस को देखकर वह पहले ही कुर्सी से खड़ा हो गया था।

"हेलो सर।" आगे वह कुछ कहता है इससे पहले ही उसने उसका अभिवादन किया लेकिन आदित्य ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और उससे पूछा,"तुम्हारा ही नाम गणेश है?"आरटीओ ऑफिस से कार का ओनर का जो नाम पता चला था वह गणेश ही था।

"जी साहब मेरा ही नाम गणेश है..!" उसने तुरंत जवाब दिया और तुरंत ही अगला सवाल दाग दिया क्योंकि उसके मन में कुछ शंका उठ गई थी शायद इसलिए कि आखिर एक पुलिस

वाला उसके बारे में क्यों पूछ रहा है,"क्या बात है सर?"

सर?"उसके चेहरे पर पुलिस वाले के कड़क अंदाज देखकर असमंजस के भाव आ चुके थे जो शायद किसी के भी आ जाते। हालांकि पुलिस का लॉज में आना कोई बड़ी बात नहीं थी ऐसा एक दो बार पहले भी हो चुका है जब घर से भाग कर कोई लड़का और लड़की कपल बनाकर उसके लॉज में ठहरे हुए थे और पुलिस ने आकर उन्हें पकड़ा था और यह सख्त हिदायत देकर उसे छोड़ा था कि आइंदा ऐसी हरकत ना हो। उसने भी अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी कि वैसे हादसे फिर से न हो इसके लिए वह बहुत सख्त हो गया था उसके लॉज में जो भी लोग काम करते थे उन्हें सख्त आदेश था की ऐसे कोई भी लोग जो इल्लीगल हो गैरकानूनी काम करते हो उन्हें उसके लॉज में ठहरने ना दिया जाए क्योंकि पुलिस का बार-बार लॉज में आना उसके लॉज की रेपुटेशन पर धब्बा लगा सकता था उसके अच्छे चल रहे बिजनेस पर पाबंदी लगा सकता था आज का मौसम साफ है पर आज फिर से पुलिस उसे लगा फिर से कोई वैसा ही कैसे होगा इसीलिए उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा था।

"न्यूज़ नहीं देखते अखबार नहीं पढ़ते या फोन भी नहीं चलाते?"आदित्य ने न जाने किस भाव में उसे गुस्से में हड़क दिया।

"मैं कुछ समझ नहीं सर?"उसकी कड़क वाइस पुलिसिया अंदाज देखकर गणेश घबरा गया और डरे सहमे स्वर में बोला।

"हमें जंगल के एक प्रतिबंधित एरिया में एक कार जिसका एक हफ्ते पहले एक्सीडेंट हो गया था वहां पाई गई और खाई में एक लाश मिली यह खबर तो हर तरफ जंगल की आग की तरफ फैली हुई है क्या तुम्हें पता नहीं है इसके बारे में !"

"म.मुझे पता नहीं सर ,मैं आज ही बाहर से लौटा हूं अखबार तो मैं पढ़ता नहीं टीवी भी नहीं देखता फोन मेरा डिस्चार्ज था!"

"तभी। ,"आदित्य ने कुछ क्षण सोचा और फिर आराम से कहा ,"तुम्हें नहीं पता वैसे शायद तुम्हें जानकर खुशी होगी कि वह कार तुम्हारा नाम से रजिस्टर्ड है!"

" जी! " अब वह चौंका । उसके चेहरे पर अजीब से भाव दिखाई दिए। थूंक निगलने में भी दिक्कत होती जान पड़ी।

" क्या मैं जान सकता हूं कि तुम्हारी कार जंगल के उसे प्रतिबंधित इलाके में क्या कर रही थी?" इतना कहकर वह उसे घूरने लगा। वह बैचेन नजर आने लगा। पर इससे पहले कि वह कुछ कहता आदित्य ने कहा,"

तुम यह लॉज चलाते हो क्या कार वगैरा किराए पर देते हो?"

"जी सर, हां यहां पर ठहरने वाले अगर किराए पर कार स्कूटर बाइक किसी के भी फरमाइश करते हैं तो मैं उनकी इस फरमाइश को पूरा करता हूं!"

"यानि तुम अपने किरायेदारों को कार मोटरसाइकिल स्कूटर वगैरा किराए पर महैया कराते हो! क्या तुम अपनी कार महीना भर के लिए किराए पर देते हो ? मतलब जिसको कार दी फिर तुम्हें नहीं मतलब कि वह कार लेकर कहां जा रहा है कब लौटेगा ऐसा कुछ? हालांकि आदित्य ने कड़े स्वर में कहा था पर उसमें व्यंग भी छुपा था एक बार वह फिर घबरा गया।

"नहीं सर ,ऐसा नहीं है! पर कुछ किराएदारों को कार एक हफ्ते या 10 दिन के लिए भी मैं किराए पर देता हूं वरना कुछ किराएदार पर डे पर भी ले जाते हैं यानि सुबह ले जाते हैं शाम को खड़ी कर देते हैं!" उसने हिचकिचाते हुए धीरे से कहा।

"लेकिन वह कार तुम्हारी एक हफ्ते से गायब है तुमने उसकी चिंता नहीं की ,फिक्र नहीं की, क्यों?"

"अरे चिंता करने की क्या जरूरत है सर, वह कार तो मैंने 10 दिन के लिए किराए पर दी थी?"हर बार वह डर कर जवाब देता था पर इस बार उसने मुस्कुरा कर जवाब दिया और अपने डर पर काबू करता दिखाई दिया।

"अच्छा उस हिसाब से भी देखा जाय तो समय ज्यादा हो चुका है तुमने कार की चिंता क्यों नहीं की?"

"मैं बोला नहीं सर कि मैं आज ही लौटा हूं आज ही वापस आया हूं। मैं अभी इस बारे में चेक करता की कौन सी कार समय पर वापस आई है कौन सी नहीं इसके बाद में कुछ करता हु साहब!"गणेश रिसेप्शन की बड़ी सी टेबल की दराज को कॉल करो उसमें से एक कॉपी निकाल जिसमें सभी वाहनों को जो किराए पर दिए जाते थे का पूरा ब्यौरा दर्ज होता था पर इससे पहले कि वह उसको अभी खोलता आदित्य ने उससे कहा।

" मुझे तुम्हारे अन्य वाहनों से कोई मतलब नहीं। मैं तुम्हें कार नंबर बता रहा हूं बताओ तुमने यह कार किसको दी थी?"

आदित्य ने उसे कार का नंबर बताया तो उसने तुरंत रजिस्टर खोलकर देखा। कुछ देर पन्ने पलटते रहने के बाद उछलते हुए बोला,"यह कार तो मैंने करण नामक व्यक्ति को दी थी जो अपनी पत्नी नीलम के साथ यहां पर ठहरा हुआ था।"

"वे दोनों तुम्हारे यहां कब आकर ठहरे थे?"

"आज से 15 दिन पहले।,"उसने कॉपी में दर्द तारीख को ध्यान से देखकर फिर मन में है सब लगाते हुए बताया," फिर तीन दिन बाद मैं अपनी बहन के यहां चला गया उसकी बेटी की शादी थी। बहन का पति बहुत पहले एक्सपायर हो गया इसलिए शादी की सारी जिम्मेदारी मुझे ही उठाने पड़ी इसीलिए तो इतने दिन पहले से गया था। मैं इतने दिनों पहले नहीं जाता तो..!"

"मुझे इससे मतलब नहीं है कि तुम कितने दिन पहले अपनी बहन के यहां गए वह तुम्हारा फैमिली मैटर है पर्सनल मेटर है वह मुझे मत बताओ! जो नंबर मैंने तुम्हें बताया उसे नंबर की कर तुमने कारण को दी थी इतना कंफर्म है?"

"हां सर यह एकदम कंफर्म है आप चाहे तो कॉपी देख लीजिए!"

गणेश ने उसे कॉपी को उसकी और खिसका दिया। और अपनी जगह पर सिमट कर खड़ा हो गया ऐसा लगा जैसे वह बहुत ही आज्ञाकारी बनकर दिखाने की कोशिश कर रहा हो।

"आज के तकनीक जमाने में जब लोग कंप्यूटर का इस्तेमाल करते हैं लैपटॉप का इस्तेमाल करते हैं तुम आज भी कॉपी का इस्तेमाल कर रहे हो?"उसके हाथ से कॉपी लेते हुए आदित्य ने कहा।

"यहां नेटवर्क प्रॉब्लम बनी रहती है सर इसलिए शायद कंप्यूटर की तरह मेरा ध्यान नहीं गया वरना मैं सोच तो रहा हूं कि अब यहां पर लैपटॉप कंप्यूटर भी होना चाहिए!"

" हूं।"उसने गंभीरता से हुंकार भरी और फिर कापी चेक करने लगा। जिस नंबर की कार जंगल के उस प्रतिबंधित एरिया में पाई गई थी एक्सीडेंटल वह सच में है कारण के नाम से दर्ज थी यानी उसने उसे किराए पर लिया था।

यानी अब काफी हद तक कंफर्म हो चुका था कि वह करण की ही लाश हो सकती है पर अगर वह लाश करण की है तो उसकी पत्नी इतने दिनों से कहां है। आदित्य इस बारे में सोचने लगा।

“तुम्हारी कार को गए हुए हफ्ता दस दिन से ऊपर से ऊपर हो गया था तुम्हे चिंता नहीं हुई तुमने पता करने की कोशिश नहीं की?”कार के बारे में याद करते समय आदित्य ने कार मलिक से डांट कर पूछा। आदित्य जब-जब उसे डांट लगता था वह घबरा जाता था और ऐसा लगता था कि जैसे वह बहुत ही भोला ,मासूम सीधा और ईमानदार हो उस पर खामखा इल्जाम लगाया जा रहा हो एकदम किसी मासूम छोटी क्लास के बच्चे की तरह उसकी शक्ल हो जाती थी जिसे आदित्य कुछ देर तक देखता रहता था और फिर ढीला पड़ जाता था। पता नहीं यह नेचुरल था या फिर वह कुछ ज्यादा ही स्मार्ट था।

"मैं तो बाहर था सर मैं अभी बताया था आपको!"

"तुम्हारे गैर मौजूदगी में यहां का काम कौन संभालता है?"आदित्य उसकी बात सुनकर कुछ देर सोचता रहा और फिर अचानक ऐसा लगा जैसे उसे कुछ याद आया हो उसने सर उठा कर उसकी और देखा और पूछा।

"सूरज, मैं जब यहां पर नहीं होता हूं तो सूरज यहां का काम देखता है पर आज उसे तेज बुखार है इसीलिए नहीं आया तभी तो उसकी जगह पर मैं बैठा हूं सर!"

"हां तो सूरज को इस काम को देखना चाहिए था कोई कार जिसे तुमने किराए पर दिया 10 दिन तक तुम्हारे पास नहीं आती तो क्या उसने खोज भी नहीं की?"

"खोज बीन करने की जरूरत नहीं थी सर?"

" क्यों?"

"क्योंकि करन ने कार 10 ,15 दिन के लिए किराए पर ली थी जब वह कार किराए पर ले

रहा था तब मैं यही था सर उसने स्पष्ट कहा था कि उसे कहा आपने 15 दिन के लिए चाहिए वह अपनी बीवी के साथ हनीमून मनाने के लिए आया है और यहां तकरीबन 15 दिन तो रुकेगा! इसीलिए सूरज ने भी जब कार 10 दिन तक नहीं आई तो उसने दरयाफ्त नहीं किया!"

कार के बारे में मैंने दरयाफ्त इसलिए नहीं की सर क्योंकि मैं उनकी तरफ से बेफिक्र था। "

आदित्य ने सोचा करण की कार एक हफ्ते पहले ही उसे प्रतिबंधित एरिया में पहुंचकर एक्सीडेंट का शिकार हो गई थी क्लास की कंडीशन भी बता रही है उसे भी 10 दिन से ऊपर हो चुका है या यानी करण जिस दिन यहां से कर लेकर निकला उसी दिन उसका एक्सीडेंट हो गया था।

अगर वह लकड़ी बीनने वाला संयोग से उस तरफ ना पहुंच गया होता तो आज भी ना एक्सीडेंटल कार के बारे में और न लाश के बारे में किसी को पता चल पाता।

" हूं। पर आज सूरज क्यों नहीं आया?"उसने इधर उधर देखते हुए कहा उसे गणेश के अलावा वहां पर और कोई नजर नहीं आया।,"ठीक है सूरज को बुलाओ मुझे उससे बात करनी है।"

"लेकिन सर इसकी तो तबीयत खराब है!"गणेश ने उसे याद दिलाया पर आदित्य उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था।

"तबीयत खराब है मुझे उससे कोई काम नहीं करवाना है बस थोड़ी पहुंचता आज करनी है यह जरूरी है!"आदित्य ने इतनी सख्त लहजे ने कहा कि वह मन नहीं कर पाया।

उसने अपनी जेब से फोन निकाला और सूरज को कॉल लगाई।

"सूरज तू कहां है?"उसने फोन पर पूछा।

"मेरी तबीयत खराब है घर के अलावा और कहां हो सकता हूं?"सूरज ने उधर से नाराजगी जहर की।

"तू थोड़ी देर के लिए यहां पर आजा ..अर्जेंट है!"

फिर भी गणेश ने उसे लॉज पर आने के लिए बोल दिया क्योंकि सामने उसके इंस्पेक्टर आदित्य खड़ा था वरना शायद वैसे कभी भी बीमारी के हालात में आने के लिए नहीं बोलता।

"मैंने बोला तो मेरी तबीयत सही नहीं है!"वह उधर से नखरे दिखाने लगा या फिर शायद वह सच में बीमार था।

"अरे थोड़ी देर के लिए आ जा यार तुझे पुलिस याद कर रही है!"

"पुलिस!"पुलिस नाम सुनकर उसके तो होश उड़ गए पता नहीं क्यों। कुछ पल तो उसकी आवाज ही नहीं आई।

" क्या हुआ.. तू आ रहा है या फिर पुलिस तेरे घर पर आए!"आदित्य ने उसके हाथ से फोन

लेकर अपनी कड़क आवाज में कहा तो उधर से शुरू सूरज तुरंत बोला,"पर बात क्या है साहब?"

"यहां आज बात क्या है सब पता चल जाएगा.. आ रहा है?"

"जी ,जी आ रहा हूं अभी आता हूं!"पुलिस के सामने उसकी मजाल नहीं थी कि वह इनकार करता हालांकि वह कह सकता था कि उसकी तबीयत खराब है तो पुलिस को उसके घर पर पहुंचते देर ना लगती पर शायद वह घर पर पुलिस को अफोर्ड नहीं कर सकता था इसीलिए उसने बीमारी की हालात में भी वहां आना मंजूर किया और कुछ ही देर में अपनी स्कूटी से लॉज पर आ गया। सड़क के किनारे अपने स्कूटी खड़ी कर रहा था तो आदित्य ने उसे गौर से देखा

वह एक 18 साल का लड़का था जिसके चेहरे पर अभी हल्की मूछें निकली थी देखने में बड़ा ही भोला है मासूम इनोसेंट लगता था पर तबीयत की वजह से शायद उसके चेहरे की रंगत उड़ी हुई थी दूसरा कारण था कि वह पुलिस के बुलावे पर वहां पर उपस्थित हुआ था उसका सांवला सलोना चेहरा बीमारी की वजह से कम पुलिस के बुलाए जाने की वजह से ज्यादा मुरझाया हुआ लग रहा था। जब वह स्कूटी खड़ी करके लान के अंदर रिसेप्शन पर आदित्य के सामने पहुंचा तो उसके चेहरे पर हल्का पसीना साफ तौर पर दिखाई दे रहा था।

"तो तुम्हारी तबीयत खराब थी?"एक क्षण आदित्य ने उसको सर से लेकर पांव तक देखा फिर अपने पुलिस वाले अंदाज में में पूछा तो उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया और बोला "आप देख लीजिए सर साहब मुझे अभी भी बुखार है!"

आज इतने उसके चेहरे की ओर देखा इतना तो वह भी जानता था कि एक स्वस्थ इंसान और एक बीमार इंसान कैसा लगता है वह समझ गया कि लड़के को सच में बुखार है उसकी तबीयत खराब है।

“अपने मालिक की गैर हाजिरी में इनका सारा काम तुम देखते हो?” पर पूछताछ भी जरूरी थी कैसी इतना बड़ा था पुलिस पर भारी प्रेशर था सच को उजागर करने का वर्ण व्यवस्था लड़के से का भी सकता था कि अभी तुम घर पर जाओ आराम करो पर वह कह नहीं पाया।

‘ हां साब!”

“कैसे? देखते हो लापरवाही से। अगर सही से देखे होते तो तुम्हें पता नहीं चलता कि तुम्हारे यहां से गई एक कार हफ्ता भर से गायब है लौटी नहीं!”

“वह साब दरअसल बात यह है कि उस कार के बारे में तो मुझे पता नहीं था मलिक ने भी नहीं मुझे बताया था शायद जल्दी में भूल गए होंगे यह जब यहां से गए हैं उसी समय मुझे यहां का कारोबार सौंपा गया वरना मैं तो घर में केवल नौकर का काम करता हूं!”

आदित्य ने गणेश की ओर देखा गणेश बेचैनी में पहलू बदलने लगा।

"ठीक है लेकिन अपने मालिक की अनुपस्थिति में तुमने कभी चेक तो किया होगा कि जिन किराएदारों ने वाहन उधारी पर लिए हैं उन्होंने लौटाए कि नहीं लौटए वैसे किसी को अपना वाहन भाड़े पर देने का क्या नियम है अगर किसी ने चार दिन के लिए वाहन लिया है तो क्या चार दिन बाद ही लौटता है अगर तुम्हारे लॉज में वह रहता है तो उसे मेरे हिसाब से शाम को

वापस आना चाहिए सुबह फिर घूमने जाना चाहिए क्या ऐसा कोई शेड्यूल नहीं है यहां पर!"

"है तो ऐसा ही सर लेकिन कई बार उधारी पर लेने वाले वाहनों के साथ कई दिनों बाद लौटा ते हैं!"

"अगर वह तुम्हारा वाहन लेकर यहां से गायब हो जाए तो?"

"ऐसा आज तक तो नहीं हुआ सर!"उसने बड़ी शान से बताया।

"जो काम कभी नहीं हुआ क्या कभी हो नहीं सकता!"

गणेश को कोई जवाब नहीं आया।

"वैसे वाहनों में जीपीएस सिस्टम लगा है उससे हम चेक कर सकते हैं वाहनों को? और उसमें ऐसा भी सिस्टम लगा है सर जिससे हम अगर वाहन कोई चोरी करना चाहे तो उसे ट्रैक कर सकते हैं ना सिर्फ ट्रैक कर सकते हैं बल्कि इंजन को बंद कर सकते हैं।"उसने अपने इस नए ज्ञान की शेखी बघारी।

"चोर तुम्हारे उस जीपीएस सिस्टम को निकाल कर फेंक भी तो सकता है?"

"हां बिल्कुल कर ऐसा कर सकता है पर मैंने अपने वाहनों में डबल जीपीएस सिस्टम लगाया है और ऐसी जगह लगवाया है छुपा कर जहां वह पता नहीं कर सकता और दूसरा सबसे बड़ा सिस्टम तो सर वह है इंजन कट फीचर जिससे हम मोबाइल से ही वाहन के इंजन को बंद कर सकते हैं। फिर हमारे जीपीएस सिस्टम हाई तकनीक वाले हैं सर अगर उन्हें निकालने की कोशिश करेगा तो हमें मोबाइल के जरिए पता चल जाएगा।"

"यह तरीका तो तुम्हारा बढ़िया है पर तुम यह तरीका लगाने से चूक गए अगर तुम्हारे किसी भी वाहन का एक्सीडेंट वगैरा हो तो वह कैसे पता चलेगा?"आदित्य ने गणेश की तरफ देखकर कहा तो गणेश लड़के की तरफ देखने लगा उनके चेहरे ही बता रहे थे कि इस बारे में शायद उन्हें पता नहीं है या फिर उन्होंने वह सिस्टम अपने वाहनों में नहीं लगवाया।

"तुम भी अपने अपने वाहनों में जीपीएस सिस्टम प्लस सेंसर लगवा लो। क्रश डिटेक्शन या एक्सीडेंट डिटेक्शन इससे क्या होगा अगर तुम्हारी गाड़ी का कहीं भी एक्सीडेंट होता है झटका लगता है तो इसकी इनफॉरमेशन तुम्हारे फोन पर आ जाएगी। जीपीएस तुरंत उस जगह की लोकेशन भेजेगा जिस जगह पर एक्सीडेंट हुआ है।"

"जी सर मैं आपके सुझाव पर तुरंत ही काम करूंगा!"

" हूं। तो तुम्हारा क्या कहना है?"अब आदित्य उसे मुखातिब हुआ सूरज से ,सूरज शायद उसका प्रश्न सुन नहीं पाया इसलिए उसने अपने प्रश्न को दोबारा दोहराया,"अपने मालिक की अनुपस्थिति में यहां का सारा काम तुम देखते हो और वह भी लापरवाही से!"

हुए हिचकिचाया एक बार मलिक की ओर देखा शायद इस प्रश्न का उत्तर दे चुका था।

""“वह साब दरअसल बात यह है कि उस कार के बारे में तो मुझे पता नहीं था मलिक ने भी नहीं मुझे बताया था शायद जल्दी में भूल गए होंगे यह जब यहां से गए हैं उसी समय मुझे यहां का कारोबार सोपा गया वरना मैं तो घर में केवल नौकर का काम करता हूं!”

“शायद यह ठीक कह रहा है सर । नहीं शायद इसे ठीक से समझना भूल गया था। तभी यह उसे कार की तरफ ध्यान नहीं दे पाया जो करण ले गया था। मेरी भूलने की वजह यह थी की शादी में दस दिन से कम समय लगना था पर वहां मुझे कुछ एक-दो दिन ज्यादा लग गया सर!”

“तो फोन करके इसे अपने काम समझ सकते थे बता सकते थे वाहनों के बारे में कि उसे चेक करें कौन सा वहां समय पर आ रहा है और कौन सा नहीं । और तुम सूरज इतना काम तो तुम बिन बताए ही कर सकते थे इस कॉपी को खोलकर देखे खुद ही पता चल जाता की कौन सी वहां कितने दिनों के लिए किराए पर ली गई है लेकिन तुम तो मालिक के चले जाने के बाद हद से ज्यादा लापरवाह हो गए इतनी बड़ी जिम्मेदारी तुम्हें सौंपी गई और तुमने इतनी लापरवाही दिखाई।"

सूरज को काटो तो खून नहीं। ऐसी ही कुछ हालात मलिक की भी थी

"करण की कार को आज दसवां दिन हुआ है सर मैं तो इसीलिए कार के बारे में नहीं बताया इस और इसने देख भी लिया होगा तो क्या कर सकता था बेचारा हां कर आज ना आती तो फिर यह फिक्रमंद होता मैं फिक्रमंद होता!"

" हूं।"आदित्य ने सोचा उसे भी लगा कि शायद मलिक गणेश सही कह रहा है फिर उसने इधर-उधर देखते हुए पूछा,"यहां सीसीटीवी कैमरा तो होगा दिखाओ मुझे आने जाने वालों का रिकॉर्ड उसमें कारण और नीलम तो जरूर दिखाई देंगे!"

सूरज ने फिर डरते हुए मलिक की ओर देखा इस बार गणेश को भी जवाब नहीं आया तो आदित्य ने फिर से पूछा,"क्या हुआ सीसीटीवी कैमरे की फोटो है मुझे दिखाओ चलते!"

"वह बात यह है सर कि यहां पर फिलहाल सीसीटीवी कैमरा उपलब्ध नहीं है अभी हमारे लाज को शुरू हुए सात आठ महीने ही हुए हैं!"

"तो?"आदित्य ने उसे गुस्से में देखा।

"मैं जल्द ही यहां पर सीसीटीवी लगवा लूंगा सर!"

"तब तक हो सकता है तुम्हारा यह इलाज ही ना बचे,इतनी भारी लापरवाही कोई भी काम ठीक से नहीं करते , देखना अगर इस केस में तुम्हारी कोई भी कमी की वजह से वह हादसा हुआ पाया गया तो मैं तुम्हें छोड़ने वाला नहीं!"

आदित्य को उस पर गुस्सा आने लगा।

कुछ पल खामोशी से गुजरे।

“जीपीएस सिस्टम के अतिरिक्त तुम्हारी कार अगर कोई लेकर यहां से हमेशा के चला जाता तो क्या करते?” आदित्य ने कुछ सोच कर उसे दोबारा पूछा।

“ऐसा कहीं होता है सर कार देने से पहले उसका नाम पता आइडेंटिटी आधार कार्ड के बारे में सब मालूम करता हूं ना सर अगर वह लेकर भाग जाएगा तो कैसे चलेगा?”

“ हूं।

“वैसे तुम्हारे यहां से जो किराएदार कोई वाहन किराए पर लेता है तो शाम को तो लौट कर आता होगा फिर अगले दिन घूमने के लिए उस वाहन से जाता होगा?"आदित्य ने कुछ सोचकर सूरज से पूछा तो सूरज ने तुरंत कहा,"हां साहब होता तो ऐसा ही है!"

"तो फिर जब करण जिस कार को लेकर गया और इतने दिनों तक वापस नहीं लौटा तुमने फिक्र क्यों नहीं की?"

सूरज ने हिचकिचाते हुए मलिक की ओर देखा तो गणेश तुरंत बोला,"सर बात यह है कि कई बार वाहन किराए पर लेने वाला एक-एक हफ्ते तक शिलांग में घूमने निकल जाता था और एक हफ्ते बाद ही लौटता था करण ने भी कार 10 दिन के लिए किराए पर ली थी हमें लगा कि शायद वह भी इसी तरह का है इसीलिए इस बारे में मालूम नहीं किया हां आज अंतिम दिन था अगर आज वह नहीं लौटता तो फिर मैं जरूर दरयाफ्त करता.. पता करता!"

"सूरज इसीलिए तुमने करण की कार को नोटिस नहीं किया जब वह इतने दिनों तक यहां नहीं आई?"मालिक की बात सुनकर भी आदित्य ने सूरज से पूछा तो सूरज ने हां में गर्दन हिलाई वैसे भी मालिक की बात से वह कैसे इनकार कर सकता था।

"तुम्हारे यहां कारण अपनी पत्नी नीलम के साथ आज से 10 दिन पहले आकर ठहरा था उसी दिन उसने तुम्हारे यहां से कर किराए पर ली तुम उस समय अपनी बहन के यहां शादी में जा रहे थे क्योंकि शादी की सारी जिम्मेदारी तुम्हारे कंधों पर थी और उसी को निपटा ने में तुम्हे ज्यादा वक्त लग गया इधर उसी दिन कारण और नीलम कार से घूमने यहां से निकल गए और शायद भूल से उस प्रतिबंधित एरिया में पहुंच गए यहां पर उनका सुखी नदी के पुल पर एक्सीडेंट हो गया । संयोग से वहां एक लकड़ी बीनने वाला लकड़ी लेने आया था उसने पुलिस को इन्फॉर्म किया और तब जाकर पता चला। लेकिन कार के पास केवल एक डेड बॉडी पाई गई और वह करण की है पर उसकी पत्नी की डेड बॉडी कहीं भी नहीं है।"

"ऐसा कैसे हो सकता है साहब एक्सीडेंट में अगर दोनों की मौत हुई होती तो दोनों की डेड बॉडी वही पड़ी होती अगर एक डेड बॉडी पड़ी है तो मतलब है कि नीलम बच गई पर आपने कहा कि उसका कुछ भी पता नहीं चल रहा है यह मेरी समझ में नहीं आ रहा सर जी आखिर ऐसा कैसे हो सकता है!"बीच में गणेश बोल पड़ा।

"मालिक शायद जंगली जानवर उसकी डेड बॉडी को घसीट कर ले गए होंगे!"इस बार सूरज ने कहा।

"तो जानवर करण की डेड बॉडी को क्यों घसीट कर नहीं ले गए?"

पहले तो सूरज हिचकिचाया फिर बोला,"उनका पेट भर गया होगा शायद इसीलिए उन्होंने करण की बॉडी को नहीं छुआ!"

"नहीं करण की बॉडी को भी जानवरों ने नोची है!"बीच में आदित्य ने कहा तो सूरज की बात को बल मिल गया और उसने जल्दी से कहा,"फिर तो मेरी बात सच हो सकती है साहब नीलम की बॉडी को जानवर ही जंगल में घसीट कर ले गए होंगे और शायद अब तो खा पी कर चट भी कर दिया होगा!"

आदित्य और अपने मालिक गणेश को अपनी और गुस्से में देखते हुए उसे अपनी गलती का तुरंत एहसास हो गया और उसने सर झुका लिया।

" सॉरी। मेरे कहने का मतलब था कि जानवरों ने खा लिया होगा।"और जल्दी से अपनी गलती मान कर बात बनाई।

“हूं । ,"आदित्य ने फिर बात आगे बढ़ाई," वे नीलम और करण जब यहां ठहरने आए होंगे तो उनके पास कोई सामान वगैरा भी तो होगा?”

“ सामान.. ।"गणेश और सूरज दोनों सोचने लगे ,”एक बड़ा सा बैग था जो उनके रूम में पड़ा होगा । वे दोनों जिस दिन यहां पर आए थे उन्होंने रूम किराए पर लिया था और शायद घंटा दो घंटा रूम में आराम करने के बाद यहां रिसेप्शन पर आकर किराए पर कार लेने की बात की थी और जब उन्हें कार मिल गई थी तो कुछ देर बाद ही दोनों कर से यहां से घूमने के लिए चले गए थे” यह बात गणेश ने बताई और सूरज ने भी सहमति में सर हिलाया।

,"चलो उसका रूम दिखाओ चल के।"आदित्य ने जब कहा तो सूरज ने मलिक की ओर देखा गणेश भी जानता था की पुलिस को रोकना उसके बस की बात नहीं है और फिलहाल मैटर भी बड़ा तगड़ा था इसलिए उसने सूरज से कहा,"अगर तुम्हें दिक्कत हो रही है तो तुम घर जाओ सर को मैं कमरा दिखा दूंगा!"

सूरज ने आदित्य की ओर देखा उसे भी पता था कि सूरज की तबीयत खराब है उसे ज्यादा देर खड़ा रखने से बातचीत करना सही नहीं रहता इसलिए उसने सूरज को घर जाने की अनुमति दे दी फिर सूरज वहां नहीं रुक जैसे आया था वैसे ही स्कूटी से घर वापस चला गया इधर गणेश आदित्य को लॉज की ऊपरी मंजिल पर लेकर पहुंच गया। लॉज के ऊपर मंजिल तक जाने के लिए जो सीढ़ियां बनी हुई थी वह लकड़ी की थी उसका पूरा इलाज है लकड़ी का बना हुआ था पर देखने में बड़ा ही खूबसूरत लगता है।

आदित्य ने कमरे में पहुंचकर कमरे को बड़ी बारीकी से चेक किया कैमरा हाल की बहुत बड़ा नहीं था उसमें एक तरफ छोटा सा पलंग पड़ा हुआ था कोने में एक मैच और कुर्सी थी और एक टेबल पर घड़ा रखा था जिसमें शायद अपनी था कमरे में खिड़की जो पीछे जंगल की तरफ खुलती थी और खूब सुंदर नजारा पेश करते थे उसने शास्त्री नजर से सारी और देखा फिर पलंग पर रख उसे बैग को देखा जो उसे लगा कि कारण और नीलम यही बैग लेकर आए थे।

"यही वह बैग है जो नीलम और करण लेकर आए थे?"उसने अ नुमान तो लगा लिया था पर फिर भी कंफर्म करने के लिए गणेश से पूछा।

“हां यही बैग है!” गणेश ने तुरंत उत्तर दिया।

आदित्य ने उसे बैग को खोलकर चेक किया उसमें कपड़ों के अलावा कुछ भी नहीं था। उसने वह बैग जप्त कर लिया और उसको लेकर नीचे आ गया।

अभी तक की जानकारी के हिसाब से करण और नीलम यहां ठहरने के लिए आए थे पर ठहरे नहीं थे यहां आने के दो घंटे बाद कार किराए पर ली और घूमने चले गए पर उन्हें शिलांग आए हुए चार दिन हो चुके थे बाकी तीन दिन वो कहां रुके थे क्योंकि करण की मां का कहना

है कि अपनी बेटी और बहू से रोज बात होती थी वह जहां भी घूमने जाते थे उसके बारे में वह फोन करके वीडियो कॉलिंग से बताते रहते थे । वे 3 दिन कहीं और ठहरे थे फिर अपना स्थान बदला होगा। पर्व बाकी के तीन दिन कहां ठहरे थे और क्यों उन्हें आखिर स्थान बदलना क्यों पड़ा था इस बारे में अभी कुछ भी पता नहीं था। लेकिन इस बारे में आदित्य को भी नहीं पता था क्योंकि एक्सीडेंटल कर के मिल जाने के बाद विजय ने उसे कर के बारे में दरियाप्त करने के लिए भेजा था।

आदित्य ने गणेश और सूरत से मिली जानकारी के बारे में इस तुरंत विजय को जानकारी दी । विजय को जब पता चला कि उसे लॉजा में जहां से उसने कार किराए पर ली थी उसी दिन कार से वह निकल गया था और उसी दिन उसका एक्सीडेंट हो गया था क्योंकि उसी दिन से वह वापस नहीं लौटा था तो अब सवाल था कि आखिर वह बाकी के तीन दिन कहां रुक हो सकता है वहां पर कुछ ऐसा हुआ हो जो एक्सीडेंट की वजह बनी हो और आगे करण की मौत की और नीलम के गायब होने की वजह बनी हो इसी बात को ध्यान में रखते हुए उसने आदित्य को खोजबीन करने का आदेश दिया। आसपास के जितने भी और कॉटेज थे लॉज थे जो किराए पर कमरा उपलब्ध कराते थे सब में जाकर जानकारी करने की उसे सलाह दी।

और उसी की सलाह पर अमल करते हुए आदित्य ने हर जगह खोजबीन की और शीघ्र ही उसे जगह पर पहुंचा जहां पर करण और नीलम तीन दिन ठहरे हुए थे।

चौथे दिन वहां से रवाना हो गए थे। और गणेश के लॉज में आ गए थे।

वह लॉज गणेश के लॉज से उस लॉज तक पहुंचने में उसे ज्यादा वक्त नहीं लगा इससे पहले उसने और दो-तीन लॉज में जाकर करण और नीलम के बारे में दरयाफ्त किया था पर उसे सफलता नहीं मिली थी पर जब वह ड्रीम लॉज में पहुंचा था तो इस बात की पुष्टि रिसेप्शन पर ही हो गई थी कि करण नीलम राजनगर से शिलांग आने पर दोनों 3 दिन उसी लॉज में ठहरे हुए थे । वह लॉज भी देखने में अच्छा खासा था। पर वहां पर यह पता नहीं चला कि आखिर उन दोनों ने अपना लॉज क्यों चेंज किया था वह ड्रीम लॉज से ब्यूटीफुल लॉज में क्यों आए थे आदित्य ने अंदाजा लगाया शायद उसकी वजह थी उस लॉज में किराए पर वाहन उपलब्ध होने की सुविधा उपलब्ध नहीं थी इस बात का जिक्र रिसेप्शन पर बैठे व्यक्ति ने भी किया था उसने कहा था की आसपास के इलाकों में वह लोग पैदल ही घूमने जाते थे एक दो बार उससे किराए पर वाहन के बारे में बात की थी पर वहां वह सेवा उपलब्ध नहीं थी तब उसने भी उसे ब्यूटीफुल लॉज का आईडिया दिया था और शायद इसीलिए करन और नीलम ब्यूटीफुल नाम के लॉस में ठहरे थे पर यह दुर्भाग्य कहा जाए बदकिस्मती कहा जाए की उसी दिन लॉज से उन्होंने कार किराए पर लिया और उसी दिन का एक्सीडेंट हो गया और पता भी उसके बारे में पूरे 10 दिन बाद चला। उस प्रतिबंधित इलाके में अगर वह लकड़ी बिनने वाला ना जाता तो शायद अभी भी पता ना चलता है। जिस सुविधा को पाने के लिए उन्होंने लॉज को बदला था वह सुविधा ही के लिए कल बन गई फिलहाल तो ऐसा ही जान पड़ता था।

आदित्य ने फोन करके विजय को इस बात के बारे में बताया था। विजय की शिव शंकर और उसकी पत्नी से बात हो चुकी थी और उनकी बातचीत के जरिए उसे पता था की 3 दिन जिस लॉज में करण और नीलम ठहरे हुए थे और जिन जगहों पर घूमने गए थे उनके बारे में उन्होंने अपने मां से बात की थी जिस दिन भी वो लोग घूमने जाते थे उस जगह के बारे में मां को फोन

पर बताते रहते थे इसीलिए विजय को भी सब कुछ पता था । जहां पर घूमते थे अंदेशा था शायद उनका वहां किसी से उसका कुछ झगड़ा वगैरह हुआ हो और उसके बारे में उन्होंने मां को बताया ना हो और आगे चलके वही एक्सीडेंट का कारण बना हो या फिर दोनों करण की मौत का और नीलम के गायब होने का कारण बना हो।

वहां के रिसेप्शन पर बैठे व्यक्ति ने बताया की करण और नीलम दोनों उसके यहां ठहरे हुए थे एक दिन दोनों यहां पर बैठे कुर्सियों पर बात कर रहे थे कि उन्हें शिलांग की सबसे बेहतरीन जगह हो पर जैसे चेरापूंजी डावकी की नदी एलिफेंट फॉल्स नौखिलकाई झरना, लिविंग रूट ब्रिज पेड़ों की जड़ों से बना हुआ पुल शिलांग पीक, उयियम झील लेडी हैदरी पार्क, डॉन बॉस्को म्यूजियम आदि जगह पर जाने की तैयारी थी पर उन जगहों पर जाने के लिए किसी वाहन की जरूरत पड़ने वाली थी शायद यही कारण था उनका लॉज को बदलने का।

“करण और नीलम के गायब होने की खबर इतनी तेजी से हर तरफ फैली हुई है तुमने पुलिस में आकर इस बारे में क्यों नहीं बताया कि वह तीन दिन तुम्हारे यहां ठहरे थे!” सब कुछ पूछतांछ करने के बाद जब उसने बताया कि करण और नीलम के बारे में यानी उनकी एक्सीडेंट और करण की मौत तथा नीलम की गायब होने के बारे में कुछ भी पता नहीं है तो आदित्य को गुस्सा आ गया और उसने कहा।

रिसेप्शन पर बैठा युवक बगले झांकने लगा ज्यादा जोर देने पर बोला,” यह आज की ही घटना है साहब और मैं सुबह से ही रिसेप्शन पर बैठा हूं फोन में बैटरी नहीं है चार्जिंग पर लगा है फोन शायद इसलिए नहीं जान पाया।"

"जान लेता तो क्या पुलिस के पास आकर बताता कि वह दोनों ब्यूटीफुल लॉज में ठहरने से पहले तेरे यहां ठहरे हुए थे!"

"मैं किसी लफड़े में नहीं पड़ना चाहता था साहब फिर मुझे क्या अनुमान था कि उनके साथ ऐसा होगा! और सबसे बड़ी बात मैं बताता नहीं फिर भी आप तो हम तक पहुंच ही जाते हैं जैसा की पहुंच ही गए और आप को सब पता चल जाता पर इस केस से हमारा कोई लेना देना नहीं है साहब।"

"अच्छा एक बात सोच कर बताओ वे दोनों जितने दिन तुम्हारे यहां रहे थे उस दौरान उनका किसी से कोई झगड़ा कोई नाराजगी ऐसा कुछ हुआ था क्या!"

उसने तुरंत इनकार में सिर हिलाया।

"वह दोनों तो सुबह 10,11 के आसपास नाश्ता पानी करके घूमने निकल जाते थे यहीं आसपास के इलाकों में और शाम को ही लौटते थे!"

"वह जिन जगहों पर घूमने गए थे क्या वहां पर ऐसा कुछ हुआ हो सकता है उन दोनों ने कभी इस बात का क्या जिक्र किया!"

उसने फिर अपनी गर्दन इनकार में हिलाई। उसने बहुत कम मुंह से बोलकर सवालों के जवाब दिए थे हर बार बस गर्दन हां में ना में हिलाता था।

"मुंह में कुछ प्रॉब्लम है क्या?"

" नहीं।"

"तो फिर मुंह से जवाब दे ना बार-बार गर्दन क्यों हिला रहा है ऊंट की तरह।"

रिसेप्शन पर बैठे उस 20 साल का लड़का घबरा गया।

उसे सुझा नहीं कि वह इस बात का क्या उत्तर दे वह बस घबराई हुई नजरों से उसकी ओर देखता रहा। पर आदित्य उसके चेहरे पर आए दर को देखकर इस बार बिना पर नहीं हुआ बल्कि और गुस्सा हो गया।

"इस लॉज का मालिक कौन है?"

" गगोई साहब।"लड़के ने तुरंत उत्तर दिया।

"वह कहां है?"

"वह तो दिल्ली में रहते हैं साहब इस लॉज को मै ही देखता हूं! वह जब कभी आते हैं। बस हिसाब किताब करने

“अगर उनके गायब होने में एक्सीडेंट में या मौत में अगर तुम्हारा जरा भी हाथ हुआ तुम लंबे नापोगें याद रखना!” एक तगड़ी वार्निंग देकर आदित्य वहां से रुखसत हुआ।

*****

अब काफी कुछ क्लियर होने लगा था। करण और नीलम शिलांग पहुंचकर कर तीन दिन ड्रीम लॉज में ठहरे थे। कुछ जगह घूमने गए थे। उस समय घर वालों से खासकर करण की मां से रोज बात होती थी फोन पर । वीडियो कॉलिंग होती थी। पर ज्यादातर नीलम से ही बात होती थी जिस दिन आखिरी बार बात हुई थी उस दिन दोनों घूमने के लिए पहाड़ी पर गए हुए थे जहां सुंदर सा फॉल था।

नीलम ने उस दिन कुछ खाया नहीं था क्योंकि उसका व्रत था।

फिर इसके बाद कोई बात नहीं हुई।

लॉज में वे तीन दिन ठहरे थे फिर दूसरी जगह गए थे यानी ब्यूटीफुल लॉज क्योंकि ड्रीम लॉज में किराए पर वाहन मिलने की सुविधा उपलब्ध नहीं थी और फिर चौथे दिन वहां से एक कार किराए पर ली थी फिर घूमने निकल गए थे।

उस दौरान उनकी कार का एक्सीडें हो गया था उस क्षेत्र में जो प्रतिबंधित था। माना गया कि शायद उन्हें उस प्रतिबंधित एरिया के बारे में मालूम नहीं होगा। पर वास्तव में क्या हुआ था वहां पर किसी को ठीक से पता नहीं सब अपने-अपने अनुमान लगा रहे थे।

आदित्य ने जो भी खोजबीन की थी वहीं खबर अगले दिन हर न्यूज चैनल, सोशल मीडिया पर छाई हुई थी। सब अपने अपने अनुमान लग रहे थे बातों का बाजार गर्म था पर हकीकत अभी

बहुत दूर थी।

और सबसे विस्फोटक खबर थी खाई में पाई गई करण की लाश । लाश बुरी तरह खराब हो गई थी । जानवरों ने लाश को काफी हद तक खराब कर दिया था दूसरे 10 दिन का समय हो चुका था इसीलिए लाश काफी खराब हो गई थी दुर्गंध आने लगी थी। विजय होटल से करण के मां-बाप को लेकर उस स्थान पर पहुंचा था जहां पर लाश को पोस्टमार्टम के लिए रखवाया गया था यानी मोर्चरी में क्योंकि लाश बहुत खराब हो गई थी इसलिए उन्हें दूर से लाश को दिखाया गया लाश के कपड़े देखकर ही वो रोने लगे थे और करण करण चिल्लाने लगे थे । शिव शंकर की वाइफ दिल की मरीज थी इसलिए मोर्चरी हाउस में वह उसको लेकर नहीं आना चाहता था बड़ी मुश्किल से खुद को ही उसने संभाला था। बीवी को एक बार हार्ट अटैक पहले भी आ चुका था शायद इसीलिए सावधानी बरतते हुए शिव शंकर ने बीवी को विजय के साथ चलने से मना किया था पर जब वह नहीं मानी । जिद करने लगी तो उसकी जिद की वजह से उसको साथ लेकर आया था पर यहां आने पर बीवी की तबीयत खराब हुई तो उसे पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां उसे कुछ घंटे में ही आराम मिल गया था पर होश में आने के बाद वह फिर से दुखी हो गई थी लगातार रो रही थी। शिव शंकर अपनी वाइफ से करण की मौत को छुपाना चाहता था पर छुपा नहीं पाया फिर हकीकत कभी ना कभी तो सामने आती ही पहले आ गई अच्छा रहा फिलहाल वह यह सदमा बर्दाश्त कर गई थी।

****

मृतक करण के माता-पिता अभी भी उस होटल में ठहरे हुए थे उनके बेटे की लाश पोस्टमार्टम के लिए भेजी जा चुकी थी और उसमें अभी दो-चार दिन लगने थे पर उन दोनों का रो-रो कर बुरा हाल था। उनके इकलौते बेटे कि इस तरह एक्सीडेंट में दर्दनाक मौत हो गई थी पुलिस का अनुमान था एक्सीडेंट जब हुआ होगा करण कार से उछल कर नीचे खाई में जाकर गिरा और मर गया होगा यानी उसकी मौत का कारण एक्सीडेंट ही रहा होगा ।

करण की बॉडी में उसके दोनों हाथ में सोने की दो-दो अंगूठियां थी ,महंगी घड़ी थी पर जब शिव शंकर को इस बारे में याद आया उसने इस बारे में पूछा भी तो विजय ने बताया कि लाश जब खाई में पाई गई थी तभी इसके हाथ में कुछ भी नहीं था जिससे एक अंदाजा यह भी लगाया जा रहा था कि शायद लोकल के किसी गैंग ने उन दोनों के साथ गलत किया करण को मार कर उसकी वाइफ को उठा ले गए। मौजूदा सिचुएशन में यही सही लग रहा था पर हकीकत क्या थी इस बारे में कुछ भी पता नहीं था फिलहाल सब करण की मौत एक्सीडेंट मान रहे थे पर शिव शंकर के नए बयान ने पुलिस को एक नए एंगल से सोचने पर मजबूर कर दिया था। और फिर पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने भी केस को इसी दिशा में धकेल दिया। हालांकि शिव शंकर और उसकी पत्नी के बयानों के अनुसार पुलिस को पहले ही लगने लगा था कि यह हत्या का केस हो सकता है क्योंकि करण के हाथ से अंगूठी और घड़ी गायब करना जानवरों का काम नहीं है यह बात सच भी साबित हुई पोस्टमार्टम में आ गया कि करण की गोली मार कर हत्या की गई। अब काफी कुछ क्लियर होने लगा था पुलिस का अनुमान था वे दोनों भूल बस उस प्रतिबंधित एरिया में चले गए थे जहां संयोग से या बदकिस्मती से उनका सामना किसी चोर गैंग से हुआ होगा और या फिर उनकी कार का एक्सीडेंट हो गया होगा बाद में बाई चांस कोई चोर, लुटेरा ग्रुप वहां आ गया होगा बजाय उनकी मदद करने के उसने भी उन्हें लूटने की कोशिश की करन ने विरोध किया होगा इसीलिए उसको मार दिया और उसकी पत्नी को

गायब कर दिया। यह अभी सिर्फ अनुमान था। जो हकीकत की काफी करीब जान पड़ता था।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद करण के माता-पिता के बयानों को जोड़कर देखने पर यही अनुमान सच साबित होता था और मीडिया में जंगल में लगी आग की तरह फैल रहा था हर कोई बस इसी के बारे में बात कर रहा था। जहां पहले लोग इस केस को भी कुछ महीने पहले हुए केस सोनम राजा रघुवंशी के केस की तरह देख रहे थे अब उनका नजरिया कुछ-कुछ बदल रहा था।

अब उनका नजरिया कुछ-कुछ बदल रहा था। पर काफी लोग ऐसे थे जिनको अभी भी लग रहा था कि यह केस भी उस केस की तरह है और एक दिन अचानक सोनम की तरह नीलम भी वापस आ जाएगी और एक मनगढ़ंत कहानी सुनाएगी यानी उन लोगों को लगता था कि करण की हत्या में नीलम का ही हाथ है। उसका भी कोई एक बॉयफ्रेंड है जिसके लिए उसने इतना बड़ा अनर्थ किया है।

किसी की सोच पर कोई ताला तो लगा नहीं सकता। जितना मुंह उतनी बातें हैं। लेकिन सच्चाई वह चाबी थी जो इन सारी बातों पर ताला लगा सकती थी और वह अभी बहुत दूर थी।

पुलिस के लिए इस समय सबसे ज्यादा चिंता का कारण था करण की पत्नी का कुछ भी पता नहीं चल रहा था। सब समझ रहे थे कि नीलम बहुत खतरे में है अगर जल्द से जल्द से उसे खोज ना गया तो भारी अनर्थ हो सकता है पुलिस का प्रयास था उसको बचाना। लेकिन इस बारे में कोई भी लीड पुलिस के हाथ नहीं लगी थी। लाख हाथ पांव करने के बाद भी पुलिस पर प्रेशर बढ़ता जा रहा था।

सास ससुर रो-रो कर कहते थे मेरा बेटा तो चला गया कम से कम बहु ही बच जाए उसे कुछ ना हो वह बड़ी प्यारी बच्ची है।

इंस्पेक्टर विजय को इस केस को हैंडल करने की जिम्मेदारी दी गई थी सबसे ज्यादा प्रेशर तो उसी पर था एक्सीडेंटल कार और लाश के बारे में पता चलने के बाद वह उस होटल में पहुंचा था शिव शंकर और उर्मिला देवी को लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजी गई करण की लाश को आईडेंटिफाई करने के लिए उन्हें मुर्दाघर ले गया था फिर जब उसकी पत्नी की तबीयत खराब हुई थी तो उसने ही अस्पताल में एडमिट करवाया था पर कुछ ही घंटे के बाद पत्नी ठीक हो गई तो उन दोनों को उनके होटल वापस छोड़कर भी वही गया था।

इस समय होटल के उस रूम में दोनों मां और बाप विचार मगन बैठे थे वह इसी बारे में शायद सोच रहे थे अचानक मां रोते हुए बोली, "एक बात मेरे मन को खा जा रही है कई दिन से सोच रही थी तुम्हें बताऊं पर हिम्मत नहीं पड़ रही थी!"यह हकीकत भी थी की शिव शंकर की पत्नी उर्मिला देवी ने इस बात को काफी हिम्मत करके लेकिन झिझकते हुए कहाथा।

" क्या?"शिव शंकर ने सर उठाकर उसकी ओर देखा। वह खुद भी बहुत दुखी और परेशान लग रहा था शायद उसकी भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि आखिर नीलम का पता क्यों नहीं चल रहा। लेकिन जब उसकी पत्नी ने थोड़ा सस्पेंस क्रिएट करते हुए कहा तो उसने उसकी

और हैरानी से देखा था।

"जैसा अपने बेटे के साथ हुआ ऐसा ही कुछ दिनों पहले राजा रघुवंशी और उसकी पत्नी सोनम के साथ भी हुआ था मुझे लगता है कहीं अपने बेटे की मौत में अपनी बहू का ही तो हाथ नहीं यही सोच कर मुझे डर लग रहा है! मेरा कलेजा कहां पर रहा है यह सोचकर ही की कहानी हमारी बहू नीलम ही तो हमारे बेटे की मौत का कारण नहीं बनी लेकिन उसने तो अपनी सहमति से शादी की थी अगर उसके मन में कोई और लड़का था तो वह हमें बता देता अपने घर वालों को बता देती शादी से इनकार कर देती हमारा बेटा तो बच जाता।"

"नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता ।"शिव शंकर ने तुरंत कड़े शब्दों में अपनी पत्नी की बातों को काट दिया और थोड़ा नाराजगी से बो ला ,"अपनी बहू वैसी नहीं हो सकती तुम्हें तो पता है अपनी बहू नीलम ने तो खुद मना किया था वहां जाने से जबकि उस केस ने पत्नी ने अपने पति को जबरदस्ती शिलांग ले गई थी यहां तो अपना बेटा ही उसे जबरदस्ती ले गया था। अपनी बहू सोनम जैसी नहीं हो सकती।"

"क्या पता हो?"उर्मिला देवी ने डरते डरते बड़े ही धीमे स्वर में कहा," और रही बात शिलांग आने की बात हम लोगों से हमारे बेटे ने की थी क्या पता पीठ पीछे बहू नहीं उस पर दबाव डाला हो लेकिन सामने कुछ ना कहा हो इसीलिए हमें लगता है कि शिलांग आने की बात हमारे बेटे ने कही थी!"

"वह भला ऐसा क्यों करेगा?"शिव शंकर ने भी सोच कर झिझकते हुए कहा।

"अब वह बताने के लिए जिंदा तो है नहीं!"उर्मिला देवी के आंसू निकलने लगे उसने तुरंत साड़ी के पल्लू से अपने चेहरे को ढक लिया और आंसू पोछने लगी।

शिव शंकर भी सोच में पड़ गया कुछ देर गंभीरता से ऐसी बात पर विचार करते रहने के बाद बोला,"अभी फिलहाल यह मत सोचो. दुआ करो कि अपनी बहू सही सलामत हो वह लौट आए तो हकीकत पता चले अभी से किसी पर आरोप लगाना सही नहीं! हर कोई नए शादीशुदा जोड़ा अगर शिलांग में आता है तो इसका यह मतलब नहीं की कि उनका हस्र भी सोनम और राजा रघुवंशी की केस की तरह होगा भले ही दोनों केसों में कुछ सिमिलरिटी हो मुझे लगता है हमें इस ढंग से नहीं सोचना चाहिए हमारा इस तरह से सोचना हमारी बहू के लिए घातक साबित हो सकता है।"

उसकी पत्नी ने कहने के लिए मुंह खोल पर फिर पता नहीं क्या सोचकर एक गहरी सांस छोड़कर चुप हो गई। शायद उसे अपने पति की बातों पर यकीन नहीं हो रहा था लेकिन वह भारी दुविधा में थी अगर बहू पर शक करती और वह निर्दोष निकली तो उसके लिए घातक हो सकता है इसीलिए इस समय कुछ भी कहना बड़ा मुश्किल था वह खुद जानती थी बहू का कुछ पता चलता तो सच्चाई सामने आती है कि आखिर उसके बेटे के साथ हुआ क्या था।

तभी कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई।

दोनों की नजरे दरवाजे पर गई। उनकी नजरों में बस यही प्रश्न था कि आखिर दरवाजे पर कौन

है क्योंकि बेटर होता तो बाहर से ही आवाज लगता पर जिसने भी दस्तक दी थी वह अभी तक चुपचाप खड़ा था।

" कौन है? अंदर आ जाओ दरवाजा खुला है।"शिव शंकर ने पहले पलंग पर बैठे ही बैठे थोड़ा तेज आवाज लगाई और फिर कुछ पलों बाद ही दरवाजा खुला।

दरवाजा जब खुला तो उनके सामने एक सुंदर सी 23,24 वर्षी लड़की खड़ी थी जिसे देखकर कोई भी जवान दिल होता तो धड़क जाता मगर शिव शंकर के चेहरे पर पता नहीं क्यों हल्का गुस्सा दिखाई दिया । और उसकी पत्नी के चेहरे पर डर दिखाई दिया उसने अपने पति की ओर कर नजरों से देखा पति के चेहरे पर ऐसा लग रहा था जैसे अचानक कोई ज्वालामुखी दहकने लगा हो।

वह लड़की कमरे के अंदर आ गई लड़की पर नजर पड़ते ही उसकी मां के चेहरे का भी रंग उतर गया ऐसा लगा जैसे उन दोनों को ही उसका यहां आना अच्छा नहीं लगा। शिव शंकर कुछ कहने वाला था पर उसकी मां ने उसका हाथ पकड़ कर दबाया जिसका इशारा था शायद कि वह भी शांत रहे और शायद इसीलिए वह शांत हो गया था।

"मुझे पता है आप दोनों को मेरा यहां आना अच्छा नहीं लगा मम्मी पापा पर मुझे भाई के बारे में पता चला तो मैं खुद को रोक नहीं पाई!"वह लड़की उन दोनों की ही संतान थी और करण की छोटी बहन थी शिल्पी। जो अभी भी दरवाजे पर ही खड़ी हुई थी और उन दोनों की ओर लगातार देखे जा रही थी जब उन दोनों में से कोई कुछ नहीं कहा तो उसने खुद ही कहा।

उन दोनों के चेहरे पर फैले भावों को देखकर और यह एक बार की बात नहीं है जब भी वह उन दोनों के सामने आती थी उन दोनों के चेहरे पर ऐसे ही भाव आते थे।

जिसकी मां बाप से या यह कहो की मां-बाप की उससे नहीं पटती थी इसीलिए वह उनसे दूर दिल्ली में रहती थी।

"तेरी जैसी हरकतें हैं तू हम लोगों से दूर ही रहे तो बेहतर है हम नहीं चाहते कि तू कभी भी हमारे साथ दिखे तुझसे हम पहले ही नाता तोड़ चुके हैं क्योंकि तुझे हमेशा से अपनी शर्तों पर जीना है तुम्हें लगता है तुम जैसे नए लोगों के विचार सही है और हम बूढ़े पुराने लोगों के विचार घिस चुके हैं पिट चुके हैं हमें किसी भी प्रकार की कोई समझ नहीं है तुम्हारी समझ तुम्हें मुबारक हो और हमारी समझ हमें हम नहीं चाहते कि तुम हमारे किसी भी मामले में टांग अड़ाओ । इसलिए अगर यहां हमदर्दी जताने आई है तो तुरंत चली जाए मुझे तेरी हमदर्दी बिल्कुल भी की जरूरत नहीं है!"उसकी बातें सुनकर शिव शंकर जो पहले ही उसे देखते ही नाराज हो गया था और खुद को बड़ी मुश्किल से कंट्रोल किए हुए था बुरी तरह गुस्से में चिल्ला करबोला।

शिल्पी ने कुछ खाने के लिए मुंह खोल फिर गहरी सांस भरकर रह गई वे दोनों उसकी ओर ही देख रहे थे फिर आखिरकार उसने कहा ही दिया।

"आप दोनों पुराने ख्याल के हैं समस्या बस इस बात की है कि आप कोई बात समझना नहीं चाहते जो बात दुनिया समझती हैं, वही बात आप दोनों नहीं समझना चाहते हर इंसान को अपना जीवन अपने ढंग से जीने की आजादी होती है क्योंकि जीवन एक ही बार मिलता है खैर मैं उस बात पर यहां बहस करने नहीं आई मुझे तो अपने भाई के बारे में पता चला तो मैं आप दोनों से मिलने चली आई! क्योंकि मुझे अपने भाई की फिक्र है उसके साथ क्या हुआ किसने किया जानने के लिए ही मैं आई हूं इसीलिए आपके पास आना पड़ा। पर रही बात हमदर्दी की तो मेरे भाई से मेरी हमदर्दी हमेशा से थी और रहेगी।

बाप गुस्से में भन्नाया हुआ बैठा था इतना ज्यादा कि उसे देखकर लगता था कि उसका बस चलता तो लड़की का फोरन हाथ पकड़ कर कमरे से बाहर निकाल देता। बाप ने फिर कुछ कहना चाहा पर मां ने हाथ पकड़ लिया।

वह कसमाशा कर रह गया वरना उसकी हालत से लग रहा था कि वह अपनी बेटी को तुरंत यहां से भगा देगा।

"तुझे कैसे पता चला कि हम दोनों यहां शिलांग में है?"इससे पहले की शिव शंकर कुछ बोल पाता उसकी मां ने पूछा उसके स्वर में भी गुस्से का हल्का सा फोटो दिखाई दे रहा था।

"न्यूज़ के जरिए न्यूज़ में बता रहे थे की करण के मां-बाप शिलांग के होटल में ही ठहरे हुए हैं बाकायदा होटल भी दिखाया था तभी तो मैं यहां चली आई वरना मैं तो पहले अपने घर आने की सोच रही थी! वैसे यह सब कैसे हुआ?"शिल्पी अभी भी दरवाजे पर ही खड़ी थी उससे उन दोनों में से किसी ने भी बैठने के लिए नहीं कहा था। जो इस बारे में संकेत साफ-साफ दे रहा था कि उनके रिश्तों में भारी तनाव जान पड़ता था।

"यह सभी न्यूज़ में कई दिनों से आ रहा है न्यूज़ से ही पता चल गया होगा!" बाप का रुख अभी भी लड़की के प्रति रूखड़ जान पड़ता था!

लड़की ने अफसोस में गहरी सांस भर कर छोड़ी। न्यूज़ के जरिए उसे काफी कुछ पता था पर वह सोचती थी अपने मां-बाप से इस बारे में जानकारी लेना शायद कुछ ऐसा पता चलता है जो न्यूज़ पर उसे नहीं पता चला पर वह समझ गई की उन दोनों से कुछ भी जानकारी हासिल करना बड़ा मुश्किल है।

"करण और उसकी बहू नीलम शादी के चार-पांच दिनों बाद ही यहां शिलांग में अपने हनीमून मनाने आए थे दो-तीन दिन तक फोन पर लगातार उनसे बात हुई फिर एक दिन अचानक बात होना बंद हो गया मुझे लगा कि कुछ नेटवर्क प्रॉब्लम होगी पर 24 घंटे जब बात नहीं हुई तो हमें चिंता हुई हमने जाकर पुलिस में कंप्लेंट की पुलिस वालों ने तब खोजबीन करना शुरू किया और उसके 10 दिन बाद पता चला करण की कार जंगल की एक प्रतिबंधित एरिया में

एक्सीडेंट हो गया था और उसके पास खाई में करण की लाश ,"बाप ने तो मुंह नहीं खोला पर मां उसे बताने लगी हालांकि उसे इस बात की उम्मीद कम ही थी पर मां ने उसे बताया बताते बताते वह फिर से दुखी होने लगी।

जंगल में एक जगह उनका एक्सीडेंट हो गया था करण की लाश गहरी खाई में पाई गई लेकिन पहले हमें लगता था या पुलिस को लगता था कि करण की मौत एक्सीडेंट में हुई ऐसा पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में आया था। करण की हत्या की गई लेकिन नीलम का कुछ पता नहीं चल रहा!"मां ने कहना शुरू किया।

"यह तो एकदम राजा रघुवंशी और सोनम वाला जैसा ही केस लगता है कहीं भाई की हत्या में भाभी का ही तो हाथ नहीं!"लड़की ने भी कुछ देर पहले जो मां शिव शंकर से बातचीत में कह रही थी इस बात पर मोहर लगाई तो मां को थोड़ा बल मिला उसने पति की ओर देखा।

"कुछ बातें हैं जो मिलती-जुलती हैं पर हमें अभी ऐसा नहीं सोचना चाहिए क्या पता हमारी बहू सच में किसी संकट में हो! अगर हम अभी से मानेंगे कि कारण की मौत में नीलम का हाथ है तो कैसे चलेगा क्या पता सच्चाई कुछ और हो हर बार ऐसा नहीं होता है कोई सोनम राजा रघुवंशी का खून करवा दे।"

" हूं। पता नहीं क्यों मुझे ऐसा ही लगता है कि भाई की हत्या में भाभी का जरूर हाथ हो सकता है। सोनम की तरह उसका भी किसी से पहले अफेयर रहा होगा पर उसकी शादी उसके मन से नहीं हुई शायद इसीलिए उसने भाई को रास्ते से हटा दिया जब तक हिंदुस्तान में किसी से उसकी मर्जी पूछ कर शादी नहीं की जाएगी तब तक ऐसे हादसे से होते रहेंगे!

यहां पर बरसों पुरानी ना जाने कितनी कुरीतियां प्रथाएं चल रही हैं जिन्हें कोई बदलना भी नहीं चाहता सबको जिद है इस बात की अरे जब दो लोग अपनी जिंदगी अपने मन से गुजारना चाहते हैं तो कम से कम एक बार उनसे तो पूछना चाहिए कि वह दोनों एक दूसरे को पसंद करते हैं या नहीं राजी है या नहीं अपनी मर्जी ठोक देते हैं लोग उन पर और फिर ऐसे हद से तो होने ही लगेंगे रोज आए दिन ऐसे हाथ से सुनने को मिलते हैं पर इसकी जड़ तक जाने के लिए कोई भी प्रयास नहीं करता और ना ही इसे समाप्त करने की कोशिश करता है।"कहते कहते लड़की ने फिलासफी झाड़ी।

"तुम्हें क्या लगता है मां-बाप अपने बच्चों के दुश्मन होते हैं वह नहीं चाहते कि उनके बच्चे खुश रहे क्या वह अपनी खुशी के लिए सब कुछ करते हैं?"खामोश बैठा शिव शंकर गुस्से में बोला।

"यही तो वह बात है जैसे लोग समझना नहीं चाहते मैंने यह कब कहा कि मां-बाप अपने बच्चों का भला नहीं चाहते पर उन्होंने शादी की जो प्रथा तय कर रखी है वह गलत है उन्हें से स्वीकार करना चाहिए शादी तभी करनी चाहिए जब लड़का लड़की एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हो और मैं प्यार हो!"जानते हो और उनमें आपस में प्यार हो! पर अपने यहां यह नहीं देखा जाता अपने यहां देखा जाता है कि दोनों अपने जात बिरादरी के हैं कि नहीं दोनों अमीर हैं कि नहीं

लड़के वाला देखता है कि उसे बढ़िया दहेज मिल रहा है कि नहीं लड़की वाला देखता है की लड़का ऊंची पोस्ट पर है कि नहीं।"

"तुम्हारा सोचना गलत नीलम और करण एक दूसरे को चाहते थे करण ने मुझे यह बात बताई थी कि नीलम भी उसे चाहती है वह नीलम से शादी करना चाहता हूं हम लोगों ने तभी उनकी शादी की थी ऐसा नहीं है कि हमने जोर जबरदस्ती से करण और नीलम की शादी कराई हो!"शिव शंकर बोलता है इससे पहले ही उसकी मां ने कड़े स्वर में कहा।

शिल्पी ने उसकी और देखा शायद वह सोच रही थी कि करण की और नीलम की शादी अरेंज मैरिज थी पर अब उसे पता चला था कि हम दोनों की शादी लव मैरिज हुई थी मां के बताएं अनुसार दोनों एक दूसरे से प्रेम करते थे।

वह कुछ पल सोचती रही फिर उसने पूछा।

"वैसे पुलिस क्या कह रही है?"

"पुलिस अभी इन्वेस्टिगेशन कर रही है वह क्या रहेगी अनुमान तो हजारों होते हैं उन्हीं अनुमानों के आधार पर जांच की जाती है सच्चाई तो बाद में ही पता चलती है! वैसे पुलिस का कहना है कि जिस इलाके में एक्सीडेंट हुआ वहां पर कई लोकल गैंग एक्टिव रहते हैं हो सकता है उन्होंने ही लूटपाट के इरादे से उस वारदात को अंजाम दिया हो!"

"यानी कार का जो एक्सीडेंट हुआ था वह भी किसी गैंग की ही चाल हो सकती है!"

"हां बिल्कुल हो सकती है पर एक अनुमान यह भी है कि हो सकता है एक्सीडेंट अपने आप हुआ हो और बाई चांस कोई लोकल गैंग वहां से गुजरा हो उसने करण की हत्या कर उसे खाई में फेंक दिया हो और उसकी पत्नी नीलम को उठा ले गए हो! करण अपने हाथों में जो सोने की अंगूठियां और कलाई में महंगी रिस्ट वाच पहनता था गले में सोने की चैन पहनता था वह सब कुछ नदारत था इससे इस अनुमान को और बल मिलता है। "शिल्पी के जवाब उसकी मां ही दे रही थी बाप अभी भी गुस्से में भन्नाया हुआ बैठा था उसने इस बातचीत में अभी तक हिस्सा नहीं लिया था। हालांकि एक दो बार शिल्पी ने अपने बाप की ओर देखा भी पर उसने मुंह फेर लिया था।

"पुलिस का ऐसा अनुमान है? पर मुझे अभी भी लगता है कि मेरे भाई की हत्या में नीलम का ही हाथ है।"

" पुलिस का यह अनुमान भी है जो फिलहाल मौजूदा सिचुएशन को देखते हुए काफी सही भी लगता है पर मैं ऐसा किसी भी अ नुमान को भी नहीं मानती जब तक नीलम वापस नहीं आ जाती वह वापस आएगी तो खुद ही सब कुछ सच्चाई सामने आ जाएगी तब तक अनुमान लगाने से कोई फायदा नहीं किसी को बुरा भला कहने से क्या फायदा हो सकता है वह सच्चा हो!"पहली बार शिव शंकर ने मुंह खोला पर उसके शब्दों में ऐसा लगता था जैसे बहू के लिए

हमदर्दी है और अपनी बेटी के लिए जहर। हालांकि उसका कहना भी काफी हद तक सही था जब तक नीलम वापस नहीं आती तब तक कुछ भी सोचा सिर्फ अनुमान लगाना ही था।

" हूं।"आप को नाराज होते देखा शिल्पी ने सिर्फ गंभीरता से हुंकार भाई कहना तो वह और बहुत कुछ चाहती थी ऐसा लगता था पर फिर उसने इरादा त्याग किया इस विषय पर बात करने का।

"मैं पुलिस से बात करूं क्या?"लेकिन कुछ अनुवाद उसने फिर कहा।

"तुम क्या पुलिस से बात करोगी ?" इस बार तो शिव शंकर गुस्से में फट पड़ा अब तक वह अपने गुस्से को संभाले हुए था पर अब शायद वह अपने गुस्से को संभाल नहीं पाया और चिल्ला कर बोला,"तुम्हारा क्या प्रभाव है तुम्हें पता नहीं मैं राजनगर का एक रहीस बड़ा ट्रांसपोर्ट बिजनेसमैन टाइकून हूं जो मेरा प्रभाव है उसके आगे तुम्हारा क्या प्रभाव! "उसके स्वर में शिल्पी की खिल्ली उड़ाने वाले अंदाज भी शामिल थे।

तुम इस मामले से दूर रहो हमें तुम्हारी कोई जरूरत नहीं!"शिव शंकर ने सख्त लहजे में शिल्पी को इस मामले से दूर रहने की तगड़ी वार्निंग दे दी यह बात शिल्पी को शायद अंदर तक चुप गई थी ऐसा लगा जैसे उसकी आंखें भर आई हो पर उसने आंसू निकलने नहीं दिए खुद पर कंट्रोल बनाए रखा उसका दुख में मुंह भी बिगड़ा था पर उसने अपने मनोभावों पर पूरी ताकत से कंट्रोल कर लिया।

शिल्पी ने उसकी और देखा कुछ कहना चाहती थी पर फिर कुछ कहा नहीं।

"फिर तुम्हें बीच में पड़ने की कोई जरूरत नहीं हम नहीं चाहते कि तुम्हारे जैसे लोग हमारी मदद करें अभी हमारे नाखून अभी इतने नहीं गिर गए हैं कि हमें तुम्हारी मदद लेनी पड़ेगी और सही यह होगा कि तुम इस मामले से दूर रहो हमें तुम्हारी कोई जरूरत नहीं!"

लड़की ने असहाय भाव से मां की ओर देखा मां ने दूसरी ओर मुंह घुमा लिया । उसका चेहरा पर अपार दुख की वेदना की झलक साफ दिखाई दी। उसका चेहरा बिगड़ने लगा। अब ऐसा लगा वो खुद को संभाल नहीं पाएगी। इसलिए कुछ पल खड़ी रहने के बाद वह जिससे बैठने के लिए भी नहीं कहा गया इसीलिए वह बड़े निराशा भाव से पलटी और दरवाजा खोलकर जल्दी से बाहर चली गई।

"बड़ी आई हमदर्दी जताने वाली । मैं तो समझा था कि मर खप गई होगी। पर ये दुष्ट तो अभी जिंदा है। हमने त्याग दिया इसे अच्छा किया। मेरी उंगली पड़कर इसने चलना सीखा था बड़ी हुई तो हमें बेवकूफ समझने लगी अपनी उंगली पकड़ कर हमें चलना सीखना चाहती है बेवकूफ लड़की! तुमने मुझे बेकार रोक लिया मैं उसे पहले ही कमरे से बाहर निकाल देता उसकी बकवास कभी नहीं सुनता हर केस को सोनम राजा रघुवंशी केस की तरह जोड़कर ही सब देख रहे हैं बड़ी आई ज्ञान देने।" उसके जाते ही बाप ने नफरत से कहा । मां बेचारी कुछ नहीं बोली।

****

उस लड़की शिल्पी के जाने के कुछ देर बाद तक मियां बीवी दोनों कमरे में बंद इस विषय पर बात करते रहे और अभी मुश्किल से 5-10 मिनट गुजरे होंगे तभी दरवाजे पर दोबारा दस्तक हुई। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा चेहरे पर ऐसे भाव थे कि अब कौन हो सकता है कहीं शिल्पी ही तो दोबारा नहीं लौट आई पर फिलहाल अंदाज लगाना मुश्किल था इसलिए शिव शंकर ने उठकर दरवाजा खोला । शिल्पी के जाने के बाद शिव शंकर ने उठकर दरवाजा अंदर से बंद कर लिया था। पर जब उसने दरवाजा खोला तो बाहर पुलिस इंस्पेक्टर विजय खड़ा था।
हालांकि जैसे हालात थे उसमें उसे मुस्कुराना तो नहीं चाहिए और वह मुस्कराया भी नहीं था पर चेहरे पर ट्रंप जैसी एक बार मुस्कुराहट कहे या मुंह बनाने की उसकी आदत को उसने बनाया था।

“मेरी बहू नीलम के बारे में कुछ पता चला क्या?”विजय कुछ कहता इससे पहले ही शिव शंकर ने पूछा । उसके बेटे की लाश तो पहले ही मिल चुकी थी और जिसका पोस्टमार्टम भी हो चुका था पर बहू का कुछ पता नहीं चल रहा था शायद इसीलिए उसने बहू के बारे में पूछा पर विजय के चेहरे पर घोर निराशा देखकर वह समझ गया कि अभी कुछ पता नहीं चला। वह भी निराश हो गया।

“अभी तो फिलहाल आपकी बहू के बारे में कुछ भी पता नहीं चला पर हम जोर-शोर ढंग से खोजबीन कर रहे हैं उम्मीद है जल्दी पता चल जाएगा । ," विजय ने अफसोस जताने वाले अंदाज में तुरंत कहा और फिर कुछ रुक कर धीरे से बोल ,"वैसे अंदर बैठकर बात करें तो ठीक रहेगा। मुझे आपसे कुछ बात करनी है!”

शिव शंकर ने उसके चेहरे की ओर देखा ऐसा लगा जैसे सोच रहा हो कि क्या बात करना चाहता है पर फिर सर को झटका देकर वह एक तरफ हो गया और विजय कमरे के अंदर दाखिल हो गया अंदर मियां बीवी दोनों पलंग पर बैठ गए और वह सामने पड़े सोफे पर कुछ पल शांति से गुजरे दोनों पक्ष एक दूसरे को घूरे जा रहे थे।

“आप क्या बात करना चाहते थे?”शिव शंकर जब वे सब्र होने लगा तो पहले उसने गला खकारा फिर पूछ बैठा।

विजय ने पहलू बदला। लगा जैसे सोच रहा हो कि अपनी बात कहां से शुरू करें कैसे शुरू करें।

“आपके बेटे और बहू के साथ जो हादसा पेश आया उसमें आपको नहीं लगता किसी साजिश की बु आ रही है?”विजय ने उसके सवाल का जवाब देने की जगह उल्टा सवाल किया शिव शंकर और उसकी पत्नी दोनों के चेहरे पर गंभीर भाव आए। कुछ देर पहले शिल्पी भी ऐसा ही कुछ कह कर गई थी जिसमें साजिश की बु आने की पूरी संभावना थी अब वही बात इंस्पेक्टर विजय भी कर रहा था।

“मैं आपके कहने का मतलब नहीं समझ पाया!” फिर भी शिव शंकर ने उससे पूछा ताकि विजय कुछ और स्पष्ट बात कहे और उसकी समझ में आए आखिर वह किस प्रकार की साजिश की बात कर रहा है।

“मेरे कहने का मतलब है कि आपके बेटे और बहू के साथ जो हादसा पेश आया उसके पीछे आपका कोई दुश्मन उसकी साजिश हो सकती है ..तो आप हमें सोच कर बताइए की ऐसे कौन-कौन से लोग हैं जिन पर आपको शक है या हो सकता है! बहरहाल आपने बताया था कि आप राजनगर के सबसे कामयाब ,बड़े ट्रांसपोर्टर के धंधे के मामले में है और जाहिर है कि अमीर आदमी है तो ऐसे में आपके कई दुश्मन हो सकते हैं!”

मियां बीवी ने एक दूसरे की ओर देखा कुछ पल सोचते रहे और फिर शिव शंकर ने जवाब दिया,” ऐसा तो कोई भी शख्स मुझे नजर नहीं आ रहा जिस पर मैं ऐसा जाहिर कर सकूं मैं भले ही अमीर आदमी हूं पर मेरा कोई भी दुश्मन नहीं है मेरी कभी किसी से कोई लड़ाई नहीं हुई कोई झगड़ा नहीं हुआ!”

“आप जिस धंधे में हैं उसमें सैकड़ो लोग काम करते हैं क्या कभी ऐसा हुआ है कि कभी किसी को अपने या आपके बेटे ने किसी बात को लेकर उसको धमकाया हो हड़काया हो ऐसा कि उसे बुरा लग गया हो!”

“ऐसा बिल्कुल नहीं है मैं अपने साथ काम करने वालों की पूरी इज्जत करता उन्हें पूरा सामान देता हूं यह नहीं समझता कि वह मजदूर है उनकी तनख्वाह कम है तो उनका सम्मान और इज्जत कम है ऐसा बिल्कुल नहीं!”

“अपना सही पर आपके बेटे ने किसी को धमकाया हो हर गया हो और उसे बुरा लग गया हो ऐसा कुछ? वैसे भी आज के लोगों की सहनशक्ति कितनी कम हो चुकी है आप अच्छी तरह जानते हैं हाय दिन ऐसे कैसे सुनने को मिलते हैं जब किसी ने ₹10 की उधारी के लिए किसी को गोली मार दी किसी ने खेत में से एक गन्ना तोड़ लिया खेत वाले ने उसे गन्ने से पीट पीट कर मार डाला ऐसे सैकड़ो उदाहरण है।"

“मेरी जानकारी में तो ऐसा कुछ भी नहीं है!”

“यानी हो भी सकता है! और फिर तुझे भी हो सकता है कि आपके बेटे से कोई दुश्मनी का भाव रखता हो पर उसके बारे में आपको पता नहीं!”

शिव शंकर को जवाब देते नहीं बना क्या जवाब देता जब उसे ही नहीं पता था। उसे ही नहीं पता था। वह बेचैनी से पहलू बदलने लगा एक दो बार बीच में उसने अपनी पत्नी उर्मिला देवी की तरफ भी देखा पर उर्मिला देवी के चेहरे पर वही भाव थे मुझे पता नहीं।

“अच्छा आपकी फैमिली में कौन-कौन है कहीं ऐसा तो नहीं कि आपकी फैमिली में ही कोई ऐसा शख्स हो जो आपसे दुश्मनी का भाव रखता हो भले ही आपकी किसी से कभी बहस ना

हुई हो पर आपकी उन्नति देखकर उससे जलन होती हो और मन ही मन आपसे ही बैर कर रखा हो!"यह ईर्ष्या और जलन नामक बीमारी आजकल बहुत ज्यादा संख्या में फैल रही है ऐसा लगता है जैसे इसका कोई इलाज ना हो।"

"मेरे परिवार में मैं और मेरी वाइफ और मेरा बेटा और उसकी शादी होने के बाद उसकी बहू नीलम बस चार लोग ही थे! और अब तीन ही.. करण तो ..!"कहते-कहते शिव शंकर इमोशनल होने लगा। पर उसने शीघ्र ही खुद पर कंट्रोल पा लिया खुद को ज्यादा इमोशनल नहीं होने दिया वह अक्सर ऐसा ही करता था शायद अपनी वाइफ से वह ज्यादा मजबूत था इस मामले में इसीलिए अब तक के पूरे केस में उसके कभी आंसू नहीं निकले थे हर बार वह उन्हें बहने से रोक लेता था।

"आपके भाई बंधु चाचा भतीजे ऐसा कोई?" पर विजय ने उसके इमोशनल होने पर शायद कोई ध्यान नहीं दिया और अपना अगला सवाल किया।

"मैं अपने पिताजी इकलौती संतान हूं। मेरा कोई भाई भतीजा नहीं है।"

"और आपके पिता का कोई भाई हो उनके लड़के बच्चे ऐसा कुछ?"

"मेरे पिता अपने पिता की इकलौती संतान थे!" उसने बाद ही संक्षिप्त उत्तर दिया शायद कुछ ज्यादा ही भावुक हो गया था इसलिए।

" हूं।,"विजय ने एक पल सोच और फिर सोच कर बोला," यानी आपके परिवार में अड़ोस पड़ोस में रिश्तेदारी में बिजनेस के क्षेत्र में ऐसा कोई शख्स नहीं है जिस पर आप शक कर सकें जो आपके खिलाफ साजिश करता हो क्योंकि आपके हिसाब से आपकी किसी से भी कोई दुश्मनी नहीं पर हो सकता है कोई ऐसा हो जो आपकी उन्नति देखकर मन ही मन जलता हो। जिस पर आप शक कर सकें जो आपके खिलाफ साजिश करता हो क्योंकि आपके हिसाब से आपकी किसी से भी कोई दुश्मनी नहीं पर हो सकता है कोई ऐसा हो जो आपकी उन्नति देखकर मन ही मन जलता हो। आपका आपकी पूरी फैमिली का बुरा चाहता हो और अक्सर इस घात में लगा रहता हो कि जैसे ही उसके पास कोई अवसर मिले वह आपको चोट पहुंचा सके और अपनी जलन नामक बीमारी को शांत कर सके। बाहरी तौर पर वह आपका मित्र बनने की कोशिश करता हो ऐसा दर्शाता हो कि आपका बहुत सगा हो पर मन ही मन आपके लिए उसके तलवार चलती हो।"

"अब किसी के मन की बात कैसे जानी जा सकती है इंस्पेक्टर साहब!"बीच में शिव शंकर की पत्नी बोली तो विजय भी निरुत्तर हो गया। क्योंकि किसी के मन की बात को जानना कैसे पॉसिबल था अभी तक तो ऐसा कोई साधन उपलब्ध नहीं हुआ जिस किसी के मन की बात को जानना जा सके।जाना जा सके। फिर भी उसने एक अनुमान के तौर पर कहा था कि शायद शिव शंकर किसी का नाम लेगा क्योंकि इस समय पुलिस के पास कुछ भी नहीं था इन्वेस्टिगेशन करने के लिए उसके सामने सिर्फ अंधेरा और घनघोर अंधेरा था शिव शंकर किसी का नाम लेता तो पूछ तांछ में सहूलिया रहती मामला थोड़ा आगे बढ़ता पर फिलहाल

वह नाकाम हो गया था।

“मुझे लगा था आपसे मिलकर जरूर इस बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होगी क्योंकि काफी सोचने के बाद मुझे लगा था कि आपकी बेटी और बहू के साथ जो हादसा पेश आया उसमें आपके किसी दुश्मन का हाथ हो सकता है और आप कुछ लोगों के नाम बताएंगे और हम उनकी जांच पड़ताल करेंगे तो शायद साजिश करता का पता चल जाएगा पर एनीवे देखते हैं!”जाएगा पर एनीवे देखते हैं! अपनी तरफ से उसे छुपे हुए दुश्मन को खोजने का कार्य रखता हूं देर सवेर हाथ तो लगेगा ही कब तक छिपेगा कानून की नजर से कोई नहीं बच सकता वह कितना ही छुपा रुस्तम क्यों ना हो। मैं जल्द से जल्द उसे छुपे हुए दुश्मन को ढूंढ निकलूंगा आप बेफिक्र रहे।"

अचानक कहते कहते विजय को कुछ याद आया तो उसने पूछा,”अभी जब मैं होटल में आ रहा था तो मैंने आपके कमरे से एक लड़की को निकलते हुए देखा था वह कौन थी और आपसे मिलने क्यों आई थी?”

मां और बाप दोनों के चेहरे पर ऐसा लगा की विजय ने वह सवाल करके उन्हें दुविधा में डाल दिया हो। दोनों में से कोई भी कुछ देर बोला नहीं।

“बताइए प्लीज!” उसने दोनों को दुविधा में देखा तो जोर डालकर पूछा उसे लग रहा था कि शायद मामला कुछ संदिग्ध है।

“इस केस से इन सब बातों का क्या लेना देना ..क्या उसके बारे में बताना जरूरी है?” उसके जोर डालने के बाद आखिरकार शिव शंकर बोला पर अभी भी उसके बारे में बात करने से कतरा रहा था।

“अरे नहीं ऐसा कुछ नहीं है मैंने तो बस यूं ही पूछ लिया । वैसे आप छुपाना चाहते हैं तो कोई बात नहीं रहने दीजिए!”

“अरे मैं छुपाना क्यों चाहूंगा ऐसा कुछ भी नहीं है!”विजय ने जानबूझकर छिपाना शब्द का इस्तेमाल किया था वह जानता था यह चोट करेगा और उसने की भी। तभी तो शिव शंकर भड़क गया।

“तो बता दीजिए प्लीज एक्चुअली क्या है कि मेरा दिमाग जासूसी दिमाग हर चीज हर बात जानना चाहता है अगर मुझे पता नहीं चलता तब तो मेरे दिल में बेचैन सी बनी रहती है!” इस बार उसने थोड़ा नाटकीय अंदाज में ऐसे कहा जैसे उसे इस बात के लिए मजबूर कर रहा हो कि उस लड़की के बारे में से शिव शंकर बता ही दे।

“वह मेरी बेटी थी शिल्पी!”कुछ देर सोचने के बाद शिव शंकर ने ऐसे कहा जैसे बड़ी मुश्किल से बता रहा हो। और इतना बताने के लिए उसे अपनी छाती पर पहाड़ अड़ाना पड़ा हो।

“बेटी थी!"उसकी बात सुनकर विजय चौक पड़ा और तुरंत अचरज भरे स्वर में बोला," पर अभी कुछ देर पहले मैंने जब आपकी फैमिली के बारे में पूछा था तो आपने उस बेटी का जिक्र

नहीं किया था आपने कहा था कि आपके परिवार में आप और आपकी वाइफ आपका बेटा और उसकी बहू बस चार लोग ही है। और करण को हटा दो तो तीन..!"विजय के चेहरे पर सच में उलझन के भाव थे। वह सोच नहीं पाया कि आखिरकार पहले शिव शंकर ने अपनी बेटी के बारे में उसे क्यों नहीं बताया।

शिव शंकर ने अपनी बीवी की ओर देखा बीवी भी बेचैन नजर आ रही थी जबकि विजय की पैनी नजरे उन दोनों पर ही लगी हुई थी।

“दरअसल हम उसके बारे में बताना नहीं चाहते थे क्योंकि अब हमारा उससे कोई संबंध नहीं!”

“संबंध नहीं । मगर ऐसी क्या बात हो गई की मां बाप का बेटी से कोई संबंध नहीं!” विजय के चेहरे पर उलझन और बढ़ गई और यह जानने की उत्सुकता भी बढ़ गई कि ऐसा क्या हुआ की मां-बाप और बेटी के दरमियान रिश्ते इतने खराब हो गए की वह बताना भी नहीं चाहते किसी को कि उनकी कोई बेटी भी है।

“जब औलाद नालायक हो तो ऐसा हो सकता है रिश्ता कितना भी गहरा और बड़ा क्यों ना हो पर जब कुछ ऐसी बातें हो जाती हैं जो रिश्तो को मजबूत गहरे रिश्ते को भी खोखला कर देती हैं उनकी जड़े हिला देती है और सब कुछ खत्म हो इससे पहले उस रिश्ते को ही खत्म कर देना चाहिए और वही हम लोगों ने किया!” शिव शंकर के चेहरे पर भारी गुस्सा दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह बात उसने इच्छा से नहीं बल्कि मजबूरी में बताई हो।

“जरा खुलकर बताएंगे कि आखिर बेटी ने ऐसा क्या किया था! कैसे इतनी दूरियां बन गई।"

“आजकल के नए लड़के लड़कियां नए विचारों की नई जेनरेशन पुरानी जेनरेशन यानी पुराने विचारों को बिल्कुल बेकार समझते हैं उन्हें लगता है कि पुराने लोग और उनके विचार एकदम बेकार है नए लोग नए विचार एकदम ठीक है! बूढ़े पुराने लोग कोई अच्छी बात समझाएं तो उन्हें बुरी लगती है उन्हें लगता है हम लोग किसी काम के नहीं हम लोगों का दिमाग खराब है।"

“यानी वैचारिक मतभेद है। उससे आपके विचार नहीं मिलते यह तो आपने सही बात कही की विचारों में टकराव होना तो पॉसिबल है पर मेरे ख्याल से दोनों लोगों को थोड़ा समझदारी से काम लेना चाहिए मिल बैठकर बातचीत करनी चाहिए विचार समय के हिसाब से बदलते रहते हैं पुराने लोगों को भी सोचना चाहिए कि उनकी बातें हर समय सही साबित नहीं हो सकती है पर नए लोगों को भी सोचना चाहिए कि उनकी भी हर बातें जरूरी नहीं की सही ही हो! मेरे कहने का मतलब सिर्फ यह है कि दोनों को ही एक दूसरे के विचारों को सम्मान देना चाहिए और खुले दिमाग से उस पर चर्चा और विचार करना चाहिए।"

“तुमने सही कहा पर विचारों में टकराव वही होता है जहां कोई समझदारी से काम नहीं लेता हमने तो समझदारी से काम लिया था पर खैर छोड़ो यह सब बातें मौजूद केस से उसका कोई लेना देना नहीं है!”

“मुझे नहीं पता कि आपकी और आपकी बेटी के बीच क्या हुआ था कि वह आपसे अलग रहती है और आपने भी अपनी फैमिली उसे नहीं गिनवाया यानी काफी गहरी चोट लगी है । आपको भी लगी है उसे भी हो सकती है लगी हो पर जैसा कि आपने कहा कि इस केस से लड़की को कोई लेना देना नहीं पर मुझे लगता है कि हो सकता है कि उस लड़की का आपके मौजूद केस से लेना देना हो!”

मियां बीवी ने चौंक कर एक दूसरे की ओर देखा फिर विजय की ओर अचरज से देखने लगे। विजय ने जो बात कही थी उस बात ने दोनों को सोचने पर मजबूर कर दिया था।

“आप यह बात कैसे कह सकते हैं?” अचानक शिव शंकर की पत्नी उर्मिला देवी जो भारी दुविधा में जान पड़ती थी ने उसकी तरफ देखकर पूछा।

“आप करोड़पति आदमी है आपका एकलौता बेटा था हालांकि उसकी शादी भी हो गई थी उसकी बहू थी पर फिलहाल आपकाबेटा तो मर.. चुका है और आपकी बहू का फिलहाल कुछ पता नहीं भगवान करे वह सही सलामत हो ऐसे में आपकी करोड़ों की संपत्ति का मालिक आपकी इकलौती बेटी कानूनी तौर पर।”

“लेकिन हमदोनों तो जिंदा है अभी।” बीच में शिव शंकर तुरंत नाराजगी से बोला ऐसा लगा जैसे विजय की बात उसे बहुत बुरी लगी हो।

“और आपके बाद?”विजय ने उसकी तरफ देखते हुए झिझकते हुए कहा इस पर शिव शंकर ने पूरे कॉन्फिडेंस के साथ जवाब दिया,”हम अपनी पूरी संपत्ति भले ही ट्रस्ट में दे दे वृद्धा आश्रम अनाथ आश्रम में दान कर दें पर उस नालायक औलाद को कभी नहीं देंगे!”

“यानी आपके हिसाब से उस बेटी का हाथ इस केस में नहीं हो सकता है क्योंकि ऐसा करके उसे कोई लाभ नहीं है!”

उन दोनों ने कोई जवाब नहीं दिया। वे दोनों एक दूसरे की और देखते रहे और वह उन दोनों की तरफ।

“ठीक है चलता हूं फिलहाल बातचीत करने के लिए शुक्रिया!” फिर अचानक वह उठ बैठा और बोला।

“मेरे बेटे की डेड बॉडी मिलने में अभी कितना वक्त लगेगा?” विजय उठकर दरवाजे की ओर बढ़ने लगा तो पीछे से शिव शंकर ने तुरंत पूछा उसकी बात सुनकर वह रुक गया पलटा।

“ कल तक मिल जाएगी!” उसने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

“प्लीज मेरी बहू को भी जल्द से जल्द खोजिए पता नहीं बेचारी किस हालत में होगी किस मुसीबत में होगी पता भी नहीं है इस दुनिया में है भी या?” रहते वक्त शिव शंकर का स्वर कांप गया।

“आप बेफिक्र रहे हैं हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं जैसे ही कुछ पता चलता है तुरंत आपको सूचित करेंगे!” विजय से हर बार की तरह आश्वासन देकर वहां से रुखसत हो गया।

****

विजय शिव शंकर और उसकी पत्नी से मिलकर होटल से बाहर निकला। पार्किंग में उसकी बाइक खड़ी थी वह उसकी तरफ बढ़ रहा था पर ठिठका उसने देखा पार्किंग में दूसरी साइड एक पेड़ के नीचे वही लड़की खड़ी थी जिसे उसने शिव शंकर के रूम से निकलते हुए देखा था और बातचीत से पता चला था कि वह लड़की शिव शंकर की बेटी है शिल्पी पर उन दोनों के बीच में गहरी अनबन चल रही है इतनी ज्यादा कि वह उसके बारे में बात भी करना पसंद नहीं करते ।

मामला थोड़ा इंटरेस्टिंग लगा उसे शायद यही सोच कर वह अपनी बाइक की तरफ ना जाकर उस पेड़ के नीचे खड़ी उस लड़की शिल्पी की तरफ कदम बढ़ गया।

“ हेलो,”वह जब लड़की के पास पहुंचा तो उसने मुस्कुरा कर एक हाथ उठाकर उसे हिलाते हुए कहा जैसे अक्सर लोग हाय हेलो करते वक्त उठाते हैं।

“ हेलो।”लड़की ने भी तुरंत उसके हेलो का जवाब दिया हालांकि वह मुस्कुराई नहीं उसके चेहरे पर गंभीरता छाई हुई थी। मैं जानता था जिसका इकलौता भाई अभी चंद दिनों पहले ही मरा है उसके चेहरे पर मुस्कान कैसे आ सकती है यही सोचकर वह भी सीरियस हुआ।

“आपको देखकर लग रहा है कि जैसे आप भी मेरा ही इंतजार कर रही थी?”विजय ने अंदाजा लगाते हुए कहा क्योंकि उसने सोचा था की लड़की को अब तक वहां से चले जाना चाहिए था वह आखिर क्यों रुकी थी वह जब शिव शंकर के रूम में उनसे मिलने पहुंचा था तब उसने गेट से उसे कमरे से उस लड़की को निकलते हुए देखा था और लड़की ने भी उसे कमरे में जाते हुए शायद देखा होगा। पर वह अब तक वहीं पर रुकी हुई थी उसका क्या मतलब हो सकता था शायद इसीलिए बेजान है उपयुक्त वाक्य कहा था।

“कैसे जाना कि मैं आपका इंतजार कर रही थी ?"लड़की ने हैरानी जताते हुए पूछा।

“पुलिस वाले भी आधे जासूस होते हैं यह तो आपको पता ही होगा जैसे पत्रकार आधे जासूस होते हैं! वैसे आपको अभी तक यहां से चले जाना चाहिए था पर आप अभी तक यहीं खड़ी हैं इसी बात से मैंने अंदाजा लगाया कि शायद आप मुझसे मिलना चाहती हैं जो बात आप अपने मां-बाप से नहीं जान पाई शायद वह मुझे जानना चाहती हैं?”

“आपका अंदाज़ एकदम सही है। मानना पड़ेगा पुलिस वाले सच में आधे जासूस होते हैं।”इस बार लड़की के चेहरे पर उसके लिए तारीफ के भाव दिखाई दिए। और कोई वक्त होता तो अपनी प्रशंसा सुनकर वह मुस्कुराता पर क्योंकि मामला गंभीर था सिचुएशन अलग थी

इसलिए वह चाह कर भी मुस्कुरा नहीं पाया।

“तो क्या मैं जान सकता हूं कि आप अपने मां-बाप से किस बारे में जानकारी चाहती थी और अब मुझसे क्या चाहती हैं?”

“आपको इस बारे में जानकारी होनी चाहिए क्योंकि पुलिस वाले आधे जासूस होते हैं अभी आपने ही कहा था?” लड़की भी शायद उसके घर की परीक्षा ले रही थी इसलिए उसने सवाल का उत्तर देने की बजाय उसे चैलेंज किया।

“ हूं। यानी आप अपने भैया और भाभी के बारे में उनके साथ हुए हादसे के बारे में और भी बहुत ऐसे सवाल है उनसे रिलेटेड है जो आप जानना चाहती हैं ।"विजय ने उसका चैलेंज स्वीकार किया और बात का उत्तर दिया हालांकि उसे पता था यह कोई चैलेंज नहीं है हर कोई अंदाजा लगा सकता था कि आखिर वह क्या जानना चाहती है।

" आपने सही अंदाजा लगाया । हां मैं इसीलिए यहां पर आई थी पर!”

“आपके सवालों के जवाब देने से पहले क्या मैं जान सकता हूं कि आपको इस बारे में कैसे पता चला?”

शिल्पी ने उसे ऐसे देखा जैसे उसने कोई बचकानी बात कही हो और शायद उसे भी इस बात का तुरंत ही भान हो गया था इसीलिए अफसोस जताते हुए बोला,”न्यूज़ के जरिए मीडिया के जरिए आपको इस बारे में पता चला होगा.. नहीं?”

“और कैसे पता चलेगा वैसे भी इस समय इस खबर के बारे में पूरे देश को पता है!”

“ हूं, सही कहा आपने।”

“तो आप मेरे सवालों को जानते हैं तो उनके प्लीज जवाब दीजिए!” शिल्पी ने बड़े ही विनम्र स्वर में उससे विनती की।

“जिन सवालों के जवाब आप जानना चाहती हैं उनके बारे में तो पूरे देश को पता है न्यूज़ और मीडिया के जरिए।” इस बार ऐसा लगा जैसे उसने शिल्पी का मजाक उड़ाया हो।

“हां लेकिन मैं आपसे जानना चाहती हूं क्योंकि मुझे न्यूज़ और सोशल मीडिया पर ज्यादा यकीन नहीं है!” शिल्पी ने इस बात पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया कि उसने किस टोन में किस अंदाज में उससे बात की थी।

“ ठीक है बताता हूं । “फिर विजय ने अब तक की सारी इन्वेस्टिगेशन के बारे में उसे संक्षेप में बता दिया। वह पहले से ही काफी गंभीर थी उसकी बातें सुनकर और गंभीर हो गई।

“यह केस तो एकदम सोनम और रघुवंशी के केस की तरह ही है उसमें भी उसके पति का खून हो जाता है पहले दोनों गायब होते हैं फिर पति की लाश मिलती है और फिर उसकी वाइफ अचानक पुलिस के पास पहुंचती है मनगढ़ंत कहानी बताती है पर हकीकत में उसके पति की हत्या में उसका ही हाथ होता है!”

“आप अपनी भाभी पर शक कर रही हैं?” विजय न्यूज़ ध्यान दिलाया ऐसा लगा जैसे उसे चेता रहा हो।

“क्या नहीं करना चाहिए शक? उस केस की तरह इस केस में भी हो सकता है की भाभी की शादी मेरे भाई से जबरदस्ती की गई हो जबकि उसका मन कहीं और लगता हो उसका कोई और प्रेमी हो फिर उसने अपने प्रेमी से कहकर ही मेरे भाई को मरवा दिया हो।”

"आपके मां-बाप के अनुसार उन दोनों की शादी उनकी रजा मंदी से हुई थी इसलिए यह कहना कि नीलम की शादी जबरदस्ती हुई थी गलत होगा!"

एक बार तो लगा जैसे उसे सांप सूंघ गया हो। पर फिर वह सोच कर बोली," क्या पता उन्हें हकीकत पता ना हो रजा मंदी का उनके सामने नाटक किया गया हो।"

" क्यों?"

"यह तो आप भी समझते हैं क्यों आपको खूब पता है मेरे मां-बाप की हैसियत क्या है!"

“ हूं, पर आप भूल रही है कि कार का एक्सीडेंट हुआ था?”

“जब इतनी बड़ी साजिश कोई रचता है तो एक्सीडेंट होना मामूली बात है वह भी जानबूझकर किया गया होगा?”

“आपकी बात में दम तो है पर जरूरी नहीं की सोनम वाले केस की तरह इस केस में भी गड़बड़ी ही हो । हो सकता है कुछ और बात हो!”

“और क्या बात हो सकती है?”

“हो सकता है इस केस में आपके किसी दुश्मन मतलब आपके पिता या भाई के किसी दुश्मन का हाथ हो?”

लड़की ने कुछ पल सोचा फिरबोली,”इस बारे में मेरे पापा ने क्या कहा?”

“इस बारे में उनका तो कुछ भी कहना नहीं है!”

“मतलब?”

“उन्होंने किसी पर भी शक ज़ाहिर नहीं किया । उन्हें नहीं लगता कि ऐसा किसी साजिश के

तहत हुआ होगा या फिर हो सकता है कि उन्हें अपने दुश्मन के बारे में पता ही ना हो!”

“फिर तो मेरा ही शक सही लगता है सोनम और रघुवंशी के केस की तरह इस केस में भी मेरे भाई की मौत में भाभी का ही हाथ है! "

“आपके कहने का मतलब है कि आपकी भाभी एक दिन अपने आप मिल जाएंगी और पुलिस के पास आएगी.. नहीं! उस केस में भी ऐसा ही हुआ था अगर आपकी बात को सच माने तो और आकर वह कोई मनगढ़ंत कहानी सुनाएगी आप ऐसा कहना चाहती हैं।"

“मुझे तो इसी बारे में ज्यादा अंदेशा लग रहा है अब यह नहीं पता कि वह सबसे पहले पुलिस के पास आएंगी या फिर अपने घर आएंगी मुझे तो मेरे भाई की मौत में भाभी का ही हाथ जान पड़ता है! कोई कुछ भी सोच मुझे इसके अलावा तो और कोई नजर नहीं आता।"

“ हूं। वैसे एक शख्स और है जिस पर शक है कि उसका भी हाथ हो सकता है।” अचानक यह कहकर उसने विस्फोट किया।

“अच्छा कौन है?" लड़की ने चौक कर विजय की ओर देखा ।

“ आप।”

“ क्या ,मैं !" लड़की बुरी तरह उछल पड़ी और फिर जब संभली तो थोड़ी नाराजगी से बोली ,"मैं अपने भाई का कत्ल करवाऊंगी!”

“क्या बड़ी बात है? जब पत्नी कर सकती है तो बहन क्यों नहीं..दौलत के लिए हमेशा ऐसा होता आया है वह कोई भी युग हो कोई भी समय हो दौलत के लिए हमेशा गहरे से गहरे रिश्तों में दरार पड़ी है खून बहा है कत्ल हुए हैं यह कोई नई बात नहीं है मोहतरमा!” विजय ने व्यंग्यात्मक लहजे में उसके चेहरे पर अपनी पहली नजर गड़ाते हुए कहा

“आपकी बात अपनी जगह सही है पर आप मेरे बारे में जैसा सोच रहे हैं वैसा नहीं है आपको लगता है मैंने अपने बाप की दौलत को हासिल करने के लिए अपने भाई को मरवा दिया और भाभी को गायब कर दिया ऐसा ही करना था तो नीलम को गायब क्यों किया उसे भी मरवा क्यों न दिया? वही मारकर क्यों ना फेंक दिया?"

“वह इसलिए क्योंकि इस केस को सोनम राजा रघुवंशी वाला केस साबित कर सको लोगों को लगे आपके भाई के पत्नी गायब है और उसके मर्डर में उसका ही हाथ है अभी कुछ देर पहले आप नहीं कहा था कि अपने यहां शादी का सिस्टम गलत है लड़कियों से कभी पूछा नहीं जाता पूछा जाता है तो सिर्फ पूछा जाता है जबकि शादी तो दो दिलों का मेल है वह होने ही नहीं दिया जाता लड़की का दिल किसी से मिलता है लड़के का किसी से मिलता है फिर

भी मेल शादियां होती हैं और ऐसे हादसे पेश आते!”

“बढ़िया। मैंने तो एक अंदेशा जाहिर किया था आपने इस अंदेशा के बल पर मुझे ही अपराधी घोषित कर दिया!” उसके चेहरे पर नाराजगी से भरी मुस्कान दिखाई दी।

“अपराधी घोषित नहीं किया मैंने भी बस एक अनुमान ही जाहिर किया है!”

“तो फिर यकीन करे आपका यह अनुमान सिरे से गलत है क्योंकि बाप की दौलत मुझे कभी हासिल नहीं होगी वह जीते जी मुझे कभी भी अपनी दौलतमें हिस्सा नहीं देगा मेरा भाई तो रहा नहीं भाभी का कुछ पता नहीं बाई चांस उनको भी कुछ हो गया तो भी मेरा बाप मां मुझे अपनी दौलत से एक फूटी कौड़ी भी नहीं देंगे वह ट्रस्ट में दान कर देंगे अनाथालय वृद्ध आश्रम किसी में भी दे देंगे पर मुझे नहीं देंगे फिर क्या फायदा मुझे ऐसा करने से।”

विजय सच में पड़ गया लड़की शायद ठीक कह रही थी उसके मां-बाप ने भी यही कहा था यानी किसी भी सूरत में है उसे कुछ भी हासिल नहीं होने वाला था फिर भला कोई ऐसा क्यों करेगा। क्यों बे फालतू में इतनी बड़ी जहमत उठाएगा।

“हो सकता है आपने ऐसा इसलिए किया हो हालांकि मुझे नहीं पता कि आपके मां-बाप और आप में ऐसी क्या बात हुई कि आप दोनों के बीच इतनी गहरी नफरत की खाई है पर मुझे लगता है कई बार मैंने सुना भी है की मां-बाप लड़के पर ज्यादा प्यार लुटाते हैं और लड़की नाराज हो जाती है लड़की पर ज्यादा प्यार लुटाते हैं तो लड़का नाराज हो जाता है और कभी-कभी इतना की हत्या जैसा संगीन अपराध हो जाता है!”

“आप यह कहना चाहते हैं कि मेरे पिता मेरे भाई को ज्यादा चाहते थे और मुझे इससे जलन होती थी इसीलिए मैंने ऐसा किया!”

“हां बिल्कुल ऐसा कई बार हुआ भी है!”

“हुआ होगा पर ऐसा नहीं है मेरे और मेरे भाई के बीच वही स्नेह था जो एक भाई और बहन में होता है यकीन करो जैसा अनुमान आप लगा रहे हैं वैसा बिलकुल भी नहीं है।"

विजय फिर से एक बार सोच में पड़ गया फिर कुछ सोच कर उसने कहा।

“क्या आपमें और आपके भाई में बातचीत होती थी?”

“बातचीत तो नहीं होती थी क्योंकि मां-बाप का उस पर प्रेशर था पर जब हम लोग साथ थे एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे फिर बाद में भले ही मैं उससे दूर थी पर दिल से हमारा कनेक्शन जुड़ा हुआ था इस भाई के प्रेम ने ही मुझे मजबूर किया यहां पर आने पर जानकारी लेने का!”

“क्या पता आप झूठ बोल रही हो?” विजय ने उसकी बात बीच में काटकर उसे पर फिर से

शक जाहिर किया।

“तो पता कीजिए आप तो वैसे भी आधे जासूस है पता कर ही लेगे !”लड़की ने थोड़ा नाराज होकर कहा तो वह कुछ नहीं बोला।

“ हूं। करेंगे । चलता हूं बातचीत के लिए शुक्रिया।”

“1 मिनट, सुनिए । ,"विजय जब अपनी बाइक की तरफ बढ़ने लगा तो अचानक उसने पीछे से पुकारा और विजय ठिठक कर रुक गया पलट कर उसकी ओर देखने लगा फिर उसके पास आ गया,"आप मेरा नंबर नोट कर लीजिए अगर आपको कुछ भी पता चले मेरे भाई की हत्यारे के बारे में और मेरी भाभी के बारे में तो मुझे इस नंबर पर जरूर बताइए क्योंकि मम्मी पापा तो मुझे कुछ बताएंगे नहीं!”

उसने क्षण भर सोचा फिर बोला,”ठीक है अपना नंबर बोलिए!”

लड़की ने अपना और विजय ने अपना नंबर बताया दोनों ने अपने फोन के कांटेक्ट नंबर लिस्ट में ऐड कर लिया । फिर विजय फोन सेव करके अपनी बाइक की तरफ बढ़ गया है।

“आप अभी यहीं पर रुकेगी या फिर राजनगर वापस चली जाएगी?"

“यहां रुकने से कोई फायदा नहीं , राजनगर ही चली जाऊंगी! यहां पर होटल आदमी ठहरना में अफोर्ड नहीं कर पाऊंगी। फिर पता नहीं सच्चाई सामने आते-आते कितने दिन लगेंगे इसलिए फिर हमने अपना अपना नंबर तो एक दूसरे को दे ही दिया है कुछ भी पता चलता है तो प्लीज मुझे बताएं!”

“ठीक है । वहां राजनगर में आप अकेली रहती हैं तो करती क्या है मतलब खर्चा कैसे चलता है?”

“एक प्राइवेट कंपनी में काम करती हूं!”

“मां-बाप कोई भी मदद नहीं करते... सच में ? हां नहीं करते होगे तभी प्राइवेट कंपनी में काम करना पड़ता है।"

वह मुस्कुराई पर उसकी मुस्कुराहट बड़ी ही फीकी थी ऐसा जैसे दर्द में डूबी हो लगा जैसे उसकी आंखों से भी आंसू छलक पड़ेंगे उसने कोई जवाब नहीं दिया और दूसरी तरफ देखने लगी विजय को भी किसी के दिल को दुखाना अच्छा नहीं लगता था इसलिए उसने जल्दी से कहा,” सॉरी ,अच्छा मैं चलता हूं जैसे कुछ पता चलता है मैं आपको फोन करूंगा।”

इसके बाद विजय लंबे-लंबे डग भरते हुए अपनी वाइक तक आया । उस पर सवार हुआ उसे स्टार्ट किया और फिर चलने से पहले एक नजर शिल्पी पर डाली जो अभी भी वही खड़ी थी और उसे ही देख रही थी फिर उसने बाइक आगे बढ़ा दी। बाइक धीमी गति से उस होटल के

परिसर से बाहर चली गई।

कुछ ही देर में उसकी बाइक मुख्य सड़क पर दनदनाती हुई दौड़ती जा रही थी। तभी उसकी जेब में पड़ा फोन बज बजने लगा एक बार तो उसने फोन को इग्नोर किया जब फोन दूसरी बार बजा तो उसे मजबूरन जेब से फोन को निकालना ही पड़ा।

स्क्रीन पर नंबर को देखा तो फोन थाने से आ रहा था। थाने का नंबर देखकर नंबर जो नाम से फीड था चमक रहा था उसने कॉल रिसीव किया। पर पहले बाइक साइड में खड़ी कर ली थी।

“सर सर आप कहां है जल्दी से थाने में आ जाइए प्लीज!”इससे पहले की विजय कुछ कहता है उधर से एक सिपाही का घबराया हुआ स्वर सुनाई दिया।

“क्यों क्या बात है?”

“आप यहां आ जाइए जल्दी से बस!” उधर वाले के स्वर में काफी घबराहट बेचैनी और उतावला पन दिखाई दे रहा था।

“अरे बात तो बता आखिर बात क्या है क्या मेरा हार्ट फ़ैल करवाइगा बेवकूफ!” विजय ने उसे तुरंत हड़काया।

“वह उसकी बीवी थाने में बैठी है!”

“अबे किसकी बीवी थाने में बैठी है और क्यों बैठी है?” वह गुस्से में चिल्लाया।

“वही वो क्या नाम है उसका करण जिसकी डेड बॉडी खाई में मिली थी उसकी कार का एक्सीडेंट उसे प्रतिबंधित एरिया में हुआ था और उसकी बीवी गायब थी वही वहीं थाने में बैठी है!”

“क्या कहा ! करण की गायब बीवी थाने में बैठी है!”विजय पूरी तरह उछल पड़ा उसके लिए यह बेहद चौंकाने वाली खबर थी। करण की बीवी इतने दिनों से गायब थी और सिपाही बता रहा था कि वह इस समय थाने में बैठी है उसकी जगह कोई भी होता तो उछाल पड़ता हैरान हो जाता। ऐसी कल्पना तो अभी उसने कुछ देर पहले ही शिल्पी के सामने खुद की थी।

“हां सर आप जल्दी से आ जाइए बस!”

“ठीक है ठीक है मैं आता हूं!”

विजय ने जल्दी से कहा और फिर अपनी बाइक स्टार्ट करके उसकी स्पीड बढ़ा दे।

****

विजय की बाइक कुछ ही देर में थाने के बड़े से परिसर में दनदनाते हुई प्रविष्ट हुई उसने जल्दी

से बाइक खाली पार्किंग में खड़ी की उससे उतरा और लंबे-लंबे डग भरते हुए थाने की बिल्डिंग की तरफ बढ़ गया ।

अभी वह बढ़ ही रहा था कि रास्ते में वह सिपाही टकराया जिसने उसे फोन किया था।

“आप आ गए सर अच्छा किया!”पहले तो वह हड़बड़ा या फिर उसने जल्दी से कहा।

“वह कहां है ..वह कहां बैठी है?”विजय ने पूछा उसके चेहरे से ही लग रहा था कि वह उससे मिलने के लिए बेताब है बेसब्र है वह इतने दिनों से गायब है एक्सीडेंट के बाद उसके पति की लाश तो मिल गई थी पर वह नहीं मिल रही थी पर आज अचानक इस तरह थाने में आ जाएगी उसने सोचा ही नहीं था हालांकि एक बार उसके दिमाग में करण की बहन का ख्याल आया जिसके सामने उसने जाहिर किया था कि नीलम इस तरह से थाने में आ सकती है और कोई मनगढ़ंत कहानी सुनाएगी क्योंकि वह बार-बार यही कह रही थी कि यह केस भी सोनम राजा रघुवंशी के केस की तरह हो सकता है।

“ कौन?”

"अबे वही जिसके लिए तूने मुझे फोन किया था और जल्दी थाने आने के लिए बोला था करण की गायब बीवी!”सिपाही को उसने तुरंत हड़काया जो शायद उसका सवाल नहीं समझ पाया था।

“अच्छा वह हां वह तो आपके केबिन में बैठी है जब से आई है तब से लगातार रोए जा रही है बड़ी मुश्किल से मैंने उसे चुप कराया है पर फिर भी चुप नहीं हुई तो घबरा कर मैने आपको फोन किया और मैंने आपको जल्दी थाने आने को बोला था !”

“ हूं।”विजय ने गंभीरता से हुंकार भरी । फिर आगे बढ़ गया और सिपाही उसके पीछे-पीछे हो लिया।

“सर मुझे तो लगता है यह केस भी सोनम और राजा रघुवंशी की तरह ही है उसमें भी पति की लाश मिल गई थी और बीवी गायब पर बाद में बीवी मिल गई थी और उसने पहले तो मनगढ़ंत कहानी सुनाई पर सच छुपता नहीं है ।

सबको पता चल गया कि पति की हत्या में उसका ही हाथ है मुझे तो ऐसा ही लगता है कि इस केस में भी ऐसा ही है देखना वह कोई झूठी मुटी कहानी सुनाएगी।”

“उसने बोला था कि वह मुझसे बात करेगी?”उसकी बात पर बिना ध्यान दिए उसने तेज तेज चलते-चलते उससे पूछा।

“नहीं ऐसा तो कुछ भी नहीं कहा था!” सिपाही उसकी बात सुनकर शक पक गया।

“फिर तुमने उसे मेरे केबिन में क्यों बिठाया?”

सिपाही हड़बड़ा गया फिर तुरंत ही समझा और बोला,”वह जब यहां पर आई थी तो काफी

घबराई हुई थी दुखी थी रो रही थी मुझे लगा वह आपसे मिलना चाहती है इसीलिए मैंने उसे आपकी केबिन में बिठा दिया और आपको तुरंत फोन किया था।"

" हूं"

फिर उन दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई।

विजय लंबे-लंबे डग भरते हुए उस लंबे से गलियारे में बढ़ते हुए फिर अपने केबिन के दरवाजे तक पहुंचा कुछ पल खड़ा रहा फिर उसने धीरे से दरवाजा खोला और अंदर दाखिल हुआ ।

एक विजिटिंग चेयर पर करण की पत्नी बैठी सर नीचे किए सुबक रही थी सिसक रही थी जब केबिन का दरवाजा खुला तो उसने सर उठाया था उसकी तस्वीर विजय ने देखी थी इसलिए तुरंत पहचान गया कि वह करण की पत्नी नीलम है एक पल उसे देखने के बाद फिर अपनी कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

लड़की का चेहरा सच में आंसुओं से भीगा हुआ था उसकी लाल-लाल आंखें बता रही थी कि वह काफी देर से रो रही है। पर उसकी दुखी दशा देखकर दुखी होने की जगह विजय के मन में यह सवाल ज्यादा तेजी से कौंध रहे थे कि आखिर एक्सीडेंट के बाद वह अचानक कहां गायब हो गई थी और इतने दिनों तक कहां रही और फिर अचानक थाने कैसे आ गई पर सीधे तौर पर यह सवाल एकदम से पूछना अमानवी होता है इसलिए उसने पहले उसे धीरज बढ़ाया ताकि वह शांत हो और उससे खुलकर बात की जा सके कांच का गिलास खाली वहां रखा था जिससे उसने जान लिया था कि उसे पानी तो दिया जा चुका है ।

फिर भी उसने पूछा,"आप अपनी पियेगी?"

लड़की ने फौरन इनकार में सिर हिलाया। विजय ने दोबारा फिर नहीं पूछा लड़की ऐसा लग रहा था जैसे खुद पर कंट्रोल करने की कोशिश कर रही हो।

कुछ पल सन्नाटे में गुजरे।

"आप शादी के बाद हनीमून के लिए अपने पति करण के साथ शिलांग आई थी और चार दिन बाद ही आपकी कार का एक्सीडेंट हो गया! आपके पति की लाश तो हमें खाई में मिल गई थी पर आप इतने दिनों से कहां थी?"

लड़की का चेहरा फिर से बिगड़ने लगा। विजय को जैसे वह फिर से रोने लगेगी पर उसने खुद पर कंट्रोल किया।

"यह सब कुछ मेरी वजह से हुआ सर?" वह टूटे स्वर में बोली।

"क्या?"उसकी बात सुनकर विजय चौंक पड़ा उसे तो लगता था सिपाही और करण की बहन के ख्यालों के अनुसार कि वह कोई मनगढ़ंत कहानी सुनाएगी पर यहां तो सीधा-सीधा वह

स्वीकार कर रही थी कि वह सब कुछ उसकी वजह से हुआ। मतलब कहानी कुछ और है जो वे लोग या पब्लिक के ज्यादातर लोग विचार कर रहे थे शायद मामला उस उल्टा है उसने सोचा।

“हां अगर मैं हनीमून के लिए यहां आने की जिद ना करती तो यह सब कुछ नहीं होता मेरी जिद ने सब कुछ तबाह बर्बाद कर दिया!”वह फिर से सिसकने लगी।

हो तो यह बात है वह तो कुछ और ही समझ बैठा था विजय ने एक पल सोच। फिर उसे कुछ याद आया तो उसने जल्दी से कहा,"आप कह रही है कि आपने शिलांग जाने की जिद की थी पर मुझे जो जानकारी मिली है उसके हिसाब से तो करण ने यहां के आने का प्रोग्राम बनाया था?"

"हां यह बात सच है मम्मी पापा से करण ने बात की थी पर हकीकत यह है कि मैंने ही उससे शिलांग आने के लिए कहा था दरअसल शिलांग सोशल मीडिया के जरिए मैंने देखा था मुझे अच्छा लगता था मैं घूमना चाहती थी और यहां के प्रसिद्ध मंदिर मंडलेश्वर देवी के दर्शन करना चाहती थी ।

मैंने इस बारे में करण से बात की थी तो उसने मम्मी पापा से शिलांग आने के बारे में बात की थी!"

"पर आपने बात क्यों नहीं कि आप भी तो बात कर सकती थी क्या वह आपकी बात को काट देते ?"

"मुझे ऐसा लगता था?"

" क्यों?"

"क्योंकि घर में अक्सर सोनम और राजा रघुवंशी वाले केस की चर्चा होती रहती थी मुझे लगा कहीं मां-बाप इंकार न कर दें कुछ उल्टा सीधा सोच कर बस इसीलिए मेरी हिम्मत नहीं पड़ी थी और मैंने करण से कहा था। "

“ हूं । तो इसलिए हनीमून के लिए आप ने शिलांग चुना। पर किसी अन्य स्थान के लिए जा सकते थे जैसे शिमला मनाली दार्जिलिंग हरिद्वार बनारस कहीं भी पर अपने शिलांग ही क्यों चुना?”

“अगर आप हादसे की वजह से ऐसा कह रहे हैं तो हादसा तो कहीं भी हो सकता था इंस्पेक्टर साहब ! फिर मुझे क्या पता था की शिलांग में ऐसा हो जाएगा हालांकि मजाक ही मजाक में करन ने कहा भी था कि हम लोग शिलांग जा रहे हैं कहीं राजा रघुवंशी सोनम की तरह हमारे साथ भी हादसा ना हो तो मैंने उससे मना भी किया था यहां आने के लिए पर उसने कहा था कि वह तो मजाक कर रहा है ऐसा थोड़ी हो सकता है पर मुझे नहीं पता था कि उसका मजाक सच हो जाएगा मुझे जरा भी इल्म होता तो मैं कभी यहां नहीं आती! यहां आने के पीछे सिर्फ दो ही वजह थी एक तो मुझे शिलांग हमेशा से आकर्षित करता था दूसरे मुझे मंडलेश्वर देवी के दर्शन करने थे मैंने करण के लिए मन्नत मांगी थी।

पर मुझे बिल्कुल भी इस बात का एहसास नहीं था कि ऐसा हो जाएगा वरना मैं कभी नहीं आती है।"

वह फिर से सिसकने लगी।

विजय ने कुछ पूछने के लिए मुंह खोला पर फिर पता नहीं क्या सोचकर शांत हो गया जब लड़की की हिचकी बंद हुई है तब उसने पूछा,"एक्सीडेंट के बाद क्या हुआ था ? आप इस तरह अचानक कहां गा.. चली गई थी और आज इस तरह अचानक.. रुकिए खैर आप मुझे शुरू से बताइए जब आप यहां पर आई थी तो क्या हुआ था सब कुछ बताइए शुरू से ताकि मैं अच्छे से समझ सकूं। "

लड़की ने कुछ पल सोचा ऐसा लगा जैसे दिमाग पर जोर डाल रही हो।

"शादी के 2 दिन बाद मेरे कहने पर करण ने हनीमून का प्लान बनाया था शिलांग आने का और फिर हम दोनों यहां प्लेन से आ गए थे यहां पर हम दोनों एक लॉज में ठहरे थे फिर कुछ फेमस जगह पर घूमने गए थे और कुछ जगह घूमने का प्लान बना रहे थे हम दोनों जिस कॉटेज में ठहरे हुए थे।

उसके आसपास की जगह हमने घूम ली थी इसलिए हम ने जब दूसरे स्थान पर घूमने की सोची तो हमें किसी वाहन की जरूरत महसूस हुई पर उस लॉज में वाहन की व्यवस्था नहीं थी इसलिए हमने एक दूसरा लॉज देखा उस लॉज में वह पहले ही दिन था जब हम दोनों कार से मंडलेश्वर देवी के दर्शन करने के लिए निकले थे। और वह भयानक हादसा हो गया।"

विजय समझ गया कि पहले बो लोग किस लॉज में ठहरे हुए थे इसके बाद ब्यूटीफुल लाज जिसका मालिक गणेश था उसके वहां वह लोग ठहरे थे वहां पर वाहन मिलने की सुविधा उपलब्ध थी।

"जब आपने लॉज बदल लिया था और आपको वाहन पर किराए पर भी मिल चुका था उसके बाद बताइए क्या हुआ आप पहले कहां गए थे?"वह चुप हो गई तो भी विजय ने दोबारा पूछा।

"कार किराए पर ली थी दिन भर हम दोनों उस कार से कुछ जगहों पर घूम थे । फिर मंडलेश्वर देवी के दर्शन करने गए थे उस दिन हमारा वही मुख लक्ष्य था ज्यादा समय वहीं पर व्यतीत हुआ था।

शाम को हम वहीं से वापस लॉज की तरफ आ रहे थे तभी जब हमारी कर जंगल में स्थित उस पुल के ऊपर पहुंची पता नहीं अचानक क्या हुआ हमारी कार उस मजबूत रेलिंग से जाकर टकरा गई मेरे सर में चोट लगी थी मैं बेहोश हो गई थी मुझे नहीं पता कि करण के साथ क्या हुआ।"

"क्या आपको भी इन बातों में यकीन है कि कुछ स्थानों पर कुछ अदृश्य शक्तियां होती हैं जो ऐसे हादसे होने का कारण बनती हैं उस स्थान पर भी ऐसा ही कुछ प्रचारित है?"

"मैं इन बातों में यकीन तो नहीं करती पर उस दिन पता नहीं क्या हुआ था मैं ही कार ड्राइव कर रही थी अचानक कार मेरे नियंत्रण से बाहर हो गई और लहराने लगी मैंने पूरी कोशिश की पर तब तक कर रेलिंग से टकरा गई थी और मैं बेहोश हो गई थी।"

“आपकी कार का जिस जगह एक्सीडेंट हुआ वह जगह प्रतिबंधित है क्या आपको यह मालूम नहीं था? रास्ते में बड़ा सा बोर्ड लगा है क्या आपने देखा नहीं था?” नीलम से दूसरा प्रश्न किया गया।

“मालूम था।,"उसने हिचकिचाते हुए बताया," उस बोर्ड को हमने पढ़ा था पर हम लोगों को लगा की ऐसी जगह से गुजरने का जो रोमांच मिलता है होता है वह अद्भुत होता है हम दोनों उसी को प्राप्त करने के लिए जानबूझकर उस रास्ते से गए । पर काश हम उस रास्ते से न जाते तो बेहतर रहता।”

“उस पुल पर पहले भी कई बार हादसे हो चुके हैं इसीलिए तो सरकार ने उस जगह पर जाने के लिए प्रतिबंध लगा दिया है! पता नहीं कैसे पर हादसे वहां होते रहते हैं?”

“मैंने भी बोर्ड में पढ़ा था पर मुझे लगा कि यह अंधविश्वास है एक आद संयोग से हादसा हो जाता है दो-तीन बार किसी जगह पर ऐसे हादसे होते हैं तो लोग उस जगह को भूत प्रेत की जगह मानने लगते हैं पर हम दोनों अंधविश्वासी नहीं थे ।

भूत प्रेत में बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते हैं शायद यही वजह थी उस रास्ते से ही जाने की पर अब मैं स्वीकार करती हूं कि उस जगह से जाने का मेरा फैसला गलत था!”

“ हूं ,खैर जब आपका एक्सीडेंट हुआ और आप के सर में चोट लगी है बेहोश हो गई हैं आप बता रही हैं फिर क्या हुआ?”

“मैं बेहोश हो गई थी मुझे नहीं पता कि फिर क्या हुआ?”

“मेरे कहने का मतलब था कि जब आपको होश आया तब क्या हुआ?”

“मुझे जब होश आया तो मैंने अपने आप को एक छोटी सी बंद जगह पर पाया मैं हड़बड़ा कर उठी मैं समझ नहीं पा रही थी कि आखिर मैं उस जगह पर कैसे आ गई?”

“आपकी कार का एक्सीडेंट हुआ था आप बेहोश हुई थी और फिर जब आपको होश आया तो अपने आप को एक बंद छोटी सी जगह पर देखा ऐसा कैसे हुआ? मतलब आपको तो कर में या कर के आसपास होना चाहिए था फिर आप उसे बंद जगह में कैसे पहुंच गई?"

“मुझे नहीं पता ..पर बाद में मुझे इस बारे में पता चल गया!”

“अच्छा क्या पता चला इस बारे में?” विजय उसकी बातों में बेहद इंटरेस्टेड जान पड़ता था आगे क्या हुआ जानने की उसमें भारी उत्सुकता थी शायद हर किसी में होती मौजूदा सिचुएशन जिस प्रकार की थी उसमें आगे क्या हुआ हर कोई जानना चाहता था।

“मुझे वहां ले जाया गया था?”

“ले जाया गया था ? कौन .. किसके द्वारा आपको वहां ले जाया गया था और क्यों?”

“मैं जिस छोटी सी जगह पर बंद थी वहां जब मुझे होश आया तो मैंने वहां से निकलने की सोची फिर मैं जब दरवाजे के पास पहुंची तो मैंने बाहर दो लोगों को बैठे हुए देखा जो आपस में बातें कर रहे थे!”

“वह दो लोग कौन थे क्या आप उन्हें पहचान सकती हैं?”

“नहीं उन दोनों की पीठ मेरी तरफ थी!”

"आप आज यहां आए हैं इसका मतलब है कि आप इतने दिनों से छोटी सी जगह पर ही बंद थी शायद मैं सही कहा?"बीच में विजय ने उसे टोका।

"हां आप सही कह रहे हैं इतने दिनों से मैं उसे छोटी सी जगह में ही बंद थी!"

"तो इतने दिनों में तो आपने किसी का तो चेहरा देखा ही होगा या वह हमेशा आपकी तरफ पेट करके ही बैठे रहते थे आप इतने दिनों वहां रही हैं आपको खाना-वाना तो दिया गया होगा टॉयलेट वगैरा के लिए आपको बाहर ले जाया गया होगा ऐसे में किसी का तो चेहरा देखा होगा आपने?"

"नहीं देखा!"नीलम सपाट लहजे में बोली।

"अरे क्यों?"

"क्योंकि वह अपने चेहरों पर नकाब पहने रहते थे!"

" ओह। वैसे वे लोग आपस में बातें तो करते होंगे उन बातों से आपने कुछ अंदाजा लगाया ?”

“वे दोनों यही बात कर रहे थे कि मेरी कार का एक्सीडेंट हुआ पड़ा था और मैं उन्हें बाई चांस मिल गई और वह मुझे उठाकर उस जगह पर ले आए थे। उन लोगों की बातचीत से ही मुझे पता चला था कि उन दोनों ने मेरे पति करण को जिसने उन दोनों का मुझे ले जाते वक्त विरोध किया था क्योंकि उसे तब होश आ गया था उनसे भिड़ गया था और इसलिए मेरे पति को मार डाला था मार कर खाई में फेंक दिया था उन लोगों ने।”

“यानी आपकी बात का मतलब यह हुआ कि वह कोई क्रिमिनल टाइप के लोग हैं जो बाई चांस उस रास्ते से गुजर रहे थे और संयोग से आपकी कार का एक्सीडेंट वहां हुआ पड़ा था

और उन्होंने आपको वहां से किडनैप कर लिया और आपके पति को मार कर फेंक दिया क्योंकि उसने उन लोगों का विरोध किया था करण की जगह और कोई होता तो वह भी ऐसा ही करता मैं भी।

अपनी पत्नी को इस तरह से किसी को किडनैप होते कौन देख सकता है।"

“हां मेरे कहने का यही मतलब है!”

“आपके साथ उन्होंने कुछ उल्टा सीधाकिया क्या?” कुछ मौन रहने के बाद विजय ने हिचकिचाते हुए पूछा।

“नहीं!”

“कुछ नहीं किया? कमाल है फिर तो क्योंकि ऐसे केस में सबसे पहले क्रिमिनल लोग लड़की को बेइज्जत करते हैं उसकी इज्जत लूटते हैं अपने मन की भड़ास निकालते हैं पर उन्होंने ऐसा नहीं किया यह सच में कमाल की बात है काफी ईमानदार टाइप के क्रिमिनल्स जान पड़ते हैं!,"ऐसा लगा जैसे उसने व्यंग्य किया हो पर लड़की के चेहरे पर नाराजगी के हल्के भाव देखे तो बात पलट दी," फिर उन्होंने आपको किडनेप क्यों किया क्या वह आपके घर वालों से फिरौती मांगने की फिराक में थे?”

“उनकी बातचीत से ऐसा नहीं लग रहा था क्योंकि वह मेरे बारे में कुछ नहीं जानते थे उनका इरादा था मुझे बेचने का! उनकी ह्यूमन ट्रैफिकिंग से जुड़े किसी गैंग से बात हो रही थी और वह मुझे बेचने की बात कर रहे थे।

उस तरफ से खरीदने वाले की सख्त हिदायत थी कि मेरे साथ कुछ भी ना किया जाए!”शायद इसीलिए उन लोगों ने मेरे साथ कुछ नहीं किया!”

“यानी आपको जिन लोगों ने किडनैप किया उन लोगों का संबंध ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से जुड़े लोगों से हो सकता है ऐसे कई गैंग इस तरफ सक्रिय है जो ऐसा काम करते हैं!”

विजय ने भी स्वीकार किया इस बात को यह बात सच भी थी शिलांग के उस एरिया में ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से जुड़े कई छोटे-मोटे गैंग बेहद सक्रिय थे जो इंसानों की खरीद फरोख्त करते थे वैसे भी ह्यूमन ट्रैफिकिंग का धंधा हजारों करोड़ रुपए का हर साल होता है सरकार पुलिस प्रशासन के लाख प्रयासों के बावजूद भी ऐसे इलीगल धंधे जोर शोर पर चल रहे हैं। इस धंधे से जुड़े लोग लोगों को चोरी से किडनैप करके मजदूरी गुलामी और उन्हें सेक्स वर्कर के तौर पर इस्तेमाल करते हैं पूरी दुनिया में इस धंधे का कारोबार 10 ,12 लाख करोड रुपए का है।

“खैर आप वहां तकरीबन एक हफ्ते रही क्या इस दौरान उन दोनों की शक्ल देखी थी?”

"नहीं देख पाई! अभी बताया तो था।"

“ओह हां आपने बताया तो था मैं भूल गया था सॉरी। वैसे आपने उनसे पूछा नहीं की वह

आपके साथ क्या करना चाहते हैं भले ही आपको उनकी बातों से पता चल गया था फिर भी आप कौ उनसे बातचीत करनी चाहिए थी? शायद और कुछ पता चल जाता।"

“मैंने बात करने की कोशिश की थी पर उन्होंने मुझे डांट दिया था कि उनसे बात ना करें मुझे सख्त हिदायत थी कि मैं ऐसी कोई भी हरकत ना करूं जो उन्हें बुरी लगे!”मुझे पता था वह खतरनाक लोग हैं मैं तो पहले से ही डरी हुई थी जब उनके मुंह से करण की हत्या की बात सुनी थी फिर उनकी सख्त हिदायत के बाद तो मेरी हिम्मत ही नहीं पड़ी मुझे लगा कहीं मुझे भी ना मार दें। मैं डर गई थी इसलिए मैंने उनसे फिर कुछ नहीं पूछा।

“हां मैं समझ सकता हूं! खैर फिर आपको वहां से भागने का मौका कैसे मिल गया?”

“आज उन दोनों में से ...!"

"1 मिनट 1 मिनट क्या वहां पर सिर्फ दो लोग ही थे?"अचानक विजय को कुछ याद आया तो उसने नीलम की बात बीच में काटी।

"हां वहां पर तो सिर्फ दो लोग ही रहते थे पर मुझे पता था उनके और भी लोग हैं क्योंकि वे फोन पर बात करते रहते थे उन्हे मेरी निगरानी के लिए छोड़ा गया था!"

" हूं ठीक है आगे बताइए आज आपको वहां से भाग निकलने का मौका कैसे मिल गया?"

"एक किसी काम के सिलसिले में कहीं गया हुआ था,"नीलम ने बताना शुरू किया", दूसरा शख्स खाना लेकर आया था और मुझे खाना देकर बाहर चला गया था शायद गलतफहमी में उसने दरवाजा बंद नहीं किया था खाना खाकर मैं जब दरवाजे पर पहुंची तो मुझे इस बात का पता चला और मैंने डरते हुए दरवाजा खोल कर बाहर निकली वहां आसपास भी कोई नहीं था फिर मैंने वहां से दौड़ लगाई ।

कह सकते हैं मैं सर पर पर रखकर दौड़ पड़ी। मुझे इस बात का डर था कि अगर मैं इस बार पकड़ी गई तो फिर कभी छूट नहीं पाऊंगी शायद इसीलिए मैंने अपनी पूरी ताकत लगा दी।

मेरी किस्मत ने मेरा साथ दिया। मै जिस सड़क पर आ गई वहां से गुजर जा रही एक कार को मैंने रोका मैंने उनसे लिफ्ट मांगी और उसने मुझे शहर में लाकर छोड़ दिया फिर मैंने एक दुकानदार से से थाने के बारे में पूछा तो उसने बताया और मैं यहां आ गई!” इतना कह कर वह शांत हो गई।

विजय उसकी बात बड़े ध्यान से सुन रहा था पर बीच-बीच में उसे अपने पुलिस वाले सहयोगी साथी की और करण की बहन शिल्पी की बातें जिसमें उसने अंदेशा जाहिर किया था की नीलम वापस आ जाएगी और कोई मनगढ़ंत कहानी सुनाएगी। तो क्या सच में उसके सामने बैठी दुखी बिलखती दीनहीन हालत में दिखाई देने वाली लड़की सच में कोई मनगढ़ंत कहानी सुना रही थी क्या सच में अपने पति की मौत में उसका हाथ था या सच में वह जो कह रही थी वही सच है विजय के चेहरे पर ऐसे ही उलझन वाले कुछ भाव जान पड़ते थे। पर फिलहाल वह कुछ डिसाइड नहीं कर पा रहा था कैसे करता सिर्फ अभी उसके सामने बातें ही तो थी ।

उन बातों की वेरिफिकेशन की जाती खोजबीन की जाती तब क्लियर होता कि नीलम के बाद सच है या फिर वह एक मनगढ़ंत कहानी सुना रही है।

“आपके पति की हत्या हो चुकी है यह बात भी आपको उन्हीं लोगों की बातचीत से पता चली?”अचानक कुछ सोच कर विजय ने पूछा।

“हां मैंने अभी आपको बताया था आप सोच भी नहीं सकते कि जब मुझे पता चला कि मेरे पति की हत्या हो चुकी है तो मेरे दिल पर क्या बीती कैसे मैंने खुद को संभाल मैनेज किया काश मैंने अगर शिलांग आने की जिद ना की होती तो तो यह कुछ भी ना होता इन सब बातों के लिए मैं ही दोषी हूं सिर्फ मैं!” वह फिर रोने लगी।

विजय की नजर इस समय उसके रोने पर नहीं बल्कि उसके उन कपड़ों पर थी जो काफी साफ सुथरा नए जैसे दिखते थे और वह कोई साड़ी नहीं बल्कि सलवार और कमीज थी जबकि उसकी जानकारी के हिसाब से नीलम की नई नई शादी हुई थी तो उसे साड़ी में होना चाहिए था साड़ी में ना भी होती तो भी कोई बात नहीं क्योंकि हनीमून मनाने आए लोग तो यहां पर परंपरा से हटके कपड़े पहनते हैं खाते पीते हैं घूमते हैं ऐस करते हैं ।

वह जानता था पर नीलम 10 दिनों से ज्यादा किसी छोटी सी जगह पर बंद थी तो जाहिर सी बात थी कि उसके कपड़े गंदे होने चाहिए थे पर कपड़े एकदम नए थे यह बात उसे शुरू से ही खटक रही थी और अब उसने इस बारे में पूछने का निश्चय किया।

"आप जब करण के साथ कर में थे लॉज के लिए वापस आ रही थी मंदिर से उसमें अपने क्या पहन रखा था?"

नीलम रोना भूल गई।

उसने उसकी और देखा और बोली"मैं इस समय सलवार कमीज में हूं शायद यह प्रश्न आपने इसलिए किया?"नीलम ने उल्टा उस सवाल किया तो वह बस खामोश होकर उसकी ओर देखता रहा इस पर नीलम ने ही जवाब दिया "जब मैं करण के साथ थी तो साड़ी में थी ।

इस समय जिस सूट में आप मुझे देख रहे हैं वह उन्हीं लोगों ने मुझे दिया था पहनने के लिए जिन्होंने मुझे किडनैप किया था और आज अगर मैं वहां से भाग ना आती तो मुझे किसी के हाथों भेज दिया जाता बहुत जल्द।"

विजय शांत भाव से नीलम को घूर रहा था जबकि वह लड़की बीच-बीच में सिसकने लगती थी मूड नीचे करके और जब चेहरा उठाती थी तो उसका चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ दिखाई देता था विजय सोचता था या तो यह लड़की सही कह रही है या फिर यह अगर एक्टिंग कर रही है तो कमाल की एक्ट्रेस है ।

अगर ऐसा था विजय का एक बार मन हुआ की नीलम से कह दे आपको तो फिल्मों में होना चाहिए पर कह नहीं सका क्योंकि अभी क्लियर नहीं था कि वह जो कह रही थी वह सच है या फिर झूठ। और जबरदस्त एक्टिंग।

“अच्छा आपने अभी बताया कि वह लोग ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से जुड़े हो सकते हैं और

आपको बेचने की फिराक में थे पर एक हफ्ते आपको वहां पर क्यों रखा ? ह्यूमन ट्रैफिकिंग वाले तो अब तक आपको बेच चुके होते हैं उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया?"अचानक विजय ने पहलू बदला और सवाल किया।

"उनकी बातचीत से पता चला था कि वह लोग मुझे जिस गैंग में बेचना चाहते हैं उस गैंग ने कहा था कि मुझे एक हफ्ते अभी छुपा कर रखें । "

" क्यों?"

"मुझे क्या पता!"

" हूं।"

"अभी मुझे अगले दिन शायद उनका प्लान कहीं ले जाने का था! मेरे बारे में और मेरे पास पति की लाश मिलने के बाद जिस तरह पुलिस हरकत में आई थी इसकी वजह से शायद उन लोगों को ऐसा आदेश मिला था!।"

"उन्होंने आपको तभी क्यों नहीं बेच दिया जब आपको किडनेप किया था?"

"वे लोग सीधे ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के लोग नहीं थे बल्कि उनसे जुड़े हुए थे वह लोकल के ही लोग थे और उनका संपर्क कई ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से था वह एक अच्छी डील चाहते थे शायरी इसीलिए उन्होंने मुझे उसे छोटी सी जगह पर बंद करके रखा ऐसा उनकी बातचीत से मुझे लगा था जो अच्छे पैसे देता ज्यादा देता मुझे उसके हाथों बेचने का इरादा था उनका।

वह अक्सर ऐसा ही करते थे किसी को किडनैप करके बहुत सारे ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से बात करते थे जहां पर अच्छे पैसे मिलते थे उन्हें वह अपनी पकड़ बेच देते थे ऐसा ही मेरे बारे में भी करने वाले थे। पर मैं किस्मत से बच गई।"

" हूं।"विजय कुछ कहना चाहता था पर वह कुछ कह पाता इससे पहले ही उसके केबिन का दरवाजा बड़ी तेजी से खोला गया वह चौंक गया नीलम ने भी दरवाजे की ओर देखा।

अंदर बैठे विजय और नीलम दोनों हड़बड़ा गए थे। शिव शंकर और उसकी बीवी जल्दी से दरवाजा खोलकर अंदर आए।

"आप लोग यहां?"विजय उन दोनों को वहां देखकर सच में उछल पड़ा था और इसीलिए उसने तुरंत पूछा और इसके जवाब में शिव शंकर ने तुरंत कहा,"हमें जैसे ही पता चला नीलम वापस आ गई है और इस समय थाने में है तो हम तुरंत यहां चले आए!"

"लेकिन आप लोगों को कैसे पता चला?" यह प्रश्न विजय के मन में तुरंत बिजली की तरह कंधा था कि आखिर उन दोनों को कैसे पता चल गया कि नीलम वापस आ गई है और इस समय थाने में है क्या सिपाही ने उसे बताया पर वह क्यों बताया समझ नहीं आया कि आखिर में कैसे पता चला इसीलिए उसने जल्दी से पूछा।

शिव शंकर ने उसकी और ऐसे देखा जैसे कोई समझदार व्यक्ति चूतियां की ओर देखता है।

“सिर्फ हमें ही नहीं बल्कि पूरे इंडिया को पता है क्योंकि यह बात न्यूज़ पर आ रही है!” शिव शंकर ने जब उसे बताया तो वह एकदम शांत हो गया हालांकि उसके चेहरे पर तेज गुस्सा आ रहा था की आखिरी यह बात मीडिया में कैसे पहुंच गई।

“न्यूज़ पर पर कैसे.. हमने तो मीडिया को या किसी को बताया नहीं । ,"अचानक विजय ने नीलम की ओर देखा प्रश्न चिन्ह नजरों से तो नीलम ने भी इनकार में से सर हिलाया।

यानी नीलम ने भी किसी को नहीं बताया था। क्या रास्ते में थाने आने आते वक्त नीलम को किसी ने देख लिया था और उसी के जरिए मीडिया में यह बात फैल गई थी। विजय विचार करने लगा।

“पत्रकारों के दो नहीं कई कान और आंख होते हैं उन्हें आधा जासूस मान सकते हो वह अपने काम की बातें तुरंत निकाल लेते हैं शायद थाने पर नजर रख रहे होंगे इसीलिए उन्हें पता चल गया!," शिव शंकर ने विजय को विचार मगन देखा तो शायद उसने अंदाजा लगा लिया था इसलिए उसने कहा। विजय को भी लगा कि शायद यही बात सही है वरना और कैसे मीडिया को पता चल सकता है!

नीलम अचानक अपनी जगह से उठी और अपने सास के गले लग कर रोने लगी । सास ने उसे अपनी छाती से उसे तुरंत लगा लिया काफी देर चिपकाए रही ।

उसके सर पर हाथ फेरती रही। दोनों ही सास और बहू कुछ देर आंसू बहाती रही और फिर सास ने पूछा,”तुम इतने दिनों कहां थी क्या हुआ था तुम्हारे साथ ? तुम्हारे रहते मेरे बेटे की मौत कैसे हो गई?"

उसने वही सब कुछ बताया जो कुछ देर पहले विजय को बता चुकी थी जिसे सुनकर सास और ससुर दोनों ही सकते में आ गए।

सब कुछ बताने के बाद जब नेहा फिर से भावुक होने लगी तो सास ने उसे फिर से गले लगा लिया। शिव शंकर अपनी कुर्सी पर खामोश बैठा था।

“आप दोनों अभी होटल जाइए मुझे अभी नीलम जी को साथ में ले जाकर उस जगह को देखना है जहां पर इन्हें बंदी बनाकर रखा गया था! शायद वहां पर ऐसा कोई क्लू मिले जिससे पुलिस उन अपराधियों तक पहुंच जाए हालांकि मुझे उम्मीद तो है कि जरूर कोई न कोई क्लू वहां मिलना चाहिए जब 10 दिन वहां अपराधियों ने गुजारे थे।"अचानक विजय अपनी कुर्सी से उठा और शिव शंकर की ओर देखते हुए बोला।

“नहीं ,अब हम अपनी बहू को अकेला नहीं छोड़ सकते!"शिव शंकर ने तुरंत कड़क अंदाज में इनकार करते हुए जवाब दिया। और फिर रुक कर बोला,” फिर जब मेरी बहू कह रही है कि उसे बंदी बनाकर रखा गया तो उसकी बात को मानो वह भला झूठ क्यों बोलेगी वह बेचारी

पहले से ही परेशान है तुम उसे और परेशान करने में लगे हो।”

“ऐसा नहीं है शिव शंकर जी मैं आपकी बहू की बात को झुठला नहीं रहा पर कानूनी प्रक्रिया है जो उसने कहा है उसकी जांच पड़ताल करके बस सच की मोहर लगानी है मुझे उस पर कोई भी शक नहीं पर कानूनी प्रक्रिया है आप समझ सकते हैं!” विजय हालात को बेहतर समझता था पर पुलिस की कार्रवाई भी जरूरी थी इसलिए उसने ऐसा कहा।

“मुझे लगता है इंस्पेक्टर साहब सही कह रहे हैं उन्हें अपनी कानूनी कार्रवाई पूरी करने दीजिए!”शिव शंकर के पास खड़ी उसकी वाइफ ने एक नजर नीलम पर डाली फिर सोच कर बोली,"हमें पता है हमारी बहू सच बोल रही है इंस्पेक्टर साहब तो कानून में बंधे हुए हैं कानून की जो प्रक्रिया होती है वह तो उसके हिसाब से ही चलेंगे उन्हें चलने दीजिए।"

“मां जी आपको लगता है मैं झूठ कह रही हूं?”अचानक नीलम रोने लगी तो उसकी सास ने झट से उसे गले लगा लिया और कहा,” अरे नहीं,मुझे तुम पर पूरा यकीन है पर इंस्पेक्टर साहब ने भी कहा ना की कुछ कानूनी कार्रवाई है और उसे पूरा करना ही चाहिए उनके भी हाथ कानून में बधे है मुझे तुम पर या तुम्हारी बात पर पूरा भरोसा! और हम लोग भी तुम्हारे साथ ही रहेंगे तुम परेशान मत हो। “

“तो ठीक है आप लोग भी हमारे साथ चलो!” बीच में तभी विजय अपने कुर्सी से खड़े होते हुए बोला। वह जान गया था कि सास और ससुर अपनी बहू को अकेला किसी कीमत पर नहीं छोड़ेंगे इसीलिए विवश होकर उसे यह कहना पड़ा था।

विजय ने यह बात भारी निराश में बल्कि बेमन से कहा था या उसे कहना पड़ा।

फिर एक जीप तैयार की गई जिसमें विजय नीलम कुछ पुलिस वाले और शिव शंकर और उसकी वाइफ सब लोग मिलकर उस स्थान के लिए निकल गए जहां पर नीलम को बंदी बनाकर रखा गया था आखिरकार जांच पड़ताल भी करना जरूरी था क्या पता नीलम झूठ कह रही हो तो। और अगर सच कह रही है तो अपराधियों को ढूंढना भी तो जरूरी है क्या पता वहीं पर कोई ऐसा सबूत मिल जाए जिससे उन्हें पकड़ना आसान हो।

****

पुलिस जीप जिसमे सभी लोग नीलम उसके सास ससुर विजय कुछ सिपाही सभी बैठे थे पहाड़ी रास्तों पर सरपट दौड़ी जा रही थी कई घुमाओ के बाद जो नीलम ने जो लगातार बाहर की तरफ देख रही थी और जगह को पहचानने की कोशिश कर रही थी अचानक एक जगह उसने जीप रोकने को कहा तो ड्राइवर ने तुरंत ही जीप रोक दी की ।

जीप जिस जगह रोकी गई थी उसे जगह नीचे एक छोटी ढलान थी। सब लोग जीप से नीचे उतरे।

“यहीं से इसी रास्ते से मैं बचकर इस जगह पर आई थी । यहीं से एक कर में लिफ्ट ली थी।

यही पास में ही जंगल में वह स्थान है जहां मुझे बंदी बनाकर रखा गया था।" नीलम ने जीप से उतरते ही एक बार इधर-उधर देखा और कहा।

जहां पुलिस जीप खड़ी थी उसके नीचे छोटी और सीधी ढलान था विजय ने एक बार चारों ओर सर सरी नजर से देखा फिर उस ढलान की ओर देखा।

“आप लोगों को ढलान में उतरने में दिक्कत होगी इसलिए मेरे ख्याल से आप दोनों को यही रहना चाहिए!”विजय ने शिव शंकर और उसकी मोटी पत्नी की ओर देखकर कहा वह जानता था उसे ढलान में उतरना और चढ़ने उन दोनों बुजुर्गों के लिए कतई सही नहीं होगा। एक पल के लिए तो शिव शंकर सोच में पड़ गया और फिर प्रश्न सूचक नजरों से वाइफ की ओर देखा।

“शायद इंस्पेक्टर सही कह रहा है । तुम्हे तो वैसे भी हार्ट की बीमारी है!” पत्नी कुछ कहती इससे पहले ही शिव शंकर बोल पड़ा।

पत्नी सोच में पड़ गई। एक दो बार उसने नीचे ढलान की तरफ देखा भी और शायद अब उसे लगा कि इंस्पेक्टर और उसका पति दोनों ही सही कह रहे हैं। वह हर्ट की पेशेंट थी उसे चढ़ाई उतराई से उसकी सांस फूल सकती थी उसे दिल की कोई समस्या हो सकती थी और इस समय जंगल में तो डॉक्टर अस्पताल कुछ भी नहीं था शायद यही सोचकर उसने भी हां में सिर हिलाया।

“तुम यहीं रुको । इंस्पेक्टर एक सिपाही को उनके पास ही छोड़ दो। मैं तुम्हारे साथ चलता हूं !”शिव शंकर ने कुछ सोच कर कहा तो विजय ने हां में सिर हिलाते हुए एक सिपाही को शिव शंकर की पत्नी के पास छोड़ने का आदेश दिया हालांकि वह शिव शंकर से भी कहना चाहता था कि वह भी अपनी पत्नी के पास हीरो के पर उसकी जिद देखकर उसने नहीं कहा और फिर सबसे पहले नीचे ढलान में उतरता चला गया। उसके पीछे बाकी सब एक-एक करके संभल कर नीचे उतरे। आगे विजय था पीछे नीलम और फिर उसके पीछे शिव शंकर और सिपाही।

शीघ्र ही वे सब ढलान उतरकर अब जंगल में आ चुके थे फिर नीलम के बताने पर सभी एक दिशा की ओर बढ़ गए।

सब आगे बढ़ते हुए बेहद सावधान थे । नीलम के मुताबिक जिन लोगों ने उसे बंदी बनाया था उनकी संख्या 2,3 थी और वे ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से जुड़े हुए लोग थे। उनके पास हथियार भी हो सकते हैं इसलिए सभी सावधान व चौकन्ने थे और फिर 10-5 मिनट चलते रहने के बाद वह लोग जंगल में स्थित एक पत्थरों द्वारा निर्मित एक कमरे के पास पहुंचकर रुक गए ।

“इसी स्थान पर आपको बंदी बनाकर रखा गया था क्या?”विजय ने उसे स्थान का मुआयना करते हुए पास में खड़ी नीलम से पूछा तो उसने जल्दी से हां में गर्दन हिला कर जवाब दिया।

" हां।"

विजय ने हाथों में रिवाल्वर ले ली थी बाकी सिपाहियों ने भी पोजीशन ले ली थी । नीलम और उसके ससुर को वहीं रहने के लिए बोल दिया फिर वे सब आगे बढ़े और उस कमरे के बंद दरवाजे के पास पहुंच कर खड़े हो गए।

सबसे आगे विजय था । वह कुछ देर खड़ा भीतर की आहट लेता रहा उसे लगा शायद वहां कोई हो सकता है हालांकि उम्मीद कम ही थी क्योंकि उनका बंदी अपनी जगह फरार हो चुका था ऐसे में उनका वहां रुकना पॉसिबल नहीं था फिर भी सावधानी के चलते इतना तो करना ही था फिर अचानक विजय ने दरवाजे पर लात मारी तो दरवाजा खुल गया और उसने भीतर जा कर देखा भीतर कोई नहीं था।

“अब यहां पर कौन बैठा होगा इंस्पेक्टर मेरी बहू किस्मत वाली निकली जो यहां से बचकर भाग गई उन लोगों ने अनुमान लगा लिया होगा कि अब उनके यहां रहना खतरनाक हो सकता है शायद इसीलिए वे यहां से भाग गए होंगे!” बाहर खड़े शिव शंकर ने जब विजय को भीतर इधर-उधर देखते पाया तो बोल पड़ा ऐसी आशंका तो खैर विजय को भी थी नीलम के वहां से बचकर भाग जाने की वजह से उसे बंदी बनाए लोग घबरा गए होंगे और वहां से चले गए होंगे वह जानता था यह बात।

“आप बिल्कुल सही कह रहे हैं शिव शंकर जी!”पीछे गर्दन घुमा कर विजय ने जवाब दिया फिर वहां की जांच पड़ताल करने लगा।

वहां पर सिगरेटों के कुछ जले हुए टुकड़े गुटखा की खाली पुड़िया और कुछ डिस्पोजल पत्तलें पड़ी थी जिनमें शायद खाना खाया गया था जो इस बात की गवाही दे रहे थे नीलम की बात सही है। वहां पर छोटे-मोटे एविडेंस जो भी मिले उनको कलेक्ट कर लिया गया।

“यहां की हालत बता रही है इंस्पेक्टर की मेरी बहू की बात एकदम सच है!”उन्हीं चीजों पर नजर डालते हुए अचानक शिव शंकर ने फिर कहा तो विजय को भी कहना पड़ा,”बिल्कुल आपकी बात सही है मैंने तो पहले ही कहा था मुझे आपकी बहू नीलम जी की बात पर यकीन है पर कानूनी प्रक्रिया है उसे तो पूरा करना ही पड़ेगा शिव शंकर जी!”

“तो अगर आपकी कानूनी प्रक्रिया पूरी हो गई हो तो वापस चले? मेरी पत्नी जंगल में अकेली होगी।"

“हां बिल्कुल क्यों नहीं । चलो वापस चलते हैं!”विजय वहां पूरी छानबीन कर चुका था इसलिए उसने तुरंत ही कहा और फिर सब वापस अपनी जीप की ओर चल पड़े।

शीघ्र ही वह जंगल के बाहर आ गए और फिर उस ढलान पर चढ़कर सड़क पर आ गए जहां जीप खड़ी थी और शिव शंकर की बीवी और एक सिपाही खड़ा था। शिव शंकर को ढलान चढ़ने में काफी दिक्कत पेश आई थी पर वह चढ़ गया था एक सिपाही ने उसकी मदद भी की थी और रोड पर आकर वह हाफ रहा था। अपनी उखड़ी हुई सांसों को कंट्रोल करने में उसे ज्यादा वक्त नहीं लगा।

उसकी बीवी ने प्रश्न सूचक नजरों से उसकी ओर देखा तो उसने कहा,”मैंने पहले ही कहा था हमारी बहू सच बोल रही है उसकी बात सच निकली!”शिव शंकर अपनी पत्नी का इशारा समझ गया था कि वह क्या जानना चाहती है इसीलिए उसने खुद पर कंट्रोल करते हुए कहा

तो बीवी ने एक बार विजय की ओर देखा विजय ने भी हां में मुंडी हिला कर सहमति प्रदान की तो वह समझ गई।

ऐसा लगा जैसे उसने रत का अनुभव किया हो वह अभी तक दुविधा की स्थिति में थी कि पता नहीं उसकी बहू की बात सच निकलेगी या फिर झूठ शायद यही सोचकर वह दुविधा में थी पर अब दुविधा से बाहर आ गई।

"तो फिर चलें! वैसे मेरे बेटे की डेड बॉडी कब तक मिल जाएगी इंस्पेक्टर साहब मैं यहां पर अपने बेटे की डेड बॉडी और बहू के लिए ही अपने पति के साथ रुकी हुई थी कभी सोचा नहीं था कि ऐसा भी समय आएगा जब..!"कहते कहते अचानक पत्नी रोने लगी नीलम ने आगे बढ़ाकर उसे गले से लगा लिया।

“सब मेरी गलती है मा जी मैं यहां आने की जिद ना की होती तो यह सब कुछ नहीं होता!” वह भी सिसकने लगी।

“तू ऐसा क्यों बोल रही है तुझे क्या पता था कि ऐसा होगा कौन जानता है आगे क्या हो जाए तू दिल मत छोटा कर!” थाने से यहां आते वक्त नीलम ने इस बारे में अपनी सास को बता दिया था।

विजय ने भी सुना था लगभग सभी ने सुना था इसलिए किसी को इस बात की हैरत नहीं हुई हालांकि पहले शिव शंकर और उसकी पत्नी को मालूम था कि शिलांग आने का प्रोग्राम करण का था पर रास्ते में उसने बताया था कि कैसे उसके कहने पर कारण ने शिलांग आने के प्रोग्राम बनाया था वह चाहती तो उस बात को छुपा भी सकती थी पर उसने छुपाया नहीं।

फिर सब जीप में बैठकर वापस थाने के लिए चल पड़े शिव शंकर के कहने पर विजय ने उन्हें उन तीनों को होटल में ले जाकर छोड़ दिया जो रास्ते में ही पड़ता था। अब उनको शाम तक रुकना था क्योंकि उनके बेटे करण की पोस्टमार्टम के बाद लाश शाम तक मिलने वाली थी और जिसे लेकर वह वापस राजनगर जाने वाले थे।

शाम को कानूनी प्रक्रिया के बाद करण की लाश को शिव शंकर के हवाले कर दिया गया उनके कहने पर इंस्पेक्टर विजय ने लाश को राजनगर पहुंचने के लिए भी इंतजाम कर दिया था।

वह सभी लोग शिलांग से बाय रोड एक बड़ी सी एंबुलेंस में निकले थे जो कुछ घंटे के सफर के बाद उन्हें राजनगर छोड़कर वापस शिलांग चली गई थी।

इधर न्यूज़ चैनल पर अखबारों में सोशल मीडिया पर सभी में करण की पत्नी की अचानक इस तरह वापस आने और फिर उसके साथ क्या-क्या हुआ था सब कुछ डिटेल में बार-बार बताया जा रहा था। कई न्यूज़ चैनल वाले मीडिया वाले जंगल में उसे स्थान पर पर भी पहुंच गए थे जहां पर नीलम को बंदी बनाकर रखा गया था वहां भी सब डिटेल से बताया जा रहा था।

ज्यादातर न्यूज़ चैनल पर एक बात पर सहमत थे । सभी इस करण और नीलम वाले केस को सोनम राजा रघुवंशी जैसा ही केस मानकर चल रहे थे । अभी भी कुछ लोगों को

लगता था कि करण की मौत में उसकी पत्नी का हाथ है और यह सब कुछ ड्रामा है उसी का बनाया हुआ है तो कुछ चैनल पत्नी को बेगुनाह बता रहे थे कह रहे थे कि सच में उसने जो कुछ बताया उसके साथ घटा था और सच्चाई क्या थी यह अभी भी रहस्य में छिपी हुई थी। जितने मुंह उतनी बातें। किसी का कोई मुंह तो नहीं पकड़ सकता मुंह पकड़ भी लेगा पर उसकी सोच पर कैसे ताला डाल सकता है किसी के सोचने पर कोई कैसे प्रतिबंध लगा सकता है ।

यह तो नामुमकिन बात है।

राजनगर पहुंचने के बाद शाम को शमशान घाट में करण की डेड बॉडी को आग के हवाले कर दिया गया। पर उससे पहले नीलम करण की लाश से लिपटकर बहुत रोई थी शिलांग में ही जब उसकी डेड बॉडी शिव शंकर को सौंप गई थी तभी वह लाश से लिपटकर बहुत रोई थी बड़ी मुश्किल में उसे चुप कराया गया था और एक बार फिर लाश जलने से पहले उसकी हालत बड़ी खराब हो गई थी जैसे तैसे उसे फिर से चुप कराया गया ।

लाश को शिव शंकर ने मुखाग्नि दी थी और इस समय चिता से लपटे उठ रही थी सब दूर खड़े देख रहे थे सभी दुखी गमहीन जान पड़ते थे माहौल ही ऐसा था बूढ़े मां-बाप ने अपना जवान बेटा खोया था नई नवेली दुल्हन ने अपना पति खोया था।

बूढ़े बाप रोते हुए आग़ की लपटे जो देखते ही देखते बढ़ती जा रही थी देखते जा रहे थे। वहां पर नगर के काफी लोग इक्कठा थे नीलम के आंसू नहीं थम रहे थे। यही हाल उसकी सास का भी था शिव शंकर बड़ी मुश्किल से खुद को संभाले था पर वहीं पास में भीड़ में शिव शंकर की बेटी भी खड़ी थी शिल्पी जो मन ही मन बहुत दुखी थी।

उसकी और कोई नहीं देख रहा था पर उसकी आंखें बता रही थी आंखों से बहते आंसू बता रहे थे कि वह बहुत दुखी है पर उसके चेहरे पर नफरत के भी भाव थे और वह गुस्से से नीलम की ओर देख रही थी।

चिता में आग लगाने के बाद भीड़ धीरे-धीरे छटने लगी और जब वहां पर सिर्फ तीन लोग बच गए शिव शंकर उसकी पत्नी और करण की वाइफ नीलम पर वहां एक और शख्स भी था और वह थी उसकी शिल्पी। कुछ देर वह अपने स्थान पर खड़ी रही और फिर अचानक उन तीनों के पास चलकर आई।

अब उन तीनों का ध्यान उसकी तरफ गया तो शिव शंकर और उसकी पत्नी ने उसकी ओर गुस्से में देखा था पर नीलम मैं कोई ध्यान नहीं दिया। पर जब शिल्पी को अपनी और नफरत से देखते हुए देखा तो थोड़ी उसे हैरानी हुई ।

उसने अंदाजा लगाया कि शायद वह लड़की भी उन्हीं लोगों में से थी जो कारण की मौत का जिम्मेदार उसे मानती थी शायद इसीलिए उसकी तरफ गुस्से से देख रही है पर तब तो वह चक्कर में पड़ गई जब शिल्पी ने कहा,"तुम लोगों को अपनी बहू पर बहुत यकीन है पर मुझे नहीं ।

भाभी ने जो कुछ कहा उस पर आप सब को एतबार होगा पर मुझे नहीं। मेरे भाई की हत्या में मुझे अभी भी लगता है इसका हाथ है और इसने जो कहानी बताई वह सब मनगढ़ंत है इसकी बनाई हुई है पुलिस से कहना अच्छे से जांच करें!"

नीलम हक बकाया अंदाज में खड़ी थी । एक अपरिचित लड़की उसके सामने उसे पर इल्जाम लगा रही थी। वह अवाक हालत में उसे देखती रही फिर उसने अपने सास ससुर की ओर देखा।

“यह कौन है पापा?” नीलम ने पूछा।

“यह हमारी नालायक औलाद है इसके दिमाग में हमेशा गंदे ख्याल आता आते रहते हैं!”शिव शंकर शिल्पी की ओर देखकर बेहद गुस्से में बोला।

“यह आपकी बेटी है ! पर शादी के वक्त तो मुझे यह कहीं नहीं दिखाई दी!” नीलम के चेहरे पर भारी हैरानी दिखाई दी क्योंकि उसकी जानकारी में करण के घर पर सिर्फ मां-बाप और कारण था और चौथी वह पर आप उसे पता चला कि करण की एक बहन भी है।

“यह दिखाई देने लायक है भी नहीं आज दिखाई दी है अब इसके बाद यह कभी नहीं दिखाई देगी और सुनो मैंने तुमसे मना किया था की दोबारा मेरे पास मत आना मैं फिर से तुम्हें चेतावनी दे रहा हूं तुम हमसे दूर रहो यह हमारा मामला है हम देख लेंगे क्या सच है और क्या झूठ । तुम्हे बताने की जरूरत नहीं है अब जाओ यहां से! और दोबारा हमारे सामने कभी मत आना।"

शिल्पी ने अपने आप की और बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया शायद उसे आदत पड़ गई थी ऐसी बातें सुनने की । उसकी गुस्से से भरी नजरे बस नीलम पर टिकी हुई थी

“आप दोनों इस पर विश्वास करके बहुत गलत कर रहे हो देखना एक न एक दिन यह आप सबको भी धोखा देगी। इसने एक साजिश के तहत मेरे भाई को तो पहले ही मरवा दिया जरूर इसके इरादे बहुत खतरनाक है।”

“देखो मैं तो तुम्हें ठीक से जानती भी नहीं पर तुम मुझ पर गलत आरोप लगा रही हो ।

तुम्हें लगता है शिलांग में जैसा सोनम राजा रघुवंशी के साथ हुआ वैसा ही सबके साथ होगा ,होता है । मेरा यकीन करो मेरे और मेरे पति के साथ जो कुछ हुआ उसमें मेरा कोई हाथ नहीं मेरा तो पति मर गया मेरी दुनिया उजड़ गई और ऊपर से तुम मुझ पर आरोप लगा रही हो जबकि तुम्हें मुझसे सहानभूति रखनी चाहिए ,मुझे धीरज बढाना चाहिए कि मेरी इतनी लंबी जिंदगी कैसे कटेगी!”

“मैं बेवकूफ नहीं हूं इसीलिए इंसान में और नागिन में फर्क जानती हूं जिनकी आंखों पर नासमझी और अंधेप्यार का पर्दा पड़ा होता है वह कुछ नहीं देख पाते! पर मैं कोई बेवकूफ नहीं हूं।"शिल्पी नीलम की कोई विवाह सुनने के लिए तैयार नहीं जान पड़ती थी।

“ मै सच कह रही हूं मेरा यकीन करो!”

“मैं तुम पर कभी यकीन नहीं कर सकती। जैसी तुमने कहानी बताई है वह सिर्फ और सिर्फ मनगढ़ंत है पर मैं तुम्हारी साजिश का भाड़ा फोड़ के रहूंगी। देखना एक दिन तुम्हारी सारी

सच्चाई सबके सामने लाकर रहूंगी सबको बताऊंगी कि तुम कितनी बड़ी शातिर चालबाज खिलाड़ी हो!"

शिल्पी की बात सुनकर अचानक नीलम रोने लगी तो शिव शंकर और उसकी पत्नी फिर से शिल्पी पर गुस्सा उतारने लगे शिव शंकर गुस्से में बोला,"तेरी तरह सब कोई नालायक नहीं होता बड़ी आई भाई प्रेम दिखाने। चली जाओ यहां से दोबारा कभी मेरे सामने मेरी नजरों के सामने मत आना है। एक तो बेचारी का वैसा भी पति खत्म हो गया है ऊपर से पत्रकारों की तरह तुम उसका दिमाग खराब कर रही हो!"

शिल्पी ने एक बार गुस्से में अपनी भाभी की ओर देखा फिर पैर पटकती हुई वहां से चली गई।

****

आज तीन-चार दिन बीत चुके थे पर शिव शंकर के घर में अभी भी मातम पसरा था कोई भी प्रसन्न नहीं दिखाई देता था कैसे दिखाई देता। इतनी बड़ी घटना को घटे अभी कुछ दिन ही तो बीते थे । सब कोई उदास था हालांकि नीलम अपने सास ससुर को दोनों टाइम खाना खाने के लिए मजबूर करती थी ।

तब कहीं जाकर वे दोनों खाना खाते थे और जब वह खाना नहीं खाती थी तो सास ससुर उसे जोर देकर मजबूर करके उसे खाना खिलाते थे घर में सब करण की ही बातें करते रहते थे।

शिव शंकर तो दिन में अपने ऑफिस निकल जाता था इसलिए उसका पूरा दिन वहीं कट जाता था पर सास का और नीलम का दिन उस घर में कटना बड़ा मुश्किल था हालांकि नौकर चाकर भी थे पर वह भी कुछ नहीं कहते सुनते थे।

समय धीरे-धीरे गुजर रहा था।

आज चौथा दिन था करण की लाश को चिता के सुपुर्द किए। करण की मां शाम के वक्त अपने पति के लौटने का इंतजार कर रही थी नीलम अपने कमरे में थी।

वह बेहद उदास जान पड़ती थी सामने दीवार पर टंगी करण की फोटो जिस पर माला भी टंगी थी को वह देखते-देखते वह रोने लगी पर तभी नीलम के कमरे से उसे हंसने की आवाज सुनाई दी वह चौंक पड़ी ।

नीलम हंस क्यों रही है पति की मौत के बाद इस तरह उसका हंसना कहीं शिल्पी की बात सच तो नहीं करण की मौत में नीलम का ही तो हाथ नहीं हम सब ने उसकी बात को सच मान लिया और वह अपने प्लान में सफल हो गई कहीं इसी बात के लिए तो नहीं हंस रही है।"उर्मिला देवी सोफे पर कुछ देर बैठी यही सोचती रही और फिर जब नीलम के कमरे से दोबारा हंसी की आवाज आई तो वह खुद को रोक न सकी और उठ बैठी।

उसने अपने आंसू पोछे और फिर वह देखते ही देखते नीलम के कमरे के सामने जाकर खड़ी हो गई । कमरे के बाहर व सांस रोक कर कुछ देर खड़ी रही ।

ऐसा लगा जैसे बंदर का जायजा ले रही हो कि आखिर अंदर क्या हो रहा है। अंदर ऐसा लग रहा था जैसे नीलम किसी से बात कर रही हो और हंस रही हो बाहर खड़ी उसकी सास हैरत में थी कि आखिर अभी तो करण को मरे हुए कुछ ही दिन हुए हैं और नीलम की हंसी बता रही थी कि उसे जरा भी दुख नहीं है ऐसा कैसे हो सकता है उसे फिर से अपनी बेटी की बातें याद आ गई जिसमें उसने कहा था कि करण की मौत में नीलम का हाथ हो सकता है।

पता नहीं क्या सोचकर उसे भी लगा कि शायद उसकी बेटी की बात सच है तभी तो अचानक उसके चेहरे पर गुस्सा नजर आने लगा और फिर उसने झट से नीलम के कमरे का दरवाजा लात से खोला और अंदर यह देखकर हैरान रह गई की नीलम पलंग पर बैठी करण की तस्वीर को हाथ में लिए कुछ बड़बड़ा रही थी यानी उसी से बात कर रही थी उसका पूरा चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था सास के दिल को धक्का लगा कि वह अपने बहू के बारे में क्या अनाप शनाप सोच रही थी पर यहां तो मामला उल्टा है और समझ गई कि वह अपने पति से ही बातें कर रही है । अपने मरहूम पति को याद कर करके कभी हंसने लगती है तो कभी रोने लगती है उसकी दशा तो पागलों जैसी जान पड़ती थी। अब उसे नीलम से सहानुभूति होने लगी थी।

वह उसके पलंग पर उसके नजदीक बैठ गई और उसके सर पर हाथ फेरने लगी।

“मैं जानती हूं तुम्हारे पति और मेरे बेटे के साथ जो कुछ हुआ उसे इतनी जल्दी भूलना मुश्किल है पर इस तरह करोगी तो पागल हो जाओगी खुद पर कंट्रोल रखो बहु!” उर्मिला देवी उसके सर पर हाथ फेरते हुए उसे सांत्वना बनाते हुए प्यार से बोली।

“ एक तो मेरी सारी दुनिया उजड़ गई ऊपर से लोग ताने मारते हैं कि सोनम राजा रघुवंशी की तरह मैंने भी अपने पति को मरवाया मेरे पति के हत्या में मेरा ही हाथ है मैं सबसे कहते कहते थक गई कि ऐसा कुछ नहीं है करण की मौत में मेरा कोई हाथ नहीं पर मेरा कोई बात नहीं मानता!

मेरा बस चलता है तो मैं कारण को कुछ भी नहीं होने देती बल्कि उसकी मौत अपने सर पर ले लेती उसकी जगह मैं मर जाती मां जी।"नीलम सिसकती हुई बोली।

“यह तो दुनिया है बेटी गाल बजाने वालों की कमी नहीं है। उनका खुद का दिमाग होता तो फिर ऐसी बात ही क्यों करते ऐसे मूर्ख लोगों पर ध्यान मत दिया करो। मुझे तुम पर यकीन है तुम्हारे पापा को तुम पर यकीन है तुम वैसा नहीं कर सकती।"

“इसीलिए तो यहां पर रुकी हुई हूं मां जी क्योंकि मुझे आप पर और पापा पर पूरा भरोसा है कि वह मुझ पर विश्वास करते हैं आप दोनों के विश्वास के सहारे ही तो मैं यहां पर हूं पर मैं सोचती हूं काश करण के साथ-साथ उन लोगों ने मुझे भी मार दिया होता तो अच्छा होता लोगों के ताने मुझे नहीं सुनने पड़ते!”

“मैंने कहा ना बेटी लोगों की बातों पर ध्यान मत दिया करो। तुम्हारे सामने पूरी जिंदगी पड़ी है तुम इस घटना को हादसा समझ कर भूलने की कोशिश करो ताकि आगे की जिंदगी आराम से कट सके! अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है पूरी जिंदगी तुम्हारे सामने पड़ी है।"

फिर नीलम अपनी सास के कंधे पर सर रखकर लिपटकर सिसकने लगी और सास उसके सर पर हाथ फेरकर उसे तसल्ली देती रही।

कुछ देर बाद सास उसे तसल्ली बढ़ाने के बाद कमरे से बाहर निकल आई।

कमरे के बाहर जाते ही नीलम के चेहरे के भाव अचानक बदले उसने झट से आंसू पोछ डाले और रहस्यमय ढंग से मुस्कुराई दरवाजे की ओर देखकर।

“बेवकूफ औरत!”दरवाजे की ओर देखते हुए बड़े ही शांत भाव से लेकिन मुस्कुरा कर बोली। अब उसके चेहरे पर दुख का जरा सा भी भाव नहीं था बल्कि वह प्रसन्न नजर आ रही थी।

*****

शिल्पी ऑटो में सवार थी और ऑटो सड़क पर तेजी से दौड़ता चला जा रहा था विभिन्न सड़कों पर इधर-उधर दौड़ते हुए लगभग 10 मिनट बीत गए और फिर जब ऑटो एक ऐसी जगह पर पहुंचा जो देखने में शहर से बाहर का इलाका जान पड़ता था और ज्यादातर मध्यम वर्ग की लोग रहते थे वहां पर ।

वहां एक मंजिल दो मंजिला और बड़ी हद तीन मंजिल तक के मकान थे।

ऑटो से उतरने के बाद शिल्पी ने भाड़ा चुकाया और फिर चारों तरफ एक सरसरी नजर से देखा ऑटो वाला पैसे लेकर वहां से चला गया था । हुए उसे छोटी सड़क पर कुछ देर खड़ी रही।

फिर वह सड़क से उतरकर एक ऐसे रास्ते की तरफ बढ़ गई जो ईटों से बना हुआ था और ज्यादा चौड़ा नहीं था उस रास्ते के दोनों तरफ नालियां बनी हुई थी और जगह-जगह से जो टूटी हुई थी इसलिए बीच में नाली से पानी निकल कर रास्ते में जमा था उस बचते बचते हुए एक घर के सामने पहुंच कर रुकी ।

घर के बाहर छोटी सी नेम प्लेट लगी थी जिसमें लिखा था सुरेश कुमार।

उस नेम प्लेट पर नजर मार कर शिल्पी ने दरवाजे पर लगी कॉल बेल बजाई और कुछ इंतजार किया । वह दोबारा कॉल बेल बजाने वाली थी तभी दरवाजा खुला। और एक दुबली पतली महिला नजर आई । उसे देखते ही शिल्पी ने दोनों हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया।

जवाब में महिला ने भी दोनों हाथ जोड़ लिए और उसके चेहरे पर शिल्पी को देखकर वैसे ही भाव थे जैसे किसी अजनबी को देखने पर होते हैं।

“आप नीलम की मां है?”शिल्पी ने पूछा।

“नहीं, मैं रिश्ते में उसकी चाची लगती हूं उसके मां-बाप तो उसके जन्म के 15 साल बाद ही चल बसे बाद में उसका लालन पालन मैंने और मेरे पति ने ही किया!”

“फिर तो आप भी उसकी मां जैसी ही है !”

“हां कहने को तो कह सकती हो पर मां होती है। ,"उसे महिला ने ऐसा कहा जैसे उसे भारी दुख हो" मां को जो सम्मान मिलता है वह तो मुझे उसने कभी नहीं दिया पर मैंने अपनी तरफ से उसकी पूरी जिम्मेदारी निभाई!”

उसके कहने के अंदाज से लगा नीलम और सामने खड़ी औरत के बीच में जो रिलेशन था उसमें ज्यादा कुछ मिठास नहीं थी।

“वैसे आप कौन हैं और कैसे आई ?”अचानक महिला को याद आया तो उसने पूछा।

“आपको बुरा ना लगे तो मैं और आप दोनों घर के अंदर बैठकर बात करें?” उसने थोड़ा झिझकते हुए कहा।

“हां पर मैं तो आपको जानती भी नहीं ऐसे कैसे घर के अंदर ..आजकल तो आपको पता ही है कितने फ्रॉड लोग घूम रहे हैं जो किसी न किसी बहाने घर में घुस जाते हैं और चोट पहुंच जाते हैं सामान गायब कर देते हैं! हत्या तक कर देते हैं महिला की तुनक कर बोली।

"मैं आपको ऐसी लगती हूं चोरी करने वाली हत्या करने वाली?"

"अब किसी के माथे पर तो लिखा नहीं होता है कि वह क्या कर सकता है!"

शिल्पी ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला फिर यह सोचकर शांत हो गई कि शायद वह ठीक कह रही है एक अपरिचित व्यक्ति को इतनी जल्दी घर के अंदर कौन घुसने देता है। कोई नहीं।

“मैं आपका भाव समझ सकती हूं पर यकीन मानिए ऐसा कुछ नहीं है और मैं कोई अपरिचित नहीं हूं मैं नीलम की ससुराल से ही आई हूं रिश्ते में उसकी नंद लगती हूं!"शिल्पी अपने बारे में बताना नहीं चाहती थी पर बताना मजबूरी बन गया था क्योंकि वह महिला के साथ कुछ देर बैठ कर आराम से बात करना चाहती थी इस तरह दरवाजे पर खड़े-खड़े हो वह सारी बातें नहीं हो सकती थी।

अब उस महिला के चेहरे पर थोड़ी हैरानी दिखाई दी।

उसने कुछ पल सोचा फिर बोली,” फिर तो तुम रिश्तेदार हुई । तुम्हें अंदर बुलाकर बातचीत करने में अब मुझे कोई आपत्ति नहीं। अंदर आओ।”

दोनों शीघ्र घर के अंदर पहुंच गए ।

बाहरी छोटा कमरा जो ड्राइंग रूम के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था वहां पर कई कुर्सियां पड़ी थी उनमें से एक पर महिला विराजमान हो गई और दूसरे पर शिल्पी। कुछ पल शांति से गुजरे।

“आप बैठिए मैं आपके लिए नाश्ता,”अचानक उस महिला को कुछ याद आया तो वह तुरंत उठी और बोली पर शिल्पी ने उसे तुरंत रोक लिया और बैठने के लिए कहा फिर उसने भी दोबारा नहीं पूछा ।

“क्या आपको पता है कि आपकी बेटी और दामाद के साथ क्या हुआ?”

“हां मुझे पता है। करण की अंतिम यात्रा में शामिल होने गई थी। शिल्पी ने दिमाग के जोर डाल पर उसे ध्यान नहीं आया कि करण की अंतिम यात्रा में उस औरत को कहीं देखा हो पर भीड़ ज्यादा थी हो सकता है वह हो इसलिए उसने ज्यादा दिमाग नहीं लगाया।

“पर आप नीलम के घर तो आई नहीं मीडिया में भी आप नहीं दिखाई दी जबकि यह खबर तो पूरे इंडिया में कई दिनों से छाई हुई है क्या आपको अपनी बेटी नीलम की फिक्र नहीं उसके साथ इतना कुछ हो गया और आप वहां आई भी नहीं!”

“ मै 10 ,15 दिन से मैं अपने मायके में थी मेरी मां की तबीयत बहुत खराब थी इसलिए वहां रुकना पड़ा मेरे पति भी मेरे साथ थे। वे तो अभी भी वही हैं। शायद आज लौटेंगे। पर जब मुझे पता चला था तो मैं अपने पति को लेकर नेहा के घर पर गई थी पर वहां पर कोई नहीं था उसके साथ ससुर शिलांग चले गए थे और कुछ दिनों बाद जब वे लौट कर आए तो करण की लाश के साथ लौटे थे मैंने भी बताया ही था कि मैं और मेरे पति करण की अंतिम यात्रा में शामिल हुए थे फिर वहां से सीधी अपने घर चली गई थी क्योंकि मेरी मां की तबीयत ज्यादा खराब थी इसलिए! उनकी देखभाल करने के लिए घर पर मेरे इकलौते मारूं भाई की इकलौती बेटी के अलावा जिसकी उम्र अभी 10 12 साल ही है के अलावा और कोई नहीं था।"

शिल्पी ने उस महिला का चेहरा बड़े ध्यान से देखा उसे लगा नहीं की अगर वह वहां पर होती भी तो उसे उस हादसे की खबर सुनकर नीलम के घर पर जाती नीलम से मिलती है उसके हाव भाव बता रहे थे कि नीलम से उसका कोई दिल का रिश्ता नहीं था। उसने पहले ही बताया था कि वह उसकी मां नहीं बल्कि चाची है।

“पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लग रहा है कि अगर आप वहां पर होती भी तो भी शायद नीलम से मिलने नहीं जाती?”शिल्पी ने पता नहीं क्या सोचकर अपने मन की बात कह दी इस पर उस महिला ने भी कुछ न नुकूर नहीं किया और सीधे तौर पर स्वीकार किया,”शायद तुम ठीक कह रही हो!”

“ऐसा इसलिए क्योंकि नीलम आपकी सगी बेटी नहीं है? उसके साथ इतना बड़ा हादसा हो गया अभी उसकी शादी को कितने दिन हुए थे उसका पति गुजर गया लगता नहीं की आपको उससे सहानुभूति है?"

उसकी बात सुनकर महिला सोच में पड़ गई।

“एक बात तो यह भी है पर सगी और सौतेले का मतलब नहीं है उसके मां-बाप जिंदा थे तभी वह हम लोगों से मन मिलाकर नहीं चलती थी फिर उनके मरने के बाद भी उसने हमसे कोई खास मन नहीं मिलाया जबकि हम लोग उसके लिए सब कुछ कर रहे थे उसने कभी भी हमें अपना नहीं समझा उसे लगता था कि हम उसके दुश्मन है उसका बुरा चाहते हैं! एक बार हमने उसके लिए लड़का भी देखा था लड़के वाले घर पर उसे देखने आए थे पर उसने सबके सामने उनकी भी बेज्जती की और हमारी भी लड़कों वालों को घर से भगा दिया उसका कहना था कि वह अपनी मर्जी से शादी करेगी।"

"तो अपनी मर्जी से शादी करना क्या गलत है?"

महिला ने एक बार उसकी ओर देखा फिर बोली,"मुझे नहीं पता कि गलत है या सही पर हमारे

यहां तो ऐसा ही रीति-रिवाज है की मां-बाप घर के बड़े लोग ही शादियां तय करते हैं और बच्चों को उनके हिसाब से ही शादी करनी पड़ती है। वहीं हमने किया था पर..

“कुल मिलाकर नीलम से आपकी बनती नहीं थी क्योंकि वह अपनी मर्जी से जीना चाह ती थी?"

“उसकी उम्र 18,19 साल थी बड़ी थी समझदार थी पर अपने मन मुताबिक चलती थी उसे अगर किसी बात पर डांट दो समझा दो तो उसे बहुत बुरा लग जाता था अब जब घर में साथ में कोई शख्स रहता है तो उसका अच्छा भला बुरा सोचना भी बड़ों का काम है क्या वह भी न सोचें!”

“ हूं। वैसे यही बात थी बस।”

“हां यही बात थी बस और क्या होगा!”

“वैसे तुम्हें मैंने शादी में भी नहीं देखा था जबकि तुम बता रही हो कि तुम नीलम के पति की बहन हो नंद हो इतना गहरा रिश्ता फिर भी शादी में नहीं दिखाई दी?”इस बार उस महिला ने सवाल किया शिल्पी शायद सवाल का जवाब पहले से ही सोच कर बैठी थी इसलिए तुरंत बोली,”एक्चुअली वो मैं पढ़ाई के सिलसिले में बाहर रहती हूं और शादी के वक्त मुझे कॉलेज से छुट्टी नहीं मिली इसीलिए शादी में नहीं शामिल हो पाई!”

“ ओह अच्छा।”

“नीलम और उसके पति करण के साथ शिलांग में जो कुछ हुआ उसके बारे में तो आपको पता ही होगा वायरल न्यूज़ के जरिए मीडिया के जरिए पूरे इंडिया को पता है?”

“हां पता तो है!”

“आपको क्या लगता है मेरे भाई की हत्या में नीलम का हाथ हो सकता है?” इस बार शिल्पी ने सीधे-सीधे पूछ। अब तक की बातचीत से वह जान चुकी थी कि सामने बैठी महिला का रिश्ता नेहा के साथ ज्यादा गहरा नहीं है अगर गहरा होता तो शायद इस तरह से प्रश्न करना मुश्किल होता है। आपसी रिश्तों में पड़ी हुई दरार का फायदा अक्सर लोग इसी तरह उठाते हैं सामने वाला समझ भी जाए फिर भी फायदा उठाने से रोक नहीं सकता।

महिला ने उसकी ओर देखा फिर सोच कर बोली,”पक्के तौर पर क्या कहूं मीडिया में जैसा दिखया जा रहा है उसके हिसाब से तो नीलम निर्दोष है!”

“मैं आपकी राय जानना चाहती हूं आपको क्या लगता है क्या नीलम अपने पति को मार सकती है? वैसे जिस प्रकार की नीलम लड़की है अभी आपकी बातचीत से पता चला उसे हिसाब से तो लगता है कि वह ऐसा कर सकती है।"

“मैं इस बारे में पक्के तौर पर क्या कहूं पर अपने पति को क्यों मारेगी अभी तो उसकी नई-नई शादी हुई थी?”

“उसकी दौलत हासिल करने के लिए?”

“वह तो उसकी वैसे भी थी पति की दौलत और पत्नी की दौलत क्या अलग अलग होती है!”

“क्या पता ,हो सकता है नीलम का किसी और के साथ अफेयर हो, चक्कर हो शादी के वक्त

वह यह बात कह ना पाई हो और मेरे भाई से उसकी शादी मजबूरी में हुई हो पर उसका मन अपने प्रेमी के साथ ही शादी करके जीवन बिताने का होगा इसीलिए उसने मेरे भाई को मरवा दिया!"

"ऐसा कैसे हो सकता है! नीलम को तुम्हारे भाई ने और तुम्हारे भाई को नीलम ने पसंद किया था खुद तुम्हारा भाई चलकर नीलम यानी हमारे घर पर आया था और नीलम से शादी की इच्छा जाहिर की थी उसने नीलम को कहीं मार्केट में देखा होगा वह उसे पसंद आई एक दो मुलाकातों के बाद उसने बात भी की नीलम भी उससे शादी करने के लिए राजी थी । तुम्हारे भाई ने ही जब हमसे बात की और अपने घर वालों से बात करने के लिए कहा तभी तो हम गए थे वरना हमारी क्या हैसियत की तुम्हारे घर जाते और वहां शादी की बात करते हैं! तुम लोग ठहरे करोड़पति और हम लोग ठीक से लखपति भी नहीं है इस तरह से देखा जाए तो राजा और रंग की जोड़ी है राजा खुद गरीब के घर पर चल कर आया था । कैसे कोई इनकार करता ! फिर लड़का और लड़की दोनों की भी सहमति भी थी ,वैसे भी नीलम की सहमति न होती तो उसकी शादी करवाना बड़ा मुश्किल था । उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य करना असंभव था हमारे लिए। सुबह हमारे साथ रहती जरूर थी पर अपनी मर्जी की मालिक थी।"

"सही कहा पर हो सकता है कि मेरे भाई ने उसे पसंद किया हो पर नीलम ने उसकी दौलत के लिए उसे पसंद किया हो । सोचा हो बाद में पति को मार के उसकी दौलत हासिल करके अपने पुराने प्रेमी से शादी कर लेगी!" शिल्पी की बात पर पहली बार महिला हिचकिचाई।

ऐसा लगा जैसे वह सोच में पड़ गई हो है । शिल्पी उसे लगातार देखती रही।

"वैसे नीलम किस स्वभाव की थी मतलब चालक थी कभी घर में पैसों का हेर फेर किया या किसी भी घटना से आपको लगा हो कि वह चालाक है, शातिर है इतनी ज्यादा कि वह हत्या जैसा बड़ा अपराध भी कर सकती है या करवा सकती है ऐसा आपको लगा कभी?"

"हां चालक तो वह थी। घर से कई बार पैसे गायब हुए मेरे बच्चे तो मेरे बिना पूछे कोई सामान उठाते नहीं है । मैंने नीलम से पूछा तो कभी उसने स्वीकार नहीं किया पर मुझे लगता है वह पैसे वही चुराती थी और बाहर जाकर एस करती थी!"

"फिर तो मेरा यह अंदाजा सही हो सकता है कि उसने मेरे भाई को सिर्फ दौलत के लिए पसंद किया होगा और फिर मेरे भाई को मार के अपने पुराने आशिक के साथ शादी करने का मन उसका होगा ,"शिल्पी ने पहलू बदला और पूछा,"क्या आप बता सकती हैं कि ऐसा कोई है जिसे वह शादी के पहले पसंद करती थी शादी करना चाहती थी उससे! ऐसा कभी उसने जिक्र किया या फिर आपने कभी कुछ ऐसा देखा हो?"शिल्पी ने अपनी पैनी नजरे उसके चेहरे पर चिपका सी दी।

महिला दिमाग पर जोर डालकर सोचने लगी । कुछ पल बैठी सोचती रही फिर अचानक बोली,"यह तो नहीं पता कि उन दोनों में कुछ था या नहीं पर एक दो बार मैंने एक लड़के को नीलम का पीछा करते हुए घर तक आते हुए देखा!"

"अच्छा! ,"नीलम के चेहरे पर एकदम से चमक दिखाई दी उसने तुरंत पूछा,"वह लड़का कौन है क्या नाम है उसका?"

"यही दूसरे मोहल्ले में ही रहता है उसका नाम शायद विक्रम है। दूसरे मोहल्ले में उसका घर है

और वह एक फैक्ट्री में काम करता है कुछ दिनों नीलम ने भी उस फैक्ट्री में काम किया था शादी के पहले ..तो हो सकता है कि उन दोनों में चक्कर रहा हो हालांकि ऐसा कभी स्पष्ट नहीं समझ में आया ना ही नीलम ने कभी कहा कि मैं उसे प्यार करती हूं या शादी करना चाहती हूं। ऐसी इच्छा उसने कभी जहर तो नहीं की पर मुझे लगता है कि उन दोनों में शायद कुछ हो सकता है।"

" हूं। क्या कोई और भी लड़का था जिस पर ऐसा शक किया जा सकता है?"

"और तो मेरी नजर में कोई नहीं है अब हो तो मुझे पता नहीं है!"महिला ने लापरवाही में कंधे उचकाये जैसे सच में उसे कुछ पता ना हो।

"विक्रम कहां मिलेगा?"

" इस समय तो वह घर पर ही रहता है शायद तब से जब से नीलम की शादी हुई है पहले मैंने ध्यान नहीं दिया पर अभी आपने कहा तो मेरा ध्यान गया मुझे भी लगता है कि शायद उन दोनों का कभी चक्कर रहा हो वरना फैक्ट्री छोड़ने का अपनी नौकरी छोड़ने का क्या मतलब जबकि घर पर उसके बूढ़े मां-बाप रहते हैं अभी एक बहन शादी करने के लिए भी बैठी है!"

"यानी को नीलम का प्रेमी हो सकता है। हू, ठीक है बातचीत करने के लिए शुक्रिया!" शिल्पी अपनी जगह से उठ बैठी।

नीलम के घर से शिल्पी निकली फिर लंबे-लंबे डग भर्ती हुई सड़क तक आई और फिर आगे बढ़ गई जैसा कि नीलम की चाची ने उसे बताया था की दूसरी गली में उस लड़के विक्रम का मकान है उसका इरादा उससे भी मिलने का था।

जैसा की उसे शक हो रहा था की शिलांग में उसके भाई के साथ जो घटना घटी सोनम राजा रघुवंशी वाली घटना भी जो कुछ दिनों पहले घट चुकी थी और उसे लगता था कि दोनों घटनाओं में काफी समानता है । उसमें भी पत्नी ने पति की हत्या करवाई थी अपने पुराने प्रेमी की खातिर शिल्पी भी सोचती थी शायद नीलम ने भी अपने किसी प्रेमी की खातिर उसके भाई की हत्या करवाई है । वैसे भी आजकल ऐसे मामलों की बाढ़ सी आई है जहां पर पतियों की हत्या में ज्यादातर पत्नियों का ही हाथ सामने आया है कुछ दिनों पहले नीले ड्रम का बड़ा जिक्र सुनाई दिया था जिसमें पत्नी ने अपने प्रेमी के खातिर पति को मार कर एक नीले ड्रम में भर दिया था ऐसे और भी अनगिनत किस्से सुनने को मिल रहे थे। और इसीलिए उसके प्रेमी को खोजने के लिए वह उसके घर पर आई थी उसे लगता था की नीलम के घर पर पास पड़ोस में ही इस बारे में पता चल सकता है और फिलहाल वह अपने मकसद में कामयाब होती नजर आ रही थी।

शीघ्र ही वह दूसरी गली में पहुंच गई हालांकि उसे मालूम नहीं था कि उस गली में विक्रम का घर कौन सा है पर पता करना भी कोई पहाड़ पर चढ़ने के बराबर नहीं था ,बड़ी बात नहीं थी। वहां से निकल रहे दो बच्चों को रोककर उसने विक्रम के घर के बारे में पूछा तो उसे तुरंत पता चल गया और फिर वह विक्रम के घर के सामने जा पहुंची।

विक्रम भी तभी घर से बाहर ही निकला था हालांकि शिल्पि उसे पहचानती नहीं थी पर उसने अनुमान लगाया कि घर में बूढ़े मां-बाप और एक बहन के अलावा विक्रम रहता है और वह नौजवान लड़का विक्रम ही हो सकता है और क्या पता हो सकता है उसका कोई दोस्त हो यही

सोच कर उसने पूछा,"आप विक्रम हो?"

विक्रम शायद कहीं जाने के लिए बाहर निकाला था पर जब अचानक शिल्पी ने उसके सामने आकर उसका नाम लिया तो वह रुक गया और उसने उस को ध्यान से देखा और हां में गर्दन हिलाते हुए बोला,"हां मैं विक्रम हूं आप कौन?"

"लगता है कहीं जा रहे हो?" शिल्पी ने उसके सवाल पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जो उसे बहुत बुरा लगा। और पता नहीं क्या सोचकर उसने गुस्सा जाए नहीं होने दिया बल्कि उसके सवाल का फिर जवाब दिया।

"नहीं बस यूं ही पार्क तक जा रहा था टहलने के लिए।"

"बढ़िया है । ,"शिल्पी उसका जवाब सुनकर मुस्कुराई," टहलना तो वैसे भी सेहत के लिए हमेशा से लाभदायक रहता है , टहलना चाहिए वैसे आप बुरा ना माने तो मैं भी आपके साथ पार्क में चलूं क्या?"

"लेकिन बात क्या है और आप कौन हैं मैं तो आपको जानता भी नहीं!" विक्रम के चेहरे पर वही अंदाज थे जैसे कोई गंभीरता से किसी बात पर विचार कर रहा हो एक अपरिचित लड़की उससे बात कर रही थी बल्कि उसके साथ टहलने के लिए कह रही थी उसे थोड़ा अचरज हो रहा था।

"वही पार्क में बैठकर बात करते हैं। मुझे भी पर टहलना बहुत अच्छा लगता हैं मैं तो सुबह शाम डेली टहलती हूं तभी देखो कितनी फिट हूं एकदम किसी खिलाड़ी की तरह बल्कि तुम्हारी तरह।"

विक्रम ने कुछ पल सोच फिर बोला,"ठीक है चलो!"

फिर दोनों लंबे-लंबे डग भरते हुए पास के एक पार्क में आ गए जो फिलहाल खाली पड़ा था। वहां पर इक्का दुक्का लोग ही नजर आ रहे थे।

"उस बेंच पर बैठकर बात करते हैं बाद में टहलते है!" पार्क में पहुंचकर शिल्पी बोली।

विक्रम ने कुछ नहीं कहा और फिर वह दोनों एक बेंच पर जाकर बैठ गए । कुछ पल खामोशी में बीते । विक्रम के मन में यह जानने की बेहद उत्सुकता उसके चेहरे से पर पहले भाव सब बता रहे थे कि वह लड़की के बारे में जानना चाहता था और यह भी की आखिर वह उससे क्यों मिलना चाहती है क्या बात करना चाहती है।

"तो आपका नाम विक्रम है और आप एक फैक्ट्री में काम करते हैं आपके घर में बूढ़े मां-बाप हैं और एक बहन है शादी करने के लायक। काफी जिम्मेदारी है आप पर!"आखिरकार खामोशी को शिल्पी की आवाज ने तोड़ा पर विक्रम लगातार उसके चेहरे पर देखे जा रहा था और उसने उसकी बात का जवाब हां मैं गर्दन हिला कर दिया मुंह से कुछ नहीं कहा।

"आप तो मेरे बारे में लगभग सब कुछ जानती हैं पर अपने बारे में कुछ नहीं बताया!"अचानक जब फिर से खामोशी पसरी तो इस बार विक्रम ने उसे तोड़ा।

"मेरा नाम शिल्पी है और मैं इसी राजनगर की हूं वैसे नीलम को तो तुम जानते होंगे? अरे वही नीलम जिसके पति की शिलांग में हत्या हो गई खुद उसका भी एक्सीडेंट हुआ था और किडनैप हुई थी नीलम का यही कहना है .. वो यही तुम्हारे पड़ोस में ही तो रहती थी शादी से

पहले।”

“हां हां जानता हूं जानता हूं इस घटना के बारे में तो पूरे इंडिया को पता है पर आप कौन है और यह सब मुझे क्यों बता रही है?""

“मैं नीलम की नंद हूं शिलांग में जिसकी हत्या हुई वह मेरा भाई था!”

उसने चौंक कर उसकी ओर देखा।

अब विक्रम बेहद चौकन्ना नजर आ रहा था उसके चेहरे के हाव-भाव बदल चुके थे। पर ऐसा लगा जैसे उसने तुरंत अपने बदले हुए भावों पर कंट्रोल कर लिया।

“सच में नीलम के साथ बहुत बुरा हुआ है।," फिर हमदर्दी जताते हुए बोला,"जब उसकी शादी हुई थी तो सबको लगा था कि उसकी किस्मत खुल गई । उसके मां-बाप नहीं है। चाचा चाची ने पाला है जैसे भी पाला हो अच्छे ढंग से बुरे ढंग से पर जब उसकी शादी एक करोड़पति घर में हुई थी तो सभी लोग सोचते थे नीलम ने अच्छी किस्मत पाई है। अब उसके दिन ठाठ से काटेंगे । कई लोगों को तो नीलम की किस्मत पर जलन होती होगी पर यह किसी नहीं सोचा था की शादी के कुछ ही दिनों बाद उसके साथ ऐसा हादसा हो जाएगा । उसके हाथों की शादी वाली मेंहदी भी नहीं छूटी थी कि सुहाग उजड़ गया। अब तो वह दुनिया की सबसे बदनसीब लड़की जान पड़ती है!”

“वह हादसा नहीं था उसके पति की हत्या हुई थी?” शिल्पी उसकी बात पर ध्यान दिए बगैर थोड़ा तेज आवाज में बोली।

“अगर उन दोनों का एक्सीडेंट ना हुआ होता और सहयोग से ह्यूमन ट्रैफिकिंग से जुड़े लोग वहां से ना गुजरते तो वह कुछ नहीं होता इसे हादसा ही कहेंगे और क्या कहेंगे?” उसने एक नजर शिल्पी पर डाली। पर लगा नहीं कि उसके तेज बोलने से उस पर कोई फर्क पड़ा हो।

“तुम्हें यकीन है नीलम ने जो कुछ कहा वह सब कुछ सच है?”

“मेरे यकीन करने ना करने से क्या होता है। बहरहाल जब नीलम की बात को पुलिस भी मानती है तो जरूर उसकी बात सच होगी!”

“हां तुमने सही कहा पर मुझे ऐसा नहीं लगता। ," शिल्पी ने पहलू बदला,"मुझे लगता है कि नीलम झूठ बोल रही है उसने ही जानबूझकर मेरे भाई की हत्या करवाई!”

“अरे, वह भला ऐसा क्यों करवाएगी वह तो गरीब घर की लड़की थी। महलों में पहुंच गई थी। भला वह अपने पैर पर कुल्हाड़ी क्यों मारेगी ,अपनी जिंदगी क्यों नरक बनाएगी?”विक्रम ने आंखें चौड़ी की।

“क्योंकि उसके दिल में किसी और के लिए प्यार था। वह अपने प्यार को पाना चाहती थी इसीलिए।”

“ऐसा था तो फिर उसने शादी ही क्यों की । वह मना भी तो कर सकती थी और उसके दिल में जिसके लिए प्यार था उससे शादी कर लेती है क्या बुराई थी! वैसे भी मैने सुना है वो अपनी जिद की पक्की लड़की है।"

शिल्पी मुस्कुराई । उसके चेहरे को गौर से देखती रही और फिर बोली,”वह एक चालाक

लड़की है मिस्टर विक्रम ! उसने अपना एक प्लान बनाया पहले अमीर घर में शादी की। पति को मरवा दिया । अब उसके पास दौलत भी है और कुछ दिनों बाद वह अपने पुराने प्रेमी से शादी भी कर लेगी । उसने बड़े शातिराना ढंग से दौलत भी हासिल कर लेगी और अपना पुराना प्रेम भी हासिल कर लेगी!"

"ऐसा कैसे हो सकता है । तुम्हारे घर वाले ..तुम ऐसे कैसे होने दोगी?"

इस बात पर शिल्पी कुछ नहीं बोली उसके मां-बाप से उसकी खुद नहीं पट ती थी तो वह क्या गारंटी लेती इस बात की। पर वह इस बारे में विक्रम को बात कर अपनी पोजीशन कमजोर नहीं करना चाहती थी वह बता देती कि घरवालों से उसकी बिल्कुल भी नहीं बनती है तो शायद फिर वह नखरे दिखाने लगता जो बात वह पूछती वह बताता नहीं।

"क्या पता वह जिद्दी लड़की है किसी प्लान से मेरे मां-बाप को भी मरवा दे तब तो सारी दौलत उसके नाम ही हो जाएगी और फिर उसका जो मन होगा वही करेगी!"

"और तुम, तुम भी तो उसी घर की हो । तुम्हारे रहते क्या यह मुमकिन है?" विक्रम ने कहा।

"हां मुमकिन है ,"अब शिल्पी को लगा कि शायद उसे अपने और अपने घर वालों के संबंधों के बारे में बता देना चाहिए ,"क्योंकि मेरी मेरे मां-बाप से बिल्कुल भी नहीं बनती ,मैं उनसे अलग रहती हूं । एक तरह कह सकते हो उन्होंने मुझे खुद से अलग कर दिया है बेदखल कर दिया है हर चीज से!"

" अरे, पर ऐसा क्यों किया उन्होंने?"

"सोच विचार । पुराने ख्यालात और नए ख्यालात का टकराव और क्या। वह सच को स्वीकार नहीं करना चाहते उनके दिमाग में जो सोच बनी हुई है वह उसी के हिसाब से दुनिया को देखते हैं शायद इसलिए!"

"हूं। अगर ऐसा है तो फिर तुम इतनी खोजबीन क्यों कर रही हो, तुम्हें क्या मतलब है?"

"भले ही मेरे घर वालों ने मुझे खुद से अलग कर दिया हो पर मरने वाला मेरा भाई था । मेरे कई साल उसके साथ गुजरे हैं और उसके साथ मेरी अच्छी बनती थी। भाई बहन में बहुत लगाव था। मै अपने भाई के हत्यारे को बेनकाब कर के रहूंगी। मैं सच को सामने लाकर रहूंगी कुछ भी हो जाए । अपने भाई के हत्यारे को जेल के सलाखों के पीछे देखना चाहती हूं।"

"वह सब तो ठीक है पर तुम यह सब मुझे क्यों बता रही हो । मै समझ नहीं पा रहा। मेरा तो कोई लेना-देना नहीं है!"

शिल्पी ने उसे गौर से देखा और फिर कहा,"तुम्हारा लेना देना ना होता तो मैं यहां क्यों आती?" शिल्पी ने यह कहकर विसफोट् सा किया वह उछल पड़ा।

"मतलब ,भला मेरा क्या लेना देना है?" उसके चेहरे पर हैरानी दिखाई दी।

"मुझे पता चला है कि नीलम का एक पुराना प्रेमी है।"

" तो?"

" तो .. वो प्रेमी तुम हो विक्रम !"

“क्या!" विक्रम बुरी तरह चौंक पड़ा और हकलाएं स्वर में बोला,”यह आप क्या कह रही हैं आपसे किसने कहा कि मैं नीलम का आशिक हूं?”

“क्या नहीं हो.. क्या नीलम के लिए तुम्हारे दिल में प्रेम नहीं है?” शिल्पी ने अपनी तेज नजरे उसके चेहरे पर ही गड़ाए रखी जबकि वह थोड़ा विचलित नजर आ रहा था।

विक्रम शांत हो गया। कुछ पल सोचता रहा और फिर सर उठा कर उसने कहा,”सच कहूं तो हां नीलम के लिए मेरे दिल में प्रेम है कुछ महीना पहले ही जब मैंने उसे देखा था अपनी ही फैक्ट्री में काम करते हुए तो वह मुझे अच्छी लगी थी। मैं उसे प्यार करने लगा था पर मुझे नहीं पता कि वह मुझे चाहती थी कि नहीं!”

“ ऐसा क्यों?”

“अब दूसरे पर तो कोई जोर नहीं हो सकता न । मैं उसे चाहता था मेरे दिल में उसके लिए चाहत थो पर उसके दिल में थी या नहीं मुझे नहीं पता!”

“अगर मैं कहूं कि तुम झूठ बोल रहे हो तो?”

“मैं भला झूठ क्यों बोलूंगा?” उसका स्वर हकला गया।

“क्योंकि तुम्हे इस बात का डर है कि अपने भाई की मौत का शक तुम पर डाल सकती हूं जैसा कि मेरा सोचना है कि नीलम के किसी पुराने आशिक ने ऐसा किया हो सकता है जिसके प्रेम को पाने के लिए नीलम ने सारी साजिश रची इसलिए तुम झूठ बोल सकते हो.. सिंपल।”

“मेरे झूठ बोलने से क्या होगा ? ऐसी बातें कहीं छुपाती हैं। पता करो मेरा और नीलम का रिश्ता कितना परवान चढ़ा था हालांकि मैं चाहता था कि वह परवान चढ़े पर शायद उसके दिल में मेरे लिए मुझे ऐसा लगता है कि कुछ-कुछ प्रेम जाग रहा था पर तभी उसकी शादी हो गई और वह कुछ-कुछ उपजता प्रेम भी खत्म हो गया था। सच कहूं तो उसके जाने के बाद मेरी तो दुनिया ही उजड़ गई किसी काम में कोई मन नहीं लगता । मैंने तो फैक्ट्री जाना भी छोड़ दिया! ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मेरी तरफ से गहरा नाता था पर शायद मेरा एकतरफा प्रेम था। इसलिए परवान चढ़ने से पहले ही बिखर गया।"

विक्रम ने सारी बात बड़ी बेबाकी से कही थी शिल्पी भी उलझन में पड़ गई। वह सोच नहीं पा रही थी कि आखिर विक्रम सही कह रहा है या गलत। फिर भी उसे लग रहा था कि वह सच्चे प्रेमी की एक्टिंग कर रहा है एक तरफा प्रेम की झूठी बात बता रहा है।

“अच्छा जिस तारीख को नीलम और मेरा भाई शिलांग गए थे और फिर उनके साथ जो हादसा पेश हुआ उन दिनों तुम कहां थे?”नीलम ने कुछ सोच कर पूछा।

"मैं उस दौरान हरिद्वार चला गया था!”

"तुम्हें कैसे पता कि मैं किस दौरान की बात कर रही हूं?"

पहले तो विक्रम हद बड़ा गया फिर तुरंत ही संभला और बोला,"करण और नीलम के साथ जो भी शिलांग में हुआ उसे तो बच्चा-बच्चा जानता है कब और कैसे क्या-क्या हुआ।"

" हूं, तो उसी से तुम जान गए कि मैं किस दौरान की बात कर रही हूं?"

" हां। तुम्हें अगर किसी प्रकार का शक है तो तुम चेक कर सकती हो कि मैं उस दौरान हरिद्वार

में था कि नहीं।"

“ठीक है मैं मान लेती हूं तुम सही कह रहे हो पर हरिद्वार में क्यों थे ?”

“नीलम के जाने के बाद यहां पर सब मुझे बड़ा अजीब लगता था। मन भारी भारी रहता था । दुख 24 घंटे मुझ पर सवार रहता था यही सोचकर कि कहीं मैं पागल ना हो जाऊं मैं हरिद्वार चला गया था घूमने के लिए! मन बदलने के लिए।"

“तुम साबित कर सकते हो कि तुम हरिद्वार घूमने गए थे?”

“मैं क्यों साबित करूं कि मैं हरिद्वार गया था? ,"अचानक वह भड़क उठा पर फिर पता नहीं क्या सोचा अपने गुस्से को कंट्रोल किया और बोला," और फिर कैसे साबित करूं कि मैं हरिद्वार में था!”

“यह तो बड़ा आसान है। आजकल तो सबके पास फोन होता है कोई कहीं भी जाता है तो छोटी से छोटी अपडेट भी इंस्टा पर फेसबुक पर शेयर करता है फोटो खींच कर । फोटो गैलरी में सेव करके रखता है अपनी यादों के रूप में ऐसा कुछ है तो दिखाओ मुझे यकीन हो जाएगा!”

" मेरे पास तो ऐसा कुछ भी नहीं है।" वह झिझकते हुए बोला।

" क्यों?"

“मैं जिस मूड में हरिद्वार गया था सच कहूं तो इस बात का मुझे बिल्कुल भी ख्याल नहीं आया। मैं एकांत चाहता था शांति चाहता था हां अगर अच्छे मूड में जाता है तो जो कुछ आपने कहा शायद वह सब कुछ करता है पर क्योंकि मेरा मूड सही नहीं था इसलिए मेरा ध्यान इस तरफ नहीं गया!”

"ध्यान इस तरफ इसलिए नहीं गया क्योंकि तुम हरिद्वार नहीं बल्कि शिलांग गए थे। नीलम के साथ मिलकर तुमने ही मेरे भाई की हत्या की या करवाई!” इस बार शिल्पी ने उस पर सीधे-सीधे इल्जाम लगाया पर वह विचलित नहीं हुआ कुछ पल सोचता रहा और फिर आराम से बोला।

“तुम्हारे या किसी के सोचने पर कोई पाबंदी नहीं है पर मेरा यकीन करो ऐसा कुछ नहीं है मैं हरिद्वार ही गया था। अच्छे मूड में होता तो शायद फोटो आदि जरूर खींचता और उसे सेव कर के रखता। हरिद्वार में होने का सबूत मेरे पास होता है।”

शिल्पी उसे खा जाने वाली नजरों से घूरने लगी तब उसने कहा,”मुझे क्या पता था कि मैं अपना मन हल्का, शांत करने के लिए हरिद्वार गया था बाद में मुझे इस बात का सबूत मांगा जाएगा होता मैं सबूत तैयार कर लेता!”

“ठीक है ।,"शिल्पी ने उसकी बात सुनने के बाद कुछ देर विचार किया और फिर उठ बैठी,"चलती हूं बातचीत करने के लिए शुक्रिया पर मैं पता करके रहूंगी कि तुम्हारे हरिद्वार गए थे या फिर शिलांग में थे!”

“हां बिल्कुल शौक से। जैसे भी पता कर सको करो। कम से कम जो तुम मुझ पर शक कर रही हो वह तो टूट जाएगा। मै तो वैसे ही दुखी हूं परेशान हूं आइंदा मुझे परेशान करने की

कोशिश मत करना प्लीज!" इस बार विक्रम के स्वर में सख्त चेतावनी की झलक साफ सुनाई दी।

"ठीक है। मैं तुम्हारी बात को ध्यान रखूंगी । अब अपना मोबाइल नंबर बताओ!"

लड़के ने उसे घूर कर देखा फिर पता नहीं क्या सोचा और फिर अपना नंबर बता दिया।

"बस एक ही नंबर है या और भी कई सिम ले रखी है उन सभी के नंबर बता दो बाद में पता चला तो शक बढ़ जाएगा!"

"कई सिम वही लोग इस्तेमाल करते हैं अक्सर जिन्हें कुछ गलत करना होता है मेरे पास तो बस यही एक नंबर है । अगर यकीन नहीं तो पता कर लो!"

लड़की ने उसके द्वारा बताएं नंबर को अपने फोन में सेव कर लिया और फिर वहां से उठकर सड़क की तरफ चली आई । पीठ पीछे उस बेंच पर विक्रम बैठा रहा। उसने उठने की कोई जहमत नहीं उठाई। लड़की सड़क पर आई तो एक ऑटो को हाथ देखकर रोका और उसमें बैठ गई फिर उसने अपने फोन में कोई नंबर पंच किया और फोन कान से लगा लिया।

"हेलो इंस्पेक्टर विजय बोल रहे हैं क्या?"उसने जब कॉल उधर रिसीव की गई तो कहा जवाब में उस तरफ से जब हां बोला गया तो उसने आगे कहा "मैं शिल्पी बोल रही हूं । मेरा नाम तो याद होगा शिलांग में जो कार दुर्घटना हुई थी बाद में करण की लाश खाई में पाई गई थी। मैं उसी मरहूम करण की बहन जो आपसे होटल के बाहर मिली थी याद आया कुछ?"

"ओह हां याद आया । बिल्कुल हम लोगों ने एक दूसरे को नंबर भी दिया था कि शायद कभी बात करनी पड़ जाए.. बताइए कैसे फोन किया?"उधर से विजय ने कहा।

"मैं आपको एक नंबर बताती हूं जरा उसको ट्रेस करवाइए उन दिनों जब मेरा भाई अपनी पत्नी के साथ शिलांग में था उस वक्त उस नंबर की लोकेशन क्या थी और उसकी अगर कॉल डिटेल भी उपलब्ध हो सके तो और बढ़िया रहे!"

"वह सब तो हो जाएगा पर आखिर बात क्या है?"

"मुझे लगता है यह नंबर जिस शख्स का है वह मेरे भाई की हत्या में इंवॉल्व हो सकता है?"

"अरे, आपको ऐसा क्यों लगता है, क्या आपको अपनी भाभी की बातों पर यकीन नहीं?" विजय के स्वर में हैरानी साफ तौर पर सुनाई दी।

"यकीन नहीं तभी तो खोज बीन कर रही हूं अपनी तरफ से। आप सबने तो नीलम की बातों पर यकीन कर लिया और शांत हो गए पर मुझे नहीं लगता कि मेरी भाई की मौत एक हादसा है । उसे ह्यूमन ट्रैफिक वालों से जुड़े लोगों ने मारा है बल्कि मुझे लगता है उसकी हत्या में मेरी भाभी का भी हाथ है और उस शख्स का भी!"

"मेरी बात समझ में नहीं आ रही जरा खुलकर बताइए!"

"मैंने यहां भाभी के मायके में पता किया है शादी के पहले उस पर एक लड़का फिदा था जिसका नाम विक्रम है हालांकि उसका कहना है कि उसकी तरफ से प्यार था भाभी की तरफ से था या नहीं उसे पता नहीं पर मुझे लगता है वह झूठ बोल रहा है । नीलम उसके ही प्यार में पड़ी हुई थी और बाद में भाई की हत्या में उसने ही नीलम की मदद की!"

“अगर ऐसा था तो नीलम ने उससे शादी क्यों नहीं की शादी तुम्हारे भाई से क्यों की?”

“दौलत, मेरे भाई के सामने विक्रम की जरा भी औकात नहीं है किसी भी मामले में । मेरा भाई करोड़पति था विक्रम ठीक से शायद लखपति भी नहीं होगा। वह एक फैक्ट्री में काम करता था फिलहाल तो उसने उस फैक्ट्री में काम करना बंद कर रखा है और फिर लड़कियां प्यार चाहे जिसे करें जब पूरी जिंदगी की बात आती है तो वह बेहतर ही चुनती हैं शायद इसीलिए नीलम ने मेरे भाई को चुना था!”

“तो फिर उसे मरवा क्यों दिया अगर वह विक्रम से बेहतर था?”

“नीलम मुझे बेहद शातिर जान पड़ती है । उसका इरादा होगा पहले भाई से शादी करके उसकी दौलत हासिल करना होगा फिर बाद में अपने प्रेम को भी पाना। उसने एक तीर से दो शिकार की है । प्लीज मैंने जो आपको नंबर बताया है उसकी लोकेशन ट्रेस करवाइए पता कीजिए जिस समय मेरा भाई नीलम के साथ शिलांग में था उस समय इस नंबर की लोकेशन क्या थी और कॉल डिटेल भी । उससे भी पता चल जाएगा कि नीलम और विक्रम के बीच बातें हुई या नहीं!”

“आपने तो काफी विस्फोटक बातें बताई। एक ठंडा बस्ते में चला गया मामला फिर से आपने उसे आग दी है बढ़िया कार्य किया आपने वरना हम लोग तो नीलम की बात सच मानकर ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से जुड़े लोगों की तरफ पूरा ध्यान लगाए थे ।खैर मैं देखता हूं आप परेशान मत हो मैं जल्द ही आपको खबर करता हूं!”

“ठीक है शुक्रिया!”

****

उस समय सुबह के 11:00 बज रहे थे। शिव शंकर तैयार होकर आधे घंटे पहले ही शहर के कमिश्नर मनोज कपूर जो कि उनके दोस्त भी थे से मिलने के लिए कार से निकाल गया था।

और 15,20 मिनट की ड्राइव के बाद ही वो कमिश्नर ऑफिस पहुंच चुका था और इस समय एक शानदार आफिस में कमिश्नर मनोज कपूर सामने बैठा हुआ था।

“मुझे तुम्हारे बेटे और बहू के साथ जो कुछ हुआ उसके लिए बेहद अफसोस है खासकर बेटे की मौत के लिए!”मनोज कपूर ने बातचीत के दरमियान संवेदना जाहिर की।

“मैं समझता हूं लेकिन अगर सच्चा अफसोस है तो मेरे बेटे के हत्यारे को पकड़वाने में मदद कीजिए । इतने दिन गुजर गए लेकिन शिलांग की पुलिस आज तक मेरे बेटे के हत्यारे को नहीं पकड़ पाई आप उनसे कहिए जल्द से जल्द किसी भी प्रकार से मेरे बेटे के हत्यारे को पकड़े। मैं उन्हें जल्द से जल्द जेल की सलाखों के पीछे देखना चाहता हूं! जब तक ऐसा नहीं होगा मेरे दिल को चैन नहीं मिलेगा। करण की आत्मा अक्सर मेरे सामने आकर इस बात की गुहार लगाती है कि उसके हत्यारे को पड़कर सजा दिलवाई जाए।"

कमिश्नर ने कुछ कहने के लिए पहले मुंह खोला फिर पता नहीं क्या सोचकर केवल सांस भरकर रह गया।

“कुछ कहना चाहते हो?”उसने शायद अंदाजा लगा लिया था कि वह कुछ कहना चाहता है पर

उसने कहा नहीं इसीलिए उसने उसे कुरेदा।

“एक बात मेरे दिमाग में शुरू से ही गूंज रही है पर श्योर नहीं हूं इसीलिए शायद अभी तक नहीं कहीं वह बात!”मनोज कपूर झिझकते हुए बोला।

“आखिर बात क्या है?”

कमिश्नर ने मेज के दूसरी तरफ विजिटिंग चेयर पर बैठे अपने दोस्त शिव शंकर की ओर देखा फिर बेचैनी से पहलू बदला और बोला,”क्या तुम्हें अपनी बहू की बातों पर यकीन है?”

“मतलब?” वह चौंका।

“मतलब जैसा कि उसने कहा कि एक्सीडेंट के बाद ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से जुड़े कुछ लोग वहां से गुजरे उन्होंने ही तुम्हारे बेटे का कत्ल करके उसे खाई में फेंक दिया । और उसकी पत्नी नीलम को उठा ले गए फिर उसके साथ उन्होंने एक हफ्ते से ज्यादा दिन रहने के बावजूद कुछ किया नहीं मतलब सेक्सुअल हार्समेंट ऐसा कुछ क्योंकि जिस ग्रुप से वह जुड़े थे उनका उन्हें सख्त आदेश था कि उसके साथ ऐसा कुछ किया ना जाए! हफ्ते भर उनके साथ जंगल में रहने के बाद भी उसके साथ उन्होंने कुछ किया नहीं और अचानक वह वहां से उनके गिरफ्त से भाग कर वापस आ गई!”

“आपको क्या लगता है क्या मेरी बहू झूठ कह रही है?”

“मैं यह नहीं कह रहा कि वह झूठ कह रही है पर हो सकता है कि सच भी ना कह रही हो । सोनम राजा रघुवंशी वाला केस तो आपको पता ही है क्या पता इस केस में भी बहु नीलम सोनम से से दो कदम आगे हो!”

“मैं जानता हूं सोनम राजा रघुवंशी वाले केस की वजह से ही सभी लोग मेरी बहू पर शक कर रहे हैं जबकि यह ठीक नहीं है उसकी तो वैसे भी दुनिया उजड़ गई ऐसे में हम उस पर और शक करें यह ठीक नहीं लगता । बाकी आप उन लोगों को पकड़े ,सच्चाई खुद ही सामने आ जाएगी पहले से शक करना या ना करना बे बुनियाद है!”

“ हूं।”कमिश्नर ने सहमति में सिर हिलाया और बोला,”शायद आप ठीक कर रहे हैं बहरहाल आप फिक्र मत कीजिए मैं शिलांग की पुलिस से बात करता हूं और कहता हूं कि उन लोगों को पकड़ने में अपना पूरा जोर लगा दे और जल्द से जल्द मामला की तह तक पहुंचे। ताकि पता चल सके कि आखिर सच्चाई क्या है!”

****

शिव शंकर को घर से निकले हुए आधा घंटा हो चुका था। नीलम शिव शंकर के जाते ही अपने कमरे में जाकर तैयार होने लगी खूब सज बज रही थी और जब कमरे से निकली तो काफी खूबसूरत दिखाई दे रही थी । इतने दिनों के बाद आज वह काफी सुंदर लग रही थी उसके चेहरे पर चमक भी थी ड्राइंग रूम में बैठी उसकी सास ने जब उसे देखा तो पता नहीं क्यों उसका चेहरा गहरी सोच में डूब गया। उसने सर से पांव तक बहू को देखा। हालांकि उसके चेहरे पर उलझन के भाव थे पर जैसे तैसे उसने उन पर काबू किया और पूछा,”कहीं जा रही हो क्या बहू?”

“हां मां जी। मैं आपको बताना भूल गई मेरे सहेली के बेटे का आज बर्थडे है उसने कल फोन करके मुझे आने को बोला था मैंने लाख मना किया पर वह मानी नहीं । मेरी बचपन की दोस्त है इसलिए मैं भी उसे मना नहीं कर सकी । एक दो घंटे में ही मैं लौट आऊंगी!”

सास के चेहरे पर भारी अफसोस दिखाई दिया शायद उसे उम्मीद नहीं थी इतनी जल्दी बहू की रौनक बदल जाएगी। अभी करण को इस दुनिया से गए कितने दिन हुए थे और नीलम पार्टी में जाने की बात कर रही थी। उसने भारी तकलीफ को दिल में दबाते हुए इच्छा ना होते हुए भी बहू को जाने की परमिशन दे दी हालांकि एक बार उसका मन हुआ की कह दे कि अभी तो पति को मरे हुए ज्यादा दिन भी नहीं हुए हैं पर वह कह नहीं सकी। पर नीलम की इस हरकत ने उसके दिल को तो तोड़ दिया था उसे अपनी बहू नीलम पर बहुत भरोसा था , विश्वास था पर पता नहीं क्यों आज उसे बहुत बुरा लगा था शायद उसने इस बात की कल्पना नहीं की थी कि इतनी जल्दी नीलम करण की मौत को भुला देगी।

“ ठीक है जाओ।” उर्मिला देवी ने भारी मन से कह तो दिया पर उसकी इच्छा हो रही थी कि वह नीलम से सवाल करें इस बारे में पर कर नहीं पाई।

नीलम तो पहले से ही तैयार थी शायद सास की परमिशन का भी उसे इंतजार नहीं था इसलिए सास के कहते ही वह बाहर की तरफ बढ़ गई फिर पोर्च में खड़ी कार में सवार होकर बंगले से बाहर निकल गई।

पीछे सोफे पर बैठी स यही सोच रही थी कि अगर वह मना कर देती तो क्या नीलम नहीं जाती या फिर नीलम ने औपचारिकता बस इसकी परमिशन ली क्योंकि वह तो पहले से ही तैयार थी अगर पहले से ही तैयार थी तो परमिशन का क्या मतलब था यानी नीलम पहले से ही जाने का मन बनाए थी। उर्मिला देवी का मां में नीम जैसी कड़वाहट घुलने लगी।

शिल्पी अभी-अभी ऑटो से उतर कर बंगले के सामने खड़ी हुई थी पर जब उसने बंगले के अंदर से नीलम को कार ड्राइव करते हुए बाहर आते हुए देखा तो खुद को उसने वहां खड़े पेड़ के पीछे खुद को छुपा लिया था और जब कार और वहां से रुखसत हो गई तो पेड़ के पीछे से बाहर निकली । कुछ पल सोचा और फिर लंबे-लंबे डग भरते हुए बंगले के अंदर प्रवेश कर गई। बंगले का गेट वॉचमैन बंद कर रहा था पर जब उसे देखा तो उसने कहा,”नमस्ते मैम साहब!” वह बूढ़ा वॉचमैन उसके यहां वर्षों से काम करता था इसलिए उसे भी अच्छी तरह से जानता था।

शिल्पी ने उसके नमस्ते का जवाब गर्दन को झुका कर दिया और फिर आगे बढ़ती चली गई । वॉचमैन ने दरवाजा बंद कर दिया।

आगे लंबे लंबे डग भर्ती हुई शिल्पी उस खूबसूरत बंगले के सुंदर से लॉन को रौंदते हुए शीघ्र ही बंगले के अंदर प्रविष्ट हो गई और इस समय ड्राइंग रूम में हाजिरी भर रही थी जहां उसकी मां गुमसुम उदास बैठी थी। आज की नीलम की उस हरकत की वजह से वह अंदर तक आहत हो गई थी।

दरवाजे पर खड़ी शिल्पी ने एक नजर विचार मग्न बैठी अपनी मां पर डाली फिर आगे बढ़ी शायद उसके चलने से उभरी आवाज को सुनकर मां ने सिर उठाया पर जब सामने शिल्पी को देखा तो पता नहीं क्यों उसके चेहरे पर गुस्से के हल्के से भाव दिखाई दिए जो अक्सर शिल्पी को देखने पर उसके चेहरे पर उभर आते थे । इसमें कोई नई बात नहीं थी पर इस समय

उसकी आंखों में प्रश्न सूचक चिन्ह भी थे शायद जानना चाहती थी कि शिल्पी क्यों आई है। न जाने कितने दिनों बाद वह घर पर आई थी।

शिल्पी जब आगे बढ़कर मां के सामने पड़े दूसरे सोफे पर बैठ गई। तो मा ने बेचैनी से पहलू बदल कर बंगले के मुख्य दरवाजे की तरफ देखा शायद उसे इस बात का डर था कि कहीं उसका पति ना आ जाए क्योंकि उसका पति शिल्पी को उसे घर में देखना बिल्कुल भी पसंद नहीं करता था पर वह मां थी शायद इसीलिए गुस्सा होते हुए भी कुछ नहीं कहा।

"यहां क्यों आई हो?"फिर भी शायद पति के आने का डर था इसीलिए उसने कुछ सोच विचार कर पूछा।

“मुझे आपसे बात करनी है!”

“क्या, किस बारे में? तुमसे मना किया था कि हमसे दूर रहो!”मां ने एक बार फिर दरवाजे की ओर देखा और सख्त चेतावनी दी।

“मुझे पता है आपको मेरा यहां आना अच्छा नहीं लगा पर मेरा यहां आना जरूरी था ताकि मैं उस शातिर औरत से आपको आगाह कर सकूं जिसने आप लोगों की आंखों पर पता नहीं कौन सी पट्टी बांध रखी है जिसकी वजह से आप सच्चाई देखना नहीं चाहती!”

“क्या कहना चाहती हो किसने हमारी आंखों पर पट्टी बांध रखी है?”

“आपकी नई नवेली बहू नीलम ने जिसने आते ही अपने पति को डस लिया?”

“तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि करण की मौत में उसका हाथ है उसने जो कुछ बताया सब सच निकला । बेवजह उस पर शक करना बंद करो!” यह बात तो कही थी पर उसके मन में खुद ही विश्वास डगमगा रहा था वह पूरी तरह से कॉन्फिडेंट नहीं थी अपनी बात पर शायद कुछ देर पहले नीलम की जिस हरकत ने उसे आहत किया था उसकी वजह से।

शिल्पी उसकी बात पर मुस्कुराई और बोली,”सच में है वह काफी शातिर है उसने आप लोगों की आंखों पर पट्टी बांध रखी है वह भी काफी मजबूत है आपको मुझ पर यकीन नहीं है लेकिन 4 दिन से घर में आई एक नई नवेली बहू पर ऐतबार है!”

“तुम्हें तो हमने बचपन से पाला था तुमने क्या किया?”मां के मुंह से जहर बुझे शब्द निकले।

कुछ पल के लिए शिल्पी भी तिलमिला गई पर फिर पता नहीं क्या सोचकर अपने गुस्से को पी गई और बोली,”नीलम ऐसे बन ठन कर कहां गई है?”

“तुम्हें कैसे मालूम कि नीलम बन ठन कर बाहर गई है?”मां ने उसकी घूर कर देखा।

“अभी जब यहां आ रही थी तो मैं बंगले से कार निकलते हुए देखा था वह कार खुद ड्राइव करके ले गई ड्राइवर को भी साथ नहीं ले गई इसीलिए पूछा!”

“उसकी किसी सहेली के लड़के का बर्थडे डे है उसने तो मना किया था पर जब सहेली नहीं मानी तो उसे जाना पड़ा..मुझसे पूछ कर बाहर गई है!"उर्मिला देवी ने इस बात पर जोर देकर कहा था पर उसमेंभी दम नजर नजर नहीं आ रहा था क्योंकि वह जानती थी या फिर उसे लगता था की नीलम ने उसकी परमिशन केवल औपचारिकता बस हासिल की थी मगर सच में उसकी परमिशन से ही उसे जाना था तो पहले तैयार क्यों हुई थी पहले परमिशन लेती फिर

तैयार होती अगर वह हां करती तो जाती पर शिल्पी के सामने शायद वह यह सब कहकर शर्मिंदा नहीं होना चाहती थी।

“पहले पूछा था या तैयार होने के बाद?” पर शिल्पी शायद उसके चेहरे पर फैले भावों को पढ़ चुकी थी इसीलिए उसने पूछा।

“क्या फर्क पड़ता है?” पहले तो उर्मिला देवी पहाड़ बड़ा गई थी पर फिर उसने जल्दी से खुद को संभाला और ऐसे कहा जैसे उसे इस बात की फिक्र नहीं थी की नीलम ने तैयार होने के पहले परमिशन ली या फिर बाद में।

“पड़ता है अगर पहले से पूछा होता है तो मतलब आपकी परमिशन की जरूरत थी लेकिन जब तैयार होकर पूछा होगा तो मतलब उसे जाना ही जाना था और आपकी परमिशन सिर्फ फॉर्मेलिटी बस उसने ली होगी पर मुझे नहीं लगता कि वह किसी सहेली के लड़के के बर्थडे में गई होगी। और फिर आपने कहा नहीं अभी तो करण को मरे हुए कुछ ही दिन हुए हैं क्या कुछ दिन खामोश नहीं रह सकती करण की यादें इतनी जल्दी उसके दिल से मिट गई। जबकि आप बता रही थी की नीलम और करण की शादी तो उनकी सहमति से हुई थी।

उसकी बात सुनकर कुछ पल के लिए तो मां भी सोच में पड़ गई पर फिर बोली,”ठीक ही है जितनी जल्दी गम से दुख से बाहर निकल आए उतना ही बढ़िया। क्या जरूरी है जिंदगी भर किसी के दुख में खुद को दुखी करने का उससे क्या कारण वापस आ जाएगा!” हालांकि यह बात उसने बड़े ही दार्शनिक अंदाज में कही थी पर शिल्पी के सामने सिर्फ खुद को बहादुर दिखाने के लिए हकीकत वही थी कि वह खुद नीलम की उस हरकत से सच में आहत थी पर शिल्पी के सामने खुद को कमजोर नहीं दिखाना चाहती थी।

शिल्पी उसकी बात पर मुस्कुराई लगा जैसे उसके मन की व्यथा को ताड़ लिया था और बोली,”आपकी बात सुनकर अब तो मुझे पक्का लगने लगा है कि नीलम सच में बेहद शातिर लड़की है उसने तो इतने कम दिनों में ही आप लोगों को अपनी तरफ कर लिया कि आपको अपने बेटे की मौत जो अभ कुछ दिन पहले ही हुई है को भुला दिया । उसकी मौत का अफसोस नहीं जान पड़ता!”

मां तिलमिला गई और गुस्से से बोली,”तुम आखिर कहना क्या चाहती हो जो भी कहना है साफ-साफ कहो!”

“मुझे लगता है मेरे भाई की मौत में नीलम का ही हाथ है मैं अपनी तरफ से खोजबीन कर रही हूं और मैंने कुछ पता भी किया है जिससे मेरा शक बढ़ गया है हालांकि अभी कुछ क्लियर नहीं है पर बहुत जल्द क्लियर भी हो जाएगा!”

“तुमने क्या पता किया है?”अब उर्मिला देवी ने पहलू बदला । वह बेहद गंभीर नजर आ रही थी शायद शिल्पी की बातों को ध्यान से सुनने के लिए तैयार थी।

“मुझे पहले ही लगता था यह केस भी सोनम और राजा रघुवंशी की केस की तरह ही है। मुझे भी लगता था कि नीलम का कोई पुराना आशिक है उसी के साथ मिलकर उसने मेरे भाई की हत्या करवाई ताकि वह अपना पुराना प्रेम वापस पा सके! मैंने खोजबीन में उस प्रेमी को ढूंढ भी लिया है उसका नाम विक्रम है जो उसके घर के आसपास ही रहता है और नीलम से प्रेम करता है इतना ज्यादा की उसकी शादी हो जाने के बाद उसने काम पर जाना भी बंद कर दिया

है! क्योंकि नीलम की शादी हो जाने के बाद उसका मन कहीं नहीं लगता है।"

“तो इसमें कौन सी बड़ी बात है । हर कोई किसी न किसी के प्रेम में तो होता ही है फिर यह शादी के पहले की बात है नीलम ने खुद अपनी मर्जी से शादी की । करण ने उसे पसंद किया था उसने उसे पसंद किया था अगर वह वास्तव में अपने प्रेमी से ही शादी करना चाहती थी तो आराम से कर सकती थी उसे किसने रोका था!”

“आपकी बात बिल्कुल सही है पर शातिर लोग ऐसा नहीं करते हैं वह एक तीर से दो शिकार करते हैं बल्कि और भी ज्यादा करते हैं जैसे कि नीलम ने किया। करण ने जब नीलम को प्रपोज किया और नीलम ने जाना की करण करोड़पति है तो उसने साजिश रची अपने प्रेम जाल में भाई को फसाया उससे शादी की उसका इरादा था उसकी दौलत को हासिल करना और फिर अपने प्रेमी के साथ मिलकर उसे खत्म करना बाद में दौलत हासिल करने के साथ अपने गरीब प्रेमी के साथ पूरी जिंदगी ऐश से गुजरना।”

“किसी के दिमाग में जब शक नामक बीमारी हो जाती है तो उसे सब उल्टा ही समझ में आता है ऐसा ही तुम्हारे साथ भी है जबकि ऐसा कुछ नहीं है फिर पुलिस सब कुछ जांच कर चुकी है । नीलम ने जो कुछ कहा सब सच निकला! तुम्हे इस बात को ध्यान रखना चाहिए।"

“क्या सच निकला? नीलम ने कहा था ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के कुछ लोग जो संयोग से उस तरफ निकले थे जहां उनका एक्सीडेंट हुआ था उसे किडनैप करके ले गए थे भाई होश में आ गया था उसने विरोध किया तो उसे मार दिया था और फिर एक हफ्ते बाद नीलम अपने आप वापस आ गई है उन लोगों ने उसे छुआ तक नहीं है आपको नहीं लगता कि इसमें कोई राज है , कोई भेद है?"

“क्या राज हो सकता है , क्या भेद हो सकता है फिर अगर तुम्हारी बात सच भी मान लूं कि उसने अपने प्रेमी के साथ मिलकर यह सब कुछ किया तो प्रेमी अगर उसके साथ रेप भी करता या वो करवा लेती और वह बता देती कि उसके साथ रेप हुआ है तो हम क्या कर लेते तब तो उसकी बात और पुख्ता हो जाती है! पर उसने ऐसा कुछ नहीं किया क्यों.. अगर ऐसा कुछ होता तो तुम इसमें भी कोई ना कोई नुक्स निकाल लेती मैंने पहले ही कहा है शक नामक बीमारी जिसके हृदय में उत्पन्न हो जाए उसे फिर किसी पर भी भरोसा नहीं रहता वही तुम्हारे साथ है।"

“ऐसा नहीं है आज की विज्ञान बहुत आगे बढ़ गई है मां । अगर नीलम वैसा कुछ कहती या उसका प्रेमी उसके साथ रेप करता तो उसके सीमन के टेस्ट से पता चल जाता कि वो किसका है और फिर देर नहीं लगती उसके प्रेमी तक पहुंचने में और मामला सब कुछ क्लियर हो जाता है पर उसने ऐसा नहीं किया । ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग वाली झूठी बात कही उसे पता है की पुलिस ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग की तरफ मुड़ जाएगी और कभी सच पता नहीं कर पाएगी!”

मां ने बेचैनी से पहलू बदल दिया। लगा जैसे शिल्पी की बात ने उसे सोचने पर मजबूर कर दिया है।

“पर आप फिक्र मत करो मुझे इस बात का इल्म है इसलिए मैंने सच्चाई पता करने हैं का जरिया ढूंढ लिया है और कुछ ही दिनों की बात है सच्चाई खुद-ब-खुद सामने आ जाएगी कि नीलम सच्ची है या झूठी। देखना मेरी बात सच निकलेगी नीलम शातिर लड़की है! उसकी सारी साजिश से पर्दा उठ जाएगा।"

“ ऐसा तुमने क्या किया है?” उसके चेहरे पर शिल्पी ने क्या किया जानने के लिए काफी उतावला पन दिखाई दे रहा था।

नीलम ने उसे बताया कि उसने नीलम के प्रेमी विक्रम का नंबर लेकर शिलांग पुलिस को दिया है उसे पता करने के लिए कि जिस समय नीलम और उसका भाई करण शिलांग में थे उस वक्त विक्रम की लोकेशन क्या थी और उसके फोन की कॉल डिटेल भी मंगवाई है ताकि पता कर सके कि उसने नीलम से कब,कब बात की है।

उसकी बात सुनकर वह सोच में पड़ गई पर बोली कुछ नहीं अचानक उसे कुछ याद आया तो उसने कहा,”ठीक है सच्चाई जो होगी बाहर आ जाएगी अभी फिलहाल तुम यहां से जाओ। तुम्हारे पापा आते ही होंगे!”मां ने पहली बार जिस अंदाज में बात की थी लगा जैसे उसे उसकी फिक्र हो। या उसे इस बात का डर सता रहा हो कि उसका बाप घर में कदम रखते ही शिल्पी को वहां देख कर हंगामा खड़ा कर देगा । मां की घबराहट देखकर शिल्पी उठ बैठी है क्योंकि वह जानती थी कि उसकी चिंता जायज है। और फिर वहां से रुखसत हो गई।

****

कमिश्नर ऑफिस से निकलकर शिव शंकर बाहर खड़ी अपनी कार की तरफ बढ़ रहा था उसका ड्राइवर पहले से ही जो कुछ देर पहले कार के बाहर खड़ा बीड़ी सुलगा रहा था और जैसे ही उसने अपने मालिक को बिल्डिंग के बाहर आते देखा तुरंत बीड़ी बुझा कर फेंक दी और लपकते हुए कार के पास आया । मलिक को कार में बैठने के लिए उसने खिड़की खोली तभी एक कार उसके नजदीक से तेजी से निकली । शिव शंकर की नजर उस तरफ गई कार उसकी बहू नीलम ड्राइव कर रही थी।

“तुमने अभी देखा कार को नीलम ड्राइव कर रही थी?”शिव शंकर की आंखों से सिकुड़ी। उसे नीलम के बाहर जाने के बारे में मालूम नहीं था इसीलिए वह सोच में डूब गया कि आखिर इतनी सजी-धजी वह कार से खुद ड्राइव करते हुए कहां जा रही है पर एक पल के लिए उसे लगा कि शायद उसे भ्रम हुआ है इसीलिए उसने कंफर्म करने के लिए ड्राइवर से पूछा पर ड्राइवर का सारा ध्यान कार की खिड़की खोलने में लगा था इसीलिए शायद वह देख नहीं पाया और इसीलिए झिझकते हुए उसने कहा,”किस कार में मैंने देखा नहीं साहब!”

“ हूं। शायद वह कोई और है पर मुझे लगा कि शायद वह नीलम है इसलिए पूछा!”

फिर वह कार में बैठ गया ड्राइवर ने खिड़की बंद की और घूम कर ड्राइविंग डोर खोलकर ड्राइवर वाली सीट पर बैठ गया।

शिव शंकर अभी भी विचार मग्न था शायद नीलम के बारे में ही सोच रहा था कि उसने क्या सच में नीलम को देखा क्या वह सच में नीलम ही थी या कोई और! तब तक ड्राइवर ने कार आगे बढ़ा दी।

“क्या आपको अपनी बहू नीलम की बात पर यकीन है उसने जो कुछ भी कहा वह सब कुछ सच है?”अचानक उसे कमिश्नर की कही हुई बात याद आने लगी जिससे उसकी दुविधा और बढ़ गई है उसने जेब से तुरंत फोन निकाल कर अपनी वाइफ को कॉल लगाई।

“हेलो ,"उस तरफ से कॉल रिसीव की गई तो उसने तुरंत कहा”क्या नीलम घर पर है या कहीं गई है?”शिव शंकर ने कंफर्म करने के लिए पूछा तो उधर से उसकी पत्नी की कुछ देर आवाज

नहीं आई उसने दोबारा पूछा तो उत्तर मिला ,"नहीं वह घर पर नहीं है कहीं गई है!"

"कहां और क्यों?"

"बोल रही थी उसकी पुरानी सहेली की बेटे का बर्थडे है हालांकि उसने खूब मना किया था पर सहेली मानी नहीं इसलिए ..उसे जाना पड़ा!"

शिव शंकर सोच में पड़ गया पर कुछ भी निश्चित नहीं कर पा रहा था लाइन पर उधर खामोशी पसरी हुई थी । अंत में उसने कुछ सोच कर कहा,"ठीक है।"

"नीलम के बारे में आपने क्यों पूछा?"उधर से पत्नी ने सवाल किया।

"कुछ नहीं बस यूं ही एक कार मेरे सामने से गुजरी थी मुझे लगा कि उसमें नीलम थी इसीलिए पूछा!"

"उस कार में नीलम अकेली थी या कोई और भी था?"

"नहीं अकेली ही थी वही कार ड्राइव रही थी!"

"अच्छा!"

कुछ देर लाइन पर खामोशी पसरी रही।

फिर पता नहीं क्या सोचकर शिव शंकर ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

****

शिव शंकर राज नगर के श्याम नगर में स्थित दो मंजिला बिल्डिंग के अपने ग्राउंड फ्लोर पर स्थित ऑफिस में दो-तीन घंटे बिताने के बाद वापस अपने घर पर आ गया । उस समय शाम होने वाली थी। घर पर उसके उसकी बुजुर्ग वाइफ मौजूद थी । नीलम अभी तक पार्टी से वापस नहीं लौटी थी।

दोनों बुजुर्ग ड्राइंग रूम में खामोश बैठे थे हालांकि घर आते ही शिव शंकर ने अपनी वाइफ से नीलम के बारे में पूछा था कि वह अभी लौटी या नहीं जब काफी देर उन्हें बैठे हुए हो गया और नीलम कहीं दिखाई नहीं दी तब जबकि अक्सर होता था कि जब वह ऑफिस से लौटता था नीलम तुरंत उसके पास आकर उसका हाल-चाल पूछती थी।

"अभी कहां ,मुझसे कहा था कि घंटा 2 घंटे में लौट आएगी पर अभी तक वह लौटी नहीं!"शिव शंकर की पत्नी ने अनमने भाव से कहा।

"अब तक तो लौट आना चाहिए था तीन-चार घंटे हो गए जब 2 घंटे में कहा था तो..!"शिव शंकर का भी मूड उखड़ा उखड़ा जान पड़ रहा था।

कुछ पल फिर से खामोशी में बीते।

"आज मैं पुलिस कमिश्नर से मिला था मैंने उनसे रिक्वेस्ट की थी की करण के हत्यारे को जल्द से जल्द पकड़ने में पुलिस हेल्प करें क्योंकि यह काम शिलांग पुलिस का है इसलिए शिलांग पुलिस पर वह दबाव बनाए। वह मेरा दोस्त है और उसने मुझे आश्वासन भी दिया पर एक सुझाव भी दिया।," कहते कहते वह झिझका फिर क्षणिक रुक कर बोला,"पता नहीं क्यों मुझे वह अब खटक रहा है पहले तो नहीं लगता था पर शायद भारी दुविधा में हूं मैं समझ नहीं

पा रहा हूं कि मुझे क्या करना चाहिए।"

"किस बारे में?"पत्नी ने फौरन नजरे उठाकर उसकी ओर देखा।

"उसका कहना है की नीलम ने हमें जो बातें बताई मतलब उसके एक्सीडेंट के बाद संयोग से वहां से ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के कुछ सदस्य गुजरे थे उन्होंने उसको किडनैप कर लिया करण जिसे होश आ गया था ने विरोध किया तो उन्होंने उसे मार खाई में फेंक दिया और एक हफ्ते जंगल में उस गुप्त जगह पर रखा । दस दिन रखने पर भी उसे छुआ तक नहीं फिर चमत्कारिक ढंग से नीलम उनके चुंगल से छूटकर वापस आ गई इस बात पर?"

पत्नी ने भी बेचैनी से पहलू बदका शायद वह भी दुविधा में लग रही थी कुछ कहना चाहती थी पर बार-बार गहरी सांस भरकर छोड़ देती थी।

"तुम कुछ कहना चाहती हो?"शिव शंकर समझ गया कि उसकी पत्नी उससे कुछ कहना चाहती है पर किसी कारण कहने से हिचकिचा रही है इसीलिए उसने उसका मनोबल बढ़ाया तो उसकी बुजुर्ग पत्नी ने कहा,"तुम नाराज तो नहीं होंगे पहले मेरी बात सुन लेना फिर चाहे जो कुछ करना।"

वह संभल कर बैठा । वह समझ गया कि उसके पत्नी के मन में भी कुछ वैसा ही चल रहा है इसीलिए उसने पूछा,"ऐसी क्या बात है?"

"बताओ पहले नाराज तो नहीं होंगे!"

"अरे पहले बात तो बताओ बात क्याहै?"

"पहले बोलो नाराज नहीं होंगे?"उसकी पत्नी को शायद डर था कि वह जो कुछ बताएगी उसकी बात सुनकर शिव शंकर नाराज हो सकता है इसीलिए वह कंफर्म कर लेना चाहती थी और बार-बार अपनी बात पर जोर दे रही थी फिर जब शिव शंकर ने हामी भर दी कि वह नाराज नहीं होगा तो उसने कहा,"आज शिल्पी घर पर आई थी।"

शिव शंकर ने नाराज ना होने की अगर हामी ना भरी होती तो शायद वह पक्का नाराज हो जाता क्योंकि उसके चेहरे पर तेजी से भाव बदले थे जिनमें गुस्सा साफ झलक रहा था पर क्योंकि वह अपनी वाइफ से वादा कर चुका था इसलिए उसने उस गुस्से के घूंट को पी लिया और धीरे से बोल," हूं,तो?"

"हम लोग भले ही उससे नाराज हैं पर उसे अपने भाई की मौत का बेहद अफसोस है!"

" हूं तो?"

"उसे भी नीलम की बातों पर यकीन नहीं है। उसे तो शायद शुरू से ही नीलम की बातों पर विश्वास नहीं है और इसीलिए वह अपनी तरफ से खोजबीन करने में जुटी है और उसने काफी कुछ पता किया है।"

"खोज बीन करने के लिए ही पुलिस बनाई गई है उसे करने की क्या जरूरत है?"

"पुलिस ने तो नीलम की बातों को ही सच मान लिया इसीलिए तो अभी तक करण के हत्यारे को नहीं पकड़ पाई!"

बीवी के तीखे वचनों को सुनकर वह कसमाशा कर रह गया।

कुछ पल कोई कुछ नहीं बोला। उन दोनों में से फिर अंततः उसकी बीवी ने कहना शुरू किया,"उसने खोजबीन में नीलम के पुराने आशिक को ढूंढ निकाला है जिसका नाम विक्रम है । शादी से पहले विक्रम का नीलम को चाहता था यानी उन दोनों के बीच अफेयर था!"

" था?"

"क्या पता अभी भी हो!"

“यह कौन सी बड़ी बात है हर किसी के जिंदगी में शादी से पहले ऐसे अफेयर होते हैं!”

"मैं अभी तो कहा कि हो सकता है अभी भी हो!"

" हूं।"

“हां पर उसे लगता है कि उसके भाई की हत्या में उसके पुराने प्रेमी विक्रम का हाथ है और उसकी एक वजह भी है कि जब करण और नीलम शिलांग में थे उस दौरान विक्रम भी अपने घर पर नहीं था पूछने पर कहता है कि वह हरिद्वार घूमने गया था नीलम की शादी हो जाने की वजह से वह दुखी था घर पर रहता तो शायद पागल हो जाता पर किसी ने उसे बाहर घूमने की सलाह दी थी और इसीलिए वह हरिद्वार गया था घूमने!”

“हां तो गया होगा इसमें कौन सी बड़ी बात है प्रेमी है प्रेमिका की शादी हो जाने के बाद इसका अपसेट होना तो बनता है!”

बीवी ने पहली बार उसकी और गुस्से में देखा।

“यह भी तो हो सकता है कि वह झूठ बोल रहा हो और हरिद्वार ना जाकर शिलांग गया हो और करण की मौत में उसका ही हाथ हो!”

“ऐसा करके उसे क्या हासिल होगा?”

“शायद वह नीलम से शादी करना चाहता होगा? करण ने उसकी प्रेमिका को छीन लिया था इसीलिए वह करण से बदला लेना चाहता होगा।"

“छीन लिया का क्या मतलब? नीलम को उससे शादी क्यों करेगी करनी होती तो पहले ना कर लेती!”

“शायद हमारी दौलत हासिल करने के लिए ही उसने हमारे बेटे से शादी की थी पर उसका इरादा था अपने पुराने प्रेमी के साथ मिलकर उसको खत्म करना बाद में उसकी दौलत हड़प कर अपने इस पुराने प्रेमी के साथ जीवन बिताने का!”

शिव शंकर सोच में पड़ गया।

“मुझे नहीं लगता कि नीलम अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारेगी क्योंकि हमारी दौलत हासिल करना इतना आसान नहीं है अभी हम लोग जिंदा है!”

“हो सकता है नीलम इसमें इंवॉल्व ना हो उसके प्रेमी विक्रम ने अपनी तरफ से अपनी भड़ास निकालने के लिए ऐसा कुछ किया हो हमारे बेटे को मार कर उसे तसल्ली मिल गई हो!”

“अगर सिर्फ भड़ास निकालने के लिए उसने ऐसा किया तो फिर नीलम को एक हफ्ते कैद में रखने के बाद उसके साथ कुछ भी किया नहीं क्यों?”

" क्योंकि वह उसका प्रेमी था उसकी हिम्मत नहीं पड़ी होगी शायद सोचता हो कि कारण के मरने के बाद उसका रुझान उसकी तरफ हो जाए।"

"अगर विक्रम ने ही नीलम को कैद किया था तो वह लोग ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से क्यों बात कर रहे थे नीलम ने बताया था कि उसे किडनैप करने वाले लोगों से बेचने की फिराक में थे?"

"हो सकता है विक्रम के वे साथी हो और जानबूझकर नीलम के सामने ऐसा कुछ कहा हो जिससे बाद में नीलम पुलिस को बताएं और मामला ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग की तरफ मुड़ जाए शायद विक्रम नहीं चाहता था कि इसमें उसका रोल के बारे में कोई जान सके इसीलिए ऐसा प्लान रचा होगा!"

"पर उसने नीलम को कैद करके रखा ही क्यों ,उस को वहीं बेहोश पड़ा रहने देता..?"

"अगर वह ऐसा करता तो शायद पुलिस को पहला शक उसके प्रेमी पर ही जाता । खुद पर शक आए ना इसीलिए उसने नीलम को कैद करके रखा और मुझे तो लगता है कि नीलम को जो भागने का मौका मिला है वह उसने ही प्रदान किया ताकि नीलम वहां से चली जाए! और पुलिस को वही बताएं जो वह चाहता था।"

"तुम्हें कहना चाहती हो कि विक्रम ने अपना लंबा प्लान इसलिए रचा था कि पुलिस उसकी तरफ ना ध्यान कर पाए?"

"हां और देखो वह सफल भी रहा पुलिस का सारा ध्यान ह्यूमन ट्रैकिंग गैंग वालों की तरफ ही है आज भी!"

"तुम्हें क्या लगता है विक्रम के साथ नीलम भी मिली हुई है या फिर विक्रम का ही अकेले का प्लान था?"

बीबी को इस बात का जवाब नहीं आया।

दोनों खामोश बैठे रहे।

“मैं नहीं जानती सच्चाई क्या है पर हम आंख मूंद कर नीलम पर विश्वास नहीं कर सकते अब तो वह भी मुझे शातिर लड़की जान पड़ने लगी है। देखो 1 घंटे की बोलकर गई थी तीन-चार घंटे हो गए अभी तक लौटी नहीं अभी। उसके पति को मरे हुए कितने दिन हुए ऐसे में चार-चार घंटे बाहर पार्टी में रहना क्या सही है?”

इस बार शिव शंकर को जवाब नहीं आया।

“शायद तुम ठीक कह रही हो!” कुछ देर मौन रहकर सोचने के बाद आखिरकार शिव शंकर ने कहा।

“वैसे सच्चाई जानने के लिए शिल्पी ने एक और इंतजाम किया है और बहुत जल्द उसका नतीजा आएगा जिससे क्लियर हो जाएगा कि करण की मौत में विक्रम का हाथ है या नहीं वह हरिद्वार में था या शिलांग में सब कुछ क्लियर हो जाएगा!”

“कैसे?”शिव शंकर ने उसकी और हैरानी से देखा।

“शिल्पी ने विक्रम का नंबर शिलांग पुलिस को दिया है और उससे कहा है उस नंबर की

लोकेशन ट्रेस करें जिस दौरान नीलम और करण शिलांग में थे उस दौरान उस नंबर की लोकेशन क्या थी इससे क्लियर हो जाएगा कि विक्रम शिलांग में था या फिर हरिद्वार में!"

" हूं।"कुछ पल बैठा शिव शंकर गंभीरता से सोचता रहा फिर बोला,"शिल्पी से बोल दिया था कि दोबारा यहां पर ना आए! उसे जो भी खोजबीन करनी है करें हमें उससे क्या है पर यहां पर दोबारा कभी नहीं दिखनी चाहिए।"

"हां मैंने बोल दिया था!"पत्नी ने बड़ी मुश्किल से कहा ऐसा लगा जैसे उसे उसके पति की बात बुरी लगी हो। अपने मनोभाव पर बड़ी मुश्किल से उसने कंट्रोल किया था। शायद पहली बार उसे शिल्पी के लिए पति का व्यवहार बुरा लगा था।

तभी बाहर कार के रुकने की आवाज आई और कुछ देर बाद नीलम घर के अंदर प्रवेश तो हुई दोनों ड्राइंग रूम में बैठे उसकी ओर ही देख रहे थे उन दोनों की ओर देखकर एक बार तो नीलम जो बड़ी खुशमिजाज और प्रसन्न दिख रही थी बुरी तरह हड़बड़ा गई अचानक उसके चेहरे के भाव बदले और वह दुखी सी नजर आने लगी। उसने आगे बढ़कर दुखी होकर अफसोस भरे स्वर में कहा,"सहेली को मैंने कहा था कि मुझे जल्दी जाना है पर वह जिद करने लगी उसने मेरी एक नहीं सुनी है इसीलिए इतना वक्त हो गया!"

दोनों ने उसकी ओर देखा । उन दोनों के चेहरे पर नाराजगी थी पर किसी ने भी नाराजगी व्यक्त नहीं की। जबकि नीलम लंबे-लंबे डग भर्ती हुई भीतर अपने कमरे में चली गई।

***

रात के 10:00 बज रहे थे ।शिव शंकर अपनी पत्नी के साथ अपने कमरे में पलंग पर लेटा हुआ था। दोनों ही गहरी नींद में जान पड़ते थे पर हकीकत यह थी कि शिव शंकर खर्राटे भर रहा था जबकि उसकी पत्नी सिर्फ आंखें बंद किए थी। नींद उससे काफी दूर थी पता नहीं उसके दिमाग में क्या चल रहा था। बीच-बीच में करवट भी बदल रही थी । अचानक उसकी आंखें खुली । उसने पलंग पर खर्राटे भर रहे अपने पति की ओर देखा फिर पलंग से उठ बैठी । पहले अपने स्लीपर पहने और दबे पांव कमरे से बाहर निकली दरवाजा भी उसने इतने धीरे से खोला था कि शिव शंकर जान ना पाए।

कमरे से बाहर निकलने के बाद अंधेरे में वह दबे पांव चलती हुई नीलम के कमरे के पास यानी दरवाजे के पास पहुंची कुछ पल वहां शांत , सास रोके खड़ी रही फिर उसने दरवाजे में अपने कान लगाए शायद अंदर की आवाज को सुनने की कोशिश कर रही थी पर अंदर से कोई आवाज नहीं आ रही थी। उसे लगा नीलम सो रही है। पर जब दरवाजे की कुंडी को उसने बाहर से लगे हुए देखा तो उसका माथा ठनका। कुछ पल उसने सोचा फिर कुंडी खोलकर दरवाजा धकेल कर कमरे के अंदर आ गई। दीवाल पर स्विच बोर्ड लगा हुआ था। कमरे में रोशनी करने के उद्देश्य से उसने बोर्ड की तरफ हाथ बढ़ाया पर तुरंत रोक लिया। फिर पलंग की तरफ अंधेरे में बढ़ी। अब उसे अंधेरे में भी काफी साफ दिखाई दे रहा था पर नीलम को पलंग पर न देख कर अचरज में पड़ गई। उसने पूरे कमरे में नजर घूमा कर देखा। कमरे में नीलम कहीं भी नहीं थी।

उसे हैरत हुई कि आखिर वह कहां चली गई। वह टहलते हुए खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई थी अचानक उसकी नजर जब खिड़की के बाहर गई तो यह देखकर उसे हैरत हुई की बंगले के पीछे वाले लॉन में पड़े झूले पर नीलम बैठी हुई है बल्कि तेज तेज झूल रही है ऐसे जैसे

बहुत खुश हो।

“यह वहां क्या कर रही है इतनी रात को? कही करण की मौत ने उसके दिमाग को हिला तो नहीं दिया उसे सदमा तो नहीं लगा जो इतनी रात को झूला झूल रही है वह भी इस तरह,”वह बड़बड़ाई,”या फिर शिल्पी की बात सही है नीलम सच में बेहद शातिर लड़कीहै बेहद चालाक लड़की है उनकी दौलत हासिल करने के लिए ही उसके घर में आई है। करण की मौत का उसे अफसोस क्यों होगा जब उसकी मौत में उसका ही हाथ है उसने अपने पुरानी प्रेमी के साथ मिलकर उसे मौत के घाट उतरवा दिया!” उसके चेहरे पर गुस्सा नजर आने लगा।

कुछ पल वह खिड़की के पास खड़ी इन्हीं विचारों में उलझी रही फिर वह खिड़की से हटी और तेजी से कमरे के बाहर निकली दरवाजे की कुंडी लगाई और फिर सीढ़ियां उतरकर नीचे आई । घर का मुख्य दरवाजा खोलकर बाहर निकली बाहर रोशनी जो काफी हल्की थी फैली हुई थी वह शीघ्र ही उस जगह पर पहुंच गई जहां पर नीलम झूला झूल रही थी । कुछ देर दूर खड़ी वह उसको देखती रही नीलम सच में बेहद खुश नजर आ रही थी दुख और पीड़ा का जरा भी भाव उसके चेहरे पर नहीं था।

करण की मां के चेहरे पर गुस्सा बढ़ने ने लगा।

“मैं तो इसे भोली भाली और सीधी गरीब लड़की समझती थी पर यह तो सच में बेहद खतरनाक जान पड़ती है क्या मुझे मान लेना चाहिए कि मेरे बेटे की मौत में इसका ही हाथ है या फिर बेटे की मौत ने इसे गहरा सदमा दिया है उसकी वजह से इसकी यह हालत है!”वह कुछ निश्चित नहीं कर पा रही थी कि आखिर नीलम के बारे में उसे कौनसा विचार को उसे मनाना चाहिए।

फिर वह आगे बढ़कर झूले के बिल्कुल नजदीक पहुंच गई। नीलम अभी भी झूल रही थी अचानक उस को उसके वहां होने का जव एहसास हुआ तो वह बुरी तरह हड़बड़ा गई झूला तुरंत रोक दिया अब उसके चेहरे पर भारी वेदना और दुख नजर आ रहा था जबकि करण की मां उसके चेहरे पर लगातार गिद्ध की तरह पैनी नजर लगाए हुए थी।

“अरे मां जी!”नीलम उसे वहां देखकर हड़बड़ा गई थी पर उसने खुद को तुरंत संभाला और पर उसके स्वर डर साफ दिखा ।

“तुम इतनी रात को यहां क्या कर रही हो?”उसकी सास ने तुरंत पूछा।

नीलम कुछ जवाब देती पर उससे पहले वह रोने लगी और रोते हुए बोली,”हमें अपने कमरे में थी नींद नहीं आ रही थी करण की याद करते-करते मैं खिड़की के पास आकर खड़ी हो गई तो मुझे लॉन में पड़ा झूला दिखाई दिया शादी के बाद एक दो बार मैं करण के साथ मइस झूले पर बैठी थी। मुझे वही पल याद आने लगे तो पता नहीं क्या हुआ मैं अपने आप को रोक नहीं पाई और यहां तक आ गई। और झूला झूलने लगी मुझे लगा मैं करण के साथ ही झूला झूल रही हूं!”

उसकी सास पहले से ही दुविधा में थी । वह डिसाइड नहीं कर पाए कि नीलम सच कह रही है या बातें बना रही है। फिर उसे भी लगा कि शायद ऐसी ही बात है उसने आगे बढ़कर उसके सर पर हाथ फेरा और बोली।

“मैं समझ सकती हूं अभी करण को इस दुनिया से गए दिन ही कितने हुए हैं । चलो अपने

कमरे में चलो रात काफी हो गई आराम करो चल कर !”

फिर वह नीलम को अपने साथ लेकर आई और उसके कमरे में उसके पलंग पर लिटा कर उसे सांत्वना देकर वापस अपने कमरे में आ गई पर जब कमरे का उसने दरवाजा खोलकर अंदर कदम रखा तो देखा उसका पति शिव शंकर पलंग पर उठकर बैठा हुआ है और उसकी तरफ प्रश्न सूचक नजरों से ही देख रहा था।

पत्नी ने कुछ नहीं कहा धीरे-धीरे चलते हुए आई और पलंग पर आकर बैठ गई।

“क्या बात है तुम कहां गई थी?तुम्हारा चेहरा बता रहा है कि तुम काफी उलझन में हो।"शिव शंकर ने पूछा।

“मुझे नींद नहीं आ रही थी मेरा सारा ध्यान नीलम की ओर ही लगा था मैं डिसाइड नहीं कर पा रही थी कि शिल्पी की बात सच है की नीलम सच में एक शातिर लड़की है और हमारे बेटे की मौत में उसका ही हाथ है या फिर बेटे की इस तरह अचानक हुई मौत ने उसे गहरा सदमा दिया है । इसी उलझन में मै नीलम के कमरे में पहुंच गई थी पर वह अपने कमरे में नहीं थी।”

“अच्छा तो फिर कहां थी कहां चली गई नीलम?”शिव शंकर चौंक पड़ा।

“तुम्हें जानकर हैरत होगी वह रात के समय लॉन में झूला झूल रही थी!”

“ क्या!”

“हां मैंने भी जब कमरे की खिड़की से झूला झूलते हुए उसे देखा तो मुझे हैरत हुई और वह बहुत खुश दिख रही थी ऐसा लग रहा था जैसे हमारे बेटे की मौत का उसको बिल्कुल भी दुख ना हो लेकिन..!”

“लेकिन क्या?”

“लेकिन जब मैं उसके पास पहुंची तो वह मुझे वहां देखकर चौंक गई और बोली उसे करण की याद सता रही थी शादी के बाद एक दो बार कारण के साथ उस झूले पर झूली थी उसे करण की याद सता रही थी इसीलिए वह रात में झूला झूलने लगी फिर उसके चेहरे से खुशी गायब हो गई वह दुखी नजर आने लगी! पता नहीं करण की मौत का उसे सदमा लगा हुआ है या फिर वह सच में बेहद चालाक है।"

कुछ पल दोनों खामोशी से बैठे रहे।

“तुम्हें क्या लगता है वह सच कह रही थी?”शिव शंकर ने पूछा।

“क्या पता मैं कुछ भी डिसाइड नहीं कर पा रही हूं कभी-कभी लगता है कि वह बेहद चालाक लड़की है हमारे बेटे की मौत में उसका ही हाथ है पर कभी-कभी लगता है कि बेटे की मौत की वजह से सदमा लगा है शायद इसीलिए वैसी हरकतें कर रही है!”

“ हूं।”

“शिलांग के इंस्पेक्टर का नंबर है तुम्हारे पास जिसे शिल्पी ने नीलम के प्रेमी का नंबर देकर उसकी उस समय की लोकेशन ट्रेस करने को बोला है जब नीलम और करण शिलांग गए थे । उसे कहो कि वह जल्दी से वह काम निपटाए ताकि क्लियर हो सके की नीलम सच में एक सीधी साधी लड़की है या फिर एक बेहद चालाक और शातिर लड़की है!”

“ हूं ठीक है कल मैं उससे बात करता हूं।”

“ हु ।”

****

सुबह के 10 बजने वाले थे शिव शंकर नहा धोकर फ्रेश होकर ड्राइंग रूम में बैठा आज का अखबार पढ़ रहा था।

आज वह ऑफिस नहीं जा रहा था क्योंकि सर में उसके दर्द था उसकी बीवी ने सुबह उससे पूछा था अभी कुछ देर पहले ही जब उसे लगा कि वह आज ऑफिस नहीं जाएगा क्योंकि 10बजे उसका ऑफिस जाने का टाइम होता है पर इस समय 10 से ऊपर का समय हो गया था । नीलम उसे चाय बना कर दे गई थी । चाय के धीरे-धीरे घूंघ भर रहा था।

फिर जब उसकी बीवी उसके बगल में आकर सोफे पर बैठ गई और उससे बोली,”शिलांग के उस पुलिस वाले से बात करो। देखो उसने क्या प्रोग्रेस की है या यूं ही हाथ पैर हाथ धरे बैठा है । मुझे तो शिलांग की पुलिस से कोई उम्मीद नहीं जान पड़ती तुम्हारे कमिश्नर दोस्त का भी कोई लाभ नहीं हुआ । तुमने उससे कहा था तो जरूर उसने कहा होगा पर वहां की पुलिस बहुत नकारा जान पड़ती है!”बीवी के स्वर में भारी गुस्सा दिखाई दे रहा था।

शिव शंकर शायद इस बात को भूल गया था पर अब बीवी ने याद दिलाया तो उसने अखबार एक तरफ मेज पर रखा अपना फोन उठाया और इंस्पेक्टर विजय को फोन लगाया ।

होटल के रूम में विजय ने अपना नंबर उसे दिया था और उसका नंबर उसने लिया था ताकि कोई अपडेट हो तो एक दूसरे को जानकारी साझा कर सके।

“ हेलो।”उस तरफ से जैसे ही फोन पिक किया गया शिव शंकर ने कहा तो उधर से विजय तुरंत बोला,”हेलो और कैसे हैं शिव शंकर जी!”

“एक हफ्ते पहले मेरे बेटे की मौत हुई है जिसका इकलौते बेटे की एक हफ्ते पहले हत्या हुई हो वह कैसा हो सकता है इंस्पेक्टर!”

उसकी बात सुनकर कुछ पल के लिए विजय हड़बड़ा गया कुछ भी कह नहीं पाया पर जल्दी से उसने खुद को संभाला और कहा,”सॉरी!”

“कोई बात नहीं। तुम यह बताओ कि खोजबीन कहां तक पहुंची। मेरे बेटे के हत्यारो के बारे में कुछ पता चला या अभी भी सिर्फ खोज बीन ही हो रही है?”उसके स्वर में है अभी काफी नाराजगी दिखाई दे रही थी और झुंझलाहट भी थी कई दिन हो गए थे पर उसके बेटे की हत्यारों के बारे में कुछ भी पता नहीं चल रहा था।

“एक्चुअली अभी तो कुछ भी पता नहीं चला पर हम लोग पूरी कोशिश कर रहे हैं!” विजय ने बड़े धीरे झिझकते हुए उत्तर दिया।

“मुझे नहीं लगता कि शिलांग पुलिस कोशिश कर रही है या सिर्फ कोशिश ही कर रही है अभी तक कुछ भी पता नहीं चला!”

उधर लाइन पर खामोशी छा गई।

“विक्रम के फोन की लोकेशन की क्या खबर है या उसमें भी सिर्फ कोशिश ही चल रही है?”

“आपको कैसे पता?”विजय ने तुरंत पूछा। उसकी जानकारी में बाप और बेटी में तो बिल्कुल भी बात नहीं होती थी फिर उसे इस बारे में कैसे पता चला क्योंकि विक्रम की लोकेशन के पता करने के लिए तो शिल्पी ने कहा था।

“क्या किस बारे में?”

“विक्रम के बारे में!”

शिव शंकर समझ गया कि वह क्या जानना चाहता है पर वह खुद अपने मुंह से शिल्पी के बारे में नहीं बताना चाहता था लेकिन बताने के अलावा कोई चारा नहीं था।

“ शिल्पी ने बताया।”

“उससे तो आपकी बोलचाल नहीं है फिर उसने आपको कैसे बताया?”

“मरने वाला उसका भाई था यह मत भूलो और फिर तुम यह सब छोड़ो बताओ विक्रम के फोन की लोकेशन के बारे में कुछ पता चला या यूं ही हाथ पर हाथ धरे बैठे हो?”

“आप नाराज मत होइए हम जल्द से जल्द करण के हत्यारे को पकड़ ही लेंगे वैसे मैं खुद आपको ही फोन करने वाला था!”

“क्यों?”अब शिव शंकर चौक पड़ा। उसका स्वर भी थोड़ा विनम्र हुआ।

“विक्रम की लोकेशन के बारे में पता चल गया था इसलिए!”

“अच्छा," उसकी आंखें चौड़ी हुई,"तो बताओ फिर उसकी लोकेशन उस समय कहां थी जब करण और नीलम शिलांग में थे?”

“पहले मुझे भी लगता था कि विक्रम की लोकेशन शिलांग में ही होगी पर मुझे यह जानकर हैरत हुई कि उसकी लोकेशन सच में हरिद्वार ही दर्शा रहा है वह उस समय हरिद्वार में ही था उसकी लोकेशन यह सब बता रही है और पूरे एक हफ्ते वही था!”

शिव शंकर के चेहरे पर भारी निराशा दिखाई देने लगी।

“मतलब विक्रम का करण हत्या केस में कोई हाथ नहीं!”

“फिलहाल तो यही लगता है !,"उसने ऐसा कहा जैसे उसे भी भारी अफसोस हुआ हो," पर हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं यह जानने की कहीं इसके पीछे भी विक्रम की कोई गहरी साजिश तो नहीं उसने कोई ऐसा इंतजाम किया हो जिससे उसकी लोकेशन हरिद्वार में दिखा रहा है जबकि वह शिलांग में ही हो!”

“ क्या ऐसा हो सकता है? "

" हां बिल्कुल। शातिर लोग ऐसा इंतजाम करते हैं।"

" कैसे?"

"अगर विक्रम का करण की हत्या में हाथ है और उसका फोन लोकेशन हरिद्वार दिखा रहा है तो जाहिर सी बात है कि उसने ऐसा इंतजाम किया होगा अपना फोन किसी को दे कर हरिद्वार भेज दिया होगा और खुद शिलांग चला गया होगा।"

" हूं। इंस्पेक्टर यह काम जितनी जल्दी हो सके क्लियर करो ताकि हम दुविधा से बाहर निकले हैं अभी हम क्लियर ही नहीं कर पा रहे हैं कि मेरे बेटे की हत्या में मेरी बहू का हाथ है या नहीं । उसने जो कुछ बताया वह सच है या नहीं प्लीज जल्द से जल्द क्लियर करो! सच्चाई पता करो।"

"जी बिल्कुल, मैं पूरी कोशिश करूंगा। वैसे आप इस बारे में शिल्पी को बता देंगे या मैं फोन करके बताऊं?"

"किस बारे में?"

"विक्रम के फोन की लोकेशन के बारे में!"

"तुम ही बता दो और उसे कह दो की इस केस से दूर रहे खोजबीन करना पुलिस का काम है मुझे अभी भी लगता है कि पुलिस इस केस को जल्द से जल्द सॉल्व कर लेगी!"

" जी ठीक है।"

तभी शिव शंकर के सामने बैठी पत्नी ने आंखों ही आंखों में से इशारा किया शायद दरवाजे की और देखने के लिए कहा था और शिव शंकर ने जब दरवाजे की ओर देखा तो वहां नीलम को खड़े देखकर वह चौंक पड़ा पता नहीं नीलम वहां कितनी देर से खड़ी थी या अभी आई थी पर उसके चेहरे पर भारी गंभीरता दिखाई दे रही थी।

****

इंस्पेक्टर विजय ने शिव शंकर को फोन करने के बाद तुरंत बाद ही शिल्पी को फोन लगाया । शिल्पी उस समय तैयार होकर जॉब के लिए निकलने ही वाली थी क्योंकि वह मां-बाप से अलग रहती थी और उनकी तरफ से फाइनेंशियल हेल्प भी उसे नहीं प्राप्त थी। जीवन के लिए फाइनेंशियल मजबूती होना जरूरी है उसी का इंतजाम करने के लिए वह नौकरी करती थी और एक मल्टी स्टोरीज बिल्डिंग में जहां पर किराए पर कमरे उपलब्ध थे उन्हीं में से एक कमरे में वह रहती थी।

और अभी वह अपने इस कमरे में थी जो तीसरी मंजिल पर बना हुआ था। उसने कमरे से निकलते समय दरवाजे में लॉक लगाया और फिर सीढ़ियां उतर कर नीचे आने लगी साथ ही उसने कॉल रिसीव किया।

"हेलो ,"उसने सीढ़ियां उतरते हुए फोन में कहा।

"हेलो, शिल्पी जी मैं इंस्पेक्टर विजय शिलांग से बात कर रहा हूं । आपने वह विक्रम का नंबर दिया था उसकी उस समय की लोकेशन ट्रेस करने को बोला था जब आपका भाई और भाभी शिलांग में थे!"

"ओह हां मैं आपके ही कॉल इंतजार कर रही थी । क्या पता चला इस बारे में!"बात करते-करते हुए बिल्डिंग से बाहर निकल आई थी और अब सड़क के किनारे खड़ी टैक्सी का इंतजार कर रही थी।

"पहले मुझे भी लगता था कि शायद आपकी बातचीत सुनकर की विक्रम आपके भाई के मर्डर में इंवॉल्व हो सकता है पर उसकी लोकेशन सच में हरिद्वार ही दिख रहा है पूरे एक हफ्ते वह

हरिद्वार में ही था!”

शिल्पी के चेहरे पर भारी निराशा नजर आने लगी।

“मैं सच कहूं तो मुझे अभी भी यकीन नहीं हो रहा की मेरे भाई की हत्या में नीलम का हाथ नहीं उसके पुराने प्रेमी विक्रम का हाथ नहीं पर आप बता रहे हैं कि उसकी लोकेशन हरिद्वार में थी वह भी पूरे एक हफ्ते!”

“हां अब लोकेशन के हिसाब से तो यही लगता है कि आपकी भाभी ठीक कह रही है । उनके साथ जो कुछ हुआ वह भी ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के लोगों ने किया।”

“और उस पूरे एक हफ्ते अपने पास रखा है पर उसे छुआ तक नहीं यह बात मुझे हजम नहीं हो रही है!”

“इसमें कोई बड़ी बात नहीं है कि ह्यूमन ट्रैफिकिंग से जुड़े लोगों का काम ही है लोगों को बेचना हो सकता है वह नीलम को जिसे बेचना चाहते हो उस तरफ से ऐसा कोई आदेश हो कि उसे टच न किया जाए!”

“ऐसा क्यों ? उसे टच कर लेते तो क्या हो जाता है!”

“अब क्या पता मैंने अपना एक अनुमान बताया। ऐसी ही कोई बात रही होगी वरना आप खुद सोचिए कि एक लड़की एक हफ्ते गुंडो के साथ जंगल में रही और उसे छुआ तक नहीं गया।”

“ऐसा तभी हो सकता है जब उसका कोई जान परिचित का हो और वो नीलम का ही सकता जिसने उसे टच न किया।”

“आपको लगता है कि आपके भाई की मौत में नीलम का हाथ है उसमें विक्रम ने मदद की जबकि उसकी लोकेशन हरिद्वार पूरे 1 हफ्ते दिखा रहा है और सबसे बड़ी बात ..एक मिनट अगर मान भी लिया जाए कि विक्रम के साथ जंगल में नीलम एक हफ्ते रही तो अगर विक्रम उसे टच भी कर लेता तो उसे क्या हो जाता हम लोगों को यही लगता है कि गुंडो ने यह गलती की उन्होंने उसके साथ कुछ फिजिकल किया होगा कर सकते हैं कोई किसी के साथ जंगल में अकेला, गिरफ्त में हो तो आसानी से कर सकता है उससे क्या साबित हो जाता है!”

“दूर की कौड़ी है पर ऐसा होने पर नीलम की साजिश ओपन हो जाती?”

“कैसे?”

“उसके साथ अगर विक्रम वहां फिजिकल रिलेशन बनाता तो उसके सीमन से पता किया जा सकता था कि उसके साथ रेप किसने किया और जब पता चलता कि उसके पुरानी प्रेमी विक्रम ने उसके साथ रेप किया तो मामला एकदम सीधा हो जाता कि नीलम और विक्रम दोनों मिले हुए हैं । इसीलिए नीलम एक हफ्ते उसके साथ रही पर उससे कोई फिजिकल रिलेशन नहीं बनाया! उसकी यह स्टोरी की ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के लोगों ने उसे अगवा किया उसे एक बंद कमरे में रखा झूठी साबित हो जाती उसने जानबूझकर ऐसा किया था कि पुलिस ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के पीछे पड़ी रहे और उसकी सच्चाई कभी उजागर ना हो जो कि फिलहाल सत्य होती जान भी पड़ रही।”

“आपकी बात में दम तो है!”कुछ सोच कर विजय बोला।

“मुझे अभी भी लगता है कि विक्रम ने ही मेरे भाई को मारा है उसकी लोकेशन जो हरिद्वार में आ रही है पता नहीं कैसे उसने ऐसा इंतजाम किया होगा मेरे ख्याल से उसे शिलांग में ही होना चाहिए। प्लीज आप मेरा भाई और नीलम जहां ठहरे थे या जहां-जहां गए थे आपको तो पता ही है हर जगह पर सीसीटीवी कैमरा उसकी फुटेज चेक कीजिए मुझे लगता है कि विक्रम जरूर शिलांग में ही था और लगातार उनके पीछे रहा होगा मौके की तलाश में। सीसीटीवी कैमरा में जरूर पकड़ा जा सकता है!”

“आपको क्या लगता है कि अगर विक्रम आपके भाई की हत्या में शामिल है और लगातार उनके पीछे था तो उसे क्या नहीं पता होगा कि कई जगह सीसीटीवी कैमरा लगते हैं वह उसमें आ सकता है!”

“नीलम और विक्रम को लगता होगा कि नीलम ने जो कहानी सुनाई है पुलिसों सच मान लेगी और ह्यूमन ट्रैफिकिंग वाले लोगों के पीछे पड़ी रहेगी उनकी तरफ तो कोई सोचेगा कि नहीं और सोचा भी नहीं वह तो मैंने ही खोजबीन की और विक्रम का पता किया आप लोग तो पहले ही मान बैठे थे कि नीलम ने सच कहा!”

ऐसा लगा जैसे विजय के चेहरे पर तमाचा जड़ दिया हो शिल्पी ने वह तिल मिला कर रह गया पर कहा कुछ नहीं।

“ठीक है मैं चेक करता हूं और दिल से आपको इस बात की बधाई देता हूं आपने अपनी खोजबीन में काफी कुछ पता किया है देखते हैं आपकी भाभी की बताई हुई कहानी सच है या फिर आपकी खोज बीन।"

“ठीक है पता कीजिए और जैसे ही पता चल मुझे भी बताइए प्लीज!”

“आपके पिता शिव शंकर भी विक्रम के बारे में बात कर रहे थे उन्हें कैसे पता चला क्या आपने बताया ..पर आप का रिलेशन तो उनसे ठीक नहीं है फिर कैसे?”कुछ देर खामोश रहने के बाद अचानक विजय ने पूछा।

“मुझे जब विक्रम के बारे में पता चला था तो मैं घर पर गई थी, मां से मिली थी ,उन्हीं को सब कुछ बताया था । उन्होंने ही पापा को बताया होगा!”

"आप तो सच में अपने भाई के लिए काफी फिक्रमंद है और खोजबीन भी कर रही हैं पर आपकी मां-बाप का रुझान अभी भी आपकी तरफ नहीं जान पड़ता। मैंने जब उन्हें इस बारे में बताया था तो उन्होंने कहा था कि शिल्पी से कह दे कि इस केस से दूर रहे खोजबीन करने के लिए पुलिस काफी है। मै इस बारे में बताना नहीं चाहता था क्योंकि आपको कष्ट होगा पर फिर सोचा कि बता देता हूं हालांकि मेरी तरफ से ऐसी कोई हिदायत नहीं है!”

“ हूं। उनका यह रवैया नया नहीं है इसलिए मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।”

“हां मैं समझता हूं। जैसे संबंध आपके मां-बाप से हैं कुछ-कुछ ऐसा मेरे साथ भी था जब तक मेरे मां-बाप जिंदा थे उन्होंने भी मुझे कभी दिल नहीं मिलाया हालांकि मैं तो अपने मां-बाप का सौतेला बेटा था मुझे एक गरीब घर से गोद लिया गया था। मेरे पिता परिवार में अकेले थे यानी मैं और मेरे पिता थे उन्हें कोई भयंकर बीमारी थी उनका बचना मुश्किल था शायद इसीलिए मेरे पिता मुझे दूसरे को देने के लिए राजी हुए थे पर मेरे लिए यह कतई अच्छा नहीं रहा शायद अच्छा रहता अगर उनकी कोई अपनी संतान न होती तो । पर बाद मे ईश्वर की

इच्छा से उनके यहां भी लड़का हो गया और फिर मेरी तरफ से उनका ध्यान हटता चला गया एक वक्त ऐसा आया जब मैं उनके लिए सिर्फ और सिर्फ गैर था । इसलिए मैं समझ सकता हूं कि मुझसे उनका दिल ना मिल पाने की वजह है पर आप तो खैर उनकी सगी बेटी हैं फिर भी.. खैर में दुआ करता हूं कि आप सबके रिलेशन अच्छे हो जाएं और सब मिलकर रहे हैं!"

शिल्पी ने एक गहरी सांस भर कर छोड़ी पर उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया फिर उधर से विजय ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

****

शाम हो चुकी थी ।

शिव शंकर बाहर हरे भरे लॉन में कुर्सी पर बैठा हुआ था। नीलम अभी-अभी उसे काफी पकड़ा गई थी और वह उसी को पी रहा था पर विचार मग्न था लगता था ऐसा जैसे कोई गंभीर बात सोच रहा हो।

तभी घर के अंदर से नौकर भागता हुआ उसके पास आया और बोला,"साहब साहब वह मालकिन सोफे पर आराम से बैठी थी अचानक बेहोश हो गई लगता है जैसे दिल का दौरा पड़ा हो!"

शिव शंकर ने आधी कॉफ़ी पी थी । कप वापस मेज पर रखा और लगभग दौड़ते हुए नौकर के साथ घर के अंदर आया । सोफे पर उसकी पत्नी बेहोश पड़ी थी नीलम उसके पास उसे झकझोर कर उसे बुला रही थी कभी पानी के छीटें मार रही थी वह भी बुरी तरह घबराई हुई थी।

"कितनी बार मना किया है ज्यादा सोचा बिचारी ना किया करें। दिल की समस्या है डॉक्टर ने दिमाग पर ज्यादा जोर डालने से मना किया है पर मानता कौन है..!"शिव शंकर ने अपनी पत्नी को पकड़ कर झकझोरा पर उसे होश नहीं आया तो वह गुस्से में बड़बड़ाया ।

"डॉक्टर विमल को जल्दी से फोन करो!"शिव शंकर ने चिल्लाते हुए कहा तो पास खड़ा नौकर बोला,"मैंने पहले ही उन्हें फोन कर दिया है वह आते ही होंगे!"

डॉ विमल उनका फैमिली डॉक्टर था जो उनके बंगले के नजदीक ही रहता था।

शायद इसीलिए शीघ्र ही आ गया। बाहर किसी कार का हॉर्न सुनाई दिया सब समझ गए कि डॉक्टर विमल आ गया है । शिव शंकर ने नौकर को तुरंत बाहर भेजा ताकि वह डॉक्टर को साथ लेकर अंदर आ सके। नौकर भाग कर बाहर गया और उल्टे पैर ही वापस लौटा । उसके साथ डॉक्टर विमल था । डॉक्टर विमल ने आकर तुरंत उसकी पत्नी का चेकअप किया और डॉक्टरी इलाज किया कुछ ही देर में उसकी पत्नी होश में आ गई तो डॉक्टर विमल बोला,"मैंने आपसे कहा था इनको दिल की प्रॉब्लम है उनके सामने ऐसी कोई बात ना हो जिसकी वजह से यह ज्यादा सोच विचार करने लगे उनके लिए घातक हो सकता है आइंदा से ख्याल रखें!"

"आप तो जानते हैं डॉक्टर हमारे इकलौते बेटे की किस तरह दर्दनाक मौत हो गई। मैंने कई बार कहा कि उस बात को भूल जाए पर ऐसी बातें इतनी जल्दी कोई कैसे भूल सकता है फिर भी मैं मैं ख्याल रखूंगा!"

डॉ विमल जानता था अपने इकलौते बेटे की मौत जो कुछ दिनों पहले ही हुई थी उसे भूल

पाना इतनी जल्दी आसान नहीं होता है वह भी एक मां के लिए शायद बिल्कुल नहीं इसलिए डॉक्टर ने धीरे से हां में गर्दन हिलाई और बोला,"मैं समझ सकता हूं पर फिर भी आपको इनका ख्याल तो रखना ही पड़ेगा। नहीं तो उनके लिए घातक हो सकता है हार्ट अटैक आ सकता है उनको एक तो आ ही चुका है!"

बेटे की मौत की खबर जब उन दोनों को हुई थी तो शिव शंकर की पत्नी को हार्ट अटैक आया था सही समय पर डॉक्टर की मदद मिल गई इसीलिए वह बच गई थी । इसी बात को ध्यान में रखते हुए डॉक्टर ने अपनी बात कही थी और शिव शंकर भी इसे अच्छी तरह समझता था इसलिए उसने हामी भरी और कहा कुछ नहीं।

पर अभी डॉक्टर को गए हुए 5 मिनट ही हुए थे कि घर के अंदर शिल्पी ने कदम रखा। इस समय शिव शंकर की पत्नी को होश आ चुका था वह सोफे पर बैठी थी उसके बगल में खुद शिव शंकर बैठा था नीलम उसके पास खड़ी थी।

शिल्पी को वहां देखकर जहां मां चौंक पड़ी थी उसके चेहरे पर भय और दहशत नजर आई थी वहीं शिव शंकर के चेहरे पर भयानक गुस्सा दिखाई दे रहा था। शिल्पी की मा ने एक बार अपने पति की ओर देखा और उसके चेहरे पर गुस्सा देखकर वह समझ गई की अब यहां क्या होने वाला है शिल्पी का वहां आना उसके पति को कभी भी अच्छा नहीं लगा । कोई बखेड़ा खड़ा होगा यही सोच कर वह भयभीत हो गई।

और इससे पहले की उसका पति शिल्पी से कुछ कहता है इससे पहले ही वह खुद ही बोल पड़ी स्वर में उसके हल्का सा गुस्सा भी था,"तुम यहां क्यों आई हो?"

"मैं यहां रहने नहीं आई हूं बल्कि आप सबकी आंखें खोलने आई हूं क्योंकि आप लोगों की आंखों पर किसी ने बड़ी ही मजबूत पट्टी बांध रखी है पर अब उसके खुलने का समय आ गया है!"

"तुम क्या बक रही हो?"शिव शंकर चिल्ला पड़ा।

"आपके चिल्लाने से सच्चाई अब छुप नहीं सकती । मेरे भाई के हत्यारो का अब जेल की सलाखों के पीछे जाने का समय आ चुका है।"शिल्पी ने उनके पास खड़ी नीलम की ओर गुस्से में देखकर कहा।

"तुम क्या कहना चाहती हो जल्दी से कहो और यहां से चली जाओ!" मां बोली।

"तुम्हारे पास खड़ी तुम्हारी बहू इतनी शातिर होगी मैंने भी कभी नहीं सोचा था पर मुझे शुरू से इस पर शक था । आजकल वैसे भी बीवियां पतियों के लिए काल बनी हुई है ।यह आप लोगों की आंखों पर पट्टी बांध सकती है पर मेरे नहीं अब इसके जेल जाने का समय आ चुका है क्योंकि सच्चाई उजागर हो चुकी है!"

"अरे क्या सच्चाई उजागर हो चुकी है ..तुम क्या यह अनाप शनाप बक रही हो मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा । मां जी इसे निकालो यहां से! यह हर बार मुझ पर इल्जाम लगाती रहती है।"

अचानक नीलम भी गुस्से में बोल पड़ी।

"मुझे तो यहां से निकाल दोगी पर अभी पुलिस आ रही है उसे कैसे निकाल दोगी!" शिल्पी के

चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान दिखाई दे और नीलम के चेहरे पर डर।

“प..पुलिस आ रही है!”नीलम के साथ-साथ उसके सास ससुर भी चौंक पड़े।

“हां तुम्हें गिरफ्तार करने के लिए और तुम्हारा वह पुराना आशिक विक्रम तो पहले ही गिरफ्तार हो चुका है अब तुम्हारी साजिश का भांडा फूटने का टाइम आ गया है नीलम जी!”

“यह तुम क्या कह रही हो? विक्रम की लोकेशन तो हरिद्वार में दिखा रहा था यानी वह शिलांग में नहीं बल्कि हरिद्वार में था फिर तुम कैसे कह सकती हो कि उसका पुराना आशिक विक्रम गिरफ्तार क्यों हो गया है।”

“लगता है आपको इंस्पेक्टर विजय ने फोन नहीं किया शायद आप बिजी होंगे इसलिए फोन नहीं उठाया होगा आप खुद ही विजय से फोन लगा कर बात कर सकते हैं सच्चाई क्लियर हो जाएगी!”

शिव शंकर पहले तो सोच में पड़ गया फिर उसने फोन निकाल कर इंस्पेक्टर विजय का नंबर लगाया उससे बात की।

“हेलो शिव शंकर जी नमस्कार मैंने आपको फोन लगाया था पर आपने शायद बिजी होने की वजह से उठाया नहीं होगा!”

शिव शंकर को याद आया वह कुछ देर बाहर लॉन में बैठा था उसका फोन मेज पर रखा था बीवी की तबीयत अचानक खराब हुई उसकी खबर सुनकर घर के अंदर दौड़ा दौड़ा आया था इस चक्कर में फोन उसका पीछे मेज पर छूट गया था विजय ने फोन किया होगा पर वह रिसीव नहीं कर पाया।

“पर बात क्या थी?” शिव शंकर को अपने व्यस्त रहने की वजह पता चल गई थी इसीलिए उसने पर बात जानने के उद्देश्य से विजय से पूछा।

“हम लोगों को लगता था कि विक्रम की लोकेशन हरिद्वार में है तो वह निर्दोष है पर हकीकत इसके उलट है हालांकि पहले मुझे भी ऐसा लगता था फिर शिल्पी जी के सुझाव पर मैंने करण और नीलम जहां-जहां ठहरे थे जहां-जहां गए थे वहां के सीसीटीवी कैमरा की फुटेज देखना शुरू किया और जल्द ही सच्चाई सामने आ गई । सीसीटीवी फुटेज में तीन लड़के जहां नीलम और करण ठहरे थे या जाते थे उनके पीछे देखे गए हालांकि उन तीनों के चेहरे ढके हुए थे समझ में नहीं आ रहा था कि कौन है पर एक जगह पर एक लड़के का चेहरा थोड़ा खुला था ध्यान से देखने पर पता चला कि वह विक्रम है और समझते देर ना लगी कि विक्रम ने अपना फोन हरिद्वार किसी दोस्त के जरिए भिजवाया होगा और खुद करण और नीलम के पीछे शिलांग आ गया उसके साथ दो दोस्त भी थे मैंने राजनगर की पुलिस से उसे गिरफ्तार करने का अनुरोध भी किया था । अब तक तो गिरफ्तार भी हो गया होगा और अब आपकी बहू नीलम की बारी है पुलिस आती ही होगी!”

शिव शंकर को काटो तो खून नहीं पर कुछ पल सन्नाटे में खड़ा रहा पर इससे पहले की वह नीलम से कुछ कहता दरवाजे पर पुलिस देखकर रुक गया।

“शिव शंकर जी मैं आपके बेटे के कत्ल के इल्जाम में आपकी बहू नीलम को गिरफ्तार करने आया हूं!” पुलिस वालों की अगुवाई कर रहा इंस्पेक्टर बोला।

“यह सब झूठ है पापा ! ऐसा कुछ नहीं है। मैंने कुछ नहीं किया है यह इस लड़की की साजिश जान पड़ती है यह चाहती है कि मुझे फंसा कर आप लोगों की हितैषी बन सके और आप लोगों के साथ रह सके इसीलिए इसने यह सब नाटक किया है मैं करण से बहुत प्यार करती थी उसका बुरा नहीं सोच सकती!” जैसे ही इंस्पेक्टर ने उसे गिरफ्तार करने की बात कही नीलम आपे से बाहर हो गई और शिल्पी पर ही इल्जाम लगाने लगी।

नीलम पुलिस को देखकर बेहद घबरा गई थी और जल्दी से चिल्लाने लगी जबकि उसके सास ससुर शांत खड़े थे।

“आपको इंस्पेक्टर विजय ने विक्रम के बारे में तो बात ही दिया होगा वह भी गिरफ्तार हो चुका है!” इंस्पेक्टर नीलमणि ने आगे बढ़कर शिव शंकर से कहा तो उसने हां में गर्दन हिलाते हुए कहा,”उससे मेरी बात हो गई है!”और फिर अचानक वह नीलम की तरफ पलटा और जहर बुझे स्वर में बोला,”सब कहते थे कि तुम्हारी बहु झूठी है शातिर है पर मैंने कभी नहीं माना इसीलिए अपने बेटे की मौत के बाद भी तुम्हें अपने घर में रखा पर मुझे नहीं पता था कि तू एक जहरीली नागिन है जो जिस घर में रहती है उसी घर में रहने वालों को डस लेती है! इंस्पेक्टर ,इससे पहले मुझे गुस्सा आए और मैं कुछ गलत कर बैठा हूं इस चुड़ैल को यहां से ले जाओ । मैं तगड़ा से तगड़ा वकील करूंगा ताकि इसे फांसी की सजा हो सके। इस नागिन को मैं छोड़ नहीं सकता इसने मेरे बेटे को डस लिया है। अरे, तुझे जब अपने पुराने आशिक से ही शादी करनी थी तो फिर मेरे बेटे से शादी क्यों की थी वह बेचारा मासूम निर्दोष था फालतू में मारा गया! देखना मैं इस केस को फास्ट् ट्रैक कोर्ट में शुरू करवाने की अपील करूंगा ताकि जल्द से जल्द इस दुष्ट लड़की को और उसके साथ मिले सभी साथियों को कठोर से कठोर सजा मिल सके।”

“पापा मेरी बात का यकीन कीजिए। ऐसा कुछ नहीं है मेरा करण की मौत में कोई हाथ नहीं है और विक्रम से भी मेरा कोई संबंध नहीं है। वह मुझे भले ही चाहता हो पर मैं उसे नहीं चाहती थी । उसने अगर मेरा नाम लिया है तो वह झूठ बोल रहा है वह मुझसे बदला लेना चाहता है क्योंकि मैंने उसका प्यार ठुकरा दिया था!”नीलम रोकर अपनी सफाई देने लगी।

“इस जहरीली नागिन को यहां से तुरंत ले जाओ इंस्पेक्टर, मैं इसका चेहरा भी नहीं देखना चाहता जितनी जल्द से जल्द हो सके इसे मेरे घर से निकाल दो!”

इंस्पेक्टर के साथ आई लेडी पुलिस ने आगे बढ़कर नीलम के हाथों में हथकड़ी लगा दी। नीलम फिर भी अपनी सफाई देती रही रोती रही चिल्लाती रही मगर उसकी किसी ने नहीं सुनी और पुलिस उसे वहां से लेकर रुखसत हो गई।

“तुम भी जाओ यहां से । तुमने अपने भाई के लिए जो भी किया उसके लिए धन्यवाद मगर यह मत समझना कि हमारे दिल में तुम्हारे लिए कोई चाहत होगी प्रेम जागेगा और दोबारा यहां मत आना!”

सबके सामने बाप ऐसा कहेगा शायद शिल्पी ने सोचा नहीं था इसलिए वह भी नाराज हो गई और पैर पटकती हुई वहां से वापस चली गई।

****

विक्रम और नीलम की गिरफ्तारी बड़ी ही विस्फोटक खबर थी । यह जंगल में लगी आग की

तरह चारों ओर फैल रही थी सोशल मीडिया ,न्यूज़ चैनल ,अखबार हर जगह उनकी गिरफ्तारी की बात छाई हुई थी।

जो भी इस खबर को सुनता था हैरान रह जाता था चर्चाएं शुरू हो जाती थी।

“मुझे तो पहले ही लगता था करण की हत्या में उसकी पत्नी का ही हाथ होगा आजकल ऐसे केस कितने आ रहे हैं आजकल रिश्तों में बड़ी खटास आ चुकी है, बीवी अपने पति को कत्ल करने में जुटी हुई है कोई अपने प्रेमी से मरवा देता है तो कोई उन्हें नीले ड्रम में मारकर भर देता है । अब तो भैया शादी करने से भी डर लगता है क्या पता अगला नंबर हमारा ही लग जाए!”

“तुमने सही कहा यार सच में अब तो शादी करने से ही डर लगने लगा है!”

लोगों में इस तरह की बातें हैं चर्चाएं आम बात हो गई ।

विक्रम और नीलम को गिरफ्तार करके शिलांग ले जाया गया था क्योंकि घटनास्थल शिलांग ही था और कानून की नजर में घटना जहां घटती थी वहीं घटना जिस थाने के अंतर्गत आती थी उसी के अंतर्गत जांच पड़ताल होती थी कानूनी कार्रवाई होती थी।

विक्रम और नीलम को पकड़कर थाने लाया गया था। दोनों को अलग-अलग सेल में बंद किया गया था।

और इस समय एक सेल में विक्रम के सामने इंस्पेक्टर विजय बैठा हुआ था और जांच पड़ताल करने में जुड़ा हुआ था।

“ हूं। तो तुम्हारा नाम विक्रम है,"विजय ने एक नजर विक्रम पर डाली जो उदास परेशान बेचेन लग रहा था और बोला", और नीलम के तुम आशिक हो?"

"क्यों आशिक होना क्या बुरी बात है कानून की नजर में अपराध है?"विक्रम ने उल्टा सवाल किया।

" नहीं । बिल्कुल नहीं। आशिक होना कोई बुरी बात नहीं है ना ही कानून की नजर में अपराध है लेकिन हत्यारा होना बहुत बुरी बात है और कानून की नजर में भी अगर तुम्हें नीलम से शादी करनी थी तो पहले ही कर लेते। बेचारे करण को मारने की क्या जरूरत थी.. चलो खैर शुरू से बताओ तुमने क्या और कैसे किया । क्यों किया यह तो हमें पता है फिलहाल तुम्हारी जानकारी के लिए हम एक बार और बता देते हैं कि तुमने अपनी लोकेशन के बारे में बताया था कि तुम उस समय हरिद्वार में थे जिस समय करण और नीलम शिलांग में थे। तुम्हारे फोन की लोकेशन तो खैर हरिद्वार में ही शो हो रही थी पर वह बात तुम्हारी झूठी साबित हो चुकी है तुमने अपना फोन अपने किसी दोस्त को एक साजिश के तहत देकर हरिद्वार भिजवा दिया था और तुम खुद अपने दो दोस्तों के साथ शिलांग आ गए थे । तुम्हें इस बात का अंदेशा था कि तुम पर शक जा सकता है तुम्हारी लोकेशन ट्रेस की जा सकती है इसलिए तुमने अच्छी चाल चली पर तुम कामयाब नहीं हुए । कामयाब होते भी कैसे अपराधी कितना भी शातिर क्यों न हो वह ऐसा कोई न कोई क्लू तो ऐसा छोड़ ही देता है जिससे वह पकड़ में आ जाता है । तुमने भी वही गलती की इसके बारे में मैं तुम्हें बता चुका हूं फिलहाल फिर बता देता हूं कि करण और नीलम का पीछा करते हुए तुम अपने दोस्तों के साथ शुरू से लगे हुए थे शायद सही मौके की तलाश में थे पर एक जगह तुमने अपने चेहरे से मास्क उतारा था शायद तुम्हें यह नहीं पता था कि वहां सीसीटीवी कैमरा उपलब्ध है इस वजह से तुम पकड़ में आए और

मेरे ख्याल से तुम्हारे पास छुपाने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। इसलिए अगर अपनी ख़ैरियत चाहते हो तो सब कुछ सच-सच बता दो। हो सकता है कानून तुम पर थोड़ी रहम करें ,तो चलो शुरू हो जाओ शुरू से बताओ मुझे तुम्हारा क्या प्लान था? तुमने जो कुछ किया खुद से किया या नीलम की सहमति थी उसमें?"

उस सेल में एक मेज के आमने-सामने लकड़ी की कुर्सियां पड़ी थी जिन पर विक्रम और विजय बैठे थे और वहां कोई नहीं था।

विक्रम का चेहरा उतरा हुआ था। वह बेहद उदास ,परेशान, दुखी लग रहा था। उसकी हालत वैसे ही थी जैसे उसके गले में मछली वाला कांटा फस गया हो जैसे बच्चा कर भी निकल नहीं सकता ।

उसने जोर से थूक गटकी । पर मुंह से कुछ नहीं कहा तो विजय ने उसे हड़काया फिर से याद दिलाया कि उसके साथ क्या-क्या हो सकता है तब उसने गला खकारते हुए कहा,"मैं नीलम से सच्ची मोहब्बत करता था उसके साथ पूरी जिंदगी बिताना चाहता था नीलम भी मुझे शुरू-शुरू में इग्नोर करती रही थी पर फिर मुझे लगता था कि वह भी मुझे चाहने लगी है । मुझे देखकर मुस्कुरा आ जाती थी शर्मा जाती थी । मुझे उसकी अदाएं बहुत पसंद थी। पर मैं उससे अपने प्रेम का इजहार करने ही वाला था पर तभी पता चला उसकी शादी तय हो गई है । मैं बुरी तरह टूट गया था। आप समझ सकते हैं कि एक प्रेमी के दिल पर क्या बीती होगी है जब उसे पता चलता है कि उसका प्रेम कोई और छीन कर ले जा रहा है । मेरी हालत पागलों जैसी हो गई । मेरा बस चलता तो मैं उस समय करण को मार देता!

पर मैं कुछ नहीं कर पाया । हालांकि मैंने नीलम से उसकी शादी के कुछ दिनों पहले इस बारे में बात की तब मुझे पता चला था कि उसके दिल में भी मेरे लिए प्रेम है पर उस समय करण उसे शादी का प्रस्ताव दे चुका था करण से शादी करने का एक कारण और भी था कि वह मंगली थी करण भी मंगली था उसने कहा था कि मंगली लड़का या लड़की की शादी पहले मंगली राशि के लड़का या लड़की से ही होनी चाहिए । बाद में वह किसी से भी शादी कर सकती है । अगर मंगली लड़का लड़की में से किसी की जल्दी डेथ हो जाए और वह दोबारा शादी करना चाहे तो मंगली का दोस् कट जाता है फिर वह किसी से भी शादी कर सकती है कर सकता है ।इस बारे में उसकी बातचीत से लगा था कि वह मुझे प्यार करती है पर बस मजबूर है फिर उसने ही मुझे आईडिया दिया था कि अभी मैं शांत रहूं। उसकी शादी जिस करण से हो रही है वह करोड़पति है करण से शादी करके वह करोड़पति हो जाएगी फिर बाद में करण को मार दिया जाएगा उसकी करोड़ों की दौलत उसकी हो जाएगी और फिर वह मुझसे शादी कर लेगी। उसने ही मुझसे कहा था की शादी के बाद हनीमून के लिए वह करण को शिलांग ले जाएगी शिलांग एक पहाड़ी क्षेत्र है वहां पर किसी का फिसल कर नीचे खाई में गिर कर मर जाना आम बात है कोई मुश्किल नहीं है । ऐसा कुछ दिनों पहले हो भी चुका था सोनम राजा रघुवंशी वाला केस । हालांकि मुझे बताया गया था नीलम के जरिए की शिलांग में ही वह सोचकर बताएगी कि कारण की हत्या कैसी करनी है इसीलिए हम लोग लगातार उन दोनों के पीछे थे इस मौके की तक में की कब नीलम हमें इशारा करें और हम करण का काम तमाम कर दें । वही नीलम ने करण की हत्या का प्लान इस तरह बनाया की उसकी हत्या का इल्जाम ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग वालों की तरफ चल जाए । जिस रोड पर उनकी कार का एक्सीडेंट हुआ था वहां पहले भी एक दो एक्सीडेंट हो चुके थे लोगों में यह भ्रम है कि वहां पर

कोई प्रेत आत्मा रहती है जो यह हादसा करती है यह जानकारी नीलम को थी उसने ही मुझे बताया। उसने ही कहा था कि वह करण को लेकर वहां जाएगी ऐसा उसका प्लान था और कार का एक्सीडेंट करावेगी और वहीं पर करण को मारने का प्लान था इसीलिए मैं अपने दो दोस्तों के साथ शिलांग गया था और लगातार उन लोगों के पीछे था।

करण के साथ जब-जब में नीलम को देखता था मुझ पर खून सवार हो जाता था पर सही मौके की तलाश थी।

और फिर प्लान के मुताबिक कार का एक्सीडेंट हुआ हम लोग क्योंकि शुरू से ही पीछे थे नीलम ने हमें महामंडलेश्वर देवी के मंदिर में इशारे से बता दिया था कि आज वह उन्हें करण को खत्म करने का मौका देगी तो हम वहां पर पहुंच गए थे । नीलम को हमने पकड़ लिया था।

“करण को होश आ गया था उसने तुम लोगों से विरोध किया इसीलिए तुमने उसे मार डाला हालांकि उसे मारने का प्लान तो तुम्हारा पहले ही था!”

“नहीं करण को होश नहीं आया था वह बेहोश था पर हम किसी कीमत पर उसे छोड़ना नहीं चाहते थे इसलिए हमने उसे गोली मार दी। और फिर उठाकर उसे खाई में फेंक दिया!"

" खाई में क्यों फेंका?"

“ उसका कारण था कि हमें मामला लगभग 1 हफ्ते 10 दिन तक उलझन था अगर उसकी बॉडी सड़क पर होती है तो शायद पहले ही पता चल जाती इसलिए उसे खाई में फेंकना पड़ा दूसरे नीलम रिस्क नहीं लेना चाहती थी। इसीलिए हमने करण की बॉडी को उठाकर खाई खाई में फेंक दिया ताकि जंगली जानवर उसकी बॉडी को खा पीकर निपटा दें। हमें पता था उस इलाके में काफी जंगली जानवर भी रहते हैं! दूसरे उसकी बॉडी मिलती और उसके पोस्टमार्टम में पता चल जाता कि उसकी हत्या हुई है । हम पर कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि हमने दूसरी स्टोरी सेट कर रखी थी। वही जो सबको पता है वह स्टोरी भी नीलम ने ही तैयार की थी कि रास्ते में उनका एक्सीडेंट हुआ बाई चांस ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग से जुड़े लोग वहां से गुजरे उन्होंने उसे किडनैप करना चाहा करण ने विरोध किया तो उसे मार कर उन्होंने खाई में फेंक दिया और उसे किडनैप करके अपने साथ ले गए। उसने झूठ कहा था कि करण को होश आया और करण उनसे भिड़ गया था इसलिए उन्होंने करण को मार दिया। सब कुछ इसलिए कहा था ताकि बात एकदम सच्ची लगे। पुलिस का सारा ध्यान ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के तरफ हो जाता । कभी भी सच्चाई सामने नहीं आती है। पर सब कुछ गड़बड़ हो गया। मेरी एक गलती ने सब कुछ तबाह बर्बाद कर दिया हमारे अच्छे भले प्लान की ऐसी तैसी कर दी।"

"रिवाल्वर का इंतजाम कैसे और कहां से किया था क्योंकि मुझे नहीं लगता कि वह तुम्हारा लाइसेंस रिवाल्वर था?"

"वह मैंने हासिल किया था एक दोस्त के जरिए पैसे देकर!"

“ हूं, तो तुम्हारे कहने का मतलब है कि करण को मारने का प्लान है नीलम और करण की शादी से पहले ही बन गया था!”

“हां पर उसे मारना कैसे है यह शिलांग में ही नीलम तय करती। मुझे नीलम की बात सही लगी थी । उसका प्लान एकदम जबरदस्त था। उसका आईडिया एकदम परफेक्ट था । करण से शादी करने के बाद वह करोड़ों की मालकिन बन जाती है करण को रास्ते से हटा देती !

कुछ दिनों बाद वह करोड़पति बन जाती फिर मैं उससे शादी कर लेता और चैन से रहते हम दोनों।"

"कैसे? उसके मां-बाप तो जिंदा थे उनके रहते कैसे वह करोड़पति हो जाती है?"

"नीलम को पता था उसकी सास को हृदय की बीमारी है उसे लगता था कि शायद करण की मौत की खबर सुनकर उन दोनों में से कोई न कोई तो टपक ही जाता । जो बचता आगे चलकर उसका भी द एंड कर देते इस ढंग से की किसी को कुछ पता नहीं चलता फिर तो नीलम अकेली वारिस होती है करोड़ों की संपत्ति की। वह सब कुछ बेंच देती और मेरे साथ शादी करके चैन से रहती है ऐसा ही हमारा प्लान था!"

विक्रम के पास पड़ी दो कुर्सियों पर उसके दोनों दोस्त बैठे थे एक जो कारण के कत्ल के वक्त उसके साथ शिलांग में था और दूसरा जिसने उसके फोन को हरिद्वार ले जाकर उसकी लोकेशन के जरिए भ्रम फैलाने की कोशिश की थी विक्रम की निशान देही पर दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया था।

विक्रम से बात होने के बाद विजय ने उन दोनों की ओर देखा।

"तुम्हारा क्या रोल था?"

"मुझे तो विक्रम ने अपना फोन लेकर हरिद्वार जाने के लिए कहा था और एक हफ्ते वहीं रुकने के लिए बस मैं इसका फोन लेकर एक हफ्ते हरिद्वार में ही बना रहा इसके अलावा मेरा और कोई रोल नहीं है!"इसका एक दोस्त जिसका नाम सुनील था तुरंत बोल।

"और तुम्हारा?"विजय ने दूसरे दोस्त विनय की ओर देखा।

उसने जोर से तुक निकली इतनी जोर की उसकी आवाज स्पष्ट तौर पर सुनाई दे फिर वह बोला,"मैं विक्रम के साथ शिलांग में था मर्डर के वक्त शायद इसे मेरी मदद की जरूरत पड़ती इसलिए हालांकि इसने बेहोश कारण का गला दबा कर अकेले ही काम कर दिया था। मुझे कुछ करना नहीं पड़ा था ऐसी कोई नौबत ही नहीं आई थी बस ऐसे समझ सकते हैं जैसे कर में या किसी वाहन में स्टेप नहीं होती है जो जरूरत के वक्त इस्तेमाल की जाती है जरूरत ना हो तो उसे इस्तेमाल नहीं किया जाता है बस मैं भी वैसे ही था साहब और मेरा कोई कसर नहीं है।"

"तुम दोनों विक्रम की मदद क्यों कर रहे थे?"

"एक तो विक्रम हमारा दोस्त था दूसरे इसने हमसे कहा था कि इसे अपना प्रेम वापस चाहिए और फिर यह हमें 50-50 हजार भी दे रहा था।"

"तो तुम लोगों को रुपए मिल गए?"

" हां।"

"पैसे का इंतजाम कहां से किया खुद से दिया या उधार लिया था या फिर नीलम ने दिया था?"

"करण को करने के बाद उसके शरीर में से जो आभूषण मिले थे उसी को बेचकर इन दोनों को पैसे दिए थे!"विक्रम बोला।

" हूं। अब इंतजार करो कड़ी सजा पाने का।"

दोनों विक्रम का चेहरा देखने लगे।

"हमसे गलती हो गई साहब बहुत बड़ी गलती हो गई हमें माफ कर दो।"

"मेरे माफ करने ना करने से कुछ नहीं होता है कोर्ट तय करेगा जो भी करेगा फिलहाल माफी तो भूल ही जाओ! वैसे यह दोनों जो कह रहे हैं सब कुछ सच है विक्रम?"

"हां यह दोनों सच कह रहे हैं!"

"तुमसे नीलम ने कहा था कि जब उसके पास दौलत आ जाएगी तो वह रुपए देगी और तुम इनको दोगे!"

"हां वरना मेरे पास इतना रुपए कहा मैं कहां से देता है वह तो मैं नेहा के कहने पर ही इसे कहा था हम लोगों को भी लगता था कि महीने दो महीने में ही नीलम के पास इन्हें देने लायक पैसा हो जाएगा!"

"नीलम ने पैसा दिया था?"

"अभी कहां अभी तो उसके पास ही नहीं था वह घर वालों से अगर ₹100000 मांगती तो उन्हें शायद शक हो जाता है इसलिए अभी फिलहाल महीने दो महीने तो पैसे की बात ही नहीं करनी थी और फिर आगे चलकर तो सारी दौलत नीलम की ही होनी थी!"

" हूं। तुम्हारा प्लान तो वाकई में खतरनाक था।,"विजय उसकी प्रशंसा करते हुए बोला," पूरे परिवार को ही साफ करने की सोच रहे थे जबकि उनका कोई भी दोस् नहीं था । अरे तुमको शादी करनी थी तुम लोगों को तो करण से साफ मना कर देते हैं तुम लोग आपस में शादी कर लेते लेकिन नहीं तुम लोगों के मन में करोड़पति बनने का लालच भी आ गया था यह लालच ना बहुत बुरी बला है यह सब के लिए घातक हो जाती है। न जाने कितनी जिंदगी इसमें तबाह हो जाती है लालच कभी नहीं करना चाहिए । सही समय पर तुम्हारे बारे में पता चल गया नहीं तो तुम करण का पूरा घर साफ कर देते।

अब दुआ करो कोर्ट तुम पर रहम करें। हालांकि करेगा नहीं मुझे ऐसा लगता है क्योंकि तुमने नीलम के साथ मिलकर जो भी कांड किया है उसके लिए तुम्हारी सजा बहुत बड़ी होनी चाहिए। मैं कोशिश करूंगा कि तुम्हारे जैसे लोगों को सख्त से सख्त सजा हो ताकि एक उदाहरण बने और आइंदा से कोई ऐसा ना करें।

विक्रम बस उसे देखता रहा। इसके अलावा वह कर भी क्या सकता था।

****

“विक्रम ने पुलिस को बताया था कि वह हरिद्वार में था उस दौरान जब आप और करण शिलांग में थे। हमने उसके फोन की लोकेशन ट्रेस की वह भी हरिद्वार में ही दिख रही थी पर हमें उस पर शक था इसलिए हमने शिलांग में आप जहां-जहां ठहरी थी वहां के सीसीटीवी फुटेज खंगाले। हालांकि उम्मीद कम ही थी कि ऐसा कुछ हमारे हाथ लगेगा पर वह कहते हैं ना की अपराधी कितना भी शातिर क्यों ना हो कई बार ज्यादा स्मार्ट बनने के चक्कर में वह कोई ना कोई ऐसी गलती कर देता है जो उसके गले की फांस बन जाता है और वही हुआ पर हमारे लिए अच्छा रहा और तब हमें पता चला कि विक्रम अपने दोस्तों के साथ लगातार तुम लोगों

के पीछे था हालांकि उसने इंतजाम पूरा कर रखा था तीनों ने अपने सर ,मुंह ढके हुए थे पर एक जगह बाई चांस कहो या उसकी बदकिस्मती उसने अपने सर से उस मास्क को हटाया था और उसका चेहरा दिख गया था और तब साजिश का पर्दाफाश हुआ। हमें पता चल गया कि विक्रम हमसे झूठ बोल रहा है उसने अपना फोन एक दोस्त को देकर हरिद्वार भेज दिया था और खुद दो दोस्तों के साथ शिलांग चला गया था। फिलहाल तो यह बात उसने स्वीकार भी कर ली है।"

इंस्पेक्टर विजय लगातार नीलम आंखों में देख रहा था।

“यह सब आप मुझे क्यों बता रहे हैं?” पर नीलम ऐसा लग रहा था जैसे उस पर कोई असर ही ना हो वह दूसरी सेल में चुपचाप बैठी थी उसके चेहरे पर ऐसा कोई भी भाव नहीं था जिससे लगता हो कि वह डरी हुई है। मेज के दूसरी तरफ कुर्सी पर बैठा विजय उसे लगातार घूरे जा रहा था।

“क्योंकि विक्रम आपका बॉयफ्रेंड है! उसने तो सच्चाई कबूल कर ली है आप भी कबूल कर लीजिए। नहीं तो सच कबूलवाने के हमारे पास और भी तरीके हैं।”

विजय ने उस सेल में थोड़ी दूर पर खड़ी है लेडी पुलिस जिसके हाथ में मोटा डंडा था उसकी तरफ देखा तो उस लेडी ने अपने डंडे को हाथ में लेकर उसे दूसरे हाथ में ठोकने लगी ऐसा लगा जैसे बस विजय का इंतजार कर रही हो नीलम को कूटने के लिए। नीलम ने एक नजर उसकी ओर डाली अब लगा जैसे वह घबराई हो। उसने जोर से थूंक निगली।

“उसने क्या सच्चाई कबूल कर ली?” फिर वह डरे सहमे में स्वर में बोली।

“1 मिनट.. मैं आपको सुनवाता हूं!”

इंस्पेक्टर विजय ने विक्रम के बयान को जो की रिकॉर्ड कर लिया था एक सिपाही को बुलाकर इंतजाम किया और फिर विक्रम ने जो कुछ कहा था सब कुछ रिकॉर्डर में सुनाई देने लगा बाकायदा वीडियो रिकॉर्डिंग की गई थी।

नीलम उसकी बात को ध्यान से देख और सुनती रही बीच-बीच में उसके चेहरे के भाव तेजी से बदलते रहे।

और जब विक्रम का पूरा बयान समाप्त हुआ तो विजय ने पूछा,”अब बताइए आपका क्या कहना है?”

नीलम कुछ पल बोली नहीं।

“बोलिए अब चुप रहने से कोई फायदा नहीं होगा । मैंने पहले ही कहा हमारे पास सच्चाई जानने के लिए और भी कई तरीके हैं बिना जोर जबरदस्ती के स्वीकार कर ले तो ज्यादा बेहतर है!”

दूर खड़ी लेडी पुलिस फिर से डंडे को अपने दूसरे हाथ में ठोकने लगी।

नीलम ने एक गहरी सांस भर कर छोड़ी और फिर बोली,”हां मैंने ही करण को मरवाया। विक्रम ने और उसके दोस्तों ने मिलकर उसे मारा है!”

“आपने ऐसा क्यों किया अगर आपको विक्रम से प्रेम था तो आप विक्रम से आराम से शादी

कर सकती थी आपको कौन रोकता था? आपने एक सीधे-साधे भोले भाले करण को बेकार में बली का बकरा बना दिया। यह तो सरासर गलत है।"

" आप नहीं समझोगे!"

" मैं क्या नहीं समझूंगा ,आप समझाइए मैं समझने की कोशिश करूंगा। "

लगा नीलम जैसे कुछ सोच रही हो कुछ पल बाद उसने गहरी सांस भरकर छोड़ी और फिर कहना शुरू किया।

"मैंने अपनी पूरी जिंदगी ग़रीबी में गुजारी रही है मुझे पता है गरीबी में जीना कितना मुश्किल है अगर करण मेरी जिंदगी में नहीं आता तो शायद मैं विक्रम से शादी कर लेती और जिंदगी भर गरीबी में ही जीती क्योंकि मुझे उसकी आदत पड़ गई थी पर दिल के किसी कोने में अमीर बनने का सपना हमेशा से रहा है। मैं भी सोचती थी जब फिल्म और टीवी में अमीर लोगों को देखी थी विकास मेरे पास भी इतना पैसा होता तो मैं भी इसी तरह अच्छी जिंदगी गुजारती ।

ऐसे में मुझे करण मिला उसने खुद से अपने मन से मुझे प्रपोज किया था अपने बारे में सब कुछ बताया था मुझे लगा कि मेरा सपना खुद सच होने के लिए मेरे पास चल कर आया है। पैसे प्रपोजल को मैं चाह कर भी ठुकरा नहीं सकती थी पर हकीकत में मैं विक्रम से प्रेम करने लगी थी और उससे ही शादी चाहती थी मैं बड़ी दुविधा में थी। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं । मेरी स्थिति ठीक वैसी ही थी जैसी किसी कहानी में किसी देवी को प्रसन्न करने के बाद उस भक्त की थी जिससे देवी ने कहा था कि मेरे दोनों हाथों में दो कटोरा हैं एक में ज्ञान है दूसरे में धन तुम इनमें से एक को चुन लो और वह भक्त दुविधा में पड़ गया था क्योंकि उसे दोनों ही चाहिए थे । मेरी भी ऐसी ही स्थिति थी मुझे पैसा भी चाहिए था और विक्रम भी । जब मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था तब फिर मैंने विक्रम ने मिलकर प्लान बनाया!"

"करण से शादी करके उसे मार कर उसकी दौलत हासिल करना और फिर अपने सच्चे प्रेमी विक्रम से शादी करके जिंदगी गुजारने का?"

"हां हमने ऐसा ही प्लान बनाया था । हम पूरी जिंदगी गरीबी में नहीं गुजरना चाहते थे। अमीर बनने का सुनहरा अवसर हमारे पास खुद चल कर आया था । उसे मै किसी भी कीमत पर ठुकरा नहीं सकती थी इसीलिए!"

"प्लान क्या था?"

"विक्रम बता तो चुका है बार-बार एक ही सवाल क्यों पूछ रहे हो?"

"मैं आपके मुंह से सुनना चाहता हूं!"

"कुछ दिनों पहले शिलांग में राजा सोनम और राजा रघुवंशी वाला केस हुआ था हमने उसी से आइडिया लिया पर थोड़ा दिमाग लगाकर। मैंने विक्रम से कहा था मैं करण के साथ वहां जाऊंगी वहां पर मैं जानबूझकर ऐसे रास्ते से जाऊंगी और एक्सीडेंट करा आऊंगी उसके बाद वह मुझे किडनैप कर लेगा । करण को मार कर खाई में फेंकने का प्लान था। बाद में केस की दिशा ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग यानी उनका नाम लगाकर लगाना था पुलिस उस गैंग के पीछे पड़ी रहती और हमारा काम हो जाता इसलिए विक्रम ने पहले अपना फोन देकर अपने दोस्त

को हरिद्वार भेज दिया था पर उसकी एक गलती हम पर भारी पड़ गई उसको पता नहीं क्या जरूरत पड़ गई कि उसने अपने चेहरे से मास्क हटा दिया था और उसका चेहरा सीसीटीवी में आ गया था ऐसा ना होता तो आप हमारे प्लान तक कभी नहीं पहुंच पाते!"

"सही कहा एकदम सही कहा अगर विक्रम के चेहरे से मास्क ना हटा होता तो हम आप तक कभी नहीं पहुंच पाते शायद। आपने काफी तगड़ा प्लान रचा। हम लोग सच में ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग वालों के पीछे ही पड़े रहते और केस की तह तक कभी नहीं पहुंच पाते । पर अपराध और अपराधी कभी बच नहीं सकते वह कोई न कोई गलती तो ऐसे करते ही है जिससे उनका अपराध पकड़ में आ जाता है क्राइम नेवर पेज!"

कुछ पल वहां शांति से बीते।

"तो आप कबूल करती है करण की हत्या अपने करवाई विक्रम के जरिए!"

"एक ही बात बार-बार पूछने को लगता है तुम्हें आदत है?"

नीलम पहली बार गुस्से में बोली।

" हां शायद पर मुझे बार-बार सुनने की भी आदत है आप एक बार फिर से कह दे मै सुनने के लिए तैयार हूं ..तो आप स्वीकार करती हैं कि करण की हत्या आपने करवाई?"

" हां।"आखिरकार नीलम को कहना ही पड़ा।

पर अगले दिन सभी न्यूज़ चैनल पर अखबारों में सोशल मीडिया पर बस इसी बात की चर्चा थी की एक बार फिर रिश्ते कलंकित हुए पत्नी ने अपने पति की प्रेमी के साथ मिलकर हत्या करवाई। ऐसे पवित्र रिश्ते भी आजकल कलंकित होते जा रहे हैं और कई जगह न्यूज़ चैनल पर इस बात की डिबेट चल रही थी कि आखिर रिश्तो में इतनी भारी दरार गुस्सा नफरत पैदा क्यों हो रही है।

*****

शिव शंकर के पहुंच के चलते यह केस फास्ट ट्रैक कोर्ट में शुरू होने जा रहा था।

अदालत इस समय खचाखच भरी थी। अदालत के बाहर मीडिया कर्मियों की बहुत भीड़ इकट्ठी थी क्योंकि आज अदालत में करण मर्डर केस की सुनवाई होनी थी। और शायद आज ही फैसला आने वाला था इतिहास में ऐसा पहली बार होने जा रहा था क्योंकि पुलिस का दावा था उसके पास अपराधियों के खिलाफ पक्का सबूत है अपराधी अपना जुर्म कबूल कर चुके हैं और कोर्ट ने भी तय किया था कि ऐसे मामलों को ज्यादा देर तक टालने से कोई फायदा नहीं है जल्द से जल्द निर्णय होगा अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा मिलेगी केस सालों पेंडिंग नहीं पड़ेंगे तो शायद ऐसे केस में ऐसे मामलों में रुकावट आए और इसीलिए इतिहास में ऐसा पहली बार होने जा रहा था।

अदालत के अंदर एक कटघरे में नीलम खड़ी थी। जिसका सर झुका था और दूसरे कटघरे में विक्रम खड़ा था। उसके दोनों दोस्त सुनील और विनय जिन्होंने करण हत्या में उसका सहयोग किया था वह भी खड़े थे। उनमें से एक दोस्त विक्रम के साथ उसी के अनुसार मर्डर के वक्त उसके साथ था तो दूसरे ने उसका फोन हरिद्वार में ले जाकर उसकी लोकेशन के जरिए भ्रम फैलाने की कोशिश की थी।

दर्शक दीर्घा में भी काफी भीड़ थी शिव शंकर और उसकी पत्नी और उसके परिचित के लोग बैठे थे तो भीड़ में पीछे शिल्पी भी बैठी थी। जहां शिव शंकर और उसकी पत्नी उर्मिला देवी के चेहरे पर काफी गुस्सा दिख रहा था वही शिल्पी के चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे उसे परम सुख मिल रहा है उसकी ही इन्वेस्टिगेशन की वजह से यह मामला कोर्ट तक पहुंचा था शायद उसे अपने आप पर गर्व हो रहा था। इंस्पेक्टर विजय सब इंस्पेक्टर आदित्य कटघरे से कुछ ही दूरी पर खड़े थे और उसके साथ और भी कई पुलिस वाले थे सब जज का इंतजार कर रहे थे।

और फिर जब जज साहब आए अपनी कुर्सी पर विराजमान हुए। इससे पहले लोगों ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया और फिर सब यथा स्थान पर बैठ गए । अदालत में पूर्ण रूप से खामोशी पसरी थी।

एक वकील जिसे शिव शंकर ने हायर किया था उसका नाम मृदुल पांडे था वह अपनी जगह से खड़ा हुआ । वह बेहद प्रतिष्ठित और बड़ा वकील माना जाता था। उसके सामने किसी भी वकील को टिकने नहीं देता था । शिव शंकर ने जानबूझकर ऐसा महंगा वकील किया था ताकि अपराधी बच ना पाए उसका रिकॉर्ड था आज तक कोई केस हारा नहीं था। सब उसका बड़ा सम्मान करते थे हालांकि वह अभी यंग था पर यंग एज में ही काफी अचीव कर चुका था। जितना अन्य किसी के लिए सपने जैसा होता है।

“ मिलॉड ,कटघरे में जो आपके सामने यह साधारण सी दिखने वाली लड़की खड़ी है यह सिर्फ दिखने में साधारण है जबकि हकीकत में यह बेहद शातिर और तेज दिमाग की लड़की है । इसने अपने प्रेमी विक्रम,”मृदुल ने दूसरे कटघरे में खड़े विक्रम की ओर इशारा करके कहा,”की मदद से अपने पति की हत्या करवाई है जिसमें विक्रम के दोस्तों ने भी पूरा सहयोग किया है पुलिस इन दोनों के बयान रिकॉर्ड कर चुकी है! पहले आप दोनों के रिकॉर्ड बयान सुनिए!”

दोनों के रिकॉर्डिड बयान जज को सुनाए गए । पूरी अदालत में जितने लोग थे सभी ने सुना । बयान सुनते ही शिव शंकर उसकी पत्नी के चेहरे पर घोर नफरत नजर आने लगी वह नीलम को ऐसे देख रहे थे जैसे उससे बड़ा दुश्मन उनका कोई नहीं है।

जज ने दोनों के बयान ध्यान से सुने ।

“अब दोनों जब अपना अपराध स्वीकार कर चुके हैं तो मेरी अदालत से दरख्वास्त है कि इनको ऐसी कड़ी से कड़ी सजा दी जाए जो एक उदाहरण बने और आगे से ऐसा कोई भी करने की हिम्मत ना जुटाए दैट स आल मिलार्ड!”

इतना कह कर वकील अपने स्थान पर बैठ गया।

अदालत में पूर्ण रूप से सन्नाटा पसरा था । जज ने विक्रम और नीलम उसके अन्य साथियों की ओर देखा , विक्रम से पूछा,”क्या तुम्हें अपना अपराध स्वीकार है!”

विक्रम ने अपने साथियों की ओर देखने के बाद एक नजर नीलम पर डाली जो सर झुकाए खड़ी थी फिर उसने धीरे से कहा,”अब इंकार करने से कोई फायदा नहीं है जज साहब, हां हम अपना अपराध स्वीकार करते हैं!”

विक्रम के साथ-साथ उसके दोस्तों ने भी अपना अपराध स्वीकार किया ।

"तुम लोगों का कोई वकील है?"जज ने पूछा।

"हमें वकील का क्या करना है जब हम अपना अपराध स्वीकार कर रहे हैं जज साहब!"

फिर जज ने नीलम की ओर देखा और कहा,"तुम्हे अपना अपराध स्वीकार है?"

नीलम ने पहली बार सिर उठाया सब की ओर देखने के बाद जज की तरफ देखकर बोली,"मेरा जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था कुछ सालों बाद मां-बाप की डेथ हो गई। मुझे मेरे चाचा चाची ने पाला। मैं यह नहीं कह रही कि उन्होंने मेरी परवरिश में कुछ कमी की पर गरीब लोग बच्चों की कितनी परवरिश कर सकते हैं यह सब जानते हैं पर मेरे मन में अमीर बनने की ख्वाहिश शुरू से थी पर मुझे ऐसा कोई भी अवसर प्राप्त नहीं हुआ न ही पढ़ाई करके अच्छी नौकरी कर पाई और न बिजनेस करके बड़ी बन पाती क्योंकि पैसा नहीं था फिर ऐसे में मुझे करण मिला उसने खुद से मुझे प्रपोज किया था कि वह मुझे पसंद करता है अपने बारे में भी बताया मुझे लगा कि शायद किस्मत मुझ पर मेहरबान है। मेरा अमीर बनने का सपना खुद व खुद सच होने वाला है! और इसीलिए मैंने करण से शादी की थी । मैं करण को बहुत चाहने लगी थी वह भी मुझे बहुत चाहता था। मैं करण की हत्या के बारे में सोच भी नहीं सकती!" उसके बयान ने अदालत में धमाका किया। हर कोई भौचक था। सबको उम्मीद थी कि आज तो नीलम को और बाकी के अपराधियों को कड़ी सजा मिलेगी पर यहां तो नीलम अपने बयान से मुकर गई थी।

"पर तुमने बयान तो दिया है अपना अपराध भी स्वीकार किया था!" हैरान परेशान वकील मृदुल नेट तुरंत खड़े होकर नीलम से पूछा था।

"वकील साहब,वह बयान मैंने पुलिस से डर कर दिया था अगर मैं ऐसा नहीं करती तो पुलिस वाले पता नहीं मेरे साथ क्या सलूक करते! मैंने पहले ही कहा मेरा संबंध बेहद गरीब परिवार से है मैंने कई बार देखा है पुलिस अपराधी के साथ कितनी बुरी तरह पेश आती है। शिवा जी द बॉस मैं मैंने देखा है की रजनीकांत की साथ पुलिस लॉकअप में कैसा बर्ताव करती है इसके अलावा भी मैंने कई ऐसी फिल्में देखी है कहानी पड़ी है और सच में भी देखा है की पुलिस आम आदमी के साथ कितना बुरा बर्ताव करती है इसीलिए मैं डर गई थी। पुलिस को जो बयान मैंने दिया है वह डर कर दिया है जज साहब! आप मेरा यकीन कीजिए मैं अपने करण की मौत में मेरा कोई हाथ नहीं है। कैसे हो सकता है जज साहब मैं तो उसे बहुत चाहती थी! वह भी मुझे बहुत प्रेम करता था। एक करोड़पति घर का लड़का होने के बावजूद उसने मुझे ऐसी गरीब लड़की को चुना था मेरे लिए यह सौभाग्य की बात थी बड़े गर्व की बात थी फिर आप खुद सोचिए मैं भला उसकी हत्या क्यों करूंगी जो कुछ कारण का था वह मेरा था।"इतना कहकर नीलम रोने लगी।

अदालत में एक बार फिर से सन्नाटा पसर गया सबके चेहरे पर हैरानी थी।

जज ने वकील की ओर देखा वकील फौरन अपनी जगह पर खड़ा हुआ और नीलम के कटघरे के पास आकर गुस्से में बोला,"सामने कटघरे में खड़ा विक्रम क्या तुम्हारा प्रेमी नहीं है? क्या शादी से पहले तुम्हारा इससे अफेयर नहीं था?"

नीलम ने आंसू पोछे। उसके चेहरे पर जरा भी क्रोध नहीं था वकील की बात सुनकर उसने जज की ओर देखकर उदास होकर कहा ", विक्रम मुझे चाहता था यह बात सच हो सकती हैं मुझे भी ऐसा महसूस होता था पर हकीकत यह है कि मेरे दिल में उसके लिए वह चाहत प्रेम

नहीं था जिसकी वह ख्वाहिश करता था!”

वकील ने विक्रम की ओर असहाय भाव से देखा। विक्रम के चेहरे पर भी ऐसा लग रहा था जैसे घोर हैरानी हो। उसके साथ खड़े दोनों दोस्तों के चेहरे पर भी उलझन के भाव थे वह कभी नीलम को तो कभी विक्रम को देखते थे।

“मतलब आप कहना चाहती हैं कि आप विक्रम से प्यार नहीं करती थी तो वह क्या पागल है वह खुद से करण की हत्या क्यों करेगा क्यों अपना करियर तबाह,बर्बाद करेगा?”

“मैंने यह तो नहीं कहा कि विक्रम मुझे प्यार नहीं करता था वह मुझे प्यार करता हो सकता है शायद मेरे दिल में भी उसके लिए थोड़ी बहुत फीलिंग जगी थी पर वह मोहब्बत तक नहीं पहुंच पाई थी क्योंकि तभी मेरी मुलाकात करण से हुई और मेरा सारा ध्यान सारी मोहब्बत करण से हो गई थी! करण की तरफ मेरा रुझान इसलिए भी ज्यादा था क्योंकि जिस तरह मैं मंगली थी उसी तरह कारण भी मंगली था हम दोनों की शादी आराम से हो सकती थी और दूसरा उसका अमीर होना और अच्छे स्वभाव का होना भी मायने रखता था। जबकि विक्रम से मेरा ऐसा कोई नाता नहीं था यह मन ही मां मुझे चाहता होगा इस पर तो मेरा कोई जोर नहीं है। हर आदमी अपने मन में किस चाहता है किस नफरत करता है इससे दूसरे आदमी को कैसे पता चलेगा और उसे क्या मतलब हो सकता है। अब विक्रम से पूछ सकते हैं क्या मैंने उसका प्यार स्वीकार किया था क्या उसके पास ऐसा कोई एविडेंस है जो यह साबित कर सके कि मैं उससे प्यार करती थी गहरे प्यार करने वाले अक्सर मेलजोल करते हैं साथ में मिलते हैं जुलते हैं बैठते हैं बातें करते हैं फोटो खिंचवाते हैं खींचते हैं फोन पर घंटों बात करते हैं ऐसा होना आजकल के प्रेमियों में आम बात है । क्या ऐसा कुछ है इसके पास!

वकील ने फौरन विक्रम की ओर देखा तो विक्रम बगले झांकने लगा।

"यह झूठ बोल रही है वकील साहब यह मुझे प्यार करती थी किसने ही करण की हत्या के लिए मुझसे बात की थी मुझे क्या पागल कुत्ते ने काटा है जो मैं अपनी तरफ से ऐसा कुछ करुंगा!"विक्रम गुस्से में चिल्लाया।

"तुम्हारे पास ऐसा कोई सबूत है जो यह बात साबित कर सके?"वकील ने विक्रम से पूछा तो वह बगले झांकने लगा।

“यानी आप यह कहना चाहती हैं कि प्यार सिर्फ विक्रम की तरफ से था आपकी तरफ से नहीं?” फिर वकील नीलम की तरफ पलटा।

“हां मैं यही कहना चाहती हूं। कोई भी लड़की हो लड़का उसकी तरफ किसी नजर से देखा है वह तुरंत जान जाती है विक्रम को भी मैंने अपने आसपास कई बार घूमते हुए देखा था तो मुझे लगा था कि उसके मन में मेरे लिए प्रेम जैसी कुछ फीलिंग है पर मेरे मन में वैसी कोई फीलिंग परवान नहीं चढ़ पाई थी हां यह हो सकता है कि करण मेरी जिंदगी में ना आता तो शायद मेरा रुझान इसकी तरफ हो जाता।"

“यह झूठ बोल रही है इसके दिल में भी मेरे लिए प्यार था तभी तो मैं इसकी तरफ खिंचा था! मेरे सामने से अक्सर यह मुस्कुरा कर गुजरती थी मेरी तरफ तिरछी नजरों से प्यार भरी नजरों से देखी थी अब यह उल्टा बयां कर रही है।"

“अगर ऐसा था तो तुम्हारे पास कोई ऐसा सबूत है जो यह साबित कर सके कि तुम दोनों गहरे

प्रेम में थे अभी तो नीलम की बात सुनकर ऐसा लग रहा है कि तुम्हारा प्यार एक तरफा प्यार था?"बीच में जज ने विक्रम से कहा विक्रम बगले झांकने लगा।

"बोलो जवाब दो ऐसा कोई सबूत गवाह है कुछ तो ऐसा होगा जो साबित कर सके की नीलम को भी तुमसे प्यार था?"

विक्रम ने कुछ पल सोचा फिर इनकार में सिर हिलाने लगा।

"कैसे होगा जब मेरी तरफ से विक्रम के लिए मेरे मन में जो फीलिंग जगी थी वह प्रेम नहीं बन पाई थी पर ये उसे प्रेम समझ बैठा था!" बीच में नीलम ने कहा।

"यह झूठ बोल रही है जज साहब! ," अचानक विक्रम फिर से चिल्लाने लगा ,"करण को कत्ल करने के लिए इसने ही मुझसे कहा था! ," करण को मारने का प्लान इसी ने बनाया था। इसी ने मुझसे कहा था की शादी के कुछ दिनों बाद वह करण को हनीमून के लिए शिलांग लेकर जाएगी और फिर वहां पर कैसे क्या करना है मैं आपको पहले ही बता चुका हूं । इसके कहने पर ही मैंने अपने दो दोस्तों के साथ मिलकर करण की हत्या की। अपना फोन एक दूसरे दोस्त के जरिए हरिद्वार पहुंचाया था ये आइडिया भी इसी का था

इस कारण की हत्या के बाद किडनैप करना जंगल में उसे छोटी से जगह पर रखना और फिर इसे भगाने का मौका देना यह सब कुछ इसी के प्लान का हिस्सा था। मैं तो बस कठपुतली बनकर काम कर रहा था जब साहब क्योंकि इसे लगता था कि करण की हत्या के बाद पुलिस मुझ पर शक कर सकती है। सब प्लान सब कुछ इसी ने मुझे समझाया था जैसा उसने कहा वैसा ही मैने किया मैंने अपने मन से कुछ भी नहीं किया।"

"यह झूठ बोल रहा है जज साहब! मैंने ऐसा कुछ भी नहीं कहा या किया इसने जो कुछ किया अपने तरफ से अपने मन से किया मैंने यह मुझे हासिल नहीं कर सका इसलिए अपनी भड़ास निकालने के लिए अपने साथ-साथ मुझे भी इस केस में लपेट रहा है । जज साहब मैं तो करण से बहुत प्यार करती थी। मुझे पहले पता होता कि मेरे करण की हत्या में इसका हाथ है तो या तो मैं बहुत पहले इसे गिरफ्तार करा देती है अपने हाथों से ही इसे मार देती ।

"तुम्हारे पास ऐसी कोई सबूत गवाह है जो यह बात साबित कर सके की करण को मारने के लिए नीलम ने तुमसे कहा था तुम्हे सुपारी दी थी ?"जज ने फिर से एक बार वकील की तरफ देखकर विक्रम से पूछा तो विक्रम सोच में पड़ गया।

"क्या पुलिस के पास ऐसा कोई सबूत है जो यह साबित कर सके की नीलम ने करण को मारने के लिए विक्रम से कहा था, विक्रम को करण को मारने की सुपारी दी थी जिस बात साबित हो सके कि नीलम इस केस में इंवॉल्व है!"

जज की बात पर कोई कुछ नहीं बोला।

"चलिए 1 मिनट के लिए यह मान भी लेते हैं कि नीलम की बात सच है विक्रम नीलम के प्यार को पा नहीं सका इसलिए उसने खून खुन्नस में करण की हत्या कर दी। नीलम ने उसके प्यार को स्वीकार नहीं किया इसलिए जानबूझकर उसने नीलम को भी लपेट लिया ताकि वह भी फस जाए। इस केस में पर करण की हत्या के बाद नीलम एक हफ्ते गायब रही उसके मुताबिक उसे ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के लोगों ने अपहरण करके जंगल में जगह पर रखा हुआ था पर अब पता है कि उसकी हत्या विक्रम ने की थी तो विक्रम ने ही उसे अगवा किया

था और एक हफ्ते वहां रखा था इस बारे में नीलम जी आपका क्या कहना है?" बीच में वकील मृदुल बोला।

"यह बात सच है मुझे किडनैप करके उस छोटी सी जगह में रखा गया था पर मुझे नहीं पता था कि वह लोग कौन हैं? इनमें से कोई भी मेरे सामने नहीं आया था । सब मेरे सामने अपने चेहरे को छुपा कर रखते थे अगर इस केस में मैं विक्रम से मिली होती तो यह लोग ऐसा क्यों करते ? मुझे खुद हैरत है कि मैं जिन्हें मैं ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के लोग समझ रही थी वह तो विक्रम और उसके दोस्त थे हालांकि विक्रम मेरे साथ सामने कभी बोला नहीं वह बोलता तो मैं पहचान लेती पर इस सब बातों के पीछे मुझे एक ही कारण नजर आता है और वह है विक्रम खुद यह चाहता था कि यह राज कभी उजागर ना हो कि करण को उसने मारा । करण की हत्या में वह इंवॉल्व है वह मेरे दिमाग में भी यह डालना चाहता था की ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के लोगों ने सब कुछ किया अब तो मुझे यह भी लगता है कि उसने मुझे जानबूझकर इसीलिए ऐसी सिचुएशन क्रिएट करी ताकि मैं वहां से भाग सकूं पुलिस को बता सकूं ट्रैफिक गैंग के बारे में ताकि सारा ध्यान इसकी तरफ से उनकी तरफ चला जाए इनकी तरफ ध्यान कभी जाए ही ना! या फिर खुलनास के कारण करण को करने के बाद यह मुझे ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग के लोगों के हाथों बेचना चाहता होगा और अगर इसने मुझे जानबूझकर वहां से भागने का मौका दिया तो शायद यह सोचता होगा कि करण की मौत के बाद मैं उसके प्रेम को कबूल कर लूंगी अब हकीकत क्या है यह तो यही बता सकता है जब साहब!"नीलम बड़ी ही मासूम नजर आ रही थी।

"तुम्हारा इस बारे में क्या कहना है?"वकील जिसके कस बल ढीले पड़ चुके थे ने विक्रम से पूछा।

"हां यह बात सच है कि मैंने इसके सामने कभी वहां बात नहीं की हम तीनों मास्क लगा कर रहते थे पर यह मैंने अपनी तरफ से नहीं किया इसके कहने पर ही किया! सारा प्लान इसका ही था इसने जो जो कहा मैंने वही वही किया पर अब मुझे लगता है कि यह मुझे डबल क्रॉस कर रही थी करण की हत्या के लिए ही इसने मुझे केवल इस्तेमाल किया मुझे लगता था कि सच में यह बाद में मेरे प्रेम को कबूल कर लेगी पर यह तो सच में बहुत ही चालक और शातिर लड़की है जज साहब ! आप इसकी बातों पर भरोसा ना करें। इसने शुरू से ही करण की शादी से पहले ही मेरे साथ जब इसका रिलेशन शुरू हुआ था तो इसने ऐसा कोई मौका ही नहीं आने दिया जिसे मैं सबूत के तौर पर इस्तेमाल कर पाता। मैंने इसकी हर बात आंख मूंद कर मान लेता था पर अब मुझे लगता है कि इसके दिमाग में प्लान करण की शादी से पहले ही चल रहा था उसको मारने का और इसमें मुझे केवल एक मोहरा के तौर पर इस्तेमाल किया इसीलिए मेरे पास अपनी बात साबित करने का कोई भी सबूत नहीं है । मैं इसके प्रेम में इतना अंधा हो गया था कि इसकी हर बात मानता था इसीलिए कभी इसने मुझे फोन पर बात नहीं की कभी फोटो नहीं खिंचवाई ऐसा कोई भी एविडेंस उत्पन्न ही नहीं होने दिया जो आज मेरे काम आता है प्यार में अंधे होने के कारण मैं बुरी तरह फस गया जज साहब!"

"तुम्हारे इन दोस्तों के भी बयान में यह साबित हो चुका है कि इन्हें नेहा के बारे में कुछ भी नहीं पता था कि वह इस प्लान में शामिल है या उसने यह प्लान अच्छा इन्हें तो यह मालूम था कि नीलम से तुम प्रेम करते थे और नीलम ने कारण से शादी कर ली इसलिए तुम अपनी तरफ से कारण को मारना चाहते हो ताकि बाद में नीलम का प्रेम का सको इन दोनों को हकीकत क्यों

नहीं बताई कि सारा प्लान नीलम का ही है?"

"नीलम ने इन दोनों को इस बारे में सच बताने से मना किया था उसे लगता था कि बाई चांस यह दोनों अगर अपना मुंह खोल देंगे तो हम दोनों की लाइफ में भविष्य में कभी भी खतरा उत्पन्न हो जाएगा इसलिए और फिर अगर बात भी देता तो क्या फर्क पड़ता था क्योंकि इस बात का भी हमारे पास कोई सबूत नहीं की जो कुछ प्लान रचा गया वह नीलम ने रचा।"

"तब तुमने ध्यान नहीं दिया की इन दोनों को तुम्हारे बारे में तो पता था ही भविष्य में तुम्हारे लिए तो खतरा बन ही सकते थे भले ही नेहा के लिए न बनते।"

"मैंने कहा ना मैं इसके प्यार में बुरी तरह अंधा हो चुका था यह जैसा कहती गई मैं वैसा ही करता गया इस बारे में सोच नहीं पाया। शायरी इसीलिए किसी ने कहा है प्यार अंधा होता है और संध्या प्यार में मैं डूब गया वकील साहब।"

वकील ने विक्रम के साथ खड़े दोनों लड़कों से पूछा,"तुम्हारा क्या कहना है क्या तुम जानते थे की करण की हत्या के लिए विक्रम से नीलम ने कहा है नीलम जंगल में एक हफ्ते बंद रही क्या उस दौरान तुमने कभी नीलम को विक्रम से बातचीत करते हुए देखा?"

"नहीं हमें इस बारे में कुछ पता नहीं था। जैसा कि विक्रम ने अभी बताया हमें तो विक्रम ने करण की हत्या के लिए इंवॉल्व किया था और उसके लिए हमें एक लाख रुपए देने को कहा था हमें पैसे से मतलब होता है हमें यह नहीं जानना की मैटर क्या है!"

"यानी यह किसी भी तरीके से साबित नहीं हो सकता की नीलम विक्रम से मिली हुई है या उसने करण को मारने की सुपारी दी थी । यानी विक्रम ने जो कुछ किया नीलम के कहने पर किया?"बीच में जज ने फिर से कहा वकील ऐसा लगा जैसे असहाय हो चुका हो।

"जज साहब ऐसा इसलिए है क्योंकि विक्रम झूठ बोल रहा है इसने अपनी खुन्नस जो मुझे हासिल न करवाने की वजह से उत्पन्न हुई की वजह से इसने मेरे सुहाग को मुझसे छीन लिया है और मुझे भी इसमें लपेट रहा है जबकि मेरा इसमें कोई हाथ नहीं है मैं निर्दोष जज साहब!"

"विक्रम तुम्हारे पास क्या सच में ऐसा सबूत गवाह नहीं है जो यह बात साबित कर सके कि नीलम तुम्हारे साथ मिली हुई है?"

विक्रम इनकार में सिर हिलाने लगा फिर अचानक बोला,"पहले मैंने ध्यान नहीं दिया पर अब मुझे लग रहा है कि यह शुरू से ही मुझे फसाना चाहती थी मेरे साथ प्यार का झूठा नाटक किया इसने पर ना तो उसने मुझे कभी अपने शरीर को हाथ लगाने दिया ना कभी फोटो खींचना दी फोन पर भी उसने मुझसे कभी बात नहीं की उस समय मुझे लगता था कि शायद घर वालों की डर की वजह से ऐसा वह कह रही है पर अब मुझे लगता है कि यह मेरे साथ शुरू से ही खेल खेल रही थी। करण की हत्या करने के लिए इसे एक मोहर चाहिए था और उसने वह मोहरा मुझे बना लिया मैं तो बेकार में फंस गया जज साहब। यह सच में बेहद शातिर लड़की है । काश पहले जान पाता तो इसके प्रेम जाल में कभी नहीं आता!"

"जज साहब इसने करण की हत्या की है और बेवजह अपने साथ मुझे लपेटने की कोशिश कर रहा है जबकि ऐसा कुछ नहीं है आप खुद सोचिए अगर मैं इस को प्यार करती होती सच में तो कोई न कोई तो एविडेंस इसके पास होता कोई फोन रिकॉर्ड नहीं फोटो नहीं पर किसी

पब्लिक प्लेस में किसी ने तो मुझे इसके साथ देखा होता पर ऐसा कुछ नहीं है और उसका कारण यह नहीं कि मैं शातिर हूं । हकीकत यह है कि मैं सच में इसके प्यार में डूबी नहीं थी मेरे मन में इसके प्रति थोड़ी बहुत फीलिंग जरूर थी पर वह प्यार में नहीं बदल पाई क्योंकि तभी मेरी जिंदगी में करण आ गया था और हर लड़की आप तो जानते ही हैं कि अपना जीवन साथी बेहतर चुनती है और मैंने भी अपना जीवन साथी बेहतर चुना। आपको क्या लगता है करण को मारकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारूंगी इसके साथ शादी करनी होती तो मैं पहले ही कर लेती!"

"पर तुम्हारा इरादा अमीर बनने का था करण जरिए तुम अमीर बनना चाहती थी बाद में विक्रम से शादी भी कर लेती!" मृदुल बोला।

"करण के मां-बाप अभी जिंदा है उनके रहते मुझे दौलत कैसे मिलती और फिर करण की एक बहन भी है,"नीलम ने दर्शक दीर्घा में बैठी शिल्पी की ओर एक उड़ती हुई नजर डाली," ऐसे में मैं दौलत की वारिस कैसे बन पाती जज साहब। हकीकत यही है कि विक्रम ने जो कुछ किया पर्सनली किया मुझे हासिल नहीं कर पाया इसलिए। मुझे तो लगता है कि यह उसी ढंग का आशिक है जो यह भावनाएं रखता है कि मेरी नहीं तो किसी की नहीं और इसी भावना के तहत इसने मेरी जिंदगी को तहस नहस करने को करण को मार दिया और अब मुझे अपने साथ लपेट रहा है ताकि मेरी रही बची जिंदगी भी बर्बाद हो जाए। मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करती हूं जैसा आप कि इस शातिर लड़के को कड़ी से कड़ी सजा दें जिसने मेरे करण को बेरहमी से मार डाला!"

अदालत में पूर्ण रूप से सन्नाटा पसर गया। शिव शंकर और उसकी पत्नी के चेहरे पर अजीब से भाव थे ऐसा लगता था वह डिसाइड नहीं कर पा रहे हो की नीलम दोषी है या नहीं। विक्रम और नीलम में कौन सही बोल रहा है।

"क्योंकि पुलिस के पास इस बात का कोई सबूत नहीं है की नीलम करण की हत्या में इंवॉल्व थी जबकि विक्रम ने अपना गुनाह कबूल भी किया है और पुलिस के पास उसे दोषी साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत भी है । जंगल में उस जगह पर जहां पर नीलम को उन्होंने बंद करके रखा था वहां पर विक्रम के गले का वह लॉकेट पाया गया है जिसमें विक्रम और नीलम की फोटो थी। बाई चांस वहां गिरी होगी यह इस बात का सबूत है कि विक्रम ने करण की हत्या की पुलिस ने वो रिवॉल्वर भी हासिल कर लिया है जिस करण की हत्या हुई उस पर विक्रम के फिंगरप्रिंट्स भी हैं । इसके अलावा करण के शरीर पर जो कुछ आभूषण थे वह भी पुलिस ने एक दुकान से बरामद कर लिए जिन्हें भेज कर विक्रम ने करण मर्डर में उसकी मदद करने वाले अपने दोस्तों को रुपए दिए थे । जबकि पुलिस के पास नीलम के खिलाफ एक भी एविडेंस नहीं है इसलिए अदालत यह नतीजे पर पहुंची है कि विक्रम एक सिरफिरा आशिक है जिसने नीलम को हासिल ना कर अपने की वजह से गुस्से में करण की हत्या की। नीलम को किडनैप करके रखा उसके सामने ही ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग की बात की ताकि मामले को ह्यूमन ट्रैफिकिंग गैंग की तरफ मोड़ा जा सके और जानबूझकर इसने नीलम को वहां से जाने दिया इसे लगता था कि करण के न होने पर नीलम उसके प्यार को स्वीकार कर ले इसीलिए उसने नीलम को जाने दिया। कोर्ट पुलिस को आदेश देती है 15 दिनों के अंदर नीलम के खिलाफ सबूत पेश करें साबित करें कि नहीं लंबी विक्रम की साथ मर्डर में इंवॉल्व थी!"

लेकिन पंद्रह दिन बाद।

" नीलम को यह अदालत सबूतों के अभाव में करण मर्डर केस से वरी करती है और विक्रम को उम्र कैद की सजा सुनाती है। तथा उसके दोस्तों को हत्या में सहयोग करने के लिए 5 साल की सजा सुनाती है।"

विक्रम और उसके दोस्तों के खिलाफ पुलिस के पास पहले से ही तगड़े सबूत थे रिवाल्वर उसने कारण के जवाब भूषण जी दुकान पर पहुंचे थे पुलिस ने वह बरामद कर लिए थे।

****

बंगले के ड्राइंग रूम में बड़ी खामोशी पसरी थी शिव शंकर और उसकी पत्नी खामोश बैठे थे। ऐसा लग रहा था जैसे भारी उलझन में हो। अभी कुछ देर पहले ही शिल्पी वहां आई थी और उसने कहा था की कोर्ट के फैसले पर उसे एतबार नहीं। नीलम बहुत ही शातिर लड़की है उसने सब कुछ पहले से ही ऐसे सोच समझकर प्लान बनाया की कोर्ट में जब मामला जाए तो वह साफ बच जाए । उसने यह भी कहा था की विक्रम को भी उसने लपेट लिया वह सच में बेहद शातिर लड़की है पता नहीं उसके क्या इरादे हैं उसने यह भी शक जहर किया था की हो सकता है नीलम का कोई और बॉयफ्रेंड हो जिसे सच में वह प्यार करती हो विक्रम का केवल उसने इस्तेमाल किया पर घर वालों ने उसे दुत्कार कर भगा दिया था हर बार की तरह और उसके जाने के बाद दोनों उलझन में थे।

“तुम्हें क्या लगता है क्या शिल्पी की बातों में दम है?”काफी देर से खामोश बैठे शिव शंकर ने आखिरकार अपनी पत्नी से धीमी आवाज में पूछा।

“मैं क्या कहूं मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा । पता नहीं क्यों मुझे शिल्पी की बातों में दम नजर आता है मुझे भी लगता है कि नीलम सच में बहुत चालाक लड़की है हम उस पर विश्वास कर रहे हैं कहीं यह हमारे लिए घातक साबित ना हो!”

“तुम यह मत बोलो कोर्ट ने उसे बरी किया है कोर्ट में क्या सब मुर्ख रहते हैं हो सकता है शिल्पी हमें उलझा रही हो क्योंकि हमारे रिश्ते उससे सही नहीं है नीलम से हमारा ज्यादा लगाव है शायद यही बात उसको पच नहीं रही वह चाहती है कि हमारे और नीलम के दरमियान खाई पैदा हो जाए तभी तो कोर्ट में उसे वरी कर दिए जाने के बाद भी वह हमारे दिलों दिमाग में नीलम के लिए शक भर रही है मुझे तो ऐसा लगता है उसे आइंदा यहां आने नहीं देना चाहिए।”

उसकी बीवी ने गहरी सांस भर कर छोड़ी और बोली,”ऐसा भी हो सकता है पर नीलम की तरफ से हमें आंखें मूंद कर नहीं रहना चाहिए वैसा भी सच हो सकता है जैसा की शिल्पी कह रही है नीलम सच में बेहद शातिर लड़की हो सकती है!”

“ हूं।”

तभी नीलम अचानक उन दोनों के सामने खूब सज धज कर आई और बोली,”मेरी सहेली की आज मैरिज एनिवर्सरी है मैंने तो मना किया था पर वह जोर दे रही है इसलिए मुझे जाना पड़ रहा है मैं एक ही घंटे में लौटाऊंगी!”

शिव शंकर और उसकी पत्नी ने उसकी और देखा पर वह कुछ कहते इससे पहले ही नीलम अपना हैंडबैग लेकर मटकती हुई बाहर निकल गई।

“इसके तेवर देख रहे हो लगता है कि इसका पति अभी कुछ दिनों पहले ही मरा है मुझे तो लगता है शिल्पी की बात ही सच है नीलम न सिर्फ चालाक बल्कि दुष्ट लड़की है आपको पता करना चाहिए कि आखिर क्या यह सच में सहेली के यहां जा रही है या इसका कोई और भी आशिक है?”

शिव शंकर सोच में पड़ गया। अचानक अपनी जगह से उठते हुए बोला,”तुम शायद ठीक कर रही हो मुझे देखना चाहिए!”

इतना कह कर वह बाहर निकल गया। बाहर आकर उसने देखा कि नीलम अपनी कार से जिसे वह खुद ड्राइव कर रही थी बाहर निकल गई थी उसके बाद शिव शंकर पोर्च में खड़ी अपनी दूसरी कार की तरफ तेजी से लपका।

और जल्दी से कार में सवार हुआ फिर कार को स्टार्ट करके बंगले के गेट के बाहर ले आया और फिर उसने अपनी कार नीलम के कार के पीछे लगा दी।

नीलम की कार के पीछे वह लगभग 10 मिनट तक लगा रहा। नीलम की कार विभिन्न सड़कों पर गुजरते हुए फिर जब एक सुनसान इलाके में आई और रुकी तो उसने अपनी कार उससे बहुत पीछे रोक ली जबकि नीलम अपनी कार से उतरकर जंगल की तरफ चली गई।

“यह तो कह रही थी कि अपनी सहेली की मैरिज एनिवर्सरी में जा रही है पर यह तो इस जंगल में जा रही है यहां कहां जा रही है क्या सच में शिल्पी की बात सच है नीलम वाकई में शातिर लड़की है मुझे देखना चाहिए!”

वह तेजी से अपने कार से निकाला और सड़क पर करने लगा तभी अचानक वहां से तेज रफ्तार बोलेरो निकली और इससे पहले की शिव शंकर संभल पाता बुरी तरह उसे टक्कर मारती हुई बोलेरो आगे चली गई।

*****

गोपाल श्मशान घाट में इस समय दो चि ताएं जल रही थी चिताओं के आसपास अच्छी खासी भीड़ जमा थी आखिरकार शहर के जाने-माने प्रतिष्ठित बिजनेसमैन शिव शंकर की मौत हुई थी और उसकी पत्नी की भी।

“बड़ी किस्मत की बात है कहां कुछ दिनों पहले सब कुछ अच्छा था पहले बेटा गया फिर एक्सीडेंट में शिव शंकर की मौत हुई और पहले से ही दिल की मरीज शिव शंकर की पत्नी अपने पति की मौत का हादसा बर्दाश्त नहीं कर पाई और हार्ट अटैक से मर गई पहले अटैक तो उसे बेटे की मौत के वक्त ही आया था पर उस बार बच गई लेकिन इस बार नहीं बची। बेचारी नीलम पर तो दुख का पहाड़ टूट पड़ा है। बेचारी एकदम अकेली हो गई भगवान उसको जीने की हिम्मत दे!”एक महिला दुखी स्वर में दूर खड़ी रो रही नीलम को देख कर बोली।

वहां खड़ी भीड़ में से कई लोग ऐसी ही बातें कर रहे थे नीलम ने दोनों को मुखाग्नि दी थी वह समय उदस खड़ी थी पर उसके चेहरे की चमक बता रही थी वो अंदर से बिल्कुल भी दुखी नहीं है । शिल्पी इस भीड़ में खड़ी थी और नीलम को देखकर उसके चेहरे पर भयंकर गुस्सा दिखाई दे रहा था उसका बस चलता तो शायद उसे गोली मार देती।

****

अंधेरे में डूबा हुआ सुनसान रास्ता था और शहर से बाहर था। उस सुनसान रास्ते पर एक लड़की फोन पर बात करती हुई आराम से चली जा रही थी हालांकि इस समय उसकी शक्ल नहीं दिखाई दे रही थी पर चाल ढाल से लगता था वह बेफिक्र है पूरी तरह से। वह जिस रास्ते से गुजर रही थी उसके दोनों तरफ काफी पेड़ खड़े थे ऐसा लगता था जैसे छोटा-मोटा जंगल हो।

और तभी एक पेड़ के पीछे से निकलकर कोई दबे पांव उसके पीछे चलने लगा। उसके हाथों में एक मोटा डंडा था। उसके इरादे बड़े खतरनाक जान पड़ते थे वह धीरे-धीरे बिल्ली की तरह दबे पांव उसके पीछे-पीछे चल रहा था और लड़की आगे फोन पर बात करती हुई बेफिक्री से चली जा रही थी। पर अचानक वह रुक गई शायद उसे आभास हो गया था कि उसके पीछे कोई खड़ा है।

शायद वह डर भी गई थी पर कुछ देर सोचने के बाद में पीछे पलटी और तभी पीछे खड़े शख्स ने डंडे से उसके सर पर वार किया। वह भर भरा कर वहीं रोड पर गिर गई । इसके बाद उस शख्स ने डंडे को वहीं दूर झाड़ियां में फेंका और उसके दोनों हाथ पकड़ कर बड़े ही निर्दयतापूर्वक सड़क से उसे झाड़ियां की तरफ खींच कर ले जाने लगा। सड़क से काफी दूर तक उसे घसीटता रहा और शायद पहले से ही उसने जंगल में कोई गड्ढा खोद कर रखा था वहां ले जाकर उसने उस लड़की को उस गड्ढे में डालकर वहां रखे फावड़े से उस गड्ढे को मिट्टी से भरने लगा।

****

“क्या सब की तरह तुम्हें भी लगता है कि शिव शंकर की पत्नी को जो हार्ट अटैक आया था उसी से मरी.. नहीं । हां यह सच है कि उसे हार्ट अटैक आया था पर इस दौरान मैंने उसे यह भी बता दिया था कि उसके पति और उसके बेटे की मौत मेरी वजह से ही हुई बल्कि मैंने ही कार्रवाई तो उसका हार्ट अटैक का दर्द और बढ़ गया। वह भी इतना की उसके दम निकल गई। यही तो मैं चाहती थी सबको मार कर दौलत हासिल करना चाहती थी । और देखो मैंने उसकी सारी प्रॉपर्टी बेच दी और सारा पैसा सूटकेस में लेकर यहां तुम्हारे पास आ गई हमेशा हमेशा के लिए। मैं तुम्हारे साथ ही जिंदगी गुजारना चाहती थी पर इसके लिए दौलत बहुत जरूरी थी! क्योंकि बेहतरीन जिंदगी जीने का जिसका मैंने ख्वाब देखा था बिना दौलत के कहां मुमकिन होती है पर दौलत पाने के लिए पापड़ बहुत बेलने पड़ते हैं सच में।"

एक ऐसे कमरे में नीलम एक भारी सूटकेस के साथ कुर्सी पर बैठी थी जिसमें हल्का नाइट बल्ब जल रहा था उसके चेहरे पर जमाने भर की खुशी थी। हो भी क्यों ना शिव शंकर की करोड़ों की संपत्ति की वह अब अकेली मालकिन थी। प्रॉपर्टी बेचकर सारा पैसा वह सूटकेस में भरकर लाई थी और वह सूटकेस उसके नजदीक ही रखा था।

कुछ दूरी पर अंधेरे में कोई खड़ा शराब के दो पैग तैयार कर रहा था ।

"दौलत इतनी आसानी से हासिल हो जाएगी मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था हालांकि मुझे डर था की कहीं गफलत हो गई तो लेने के देने पड़ जाएंगे पर मानना पड़ेगा तुम्हारा प्लान जबरदस्त था।,"नीलम फिर से बोली," तुमने मुझसे कहा था ऐसा कुछ नहीं होगा सब कुछ ठीक चलेगा और दौलत हमें हासिल हो जाएगी और हम लोग फिर शादी करके चैन से रहेंगे। मुझे याद है आज भी वो दिन जब मैं तुमसे उस शॉपिंग मॉल में मिली थी। हम दोनों एक दूसरे

की तरफ आकर्षित हुए थे। सच कहूं तो आकर्षक मेरी तरफ से ज्यादा था। एक दो मुलाकातों में हमने जाहिर भी कर दिया था कि हम एक दूसरे को चाहते हैं पर तुमने कहा था कि बिना पैसे के इस दुनिया में कुछ भी नहीं है फिर तुमने मुझे आईडिया दिया करण को लुभाने का और एक पंडित से तुमने मेरी मंगली होने की कुंडली भी बनवा कर मुझे दी और उस पंडित को मार भी दिया था ताकि वह सच उजागर न कर सके । मेरे घर वालों को तो वैसे भी मुझसे ज्यादा मतलब नहीं था इसलिए उन्होंने कुछ पूछताछ नहीं की और इधर मैंने करण को अपने जाल में फंसा लिया वह मुझे चाहने लगा। मैंने उसे बता भी दिया था कि मेरी शादी नहीं हो पा रही क्योंकि मैं मंगली हूं वह भी मंगली था. हमारे प्लान का पहला स्टेप बढ़िया आसानी से पूरा हो गया और अब दूसरा स्टेप था करण की हत्या और इसके लिए हम भाड़े के किराए के हत्यारे को इंवॉल्व नहीं करना चाहते थे क्योंकि वह हमें फंसा सकते थे इसीलिए तुमने मुझसे कहा था कि किसी ऐसे बंदे को इस केस में इंवॉल्व करो जो अपने मन से करण की हत्या करने के लिए तैयार हो जाए और विक्रम से बढ़कर मुझे कोई नहीं लगा। मैंने तुम्हें विक्रम के बारे में बताया कि वह मुझे मन ही मन चाहता है उसकी हरकतों से लगता था। तुमने कहा ठीक है। तुमने मुझे उसे नजदीकी बढ़ाने के लिए कहा पर सावधानीपूर्वक उसके साथ मुलाकातों का बातों का ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं होना चाहिए जो आगे चलकर यह साबित कर सके कि मेरी तरफ से भी उसके लिए मोहब्बत थी और इसीलिए मैंने कभी उससे फोन से बात नहीं की, कभी उसके साथ कोई फोटो नहीं खिंचवाई। बस इस तरह से दर्शाया जिसे देखकर उसे लगे कि मेरे दिल में उसके लिए प्यार है और फिर अचानक करण के साथ मेरी शादी हो गई जिससे वह भड़क जाए और फिर मेरे कहने पर उसकी हत्या करने की तैयार हो जाए। मैंने वही किया था उसे कहा था कि बिना दौलत की दुनिया में कुछ नहीं है। करण से शादी सिर्फ मैं इसलिए कर रही हूं क्योंकि उसकी दौलत हासिल कर सकूं। दौलत हासिल करने के बाद मैं उससे शादी कर लूंगी पर यह सब मैंने विक्रम को फसाने के लिए किया था और वह बेवकूफ इतनी आसानी से फंस भी गया । उसने फिर वही किया जैसा मैंने कहा था सब कुछ प्लान के मुताबिक हुआ और फिर देखो हमने करण की हत्या में विक्रम को फसवा भी दिया । करण की हत्या भी करवा दी । उसकी दौलत भी हासिल कर ली। उसके मां-बाप को भी बड़ी आसानी से रास्ते से हटा दिया। कोई नहीं जानता कि उसके बाप का एक्सीडेंट तुमने किया था तुमने बड़े ही परफेक्ट ढंग से शिव शंकर को उड़ाया । बेचारा ऑन द स्पॉट ही मर गया वाकई तुमने कमाल का दिमाग पाया है। तुम्हारे साथ जिंदगी गुजारने में मजा आएगा।"

तभी अंधेरे में खड़ा शख्स जो पैग बना रहा था दो गिलासों में शराब भरकर नीलम के नजदीक आया । और दूसरी तरफ पड़ी कुर्सी पर बैठ गया । अब बल्ब की हल्की रोशनी में उसका चेहरा साफ दिखाई दे रहा था वह शिल्पी थी।

उसने एक पैग नीलम की तरफ बढ़ाया और एक खुद पीने लगी। नीलम ने भी अपना पैग उठाया और धीरे-धीरे पीने लगी।

“तुमने सही कहा। हमारा प्लान कामयाब हो गया उसकी खुशी में एक-एक पैग तो बनता ही है!”शिल्पी ने अपना गिलास उसके गिलास से टकराते हुए कहा।

“बिल्कुल और क्यों नहीं आज एक नहीं बल्कि दो चार पैग लूंगी । इतनी भारी सफलता जो हासिल हुई है हालांकि मुझे शक था कि ऐसा नहीं हो पाएगा पर तुम्हारा कॉन्फिडेंस लेवल

बहुत हाई था तुमने कहा था सब कुछ हो जाएगा डरो मत! और सच में एक अकल्पनीय काम पूरा हो गया। तुमने पहले ही कहा था कि तुम मेरे बारे में अपने मां-बाप को सब कुछ बता दोगी कि मैं एक शातिर लड़की हूं करण की हत्या में मैं शामिल हो सकती हूं पर वह कुछ नहीं कर पाएंगे तुमने सही कहा था इतने चैलेंजिंग ढंग से इस काम को करना मुझे भी हैरत में डालता है वैसे उसकी वजह शायद यह थी कि तुम्हारे मां-बाप के तुम्हारे साथ संबंध ठीक नहीं थे शायद इसीलिए उन्होंने तुम्हारी बात का भरोसा नहीं किया और फील्ड में तुम्हारे उतरने का दूसरा मकसद यह भी था कि तुम्हारे मां बाप मुझ पर शक भी करने लगे पर दुविधा में रहे तभी तो जब मैं कोर्ट से वरी हुई वह तभी दुविधा में थे और इसीलिए मेरा पीछा करते हुए उस सुनसान जगह पर शिव शंकर आया था जैसा कि हमारा प्लान था उस सुनसान जगह पर एक्सीडेंट करके उसे मारने का उसमें तुम्हारी बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही । अपने मां-बाप के दिल में हमेशा मेरे बारे में शक बना रहा वह क्लियर ही नहीं कर पाए की करण की हत्या में मैं इंवॉल्व हूं या नहीं और फिर तुमने उसे सुनसान जगह पर बोलेरो कार से अपने पिता को टक्कर मार के हमेशा हमेशा के लिए खत्म कर दिया नाइस।"

फिर दोनों खुशी से पूरा गिलास घटक गई ।

"वैसे तुम्हें इतना कैसे विश्वास था की अदालत में मुझे सजा नहीं होगी मैं वरी हो जाऊंगी?"नीलम ने पूछा तो शिल्पी मुस्कुरा कर बोली,"अपने कानून में अगर कोई अपराध करे और उसके खिलाफ ऐसा कोई गवाह, सबूत ना मिले जो सिद्ध कर दे कि उसने अपराध किया है जैसा कि आरुषि हत्याकांड में हुआ था ऐसे और भी कई केस हैं जिनमें सबको पता था कि अपराध किसने किया है पर पुलिस साबित नहीं कर पाई और कोर्ट ने उन्हें वरी कर दिया । तुमने दृश्यम फिल्म भी तो देखी होगी उसमें हम सबको पता है कि अपराधी कौन था पर पुलिस अदालत वकील कुछ भी नहीं कर पाए क्योंकि उसने ऐसा कोई सबूत ही नहीं छोड़ा और इसीलिए तो मैंने ऐसा प्लान बनाया था की अदालत में पुलिस कभी साबित ही ना कर पाए की करण की हत्या में तुम्हारा कोई इंवॉल्वमेंट है। उन्हें तुम्हे वरी तो करना ही था।"

"और शिव शंकर ने केस को फास्ट्रेक कोर्ट में डलवा कर हमारा काम आसान कर दिया। मेरे कहने का मतलब है कि मामला जल्दी निपट गया!"

"हां उसमें ना भी डलवाता तो क्या फर्क पड़ता था । आरुषि कांड कितने साल चला पर अंत में क्या हुआ।"

"हां तुमने सही कहा। सच में तुम्हारे दिमाग की तारीफ करने का बार-बार मन करता है!"

"तो करो मना किसने किया है!"

दोनों एक बार फिर खिलखिला कर हंसी।

“तुमने सब कुछ तो मुझे याद दिला ही दिया अब मैं क्या याद करूं। बस यही कह सकती हूं कि अगर दिमाग से कोई काम किया जाए तो उसके सफल होने के पूरे चांस होते हैं! हमने जो जो सोचा जो जो किया सब कुछ सफल हो गया। बस प्लान पर्फेक्ट तरीके से बनाना चाहिए और हमेशा चौकन्ना सावधान रहना चाहिए और सबसे बड़ी बात धैर्य रखना चाहिए।"

“बिल्कुल। हमारा लक्ष्य था दौलत हासिल करना ताकि अपनी आगे की जिंदगी आराम से हम बिता सके। मैं भी गरीबी में ही हमेशा रही अब तुम्हारी वजह से मैं भी अमीर बनने का शौक

पूरा कर पाऊंगी और सबसे बड़ी बात मैं उसके साथ जिंदगी गुजार पाऊंगी जिसके साथ में गुजारना चाहती थी यानी तुम्हारे साथ । अब हम दोनों मिलकर रहेंगे । अब कोई हमें रोकने रोकने वाला नहीं है! हम विदेश चले जाएंगे शीघ्र ही।"

" अच्छा,तुमने मुझे बताया था एक बार कि तुम्हारा पहला आकर्षण जिस लड़की के साथ हुआ था तुम उसके साथ खुश थी पर एक दिन तुम्हारे मां-बाप ने तुम्हें उस लड़की के साथ आपत्तिजनक हालत में देख लिया था और इसीलिए उन्होंने न सिर्फ तुम दोनों को अलग कर दिया बल्कि तुम्हें तो अपने घर से भी निकाल दिया था जायदाद से बेदखल कर दिया था और तभी से तुम उनसे बदला लेना चाहती थी!" नीलम कुछ रुक कर बोली।

"हां ,तुमने सही कहा । मेरी इच्छा की तो मेरे घर वालों को कदर ही नहीं थी वह अपने वही पुराने दकियानूसी , रूढ़िवादी विचारों के आधार पर मुझे भी घसीटना चाहते थे मेरी एक भी बात नहीं सुनते थे । तुम मेरी जिंदगी में अगर नहीं आती तो मैं पता नहीं क्या करती । जिस लड़की को मैं पहले प्यार करती थी वह तो उसे घटना के बाद मुझे हमेशा के लिए दूर चली गई उसके जाने के बाद मैं काफी दिन डिप्रेशन में रही फिर मेरी जिंदगी में तुम आई तो मुझे लगा कि अब सब कुछ ठीक हो जाएगा!"

उसकी बात सुनकर नीलम मुस्कुरा पड़ी।

"तुमने फील्ड में उतर कर चैलेंजिंग काम किया तुम्हारा कहना था कि तुम मेरे बारे में अपने मां-बाप को पहले से ही आगाह कर दोगे फिर भी वह कुछ नहीं कर पाएंगे तुमने सच कहा था वह आखरी तक दुविधा में ही रहे मानना पड़ेगा तुम्हारे अंदर गजब का कॉन्फिडेंस है!"

"पर एक भारी गड़बड़ी हो गई?"अचानक शिल्पी ने बड़े ही रहस्यमई अंदाज में उससे कहा तो वह चौंक पड़ी और तुरंत बोली,"क्या गड़बड़ हो गई? मेरी वही पुरानी साथी वापस आ गई है वह मेरा पहला प्यार थी मैं उसी के साथ जिंदगी गुजारना चाहती थी!"

नीलम की आंखें सिकुड़ गई। उसके चेहरे पर अचानक असमंजस के भाव तैरने लगे जबकि शिल्पी के चेहरे पर बड़ी ही रहस्यमय मुस्कान थी वह मुस्कुराते हुए बोली,"एक बात और जो मैंने तुमसे छुपाई पर सोचती हूं कि अब तुम्हें बता दूं वरना तुम्हें तकलीफ होगी!"

"तुमने मुझसे कोई बात छुपाई पर क्यों और कौन सी बात?" नीलम के चेहरे से ऐसा लग रहा था जैसे अब उसके भाव बदल चुके हैं वह सेल्फी को प्यार की जगह शक की नजरों से देखने लगी थी।

"सच्चाई यह है कि मैं आज भी अपनी उस दोस्त से प्यार करती हूं वह भी मुझे प्यार करती है पर हम दोनों को जिंदगी गुजारने के लिए पैसों की सख्त जरूरत थी और इसीलिए हमने तुम्हारे कंधे पर रखकर बंदूक चलाई। तुम जब मेरी जिंदगी में आई तो मुझे लगा तुम्हारे जरिए मैं अपने पापा की सारी दौलत हासिल कर सकती हूं इसीलिए मैंने सारा खेल खेला और अब तो मुझे दौलत भी हासिल हो गई है । इस दौलत के साथ अपनी दोस्त के साथ मजे से जिंदगी गुजरूंगी!"

"और मेरा क्या होगा?" अचानक नीलम गुस्से में कांपने लगी वह समझ गई उसके साथ भारी धोखा हुआ है। पर पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत। जहां कुछ देर पहले वह बड़ी ही शांत प्रसन्न दिखाई दे रही थी वहीं अब उसके तन बदन में आग लगी हुई थी क्योंकि वह

समझ चुकी थी की शिल्पी ने उसके साथ धोखा किया है।

“और अभी तुमने कहा कि मैं बाद ही चैलेंजिंग काम किया उसके पीछे भी एक वजह थी मैं सोचती थी शायद मैं अपने मां-बाप के सामने जाकर उन्हें सच्चाई बताने का प्रयास करूंगी तो शायद वह मुझे अपना ले और अगर वह ऐसा करते तो फिर मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं थी क्योंकि तब मां-बाप की दौलत मेरे नाम वैसे ही आ जाती है तुम्हारा मैं किसी न किसी प्रकार से इस दुनिया से गायब कर देती है कारण पहले ही मर चुका था मां-आप मुझसे सहानुभूति रखते हैं और उनकी सारी दौलत मुझे हासिल हो जाती आगे चलकर उनको भी मैं किसी न किसी प्रकार से अपनी जिंदगी से दूर कर देती यह मेरा मकसद था पर फिलहाल वह नहीं पूरा हुआ कोई बात नहीं मकसद पूरा होना चाहिए और मेरा मकसद था दौलत हासिल करना जो इस प्रकार से हुआ है। तुम परेशान मत हो। मैंने तुम्हारा भी इंतजाम कर दिया है!” लेकिन शिल्पी अभी भी बड़ी ही शांत और प्रसन्न दिखाई दे रही थी ठीक वैसे ही जैसे जंग जीतने के बाद एक योद्धा के चेहरे पर भाव होते हैं ठीक वैसे ही भाव उसके चेहरे पर भी थे।

“क्या?" ना चाहते हुए भी नीलम के मुंह से निकाला! अचानक उसे शिल्पी बेहद खतरनाक नजर आने लगी क्योंकि जिस हिसाब से उसने रूप बदला था इसकी आशा तो शायद उसने कभी नहीं की थी कि जिस शिल्पी के प्रेम में उसने अपने पति की हत्या करवाई थी अपने प्रेमी विक्रम को जेल पहुंचाया था वह उसे धोखा दे सकती है।

“तुम्हें हमेशा हमेशा के लिए गायब कर दूंगी । तभी तो मैं अपनी पुरानी दोस्त के साथ चैन से रह सकती हूं नहीं तो मेरे लिए सबसे बड़ी मुसीबत बन सकती हो तुम!”

“क्या कहा, तुम मुझे गायब करोगी यानी यानी तुम मुझे मारना चाहती हो?"शिल्पी के खतरनाक इरादे आपको समझ चुकी थी इसीलिए अपनी कुर्सी से खड़ी हो गए अब बेहद सतर्क थी जो करना थी शिल्पी के कोई भी बार को संभालने के लिए। स्थिति साथ-साथ वह क्रोधित भी बहुत थी और गुस्से में बोलते जा रही थी," मैंने तुम पर भरोसा किया तुमसे प्यार किया और तुमने मेरे साथ इतना बड़ा गेम खेला, तुम कितनी बड़ी, दुष्ट, शातिर इंसान हो काश मैं पहले समझ पाती!”

शिल्पी अपनी कुर्सी से उठकर जोर से हंसने लगी और बोली,”तुम्हारे जैसी बेवकूफ कि मुझे जरूरत थी और अब तुम्हारी जरूरत खत्म हो गई है पर मरने से पहले मैं तुम्हें सच्चाई बता देना चाहती थी ताकि तुम्हारे जिस्म से जो आत्मा निकले वह चैन से निकले उसे सब कुछ पता हो!”

"तुम मेरे साथ क्या करोगी करण की तरह मुझे भी गला दबा कर मरोगी या फिर मुझे गोली मार दोगी.. या... क्या करोगी?"

उसकी बात पर शिल्पी मुस्कुराए उसकी मुस्कान में हर बार रहस्य झलक रहा था इस बार भी ऐसा ही कुछ था वह बड़ी ही कॉन्फिडेंस के साथ बोली,"जैसा तुम सोच रही हो वैसा में कुछ नहीं करूंगी बल्कि मुझे जो करना था वह तो मैं कर चुकी हूं।"

"कर चुकी हो लेकिन क्या..?"

शिल्पी कुछ नहीं बोली।

तभी अचानक नीलम की नाक से खून निकलने लगा । उसे आभास हुआ तो उसने उंगलियों से अपने नाक से निकलने वाले खून को छुआ और फिर जब उसे देखा तो घबराकर कुछ कदम

पीछे हटकर खड़ी हो गई।

“तुमने शराब में क्या मिलाया था?” उसके मुंह से घबराया हुआ स्वर निकला। अब जिसे पता हो कि सामने वाला उसे मारना चाहता है तो उसकी घबराहट जायज है।

“जहर।"शिल्पी ने तुरंत बिना देर किए शराब का आखिरी घूंट भरकर गिलास मैच पर रखते हुए उसकी तरफ देखते हुए कहा ऐसे जैसे उसे कोई फर्क ना पड़ता हो," वह भी इतना तीखा की अभी सिर्फ 5 मिनट में तुम्हारी दम निकल जाएगी और फिर मैं तुम्हें इस घर की कंपाउंड में जहां मैंने पहले से ही गड्ढा खोद के रखा है तुम्हे मैं दफन कर दूंगी ऊपर से मिट्टी डालकर बंद कर दूंगी । नीलम नाम का चैप्टर हमेशा हमेशा के लिए बंद ! समझ गई। इसीलिए तो मैंने तुम्हें यहां इस पुराने सुनसान जगह पर बने घर में बुलाया था तुम बेवकूफ हो तुमने जरा भी ध्यान भी नहीं दिया कि आखिर मैंने तुम्हें यहां क्यों बुलाया! जरा सा भी ध्यान दिया होता तो शायद आभास हो जाता पर कहते हैं ना कि जब प्रेम की पट्टी आंखों पर बंदी हो तो इंसान ऐसी बातें सोच ही नहीं पाता जैसे तुम्हारे प्रेम की पट्टी विक्रम की आंखों पर बांधी थी वह कुछ नहीं सोच पाया वैसे ही तुम्हारी आंखों पर मेरे प्रेम की पट्टी बंधी थी सच कहूं तो यह प्रेम की पट्टी है तो बड़ी खतरनाक यह इंसान को बहुत लापरवाह बना देता है । और तुम्हें तो पता है जो लापरवाह हुआ गया काम से । विक्रम भी गया और तुम भी गई।"

“मुझे नहीं पता था कि तुम इतनी बड़ी शातिर दुष्ट हरामखोर लड़की हो वरना मैं तुम्हारे चुंगल में कभी नहीं फंसती । मैंने तुम पर भरोसा करके बहुत गलत किया । मेरे दो दो प्रेमी थे जो मुझे चाहते थे मैंने दोनों को ठुकरा दिया एक की हत्या करवा दी और एक को जेल पहुंचा दिया बदले में मुझे क्या मिला धोखा बेवफाई!"नीलम के चेहरे पर दुख और गुस्से के मिले-जुले भाव थे। शायद वो मान चुकी थी कि उसने अपने दोनों प्रेमियों के साथ गलत किया और उसी का परिणाम था कि उसके साथ भी गलत हो रहा था।

इस समय उसे वह सिद्धांत सच जान पड़ता था की कोई किसी के साथ गलत करता है तो उसके साथ भी गलत ही होता है उसके बुरे कर्म लौट कर उसके ही पास आते हैं और जितना बुरा वह करता है उससे ज्यादा बुरा उसके साथ होता है।

नीलम की नाक से खून की मात्रा बढ़ने लगी थी वह बुरी तरह घबरा गई थी और अब वह ज्यादा देर खड़ी नहीं रह सकी और भरभरा के नीचे गिर गई।

“भगवान तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा। मैं .. मैने तुम्हारे साथ वफा की तुमने मुझे धोखा दिया तुम्हें भी बहुत बड़ी सजा मिलेगी यह मैं तुम्हें बद्दुआ देती हूं।” नीलम ने उठने की कोशिश की पर वह उठ नहीं पाई। एक बार उसने मैच पकड़ कर उठने की कोशिश की पर सफल नहीं हुई।
शिल्पी उसके नजदीक घुटनों के भल जमीन पर बैठी और बोली,”गरीबों का एक ही मंत्र है बद्दुआ देना पर मैं तुम्हें बता दूं कि मुझे किसी भी बद्दुआ से कोई फर्क नहीं पड़ता है। तुम मरने के लिए तैयार हो जाओ। कुछ ही देर में तुम्हारी मौत होने वाली है और फिर मैं तुम्हें पहले से तैयार गड्ढे में दफन कर दूंगी और अपने पुराने साथी के साथ मजे से जिंदगी बिताऊंगी अब तो मेरे पास करोड़ों की दौलत भी है !”

नीलम ने हाथ बढ़ाकर उसकी गर्दन को पकड़ना चाहा पर वह उठ कर खड़ी हो गई। उसकी आंखें बंद होने लगी। शिल्पी मुस्कुराई।

फिर उसने नीलम के दोनों हाथ पकड़ कर घसीटते हुए उसे खंडहर नुमा घर के आंगन में उसे

ले गई जहां उसने पहले से गड्ढा करके रखा था । उसे गड्ढे के पास लेकर पहुंची यहां तक उसे लाने में काफी मेहनत करनी पड़ी। कुछ पल रुक कर हांफने लगी अपनी सांसों को कंट्रोल करने लगी ।

"बड़ी भारी है देखने में नहीं लगती! सुना था मुर्दा होने पर इंसान हल्का हो जाता है पर यह तो भारी हो गई! कोई बात नहीं अभी इस भजन को कम करती हूं!"

तभी नीलम के शरीर में हरकत हुई वह फड़फड़ाने लगी उसकी आंखें धीरे-धीरे खुल गई उसने इधर-उधर देखा तो उसके चेहरे पर भयंकर डर दिखाई देने लगा।

"तू तो जिंदा है तभी मैं कहूं तू इतनी भारी क्यों है करने पर तो इंसान हल्का हो जाता है पर तू भी पता नहीं किस मिट्टी की बनी है अब तक तो तुझे मर जाना चाहिए था!"शिल्पी ने उसे देखा तो उसके चेहरे पर हल्की हैरानी दिखाई दी शायद वह सोच रही थी कि नीलम मर चुकी पर नीलम के शरीर में भी जान बाकी थी।

"मुझे मत मारो प्लीज मुझे छोड़ दो मुझे जाने दो मैं किसी को कुछ नहीं बताऊंगी!"नीलम गिड़गिड़ाते हुए बोलने लगी।

"अब इन बातों का कोई मतलब नहीं है मुझे पता है जब इंसान फंसा होता है तो कुछ भी बोल सकता है और जैसे ही उसकी दबी उंगली आजाद होती है वह शेर बन जाता है पर मैं ऐसी बेवकूफी कभी नहीं करूंगी और फिर हम तो तुम्हारा टाइम भी आ चुका है अभी मैं तुम्हें इस गड्ढे में डालूंगी यानि तुम गड्ढे के अंदर और तुम्हारा दम शरीर से बाहर निकाल कर सीधा भगवान के घर चला जाएगा वहां आराम से रहना!"

और फिर शिल्पी खड़ी हुई फावड़ा हाथ में लेकर।

तभी उसे ऐसा लगा जैसे उसके पीछे कोई है क्योंकि शिल्पी ने नीलम की आंखें आश्चर्य से खुलते देखी वह चौकन्नी हो गई नीलम की आंखें शिल्पी के पीछे चिपक से गई थी वह समझ गई उसके पीछे कोई आकर खड़ा हो गया है पर कौन यह जानने के लिए मुड़ती इससे पहले ही उसके सर पर एक डंडे का मजबूत वार हुआ और वह धम्म से जमीन पर गिरी पर वह काफी मजबूत थी सर में चोट लगने के बावजूद खून निकलने के बावजूद में जल्दी से संभाल कर खड़ी हो गई और उसे शख्स को देखा जिसे डंडे से उसे पर वार किया था।

बड़ी मुश्किल से उसने अपने सर को पकड़ा और धीरे से उठकर बैठी फिर अपने सामने हाथों में मोटा डंडा लिए खड़े उस शख्स की ओर हैरानी से देखा तो उसके चेहरे पर जमाने भर की हैरानी आ गई कहना चाहिए कि वह उछल पड़ी और ना चाहते हुए भी उसके मुंह से निकला,"तुम तुम तो इंस्पेक्टर विजय हो शिलोंग वाले तुम यहां कैसे ? तुमने मुझ पर क्यों वार किया?"वह एक ही सांस में सब कुछ बक गई जबकि उसके सामने खड़ा पुलिस इंस्पेक्टर विजय किसी विजेता की तरह मुस्कुराया उसके चेहरे पर बड़े ही अजीब से रहस्यमय भाव थे। वह उससे बोला," शातिराना खेल क्या सिर्फ तुम्हें ही खेलना आता है और लोगों को भी आता है पर तुम तो अपने आप को सबसे ज्यादा होशियार समझने लगी। वैसे बढ़िया रहा, मानना पड़ेगा तुमने काफी दिमाग लगाया और एक परफेक्ट प्लान तैयार किया मेरा मन तो करता है कि तुम्हारी तारीफ करूं और सच में मैं तारीफ करता हूं पर तुम्हें यह भी सोचना चाहिए कि दुनिया में तुमसे भी ज्यादा शातिर लोग हो सकते हैं!"

“वैसे तुमने एक ही सांस में सब कुछ पूछ लिया । अच्छा प्रश्न है तो सुनो मेरी नजर तुम लोगों पर शुरू से बल्कि यह कहा जाए की तुम्हारे प्लान के बारे में मुझे सब कुछ पता था पर फिर भी मैंने तुम्हारा प्लान सच साबित होने दिया क्योंकि तुम्हारे प्लान की सफलता में ही तो मेरी सफलता थी!”

“तुम्हारी क्या सफलता थी? तुम क्या चाहते थे आखिर तुम हो कौन और तुम्हें क्या सफलता हासिल हुई? तुम्हारा आखिर हम लोगों से क्या लेना देना है? "ऐसा लग रहा था जैसे दिन में तारे देख रही हो । उसके कुछ भी समझ नहीं आ रहा था वह बहुत भौचक्की सी बैठी थी।

“मैं बताता हूं!”तभी वहां एक दूसरा शख्स आया। उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी मूछ और सर पर बड़ी सी पगड़ी थी।

"तुम कौन हो?"शिल्पी के मुंह से ना चाहते हुए भी निकल गया तो शख्स ने अपने सर से पगड़ी और चेहरे से दाढ़ी मूछ निकाल दी।

और उसे देखकर तो शिल्पी के होश ही उड़ गए। बल्कि जमीन पर मरने को तैयार बैठी लेती नीलम के चेहरे पर भी आश्चर्य के और डर के भाव उत्पन्न हो गए थे।

“करण !" तुम तो मर गए थे फिर तुम जिंदा कैसे हो गए?”

अपने सामने जीता जागता करण को देखकर सच में दोनों लड़कियों के होश उड़ गए थे।

“जैसे तुम अपनी महिला मित्र के साथ जिंदगी गुजारना चाहती थी वैसे ही मैं भी अपने पुरुष मित्र यानी इंस्पेक्टर विजय के साथ जिंदगी गुजारना चाहता था पर जिद्दी मां-बाप के कारण यह मुश्किल था। हम दोनों कॉलेज में साथ पढ़े हैं और वहीं से एक दूसरे की तरफ आकर्षित हुए थे और प्यार करने लगे थे। हम दोनों जिंदगी साथ गुजारना चाहते थे पर घर पर मां-बाप का मूड देखकर हमारी हिम्मत नहीं पड़ी क्योंकि हमने तुम्हारे केस में देख लिया था कि वह कितने सख्त हो गए थे उन्होंने तुम्हें अपने घर से निकाल दिया था अपनी जायदाद से भी बेदखल कर दिया था पर जिंदगी जीने के लिए दौलत की बहुत जरूरत होती है। मैं जिंदगी भर ऐस आराम में रहा शायद इसलिए मैं उन पागल प्रेमियों वाली हरकत नहीं कर सका मैं गरीबी में नहीं जी सकता इसीलिए मुझे दौलत की जरूरत थी पर समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे हासिल हो दौलत और मेरा प्यार और फिर तभी मुझे तुम्हारे प्लान के बारे में पता चला । तुम नीलम के जरिए क्या करने वाली हो कैसे पापा की दौलत हासिल करने वाली हो सब कुछ। मैंने विजय से बात की । विजय उस समय शिलांग में पोस्टेड हो चुका था। हमने गंभीरता से बातचीत की और फिर तय किया गया कि तुम्हारा प्लान को हमें सफल होने देना है । विजय। ने भी हामी भर दी । कुल मिलाकर हम लोगों ने तुम्हारा प्लान को ठीक वैसे ही सफल होने दिया जैसा तुम चाहती थी और क्योंकि तुम्हारे सफल होने में ही हमारी सफलता छिपी थी । तुम्हारा प्लान सफल हुआ भी। हमें सफल होने के लिए बस कुछ चेंजमेंट करने पड़े और देखो बैठे-बैठे सारी दौलत अब हमारे हाथों लग गई जिसकी हमें सख्त जरूरत थी । किसी दौलत के सहारे हम दोनों अब चाहे तो इंडिया में चाहे तो विदेश में कहीं भी रह सकते हैं!” करण मुस्कुरा कर बोला उसके चेहरे पर ठीक वैसे ही चमक थी जैसे किसी बड़े गेम में जीतने पर विजेता की होती है।

“तुम्हें हमारे प्लान के बारे में कैसे पता चला.. कब पता चला?”

“जब तुमने नीलम को मुझे फसाने के लिए कई बार मेरे सामने भेजा तो मुझे उस पर शक हुआ था एक लड़की बार-बार मेरे सामने क्यों आ रही है। चूंकि मुझे लड़कियों में कोई इंटरेस्ट नहीं था। इसलिए मैं इस ओर ध्यान दे पाया। मैंने उसे चुपके से फॉलो किया। और एक 1 दिन मैंने उसकी और तुम्हारी मुलाकात होती देख ली थी इसी खंडहर नुमा घर में जो दरअसल तुम्हारी उसी महिला मित्र का है और यहां तुम दोनों अक्सर मिलती थी नीलम से भी और उससे भी जिसका नाम डेजी था। खैर तुम्हारी बातें भी सुन ली थी और फिर सब कुछ पता चल गया था!”

“पर तुमने हमारा प्लान सफल क्यों होने दिया क्योंकि तुम भी मेरी तरह पापा की दौलत चाहते थे तुम्हारा भी रिश्ता उनकी नजर में गलत था शायद इसलिए पर तुमने तो अपने गे होने के बारे में कभी भनक भी नहीं लगने दी। तुम तो मुझसे भी ज्यादा शातिर निकले भाई!” शिल्पी उस सिचुएशन में भी व्यंग्य से मुस्कुराई।

करण मुस्कुराया और बोला,”कहते हैं ना की दूध का जला छाछ फूक फूक के पीता है। मैंने तुम्हारा हश्र देख लिया था इसलिए मेरी हिम्मत नहीं पड़ी बहादुर बनने की पर मैं बड़ी दुविधा में था । ऐसे में तुमने अपना प्लान बनाकर मेरी सारी दुविधा दूर कर दी। मुझे भी लगा कि इस ढंग से सांप भी मर जाएगा और लाठी भी नहीं टूटेगी यानी सब कुछ तुम करोगी दौलत मुझे हासिल होगी इसीलिए तो मैंने तुम्हारे प्लान में सहयोग किया। अपनी तरफ से कोई भी गलत कोई भी इंटरफेयर नहीं किया।”

“पर तुम्हारी लाश तो पाई गई थी .. पर तुम तो जिंदा खड़े हो और वो लाश किसी और की थी यह इंतजाम कैसे किया?”

“जब हमें सब कुछ पता था तो वो लाश करण की कैसे हो सकती थी उसका इंतजाम विजय ने किया था। विजय ने यहां पर दो चीज की थी । एक विक्रम की रिवाल्वर की गोलियों में अदला बदली की थी उसे पता था विक्रम कहां ठहरा है चुपके से उसने उसके रूम में जाकर गोलियां बदली थी। दूसरे उसने लाश का इंतजाम भी किया था । विक्रम करण को जब गोली मार कर वहां से चला गया था तब विजय ने वहां जाकर एक नकली लाश प्लांट की थी बॉडी को मेरे कपड़े पहनाए गए थे और बुरी तरह डैमेज किया गया था ताकि वो ठीक से पहचान में न आए! दूसरे नीलम का कुछ दिनों बाद बता ही देना था कि वह लाश करण की यानी मेरी है। इसलिए डीएनए टेस्ट की भी जरूरत महसूस नहीं की गई। ”

हमें बस इतना सा ही करना पड़ा बाकि सब तुमने और नीलम ने बहुत अच्छे ढंग से प्लान किया विक्रम को भी बखूबी से तुमने अपने जाल में फंसा लिया मानना पड़ेगा बहन तुम्हारे पास दिमाग बहुत है।”

" लाश का कैसे इंतजाम किया?"

"अपने देश में इतनी गरीबी है इतनी जनसंख्या है ऐसी लाशों का इंतजाम करना कोई मुश्किल काम नहीं है वह मेरी ही कद काठी का कोई गरीब युवक था जिसे विजय ने विक्रम की रिवाल्वर को चोरी करके उसका कत्ल करके अपने पास रखा था और अगले दिन मौका आने पर उसे लाश को मेरी लाश की जगह बदल दिया था और विक्रम का रिवाल्वर उसके रूम में ले जाकर वापस रख दिया था और उसकी असली गोलियां बदलकर नकली गोलियां भर दी तभी तो उसने जब मुझ पर फायर किया मैंने सिर्फ एक्टिंग की थी मेरे सीने में खून की थैली जो मैंने

पहले ही छुपा रखी थी फटी थी बस और उसके बाद उन्होंने मुझे उठा कर खाई में फेंक दिया जिससे मुझे थोड़ी बहुत चोटें लगी थी वो मैंने ठीक कर ली ।"

“तुमने तो सारा पासा ही पलट दिया भाई ।"शिल्पी उठकर खड़ी हो गई थी और उसके चेहरे से लग रहा था जैसे वह कोई जंग में हारा हुआ सिपाही हो पर तभी गड्ढे के पास पड़ी बेहोशी की हालत में नीलम ने एक बार जोर से हंसी और बोली,"मेरी बद्दुआ लगता है काम कर गई तुम्हारे जैसे बेवफा गद्दार की यही सजा होनी चाहिए!"

शिल्पी ने उसकी तरफ चलती हुई आंखों से देखा और अचानक क्रोध में उसके कमर पर उसने लात मारी नीलम खुले हुए गड्ढे में जाकर गिर गई।

तुम्हारे जरिए अब हम दोनों भी ऐसे जिंदगी जी सकेंगे!”

“भाई प्लान किसी ने भी बनाया हो हम दोनों ही कामयाब हो गए क्यों ना ऐसा करें दौलत को आधा-आधा बांट लेते हैं बहुत दौलत है तुम अपनी मर्जी से अपनी जिंदगी जियो मै अपनी मर्जी से अपनी जिंदगी जीती हूं । हम लोगों के रास्ते में जो भी आया वह गायब हो गया अब किसी का भी खतरा नहीं।”

"तुम सच में बेहद शातिर हो वक्त बदलते हुए तुम्हारे स्वर बदल जाते हैं वैसे तुमने तो मुझे करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी थी अगर मुझे प्लेन तुम्हारा प्लान ना पता होता तो मैं यहां पर जिंदा नहीं खड़ा होता और उस लिहाज से तो तुम्हारा मरना ही बनता है!"

"तुम्हें क्या लगता है तुम ऐसा करके बच जाओगे मेरी जोड़ीदार को सब कुछ पता है वह यहीं आसपास ही होगी वह सब कुछ देख रही है अगर तुमने मुझे चोट पहुंचाने की कोशिश की तो पुलिस में जाकर सब बता देगी मैं जानती हूं मुझे जेल होगी पर तुम लोग भी बच नहीं पाओगे?"शिल्पी को अपने सामने साक्षात मौत दिखाई दे रही थी पर फिर भी वह उल्टा उन दोनों को ही धमका रही थी जबकि वे दोनों कुछ देर शांत खड़े रहे और फिर विजय ने कहा।

"उसकी तुम टेंशन मत लो वह तुम्हारा जोड़ीदार क्या नाम उसका डेज़ी, वह तुमसे पहले ही इस दुनिया को छोड़ चुका है तुम्हारा वेट कर रही होगी और शायद इसीलिए तुम्हें भी ऊपर जाना चाहिए!" बीच में विजय ने कहा।

"क्या कहा तुमने ,तुमने डेजी को मार डाला?"विजय की बात सुनकर शिल्पी उछल पड़ी बल्कि अब बेहद दुखी दिखाई देने लगी थी एक प्रेमी के बिछड़ जाने से दूसरा प्रेमी तड़पने लगता है उसकी भी वैसे ही हालत हो गई थी।

"हां यह जरूरी था नहीं तो हम दोनों की जिंदगी में आगे फ्यूचर में कोई ना कोई दिक्कत आ सकती थी और फिर जो हमें दिक्कत देने की सोचे, मारने की कोशिश करे उसे मारने में कोई बुराई नहीं है भले ही वह कोई हो!"इस बार करण बोला। उसके स्वर में भयंकर कठोरता थी जिसे देखकर शिल्पी कांपने लगी और फिर करण ने विजय के हाथ से डंडा लेकर उसके सर पर वार किया डंडा सर पर पड़ते ही शिल्पी गड्ढे में जाकर गिरी और फिर वह वहां रखे फावड़े से उस गड्ढे को भरने लगा।

"मैंने अपनी नौकरी से रिजाइन कर दिया है तुमने तो पहले ही अपनी सुखविंदर सिंह के नाम से आईडी बनवा ली है अब हम आराम से विदेश चलकर रहेंगे वैसे भी यहां रहना ना तो मुनासिब है और ना ही मुझे ठीक लगता है।"करण जब गड्ढे को भर चुका और गड्ढे की मिट्टी

को अच्छे से दबाकर बराबर करके उस पर वहां सूखे पत्ते और घास जिसका इंतजाम खुद शिल्पी ने किया था को उस गड्ढे के ऊपर डाल दिया अब नजर ही नहीं आता था कि वहां पर कभी गड्ढा खोदा गया था तब विजय ने उससे कहा और उसने सहमति में सिर हिलाया।

फिर वहां से रुपयों से भरा सूटकेस लेकर वे दोनों विजय और करण रुखसत हो गए। पीछे जमीन के अंदर दोनों शातिर खिलाड़ियों को दफन करने के बाद। उनका तीसरा साथी डेजी जिसे करन ने जंगल में दफन कर दिया था। अब फिलहाल उनके लिए कोई खतरा नहीं था। अब वे अपनी जिंदगी आराम से जी सकते थे।

अनुराग कुमार जीनियस

“

“

“

“